CHIEFTAINS UNDER JAHANGIR AND SHAHJAHAN WITH SPECIAL REFERENCE TO NORTHERN INDIA

Thesis Submitted For the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

By

Km. AMITA TIWARI

Under the Supervision of

Dr. P. L. VISHWAKARMA

DEPARTMENT OF MED./MOD. HISTORY

UNIVERSITY OF ALLAHABAD

ALLAHABAD

1992

प्राक्कथन

पूर्व मध्यकालीन भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ-साथ साम्राज्यवादी सुल्तानों का स्वायत्त अथवा स्वतन्त्र राज्यों के शासकों व जमींदारों के साथ संघर्ष प्रारम्भ हो गया । शनैः शनैः इन राज्यों का अन्त होने लगा किन्तु उनके स्थान पर अनेक हिन्दू मुस्लिम राजा या जमींदार अपने अपने प्रदेशों पर अपना शासन सुदृढ़ करने लगे और उनके उत्तराधिकारियों ने अपने को स्वायत्त राजा या करद राजा या जमींदार कहना प्रारम्भ कर दिया । ऐतिहासिक ग्रंथों में यदा-कदा रावल, राव, जमींदार, राय, राणा, रावत, महाराणा आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है । इससे ज्ञात होता है कि सल्तनत काल के अन्त तक ऐसे राज्य तथा जमींदारियां अत्यधिक संख्या में स्थापित हो चुकी थीं । साम्राज्यवादी सम्राट अकबर के समय अनेक ऐसे राज्य तथा जमींदारियाँ थीं, जिनको विजित करने के उपरान्त ही एक विशाल एकछत्र साम्राज्य की स्थापना हो सकती थी । सम्राट अकबर अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था और सन् 1605 ई० तक उसका स्वप्न पूर्ण हो गया । जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने भी अपने पिता की ही नीति का अनुकरण करते हुये राजाओं तथा जमींदारों को अधीनस्थ बनाये रखने की नीति अपनायी । प्रस्तुत शोध ग्रन्थ का उद्देश्य जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में राजाओं अथवा जमींदारों की स्थिति, प्रशासन की उनके प्रति नीति, उनके राजनीतिक योगदान तथा उनके द्वारा दिये गये सहयोग के अतिरिक्त मुगल शासकों के साथ उनके सम्बन्धों की विवेचना करना है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में मेरे निर्देशक परमपूज्य डा० पी०एल० विश्वकर्मा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, जिन्होंने प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मेरे शोध-कार्य में विशेष रुचि लेते हुये अपना बहुमूल्य समय मुझे देकर कृतार्थ किया, जिसके लिये मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ । तत्पश्चात् मैं अपने विभागाध्यक्ष एवं गुरु प्रो० राधेश्याम के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने जटिल प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करते हुये ऐतिहासिक स्रोतों की ओर निरन्तर मेरा ध्यान आकृष्ट किया । उन्होंने विषय के समन्वयन में विशेष रूप से मेरी सहायता की । मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ ।

मेरे पूज्य पिता पं0 बेनी प्रसाद तिवारी, पूज्य माता तथा समस्त कुटुम्ब ने मुझे शोधकार्य के लिये निरन्तर प्रोत्साहित किया और हर सम्भव सहायता प्रदान की । शोधकार्य के मध्य विवाह हो जाने पर भी मेरा शोधकार्य तीव्रगति से चलता रहा । मेरे श्वसुर श्री जयराम शुक्ल, पति श्री पीयूष शुक्ल एवं समस्त परिवार वाले मुझे शोधकार्य को पूर्ण करने के लिये उत्साहित करते रहे और सभी की प्रेरणा व सहयोग से मेरा यह शोधकार्य परिपूर्ण हो सका । अतः सभी के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ । इसके अतिरिक्त मैं कु0 आबिदा सैय्यद, डॉ0 तमिस्रा चक्रवर्ती, डॉ0 रेखा श्रीवास्तव, डॉ0 मंजुला श्रीवास्तव, सरोज शुक्ला तथा अन्य सहेलियों को धन्यवाद देती हूँ । इन लोगों ने मेरा निरन्तर उत्साहवर्द्धन किया । उर्दू के ग्रंथों का अध्ययन व अनुवाद करने में मुझे श्री जे0सी0 बत्रा तथा कु0 आबिदा सैय्यद से विशेष रूप से सहायता मिली अतः मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ । मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं पुस्तकालय के समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने पुस्तकें उपलब्ध कराने में मेरी हर-संभव सहायता की ।

अन्त में मैं प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के टंकणकर्ता श्री राम बरन यादव को धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने सहज भाव से मेरे शोध-प्रबन्ध का टंकण किया ।

अमिता तिवारी

अमिता तिवारी

दिनाङ्क : 22.6.92.

विषयानुक्रमणिका

अध्याय	:	विषय	पृष्ठ संख्या

अध्याय :	विषय	पृष्ठ संख्या

अध्याय - प्रथम

भूमिका

भूमिका

जहाँगीर एवं शाहजहाँ के शासन के 53 वर्षों में मुगल सत्ता प्राय: सुदृढ़ रही। विभिन्न क्षेत्रों में अकबरकालीन नीतियों एवं उपलब्धियों का परिणाम इन शासनों की अवधि में कुछ घट-बढ़ के साथ बना रहा । आन्तरिक प्रशासन की एक परोक्ष कड़ी के रूप में अथवा मुगल सत्ता की अवहेलनाकारी एवं प्रतिरोधी ताकत के रूप में बहुत से छोटे बड़े शासक ऐसे थे जो मुगल साम्राज्य की स्थापना के पहले से, कतिपय राज्यों में तो राजपूत काल या उससे भी पहले से पुश्तैनी रूप में विद्यमान थे । अब बहुत से मुस्लिम सरदार भी इस श्रेणी में आ गए थे । अधिकांशत: ये लोग हिन्दू राजा थे जो स्थानीय परम्परा या अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार राजा, रावत, राय, राना, महाराणा, ठाकुर, रावल, महारावल इत्यादि की पदवियाँ धारण करते थे । सम्राटों ने भी इनकी पुश्तैनी पदवियों का सम्मान किया । अधीनस्थ राज्यों में जब गद्दी रिक्त होती थी तो नया व्यक्ति परम्परानुसार ऐसी पदवियाँ सम्राट से प्राप्त करता था । इनकी शक्ति एवं राजनीतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक व सामरिक सभी दृष्टियों से इनकी महत्ता से सम्राट अवगत थे । अपने अपने क्षेत्रों में वे शक्तिशाली थे क्योंकि उनकी सत्ता अपने अनुयायियों की पारम्परिक स्वामिभक्ति एवं ग्रामीण अनुक्रम पर आधारित थी ।[1] कभी कभी यह स्वामिभक्ति कबाइली आधार पर होती थी, जिससे उनकी शक्ति सुदृढ़तर हो जाती थी । इन शासकों पर अपनी प्रभुसत्ता का आरोपण सम्राटों ने वास्तव में अपनी सामरिक श्रेष्ठता के कारण ही किया था । तिस पर भी समय अनुकूल पाते ही कुछ शासक विद्रोह कर देते थे या विद्रोहात्मक दृष्टिकोण अपना लेते थे । राजवंशों के भाग्य से प्राय: उदासीन रहते हुए ये सम्भावित स्तर तक स्वयं अपने ही भाग्योदय के प्रयत्न में लगे रहते थे । आई०एच० कुरैशी ने ऐसे

---

1. आई०एच० कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ द मुगल इम्पायर, पृ० 240,
   एस० नुरुल हसन, मुगलों के अधीन जमींदार, पृ० 40.

हिन्दू शासकों के बारे में लिखा है कि राजवंश के प्रति अधिकांश शासकों (चीफ्स) की उदासीनता के कारण मुस्लिम विजय आसान हो गई ।[1] दिल्ली सल्तनत काल में उनके माध्यम से कृषीय प्रशासन को चलाया गया । इस प्रकार से शासन लाभान्वित हुआ क्योंकि शासन ने कुछ सुविधायें एवं विशेषाधिकार स्थानीय स्तर पर स्थानीय राजाओं व जमींदारों को देकर उनका सहयोग प्राप्त कर लिया । आई0एच0 कुरैशी ने लिखा है कि यह नीति सुचारू रूप से चली किन्तु इसमें एक कमी थी । इसमें बहुत सारे अधिकार स्थानीय राजाओं के हाँथ में छोड़ दिये गए थे । जब भी राज्य की शक्ति कमजोर हुई इन तत्वों ने विद्रोह करने की ठान ली ।[2] अतः दिल्ली सल्तनत कभी स्थायी रूप से सुदृढ़ नहीं हो सकी । मुगल साम्राज्य की स्थापना के समय से स्थिति यह थी कि बहुत से राजा एवं जमींदार ही नहीं बल्कि कुछ जागीरदार भी ऐसा मनमाना शासन करने लगे थे । जैसे कि वह भी पुश्तैनी राजा हो । ऐसे कुछ तत्वों को बाबर ने कुछ समय के लिये भले ही भयान्वित कर दिया हो, परन्तु वास्तव में इन्हें मुगल सत्ता का अधीनस्थ बनाने का कार्य अकबर के शासनकाल से प्रारम्भ हुआ ।

अहसान रजा खां ने अपनी पुस्तक 'चीफटेन्स इन द मुगल इम्पायर ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर' में अकबरकालीन प्रभावशाली व अधीनस्थ राजाओं का विवेचन किया गया है । इसी क्रम को परिपूर्ण करने की आवश्यकता को देखते हुये प्रस्तुत शोध का विषय चुना गया है एवं उसका जहाँगीर व शाहजहाँ कालीन विवरण दिया गया है । उत्तरी भारत के विशेष सन्दर्भ में यह अध्ययन है । यद्यपि इसमें गुजरात एवं मालवा सूबे भी दक्षिणी भारत के सीमावर्ती होने के कारण शामिल कर लिये गये हैं । मुगल

---

1. आई0एच0 कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ द मुगल इम्पायर, पृ0 240-241.

2. आई0एच0 कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ द मुगल इम्पायर, पृ0 241.

शासकों ने समझ लिया था कि स्थानीय सरदार व राजा यदि संयुक्त होकर विद्रोह कर दिये तो उनका दमन करना बहुत कठिन होगा । राजपूताने के सन्दर्भ में यह बात देखी जा सकती है । 17वीं शताब्दी में मराठों ने जब ऐसा ही संघर्ष छेड़ दिया तो मुगल इसका दमन नहीं कर सके । इसके विपरीत मुगलों का भी पतन प्रारम्भ हो गया । इससे स्पष्ट है कि पुश्तैनी राजा चाहे छोटे राजा रहे हों या बड़े राजा, का सहयोग एवं उनकी स्वामिभक्ति स्वयं मुगलों के लिये कितनी आवश्यक थी ।

इस महत्त्वपूर्ण पहलू के कारण सम्राटों ने राजाओं को कुछ विशेषाधिकार एवं रियायतें प्रदान की थीं । उनके पास जो निजी काश्त की जमीनें थी उन पर राज्य कर नहीं लेता था यद्यपि इस नियम में अपवाद भी मिलते हैं । मुगलों ने इस बात का ध्यान रखा कि राजाओं का आर्थिक भार किसानों पर न हस्तानान्तरित हो जाये । मीरात ए अहमदी[1] से यह ज्ञात होता है कि सूबा गुजरात के सुल्तानों ने वहाँ के कई प्रभावशाली राजपूत एवं कोली पुश्तैनी राजाओं को उनकी निजी भूमि पर कर से छूट दे दी थी । मुगल सम्राट भी इसी तरह कर में छूट देते रहे । अधीनस्थ राजा करद राजा थे क्योंकि वह अपनी अधीनता के तौर पर अपने राज्य से होने वाली आय का कुछ हिस्सा प्रतिवर्ष कर के रूप में देने के लिये बाध्य थे । ऐसा न करना विद्रोह माना जाता था । स्थानीय झगड़ों में शामिल होने की तथा अपने राज्य की सीमा के विस्तार की कोशिश करने की इन्हें छूट नहीं थी । ये ससैन्य सम्राट की सेवा में आदेशानुसार जाने के लिये बाध्य थे । सम्राट व राजा दोनों एक व्यापक प्रशासनिक संघ के दो बिन्दु थे । दोनों का अलग अलग अस्तित्व था फिर भी दोनों एक दूसरे के पूरक जैसे थे । ऐसे राजाओं के स्थानीय प्रशासन में सम्राटों ने चाहते हुये भी हस्तक्षेप करने में सफलता नहीं प्राप्त की । जब भी ऐसा किया गया विद्रोह हो गया ।

---

1. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, पृ0 228-229,
   आई0एन0 कुरैशी, एडमिनिस्ट्रेशन आफ द मुगल इम्पायर, पृ0 241.

जहाँगीर के शासनकाल में बुन्देलों का वर्चस्व बढ़ा । जब शाहजहाँ ने उसको कम करने का प्रयास किया तो जुझारसिंह ने विद्रोह कर दिया । औरंगजेब के शासनकाल में यह स्थिति अधिक स्पष्ट होकर उभरती है । राजपूताने में मारवाड़ इसका सर्वोत्तम उदाहरण है । जाट सतनामी सिक्ख बुन्देला मराठा इत्यादि सभी विद्रोहों के पीछे किसी न किसी रूप में प्रशासनिक हस्तक्षेप का एक निश्चित सीमा से आगे बढ़ जाना था । कुछ अधीनस्थ अथवा करद स्थानीय शासक राजा की पदवी नहीं धारण करते थे ।[1] वे जमींदार थे । ऐसे बहुत से जमींदारों का अध्ययन भी प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में समाहित किया गया है ।

<u>जमींदारों की श्रेणियाँ</u>

जमींदार वर्ग में शक्तिशाली स्वतंत्र और स्वायत्त सरदारों से लेकर ग्राम स्तर तक के विभिन्न प्रकार के आनुवंशिक हितों वाले अधिकारियों के सम्मिलित होने के कारण स्तरण ॥स्ट्रेटिफिकेशन॥ के निश्चित चिह्न विद्यमान थे ।[2] इस कारण जमींदारों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करने का प्रयास किया गया । विल्टन ओल्डम के अनुसार मुगल साम्राज्य की अवनति के समय ॥18वीं शदी के प्रारम्भ में॥ गोशवारा या परगना जमींदार तथा ग्राम स्तर के जमींदार विद्यमान थे ।[3] पी0सी0 ह्वीलर ने भी जमींदारों की यही श्रेणियाँ बतायी हैं । बनारस सूबे के जमींदारों को काशी प्रसाद श्रीवास्तव ने परगना जमींदार ग्राम स्तर के जमींदार तथा भैयाचारा जमींदार नामक तीन श्रेणियों में विभाजित किया है । क्वाएफ-ए जिला-ए गोरखपुर के लेखक मुफ्ती

---

1. आई0एच0 कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ मुगल इम्पायर, पृ0 245.
2. सैय्यद नजमुल रजा रिज़वी, अट्ठारहवीं शदी के जमींदार, पृ0 3,
3. विल्टन ओल्डम हिस्टोरिकल एण्ड स्टेटिस्टिकल मेमोयर आफ द गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट, भाग 2, पृ0 43, 93.

मोहम्मद गुलाम हजरत ने जिला गोरखपुर के जमींदारों को तीन श्रेणियों में स्वायत्त जमींदार, ताल्लुकेदार अथवा राजा और विर्तिया जमींदार के अन्तर्गत विभाजित किया है । इसी प्रकार राजस्व भुगतान के स्वरूप के आधार पर भी जमींदारों के विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है । नोमान अहमद सिद्दिकी ने इसी आधार पर जमींदारों की दो श्रेणियां पेशकशी या उपहार देने वाले जमींदार तथा भू-राजस्व देने वाले जमींदार बनायी हैं ।[1] प्रो० एस० नुरूल हसन ने जमींदारों को उनके जमींदारी के आधार पर तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया है :-

अ. स्वायत्त जमींदार   ब. मध्यस्थ जमींदार   स. प्राथमिक जमींदार ।[2]

किन्तु जमींदारों को उक्त श्रेणियों में विभाजित करने के पश्चात वह लिखते हैं - "ये श्रेणियां किसी भी प्रकार से अनन्य नहीं थीं । स्वायत्त सरदारों द्वारा नियन्त्रित क्षेत्र में ही अधीनस्थ अर्द्धस्वायत्त सरदार ही नहीं, बल्कि मध्यस्थ और साथ ही प्राथमिक जमींदार भी होते थे । मध्यस्थ जमींदारों का अधिकारक्षेत्र एकाधिक प्राथमिक जमींदारों तक विस्तृत था । फिर भी उनमें से अधिकांश अपने स्तर पर प्राथमिक जमींदार ही थे । एक सरदार अपने अधिकार-क्षेत्र में प्रभुसत्ता या राजसत्ता का उपयोग करने के साथ साथ कुछ भूमि पर प्राथमिक अधिकारों और अन्य पर मध्यस्थ अधिकारों का भी उपयोग करता था ।"[3] इस प्रकार स्पष्ट है कि जमींदारों को किसी निश्चित आधार पर श्रेणियों में नहीं विभाजित किया जा सकता ।

---

1. नोमान अहमद सिद्दीकी, लैण्ड रैवेन्यू एडमिनिस्ट्रेशन अण्डर द मुगल्स, पृ० 3742.

2. एस० नुरूल हसन, मुगलों के अधीन जमींदार ।मध्यकालीन भारत भाग ।।, सम्पादक इरफान हबीब ।1761।, पृ० 40.

3. एस० नुरूल हसन, मुगलों के अधीन जमींदार, पृ० 40.

मुगलकाल में कुछ राजा बड़ी रियासतों के मालिक थे जैसे कच्छ, जूनागढ़, बगलाना, मेवाड़, कुमायूँ, थट्टा, कूचबिहार भट्टी और उड़ीसा के राजा, इन राजाओं के पास एक बड़ी सेना भी थी । जबकि कुछ राजा छोटी रियासतों के मालिक थे, जैसे गुजरात के परमार राजा, आगरा के भदौरिया और चौहान राजा, इनके पास सैनिक शक्ति भी कम थी लेकिन इन छोटे राजाओं ने भी अपनी रियासतों मे पूर्ण राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी इसलिये सैनिक शक्ति के आधार पर राजाओं का वर्गीकरण करना उचित नहीं है ।

कुछ समकालीन ग्रन्थों में राजाओं का विवरण उनकी रियासत के नाम से किया गया है तो कुछ का उनकी जाति के नाम से जैसे - मिम्भर का जमींदार जलाल खान, जम्मू का राजा कपूर चन्द, मऊ का जमींदार बखतमल, कुमायूँ का मर्जबान रूपचन्द्र इसी तरह रानाये सोधा, कनतारन बलोच राजा आदि । लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं कि जातिगत राजाओं के पास जागीरें नहीं होनी थी । इनकी अपनी जागीर नगर किले आदि होते थे । राजा अपनी शक्ति के लिये अधीनस्थ राजाओं या जमींदारों पर निर्भर करता था । मेवाड़ के सिसोदिया राजा का प्रभुत्व भील राजा, पुन्जा राजा तथा पाली के सोनीगरा राजा पर भी था ।

यह भी देखा गया है कि सभी राजा आनुवंशिक नहीं थे कुछ राजा नये भी थे । राजाओं की शक्ति वास्तव में सेना पर ही आधारित थी । सूबा लाहौर के राजा संभवत: उत्तरी भारत के सबसे पुराने राजाओं में थे इनके अधिकारों और सिद्धान्तों के निर्माण के चिह्न तुर्की शासन के और पहले से मिलते हैं । सूबा अजमेर के अधिकांश राजा 12वीं से 15वीं शदी के बीच बने । गुजरात में नावानगर के राजा, आगरा के बुन्देला, बंगाल और कूचबिहार के राजा 15वीं शदी के अन्त और 16वीं शदी के प्रारम्भ में सत्ता में आये । कई और राजा जैसे जूनागढ़ के अफगान राजा, राधनपुर के बलोच राजा नये उभरे राजाओं में से थे जिन्हें मुजफ्फरी सामन्तों ने 16वीं शदी के मध्य में गुजरात की सल्तनत के पतन के समय बनाया था ।[1]

---

1. अहसान रजा खां, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 5.

संक्षेप में यह राजा जो आनुवंशिक हो या नये नये बने हो मध्यकालीन भारत की राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते थे उनके हाथों में न सिर्फ आर्थिक साधन थे बल्कि सैनिक साधन भी थे और आमतौर पर उन्हें अपनी जनता का सहयोग भी प्राप्त था ।

अकबर जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने जमींदारों के साथ सहृदयता एवं सद्भाव की नीति अपनायी साथ ही उसमें कुछ नये तत्त्वों का भी समावेश किया । अकबर ने मुगल प्रशासन तथा जमींदारों के मध्य सुदृढ संबंध बनाने की आवश्यकता महसूस की उन्हें शाही सेवा में संयुक्त किया और अनेक शक्तिशाली राजाओं को मनसब भी प्रदान किया । अकबर की सेवा में ऐसे 61 राजाओं का विवरण मिलता है जिनका मनसब 200 या उससे ऊपर की श्रेणी का था । इन 61 मनसबदारों में से 40 मनसबदार सूबा अजमेर के थे और शेष अन्य क्षेत्रों के थे ।[1] जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने भी इसी नीति का पालन किया । जब किसी राजा को उच्च मनसब प्रदान किया जाता था तो उसकी सेना के भरण पोषण के लिये उसे एक बड़ी जागीर भी प्रदान की जाती थी । जागीर से प्राप्त भू-राजस्व राजा या जमींदार के पैतृक क्षेत्र की राजस्व से कहीं अधिक हुआ करता था उदाहरणार्थ पाँच हजार जात और पाँच हजार सवार के मनसबदार को मिली जागीर से प्राप्त भू-राजस्व की प्रत्याशित राशि 8.3 लाख रूपये थी जो उनके प्रमुख राजपूत राजाओं की आय से कई गुना अधिक थी ।[2] इस व्यवस्था से जमींदारों और मुगल प्रशासन के मध्य अत्यधिक सीमा तक अन्तर्विरोध कम हो गया । अब अधिकांश राजाओं ने मुगल सत्ता से संघर्ष करने के स्थान पर उसकी सेवा में रहना श्रेयष्कर समझा । उनकी उत्कृष्ट सेवा के बदले उन्हें अपने पैतृक राज्य के अतिरिक्त जागीरें प्राप्त थीं ।[3] शाही पद या मनसब जमींदारों परिचरों

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 207.
2. इस संख्या की गणना 5 महीने के वेतनमान के आधार पर की गयी थी जात पद अधिकारी का निजी पद था जबकि सवार पद उसके घुड़सवारों की ओर इंगित करता था ।
3. आई0एच0 कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ द मुगल इम्पायर, पृ0 245.

एवं सम्बन्धियों के लिये भी उनके स्तर के अनुसार सैनिक व्यवसाय उपलब्ध करा देता था। साथ ही साम्राज्य की ओर से संचालित अभियानों में होने वाली लूटपाट में भी इन लोगों को उनका भाग मिल जाता था। इन तात्कालिक लाभों के अतिरिक्त शाही पद जमींदारों के लिये शक्ति का स्रोत था और उन्होंने बड़ी सेनायें रखकर अपनी स्थिति सुदृढ़ करने की सामर्थ्य प्रदान करता था।

इन सब राजाओं अथवा जमींदारों के लिये शाही आदेशों का पालन करना अनिवार्य था। उन्हें मुगलों को सैनिक सेवा प्रदान करनी पड़ती थी। अधिकांश राजा तथा जमींदार शाही मनसबदार होने के कारण अपना समय सम्राट की सेवा करने तथा उसे प्रसन्न करने में व्यतीत करते थे। वे अपनी रियासतों से दूर युद्ध करने में ही व्यस्त रहते थे। उन्हें सैनिक सेवा करने के साथ-साथ कुछ प्रशासकीय कार्य भी करने पड़ते थे। मुख्य रूप से कछवाहा और राठौरों को महत्त्वपूर्ण प्रशासकीय कार्य सौंपे गये थे। कछवाहा राजा भारमल पहला ऐसा राजा था जिसे जब अकबर आगरा से गुजरात गया था तो प्रशासकीय कार्य सौंपा गया था।[1] ~~काल~~ 1595-96ई० में विविध सूबों में नियुक्त किये गये 12 दीवानों में से तीन इन्हीं राजाओं अथवा जमींदारों के परिवार के थे।[2]

मुगल उन राजाओं की भी सैनिक सहायता प्राप्त करने में सफल हुये जो मनसबदार तक नहीं थे। राजौरी, कांगड़ा, जासवान, जम्मू, गुलेर, नन्दौन, मिम्बर, अमरकोट, मौरवी, हदवद, नावानगर, अलीमोहन, लखनपुर, चम्पारन, उज्जैनिया, गिधौर, खड्गपुर, कोकरा, विशनपुर और अन्य अनेक स्थानों के राजा इसी श्रेणी में आते थे।[3] बिहार के राजा ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा के अभियानों में, पंजाब के राजा ने पंजाब और कश्मीर में और मुल्तान के राजा ने सिन्ध या काबुल के अभियानों में मुगलों को सैनिक सेवा प्रदान की थी।

---

1. बदायुंनी, मुन्तखब-उल तवारीख, भाग 1, पृ० 151.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ० 678.
3. अहसान रजा खां, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ० 209.

अकबर के शासनकाल में राजा मानसिंह के नेतृत्व में दक्षिण बिहार के अनेक बड़े राजाओं ने 1592 ई0 में हुये उड़ीसा के युद्ध में भाग लिया था। जमींदारों के सैनिक सहयोग को कितना अधिक महत्त्व दिया जाता था यह जहाँगीर के उस वक्तव्य में आंका जा सकता है, जिसमें उसने बंगाल का महत्त्व वहाँ से मिलने वाली वृहदाकार मालगुजारी के बजाय वहाँ के सरदारों द्वारा 50 हजार सैनिकों की सेवा प्रदान करने को दिया है।[1] यदि यह जमींदार अथवा राजा सम्राट के आदेशों की अवहेलना करते थे तो उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाती थी। उदाहरणार्थ अकबर के राज्यकाल के 37वें वर्ष में जब जम्मू के राजा ने कश्मीर में मुगलों के सैनिक अभियान में भाग लेने से इन्कार किया तो सम्राट ने सेना भेजकर उसका दमन करवा दिया।[2]

राजाओं अथवा जमींदारों को समय समय पर पेशकश भेजनी पड़ती थी। जो उनकी स्वामिभक्ति का सूचक थी। इसलिये इन राजाओं को पेशकशी राजा भी कहते हैं।[3]

तिब्बत-ए खुर्द, तिब्बत-ए कलान, मऊ, कच्छ, ईडर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, सिरोही और अन्य बहुत से राजा मुगलों को केवल पेशकश देते थे उन्होंने कभी मुगलों को सैनिक सहायता नहीं प्रदान की।[4] पेशकश में उस क्षेत्र की बहुमूल्य वस्तुयें हीरे, जवाहरात, घोड़े, हाथी या नकद मुद्रा दी जाती थी। पेशकश कितनी या किस रूप में दी जाय इसका निर्णय सम्राट करता था। भट्टा के राजा रामचन्द्र ने 1583-84 ई0 में सम्राट को जो पेशकश दी थी इसके बारे में तबकात-ए अकबरी का लेखक निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि राजा रामचन्द्र ने 120 हाथी और रूबी जिसकी कीमत

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी (अनु0) (अलीगढ़ 1864) पृ0 7.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 631.
3. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 210.
4. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 210.

50,000 रूपये आँकी जगयी है पेशकश के रूप में दी थी ।[1] पेशकश किस आधार पर तथा कितने अन्तराल पर देनी पड़ती थी यह निश्चित नहीं था । आईने-अकबरी के अनुसार सम्राट को राजाओं या जमींदारों के अधिकार क्षेत्र के कुल जमा के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी रहती थी । संभवत: राजाओं की आय के आधार पर ही पेशकश निर्धारित होता रहा होगा । कुछ राजा या जमींदार पेशकश नियमित रूप से नहीं दिया करते थे । कुछ राजा एवं जमींदार ऐसे भी थे जो कि अधीनता स्वीकार करने के उपरान्त पेशकश देने के लिये बाध्य नहीं थे । उन्हें समय-समय पर सम्राट या राजकुमार को उपहार भी देने पड़ते थे विशेषकर जब वह उनके क्षेत्र से होकर जाते थे या किसी युद्ध में पराजित होते थे । यह उपहार कभी कभी राजा स्वयं सम्राट के सम्मुख उपस्थित होकर देता था तो कभी अपने पुत्र से भिजवाता था । मेवाड़ के महाराणा प्रताप ने उपहार अपने पुत्र द्वारा भिजवाया था । इसके कारण अकबर उससे रूष्ट हो गया । उसकी इच्छा थी कि महाराणा स्वयं उसके दरबार में उपस्थित होकर उसे उपहार दें व अधीनता मानें । फलत: दोनों पक्षों में युद्ध हुआ । जहाँगीर ने 1615 ई0 की सन्धि में अमरसिंह को व्यक्तिगत रूप से दरबार में उपस्थित होने की बाध्यता से मुक्त कर दिया ।[2] भट्टा के राजा रामचन्द्र ने भी स्वयं न जाकर अपने बेटे से उपहार भिजवाया जो मनमुटाव का कारण बना । राजा मधुकर ने शहजादा मुराद का जो उसके प्रदेश से होकर जा रहा था आतिथ्य सत्कार नहीं किया अत: मुगल प्रशासन ने उसके विरूद्ध सैनिक कार्यवाही की ।[3] आदम खान गक्खर से भी मनमुटाव का यही कारण था ।

---

1. निजामुद्दीन अहमद, तबकात-ए अकबरी (अनु0) भाग 2, पृ0 382.

2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 44, 66-67.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 420-427.

कुछ ऐसे भी उदाहरण उपलब्ध हैं जहाँ कि राजाओं अथवा जमींदारों के पुत्रों द्वारा भिजवाये गये उपहार सम्राट ने स्वीकार कर लिये । उड़ीसा के राजा रामचन्द्र ने अपने बेटे को मुगल सेनानायक मानसिंह को भेंट देने के लिये भेजा था इसी प्रकार राजकुमार मुराद को मधुकर बुन्देला के बेटे ने भेंट प्रदान की थी और उसे सम्राट ने स्वीकार किया ।

जब कोई राजा व्यक्तिगत रूप से सम्राट से मिलने जाता था तो वह यह आशा करता था कि वहाँ का कोई वरिष्ठ अधिकारी उसे दरबार तक ले जाने के लिये आये । राजा मधुकर ने राजकुमार मुराद का सम्मान इसलिये नहीं किया क्योंकि मुराद का राजदूत जगन्नाथ राजा मधुकर को लेने नहीं आया था ।[1]

मुगल काल में राजाओं अथवा जमींदारों के प्रतिनिधि मुगल दरबार में उपस्थित रहते थे ।[2] जहाँगीर के शासन के प्रारम्भ में सूबा लाहौर के पहाड़ी क्षेत्रों के 23 राजकुमार मुगल दरबार में प्रतिनिधि के रूप में थे ।[3]

प्रत्येक राजा या जमींदार को अपने हितों की सुरक्षा के लिये सम्राट की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था । ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि राजाओं या जमींदारों के आन्तरिक मामलों में समय समय पर मुगल सम्राट ने हस्तक्षेप किया । उदाहरणार्थ अपने शासन के प्रारम्भ में अकबर ने सूबा लाहौर में मऊ के राजा बख्तमल को हटाकर उसके भाई तख्तमल को बिठाया और बख्तमल को फाँसी पर चढ़वा दिया क्योंकि वह उसके प्रति राजभक्त नहीं था ।[4] 1589 ई0 में जब पकली का राजा

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 604.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 278, भाग 3, पृ0 36-37, 472, 835.
3. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स, भाग 1, पृ0 62, भाग 2, पृ0 536-37.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 63.

शाही पड़ाव से भाग गया तो सम्राट अकबर ने पकली अपने एक सामन्त हुसैन बेग शेख उमरी को दे दिया ।[1] 1563-64 ई0 में जब कमाल खान गक्खर ने अपने प्रदेश में पुश्तैनी अधिकार जताना चाहा, जो उस समय उसके चाचा आदम खान के अधिकार में था तो सम्राट ने आदम खान को आधा प्रदेश कमाल खान को देने को कहा किन्तु जब आदम खान नहीं माना तो सम्राट ने आदम खान को गद्दी से उतार दिया गया और पूरा प्रदेश कमाल खान को दे दिया ।[2] 1596-97 ई0 में जब मऊ के राजा बासु ने तीसरी बार विद्रोह किया तो पैठन जो कि इनकी जागीर का ही एक भाग था, को सम्राट ने मिर्जा रूस्तम को जागीर के तौर पर दे दिया ।[3] सन् 1602-03 ई0 में पंजाब के पहाड़ी राजाओं के विरूद्ध सफल सैनिक अभियान के पश्चात जम्मू, जसरोटा, रामगढ़, लखनपुर, मानकोट के राजाओं का क्षेत्र उनसे छीन लिया गया और उनके किले भी उनसे ले लिये गये ।[4] सूबा मुल्तान में अमरकोट के राजा मेघराज की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र किशनदास के उत्तराधिकार की अवहेलना करके किशनदास के भाई मानसिंह जिनकी पुत्री की शादी खानखाना से हुयी थी, को गद्दी पर बिठाया गया । जहाँगीर (1605-27 ई0) ने बीकानेर के राय रायसिंह के छोटे पुत्र की नियुक्ति को अस्वीकार करके उनके ज्येष्ठ पुत्र को उत्तराधिकारी नियुक्त किया । इसी प्रकार आम्बेर के राजा मानसिंह की मृत्यु पर उसके ज्येष्ठ पुत्र महासिंह के दावे को रद्द करके उसके कनिष्ठ पुत्र भावसिंह को मिर्जा राजा की उच्च उपाधि के साथ आम्बेर का राज्य दिया गया ।[5] जब बिहार के खड़गपुर का राजा संग्राम सम्राट का

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 565.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 192-193.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 712.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 808,
   फैजी सरहिन्दी, अकबरनामा, पृ0 225-227.
5. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी (अलीगढ़ 1864) अनु0, भाग 1, पृ0 106, 130, 145.

कोपभाजन बना तो दण्डस्वरूप उसे मार डाला गया और उसके राज्य को खालसा के अन्तर्गत ले लिया गया जो कुछ समय बाद फिर से उसके पुत्र राजा रोजअर्जुन को लौटा दिया गया । शाहजहाँ के शासनकाल ﴾1627-58 ई0﴿ के दौरान मारवाड़ के जसवंत सिंह के अपने बड़े भाई के विरुद्ध किये गये दावे को इस आधार पर मान लिया गया कि वह मृत राजा की चहेती पत्नी से उत्पन्न हुआ था ।[1] यह निर्णय बीकानेर के सन्दर्भ में जहाँगीर द्वारा लिये गये निर्णय से एकदम विपरीत था । सम्राट द्वारा किसी भी शासक अथवा जमींदार के राज्य के उत्तराधिकार का निर्णय करने के कारण एक ओर तो मुगल प्रशासन की प्रभुता उन पर बनी रही और दूसरी ओर उनके राज्यों एवं प्रदेशों पर सम्राट का प्रभुत्व बना रहा । साथ ही साथ वह राजा अथवा जमींदार सम्राट के प्रति निरन्तर निष्ठावान बने रहे । शक्तिशाली एवं प्रभावशाली राजाओं तथा जमींदारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने के कारण मुगल सम्राटों के सम्बन्ध उनके साथ अत्यधिक प्रगाढ़ हो गये ।

अकबर ने 1563-64 ई0 में जोधपुर पर विजय करने के पश्चात् उसे 40 वर्षों तक खालसा के अन्तर्गत रखा । इस मध्य में थोड़े समय के लिये इस पर अधिकार बीकानेर के राय सिंह का रहा उसके बाद उसे उदयसिंह को दे दिया गया जबकि राव मालदेव ने चन्द्रसेन को उत्तराधिकारी मनोनीत किया था ।[2] हदोती में रणथम्भौर का किला मुगलों ने स्थायी रूप से अपने अधिकार में ले लिया ।[3] मीरात-ए अहमदी के अनुसार सिरोही की सरकार गुजरात सूबे के नाजिम को दी गयी बदले में उसको शाही सेवा के लिये 2000 सवार रखना था ।[4] लेकिन 7 साल बाद सम्राट ने आधा सिरोही जगमल जो मेवाड़ के राना प्रताप का भाई था, को ट्यूल के रूप

---

1. नुरूल हसन, मुगलों के अधीन जमींदार, मध्यकालीन भारत, पृ0 41.
2. मुहणोत नैणसी, परगना री विगत, भाग 1, पृ0 76.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 303, 338.
4. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, अंग्रेजी ﴾अनु0﴿, पृ0 226.

में दे दिया ।[1] मालवा में गढ़ के गोंड राजाओं पर विजय के बाद गढ़ का एक छोटा सा भाग वहाँ के राजपरिवार को सम्राट ने दे दिया शेष पर मुगल सम्राट अपने अधिकारियों और जागीरदारों के माध्यम से शासन चलाता था ।[2]

उपरोक्त उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि पूर्ण शाही अधिकार मुगल सम्राट के ही हाथों में थे और राजा या जमींदार उनकी कृपा पर निर्भर थे ।

मुगल सम्राटों के कुछ बड़े राजाओं के अधीनस्थों से सीधा सम्बन्ध बनाने की नीति भी प्रारम्भ की । इस प्रकार इन जमींदारों की शक्ति सीमित हुई और मुगलों को एक नया सहयोगी वर्ग मिल गया । इस नीति का सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण गढ़कटंगा के सन्दर्भ में देखा जा सकता है । वहाँ अकबर ने गढ़ के जमींदार के समर्थकों के साथ सीधे सम्बन्ध स्थापित किये । सम्राट शासकों अथवा जमींदारों के समर्थकों को सीधे शाही मनसब भी प्रदान किया करते थे ।[3]

मुगल सम्राट राजाओं अथवा जमींदारों को राजकीय नियमों के अनुसार चलने पर विवश करने में भी सफल हुये । विशेषरूप से कानून और व्यवस्था के पालन तथा आवागमन की स्वतंत्रता के सन्दर्भ में । उदाहरण के लिये जब बीकानेर के राजा सूरज सिंह ने अपने भाई दलपत को रोक रखने वालों को गिरफ्तार किया तो जहाँगीर ने उनकी रिहाई का आदेश दे दिया ।[4] ऐसे कई फरमान मिलते हैं जिनमें जमींदारों को

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 413.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 648.
3. एस0 नुरूल हसन ।मध्यकालीन भारत। मुगलों के अधीन जमींदार, पृ0 42.
4. फरमान ने 29 दिनाँक 9 अक्टूबर 1614 ई0 डिस्क्रिप्टिव लिस्ट आफ फरमान्स एण्ड निशान्स में ।बीकानेर 1962। पुरालेख निदेशालय राजस्थान द्वारा प्रकाशित ।

उनके राज्य से होकर गुजरने वाले व्यापारियों को परेशान न करने या उनसे कर न उगाहने के आदेश दिये गये । यदि उनके राज्य से गुजरते हुये सन्देशवाहक या यात्री को उत्पीड़ित किया जाता था या लूट लिया जाता था तो उन्हें अपराधी को पकड़ना होता था अन्यथा उन्हें क्षतिपूर्ति प्रदान करनी पड़ती थी ।[1] यद्यपि जमींदारों द्वारा शाही आदेशों के उल्लंघन और आने जाने वाली वस्तुओं पर अनधिकृत कर उगाही के अनेक उदाहरण मिलते हैं ।

सम्राट राजाओं या जमींदारों के गृहयुद्ध या पड़ोसी देशों के साथ युद्ध में उनकी सहायता करते थे । 1588-89 ई0 में बगलाना के मेर जी का जब उनके भाई के साथ गृहयुद्ध हुआ तो मुगल सेना उनकी सहायता के लिये गयी ।[2] 1599-1600 के बीच बरखुर्दार के बेटे अब्दुर्रहमान को उज्जैना राजा दलपत को मारने के षड्यन्त्र में बन्दी बनाया गया ।[3] इसी तरह 1603-04 ई0 में तिब्बत-ए खुर्द के राजा अलीराय के विरुद्ध भी मुगल सम्राट ने कार्यवाही की क्योंकि उसने तिब्बत-ए कलाँ के क्षेत्र पर आक्रमण किया था ।[4]

उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि अकबर के काल में शाही दृष्टि से अधीनस्थ राजाओं तथा जमींदारों की महत्ता अत्यधिक बढ़ गयी थी । अकबर के समय मुगल प्रशासन में उन पर प्रभुत्त्व स्थापित करने हेतु उनके प्रति सहृदयता सद्भाव तथा वैवाहिक सम्बन्ध बनाने की नीति अपनायी गयी । जिन राजाओं व जमींदारों ने सम्राट की अधीनता स्वीकार नहीं की उन पर आक्रमण किये गये तथा उन्हें अधीनस्थ बनाने के लिये विवश किया गया । अकबर की इन नीतियों के परिणाम दूरगामी

---

1. आई0एच0 कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ मुगल इम्पायर, पृ0 245.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 530-531.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 758.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 731, 833.

सिद्ध हुये । प्रथम नीति के परिणामस्वरूप राजा एवं जमींदार मुगल प्रशासन के अभिन्न अंग बन गये और वे निष्ठापूर्वक सम्राट तथा साम्राज्य की सेवा करने लगे । दूसरी नीति ने उद्दण्ड, विद्रोही तथा शक्तिशाली एवं स्वाभिमानी करद राजाओं या आनुवंशिक जमींदारों को विवश कर दिया कि वे अपने प्रदेश में अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग करते हुये मुगल सम्राट के अधीन रहें तथा साम्राज्य की निष्ठापूर्वक सेवा करते रहें ।

---------::0::---------

अध्याय द्वितीय

क. सूबा दिल्ली के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

ख. सूबा आगरा के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

क. सूबा दिल्ली के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

मुगल साम्राज्य सूबों में विभक्त था । अकबर के शासन में सूबों की संख्या पन्द्रह हो गई थी । जहाँगीर के शासन काल में यही स्थिति बनी रही । सूबा दिल्ली की लम्बाई पलवल से लुधियाना तक एक सौ पैंसठ कोस थी । इसका क्षेत्र सतलज नदी के किनारे तक पहुँचता था । रेवाड़ी की सरकार से कुमायूँ की पहाड़ी तक इसकी चौड़ाई एक सौ चालीस कोस तथा हिसार से खिज्राबाद तक एक सौ तीस कोस थी । इसके उत्तरपूर्व में सूबा अवध, और दक्षिण में सूबा आगरा तथा अजमेर स्थित थे एवं पूर्व में पर्वत श्रृंखलायें थीं, पश्चिम में लाहौर सूबा था ।[1]

इस सूबे में आठ सरकारें थीं, जो 232 परगनों में विभक्त थीं । इस सूबे का क्षेत्रफल दो करोड़ पाँच लाख छियालीस हजार आठ सौ सोलह (2,05,46,816) बीघा सोलह बिस्वा था । अबुल फजल ने आईने-अकबरी में इस सूबे के राजस्व का जो विवरण दिया है उसके अनुसार यहाँ से प्राप्त राजस्व साठ करोड़ सोलह लाख पन्द्रह हजार पाँच सौ पचपन (60,16,15,555) दाम (15040388 रूपये) था, जिसमें से तीन करोड़ तीस लाख पचहत्तर हजार सात सौ नौ (3,30,75,709) दाम सयूरगल था ।[2]

दिल्ली सूबे के अन्तर्गत कुमायूँ, गढ़वाल तथा कटेहर के करद राजाओं व जमींदारों का विवरण मिलता है । इस सूबे पर मुगल सत्ता सुदृढ़ रूप से स्थापित थी । कुमायूँ, गढ़वाल तथा कटेहर भी मुगल सत्ता की अधीनता मानने को विवश हुए ।

कुमायूँ

कुमायूँ राज्य की सीमा व साधनों के विषय में फरिश्ता ने लिखा है कि कुमायूँ के विशाल राज्य में अनेक सोने की खानें थीं तथा अनेक ऐसे किले थे, जिनकी मिट्टी से

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग-2, पृ0 283.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग-2, पृ0 290.

सोना निकाला जाता था। तिब्बत से लेकर सम्भल तक विशाल सुदृढ़ दुर्ग थे और वहाँ के शासकों के पास 80,000 सैनिक थे, जो मुगल सम्राटों के प्रति सदैव निष्ठावान बने रहे।[1]

रुद्रचन्द्र - सम्राट अकबर के शासन काल में कुमायूँ का एक महत्त्वपूर्ण राजा रुद्रचन्द्र था। वह 1588 ई0 में सम्राट अकबर से मिलने गया। अकबर ने उसे बहुमूल्य खिलअत, 101 घोड़े उपहार के रूप में प्रदान किये और कुछ परगने इक्ता के रूप में प्रदान किये।[2]

लक्ष्मीचन्द्र - 1597 ई0 में राजा रुद्रचन्द्र की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र लक्ष्मीचन्द्र कुमायूँ की गद्दी पर बैठा।[3] सन् 1588 ई0 में कुमायूँ के राजा रुद्रचन्द्र एवं मुगल सम्राट अकबर की भेंट के पश्चात् मुगल सम्राट जहाँगीर के शासनकाल के सातवें वर्ष तक कुमायूँ मुगल सम्बन्धों का कोई उल्लेख न तो समकालीन मुगल इतिहासकारों के ग्रन्थों में मिलता है और न ही कुमायूँ के स्थानीय ग्रन्थों में। जहाँगीर के शासनकाल के सातवें वर्ष सन 1611-12 ई0 में कुमायूँ का राजा लक्ष्मीचन्द्र एतमादुद्दौला के पुत्र शाहरुख की मध्यस्थता से सम्राट जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ।[4] जहाँगीर के सिंहासनारोहण के 6 वर्ष पश्चात तक कुमायूँ के राजा लक्ष्मीचन्द्र का मुगल सम्राट से भेंट न करना और भेंट करने के लिये उस समय के सर्वाधिक शक्तिशाली अमीर वजीर-ए-कुल ऐतमादुद्दौला की मध्यस्थता प्राप्त करने का प्रयत्न करना[5], इन दोनों तथ्यों से यह प्रतीत होता है कि लक्ष्मीचन्द्र सम्राट जहाँगीर के सम्मुख उपस्थित होने में भय

---

1. फरिश्ता, तारीख-ए-फरिश्ता, भाग 2, पृ0 420, एच0 डब्ल्यू0 वालटन, गढ़वाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 116.
2. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 143.
3. एच0जी0 वाल्टन, गढ़वाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 115.
4. जहाँगीर तुजुक-ए-जहाँगीरी अंग्रेजी (अनु0) राजर्स बेवरिज, भाग 1, पृ0 218, एस0एच0 जैदी, रेहाना जैदी, कुमायूँ मुगल सम्बन्ध, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1986, पृ0 119.
5. डा0 चन्द्रा पन्त, नूरजहाँ एण्ड हर फैमिली, पृ0 163.

का अनुभव कर रहा था । इसके दो कारण हो सकते हैं, प्रथम यह कि प्रारम्भ में लक्ष्मीचन्द्र अपने पिता रुद्रचन्द्र के समान मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं था । अतः अब तक वह मुगल दरबार में उपस्थित नहीं हुआ था द्वितीय कारण यह था कि अकबर के शासन काल के अवसान की बेला में शाहजादा सलीम के विद्रोह एवं जहाँगीर के शासन काल के प्रारम्भिक वर्षों में शाहजादा खुसरों के विद्रोह के फलस्वरूप मुगल साम्राज्य में जो अस्त-व्यस्तता एवं अनिश्चितता का वातावरण उत्पन्न हुआ था, उसका लाभ उठाकर लक्ष्मीचन्द्र ने मुगलों की अधीनता से बचना चाहा । परन्तु जब अस्त व्यस्तता की स्थिति समाप्त हो गई और मुगल साम्राज्य में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित हो गयी तो लक्ष्मीचन्द्र की अवज्ञाकारिता एवं विद्रोहात्मकता के लिए अवकाश न रह गया । सम्राट जहाँगीर ने अपने पिता द्वारा अधूरी छोड़ी गयी विजयों को पूर्ण करने के अभियान प्रारम्भ कर दिये तो लक्ष्मीचन्द्र के सम्मुख सिवाय मुगल सम्राट के सम्मुख उपस्थित होकर शाही अनुकम्पा प्राप्त करने के और कोई मार्ग न रह गया । अतः एतमादुद्दौला की मध्यस्थता से वह मुगल दरबार में उपस्थित हुआ ।[1] लक्ष्मीचन्द्र के 1611-12 ई० में मुगल दरबार में उपस्थित होने का एक अन्य कारण भी था । उसकी जानकारी श्रीनगर-गढ़वाल के राजा मानशाह के राजकवि भारत द्वारा रचित 'मानोदय' नामक काव्य से होती है । मानोदय काव्य के अनुसार श्रीनगर-गढ़वाल के राजा मानशाह सन (1591-1610) ने अपने शासनकाल के अन्तिम वर्ष सन् 1610 ई० में कुमायूँ के राजा पर आक्रमण किया । गढ़वाली सेना ने कुमायूँ के राजा की सेना को पराजित कर कुमायूँ के एक बड़े भू-भाग पर अधिकार कर लिया ।[2] इस पराजय ने कुमायूँ के राजा को मुगल सम्राट की अनुकम्पा प्राप्त करने के लिए विवश कर दिया । अतः कुमायूँ का राजा लक्ष्मीचन्द्र

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0बेवरिज, पृ0 248, एस0ए0 एच0 जैदी, रेहाना जैदी, कुमायूँ मुगल सम्बन्ध, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1986, पृ0 120.

2 रतूड़ी, गढ़वाल का इतिहास, पृ0 374.

गढ़वाली सेना के आक्रमण के तुरन्त पश्चात मुगल दरबार में उपस्थित हुआ ।[1] इस भेंटवार्ता के पश्चात सन् 1627 ई0 तक कुमायूँ-मुगल सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बने रहे क्योंकि इस काल में मुगल सेना ने कुमायूँ पर कोई सैनिक आक्रमण नहीं किया । जहाँगीर की तुजुक-ए-जहाँगीरी में उल्लिखित है कि राजा लक्ष्मीचन्द्र ने सम्राट को कर में बन्दूकें, खच्चर, शिकारी बाज, शाही कबूतर इत्यादि पक्षी, याक, कस्तूरी हिरन की खाल तथा तेन्दुओं पर लगे हुये गोश्त, खण्डा, कटार तथा अन्य अनेक वस्तुयें भिजवायीं ।[2]

<u>लक्ष्मीचन्द्र के उत्तराधिकारी</u> - लक्ष्मीचन्द्र की 1612 ई0 में मृत्यु हो गई । उसका पुत्र दिलीप चन्द्र गद्दी पर बैठा । उसके सम्बन्ध में अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है । 1625 ई0 में विजय चन्द्र कुमायूँ की गद्दी पर बैठा । अल्पव्यस्क होने के कारण वह राज्य के उत्तरदायित्व को संभालने में असक्षम था । अतएव राज्य कार्य का उत्तरदायित्व तीन व्यक्तियों सुखराम्खरकू, पीरू गोसाई और विनायक भट्ट को सौंपा गया ।[3] इन लोगों ने षडयन्त्र करके विजयचन्द्र की हत्या कर दी (1625 ई0), अब गद्दी त्रिमलचन्द्र के हाथ आई । उसके कोई पुत्र नहीं था । उसने बाजचन्द्र को, जो नील गोसाई का पुत्र था गोद ले लिया और उसे कुंअर की उपाधि दे दी । 1638 ई0 में त्रिमल चन्द्र के पश्चात बाजचन्द्र उसका उत्तराधिकारी बना ।[4]

<u>गढ़वाल</u> - राजा लक्ष्मीचन्द्र के समय में गढ़वाल पर राजा महीपति शाह का शासन था । उसके बारे में ऐतिहासिक स्रोतों से अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है । उसने अपनी राजधानी देवलगढ़ से श्रीनगर स्थानान्तरित कर दी । उसने गढ़वाल में अपना शासन सुदृढ़ किया । महीपति शाह का उत्तराधिकारी पृथ्वी शाह था ।

---

1. एस0एच0 जैदी, रेहाना जैदी, कुमायूँ-गढ़वाल सम्बन्ध, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1986, पृ0 120.
2. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 118.
3. एच0जी0 वाल्टन, अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 175.
4. एच0जी0 वाल्टन, गढ़वाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 175.

पृथीशाह के पश्चात मेदिनी शाह गद्दी पर बैठा ।[1] "हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ हिमालयन स्टेट्स" नामक ग्रन्थ के लेखक प्रो0 सुख देव सिंह चरक के अनुसार सन् 1616-1621 ई0 के मध्य मुगलसेना ने श्रीनगर गढ़वाल राज्य पर आक्रमण किया । इस आक्रमण के समय सिरमौर के समकालीन राजा कर्मप्रकाश ने मुगल सेना का साथ दिया ।[2] बहुत सम्भव है कि कुमायूँ के राजा लक्ष्मीचन्द्र ने सन् 1611-12 में मुगल सम्राट से भेंटकर श्रीनगर गढ़वाल के राजा को दण्डित करने की प्रार्थना की हो और उसी के फलस्वरूप मुगल सेना ने श्रीनगर के राजा के विरुद्ध यह सैनिक अभियान किया हो, क्योंकि यह अभियान कुमायूँ के राजा के मुगल दरबार की यात्रा के कुछ वर्षों पश्चात किया गया था । इस अभियान के पश्चात श्रीनगर गढ़वाल का राजा श्याम शाह मुगल दरबार में उपस्थित हुआ ।[3] सम्भवत: इसी अवसर पर सम्राट जहाँगीर ने श्रीनगर गढ़वाल के राजा श्याम शाह को यह भी निर्देश दिया कि वह कुमायूँ के इलाकों में अतिक्रमण न करे । यही कारण है कि श्यामशाह के काल में गढ़वाल एवं कुमायूँ के बीच किसी संघर्ष का उल्लेख नहीं मिलता ।[4]

शाहजहाँ के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में कुमायूँ मुगल सम्बन्धों का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं प्राप्त होता । शाहजहाँ के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में मुगल साम्राज्य एवं कुमायूँ के मध्य स्थित तराई क्षेत्र पर कटेहरियों ने अधिकार कर लिया था ।[5] इन कटेहरियों ने मुगल साम्राज्य एवं कुमायूँ के मध्य एक सम्पर्क रोधी की भूमिका निभाते हुये उनके मध्य प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित नहीं होने दिया । यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही । मुगल सेनानायक रुस्तम खाँ दक्कनी द्वारा

---

1. एच0जी0 वाल्टन, गढ़वाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 116-118.
2. प्रो0 सुखदेव सिंह चरक, हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ हिमालयन स्टेट्स, भाग 2, पृ0 182.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी अनु0। बेवरिज, भाग 1, पृ0 107.
4. एस0ए0एच0 जैदी, रेहाना जैदी, कुमायूँ मुगल सम्बन्ध, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1986, पृ0 120-121.
5. एच0जी0 वाल्टन, अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 177.

कटेहरियों का दमन कर दिये जाने के पश्चात कुमायूँ एवं मुगल साम्राज्य के बीच पुन: प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हो गया ।[1]

ऐसी स्थिति में बाज-चन्द्र ने मुगल सम्राट शाहजहाँ की सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया । अत: 1654-55 ई0 में जब सम्राट शाहजहाँ ने गढ़वाल जीतने की योजना बनायी तो बाजचन्द्र सम्राट की सेना के साथ गढ़वाल के विरुद्ध मोर्चे पर गया। सन् 1654-55 ई0 में जब शाहजहाँ ने दूसरी बार गढ़वाल अधीनीकरण की योजना बनायी तब भी बाजचन्द्र शाही सेना के साथ गया । सम्राट शाहजहाँ ने कुमायूँ के जमींदार बाजचन्द्र को एक खिलअत तथा रत्नजड़ित खंजर देकर सम्मानित किया ।[2]

कुमायूँ के राजा बाज बहादुर चन्द ने सन् 1654-55 ई0 में सम्राट शाहजहाँ को गढ़वाल अधीनीकरण की योजना में जो सैनिक सहयोग दिया था उससे स्पष्ट है कि वह मुगलों की अधीनता में था । वह सन् 1656 ई0 में मुगल दरबार में भी उपस्थित हुआ । शाहजहाँनामा के अनुसार शाहजहाँ के शासनकाल के 30वें वर्ष (सन् 1656-57 ई0) में कुमायूँ का जमींदार बाज बहादुर चन्द मुगल दरबार में उपस्थित हुआ । वह अपने साथ दो हाथी तथा अपने राज्य की अनेक दुर्लभ वस्तुयें सम्राट को नजर में देने के लिये ले आया । सम्राट ने 100 तुर्की तथा कच्छी घोड़े, जमधर, तलवार, ढाल, मीनाकारी की हुयी जड़ाऊ सरपेच, मोतियों की माला, दस्तबन्द इत्यादि उसे उपहार में प्रदान किये । कुमायूँ का प्रदेश भी उसे प्रदान कर दिया गया, इसके अतिरिक्त बारह लाख (12,00,000) दाम जमा के दो परगने भी उसको दिये गये । उसे बहादुर की उपाधि भी दी गयी ।[3] कुमायूँ के प्रदेश से

---

1. एस0ए0एच0 जैदी, रेहाना जैदी, कुमायूँ मुगल सम्बन्ध, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1986, पृ0 121.
2. एस0ए0एच0 जैदी, रेहाना जैदी, कुमायूँ मुगल सम्बन्ध, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1986, पृ0 121, इनायत खाँ, शाहजहाँ नामा, पृ0 75, इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, हिन्दी (अनु0), भाग 7, पृ0 57-77.
3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, हिन्दी (अनु0) मनोहर सिंह राणावत एवं रघुवीर सिंह, पृ0 27, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 655.

तात्पर्य कुमायूँ की तराई में बसा बाजपुर नगर आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है । यह इंगित करता है कि बाज बहादुर चन्द ने 1656-57 ई0 में तराई का प्रदेश पुन: प्राप्त कर लिया था ।[1] नि:सन्देह सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में कुमायूँ-मुगल सम्बन्ध अत्यधिक मधुर हो गये थे ।[2]

कटेहर

सूबा दिल्ली में कटेहर के अन्तर्गत मुगल साम्राज्य की बदायूँ तथा सम्भल की सरकारें थीं ।[3] कटेहर में कटेहरिया राजपूतों की जमींदारी थीं । राजपूतों की शक्ति का प्रमुख केन्द्र शाहबाद, रामपुर, कबर (बरेली) और अनोला था । कटेहरिया राजपूत अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर हमेशा ही प्रशासन के विरुद्ध विद्रोह करते रहते थे ।[4] सन् 1624 ई0 में राजा रामसुख कटेहरिया के अत्याचार एवं तराई की विजय से सम्राट जहाँगीर अप्रसन्न हो गया, अत: रुस्तम खान दक्किनी द्वारा उसका दमन किया गया ।[5] शाहजहाँ के शासन काल में राजा राम सुख कटेहरिया के

---

1. एच0जी0 वाल्टन, अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 177, एस0ए0एच0 जैदी, रेहाना जैदी, भारतीय इतिहास कांग्रेस, प1986, पृ0 122.
2. एस0एस0 नेगी, मुगल गढ़वाल रिलेशन्स ए हिस्टोरिकल स्टडी, 1500-1707 ए0डी0 भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1985, पृ0 340.

टिप्पणी : औरंगजेब के समय में मुगल गढ़वाल सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न हो गया और सम्राट औरंगजेब को गढ़वाल के विरुद्ध सेना भेजनी पड़ी । सन् 1678 ई0 में बाज बहादुर चन्द की मृत्यु हो गयी । एच0जी0 वाल्टन, अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 178.

3. इकबाल हुसैन, पैटर्न आफ अफगान सेटिलमेन्टस इन इण्डिया इन द सेवेन्टींथ सेन्चुरी भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1978, पृ0 329.
4. कटेहरिया राजपूत मुस्लिम शासन के विरुद्ध हमेशा ही विद्रोह करते रहते थे । विस्तृत विवरण के लिये देखिये मिनहाजुस्सिराज तबकात-ए-नासिरी, अंग्रेजी (अनु0) भाग 1, काबुल 1963, पृ0 488, बर्नी तारीख-ए-फिरोजशाही, पृ0 57-58, फरिश्ता तारीख-ए-फरिश्ता, पृ0 148-49, यहिया की तारीख-ए-मुबारकशाही, पृ0185-87.

मुगलों के विरुद्ध विद्रोह का वर्णन मिलता है । यद्यपि 1631 ई0 तक इस विद्रोह को दबा दिया गया किन्तु 1637 ई0 में उसने पुन: विद्रोह कर दिया । इस विद्रोह का भी मुगलों ने दमन कर दिया । राजा रामसुख कटेहरिया ने इस पराजय के पश्चात जंगलों में आश्रय लिया और वहाँ लूटपाट करना शुरू कर दिया । इससे अराजकता व्याप्त होने लगी । यह कटेहरिया राजपूत बहुत शक्तिशाली हो गये थे । उन्हें गूजर, अहीर एवं अन्य राजपूतों से सहायता प्राप्त हो रही थी । उनकी शक्ति के प्रमुख केन्द्र नउ, नाहर, लोई खेरा, बनजारी, आदि थे ।[1] शाहजहाँ ने बहादुर खाँ रुहेला[2] को विद्रोहियों का दमन करने के लिये भेजा । दिलेर खाँ बहादुर खाँ रुहेला के छोटे भाई ने कटेहरिया व अन्य लोगों को युद्ध में पराजित किया ।[3] कटेहर में सीता सिंह नामक जमींदार के विद्रोह का भी वर्णन मिलता है ।[4] इस विद्रोह के दमन के उपरान्त बहादुर खाँ रुहेला तथा दिलेर खाँ ने रुहेला अफगानों को स्वदेश से बुलाकर शाहजहाँपुर से लेकर मलीहाबाद तथा रामपुर तक बसा दिया । जिसके कारण राजपूत जमींदारों की इस प्रदेश में शक्ति क्षीण हो गयी ।

(ख) सूबा आगरा के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा आगरा की लम्बाई छतमपुर से दिल्ली की ओर पलवल तक 175 कोस थी । यह कन्नौज से मालवा तक विस्तृत था । इसके पूर्व में छतमपुर, उत्तर में गंगा नदी, दक्षिण में चन्देरी और पश्चिम में पलवल स्थित था ।[5] मुंशी देवी प्रसाद कृत

---

1. सबीहुद्दीन, तारीख-ए-शाहजहाँपुर, लखनऊ, 1932, पृ0 10-11, इकबाल हुसैन, पैटर्न आफ अफगान सेटिलमेन्टस इन इण्डिया इन द सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1978, पृ0 330.
2. कन्नौज का जागीरदार
3. सबीहुद्दीन, तारीख-ए-शाहजहाँपुर, पृ0 10-11, इकबाल हुसैन, अफगान सेटिलमेन्टस इन दोआब, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1978, पृ0 330.
4. मुहम्मद सादिक, तारीख-ए-शाहजहाँनी, पृ0 259, इकबाल हुसैन, दअफगान सेटिलमेन्टस इन दोआब, भारतीय इतिहास कांग्रेस, पृ0 331.
5. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 190.

शाहजहाँनामा के अनुसार सूबा आगरा के पूर्व में बिहार और बंगाल, पश्चिम में अजमेर और थट्टा, उत्तर में दिल्ली, पंजाब और काबुल तथा दक्षिण में मालवा और दक्षिण देश था ।[1] इस सूबे के अन्तर्गत 13 सरकारें तथा 203 परगने थे । यहाँ का क्षेत्रफल दो करोड़ अठहत्तर लाख बासठ हजार एक सौ नवासी (2,78,62,189) बीघा, अठारह (18) बिस्वा था । यहाँ से प्राप्त राजस्व चौवन करोड़ बासठ लाख पचास हजार तीन सौ चार (54,62,50,304) दाम (1,36,56,257.96 रूपये) था । इसमें से एक करोड़, इक्कीस लाख पाँच हजार सात सौ तीन। 1,21,05,703) दाम (3,02,442.9 रूपये) सयूरगल था ।[2]

सूबा आगरा में बुन्देलों, भदौरियों तथा बड़गूजरों आदि का विवरण मिलता है, जो (करद) राजा या जमींदार की श्रेणी में आते हैं ।

ओरछा

ओरछा राज्य बुन्देलखण्ड क्षेत्र के मध्यभाग में स्थित था । ओरछा राज्य की राजधानी ओरछा नगर थी जिसकी स्थापना बुन्देला शासकों ने की थी । अतएव राजधानी ओरछा नाम पर ही यह ओरछा राज्य कहलाया । यह नगर बेतवा नदी के बायें किनारे पर 25.21' उत्तरी अक्षांश और 78.42' पूर्वी देशान्तर पर स्थित था ।[3]

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 321.

2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) भाग 2, पृ0 193.

3. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य 1531-1736, शोध-प्रबन्ध, रीवां विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 1.

सम्राट अकबर के शासनकाल में मुगल-बुन्देला सम्बन्ध

मुगल सम्राट अकबर के शासन काल में ओरछा का सबसे महत्त्वपूर्ण राजा मधुकर बुन्देला था। बुन्देलखण्ड के स्थानीय इतिहास तथा राज्य गजेटियर से यह ज्ञात होता है कि राजा मधुकर के बुन्देला राज्य में मउ, महोबा, पन्ना, हरासपुर, डूंगरपुर, कटरा, मेगावान और कुन्द्रा के प्रदेश थे। इसके अतिरिक्त पिछोर, क्योआ, कन्छ, पहाड़िया, गौड, शिवपुर या सिपरी भी 16वीं शदी के अन्त में बुन्देला राज्य में सम्मिलित थे। राजा मधुकर ने इन प्रदेशों पर अधिकार के साथ-साथ अपने क्षेत्र का विस्तार नरवर, बयानवान, इरिज और करेजा के क्षेत्र तक किया था।[1]

राजा मधुकर और मुगल सम्राट अकबर के मध्य निरन्तर संघर्ष का उल्लेख मिलता है। सम्राट अकबर ने सन 1573-74 ई0 में बारहा के सैय्यदों के नेतृत्व में तथा 1578-79 ई0 में सादिक खाँ, राजा आसकरन और कोटा राजा उदयसिंह के नेतृत्व में एक अभियान राजा मधुकर बुन्देला के विरुद्ध भेजा। परिणामस्वरूप राजा मधुकर ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। उसने अपने भतीजे सोमचन्द्र के हाथों मुगल सम्राट के पास पेशकश भेजा तथा कुछ समय उपरान्त वह स्वयं सम्राट से मिलने गया।[2] इसके पश्चात 7-8 वर्ष तक मधुकर बुन्देला तथा मुगलों के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण रहे। सन् 1586-87 ई0 में राजा मधुकर ने मुगलों के दक्षिण अभियान में मुगलों को सहायता नहीं प्रदान की, अतः मुगल सम्राट ने उसके विरुद्ध अभियान भेजा। राजा मधुकर पराजित हुआ व भाग गया।[3] सन् 1591-92 ई0 में राजा मधुकर शहजादा मुराद के मालवा अभियान पर जाते समय उससे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिला। इससे शहजादा मुराद राजा मधुकर से रूष्ट हो गया। उसने अपनी सेना के साथ राजा मधुकर बुन्देला

---

1. द सेन्ट्रल इण्डिया स्टेट गजेटियर सीरीज ईस्टर्न स्टेट्स बुन्देलखण्ड डिवीजन (लखनऊ) 1907, भाग 6-अ, पृ0 17, अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 230.

2. अबुलफजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 77, 209, 210, 261.

3. अबुलफजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 526, 527.

के प्रदेश पर आक्रमण कर दिया, किन्तु कुछ ही समय पश्चात राजा मधुकर बुन्देला की मृत्यु हो गयी । सन 1592-93 ई0 राजा मधुकर बुन्देला का पुत्र रामचन्द्र शहजादा मुराद से मिलने गया । उसने एक बड़ी धनराशि सम्राट को पेशकश के रूप में प्रदान की ।[1] कुछ समय पश्चात राजा मधुकर का दूसरा पुत्र रामसिंह सम्राट अकबर से मिलने गया । सम्राट ने रामसिंह को 500 जात व सवार का मनसब प्रदान किया ।[2] 1602-03 ई0 में उसे राय रायान के साथ वीरसिंह देव बुन्देला के विरुद्ध अभियान में भी भेजा गया ।[3]

अकबर के शासन काल में वीरसिंह देव बुन्देला की गतिविधियाँ

मधुकर शाह की मृत्यु के पश्चात् रामशाह ओरछा की गद्दी पर बैठा । इससे उसके भाई इन्द्रजीत सिंह, प्रताप राव और वीरसिंह देव उसके विरुद्ध हो गये । उन्होंने खजुड़ा और बड़ौनी के दुर्गों में अपनी सेना सुसंगठित करके आस-पास के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया ।[4] वीर सिंह देव की बड़ौनी जागीर में मात्र 17 गाँव थे इसके कारण वह असंतुष्ट बना रहा ।[5] वीरसिंह देव अपने भाइयों में सबसे अधिक उदीयमान था । उसने अपने पौरूष एवं वीरता से पवाया, तोमरगढ़, बेरछा, करैरा हथनौटा, भाण्डेर एवं एरच को विजित कर लिया ।[6] नरवर और कैलास तक उसकी प्रभुता स्थापित हो गयी । उसने मैना और जाटों को भी हराया । हथनौटा के

---

1. निजामुद्दीन अहमद, तबकात-ए-अकबरी, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 2, पृ0 413, अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 3, पृ0 628.

2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी।अनु0। एच0एस0 जैरेट, भाग 1, पृ0 163.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 813.

4. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, 1531-1736 ई0, शोध-प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 78.

5. डा0 भगवान दास गुप्ता, लोकप्रिय शासक वीरसिंह देव प्रथम, टीकमगढ़, दर्शन मंगल प्रभात, पृ0 31.

6. ओरछा स्टेट गजेटियर, पृ0 20.

बाधजंग जागड़ा को मार डाला तथा मुगल सरदार हसन खाँ बिना युद्ध किये ही भाडेर से भाग गया । एरच के ईजी खाँ को भी उसने पराजित कर दिया । वीर सिंह देव की विजय से मुगल भयभीत हो गये, रामशाह भी चिन्तित हो गया । मुगल सम्राट अकबर ने रामशाह को वीर सिंह देव को नियंत्रण में रखने का आदेश दिया, किन्तु वीर सिंह देव पर नियन्त्रण रखना रामशाह की सामर्थ्य के बाहर था अतः सम्राट अकबर ने सन् 1592 ई० में दौलत खाँ के नेतृत्व में शाही सेना भेजी तथा रामशाह को इस सेना की सहायता करने का आदेश दिया, किन्तु मुगलों का यह अभियान असफल रहा । अतः सम्राट ने 1594 ई० में अबुल फजल को दुर्गादास व पंडित जगन्नाथ के साथ तथा सन् 1600 ई० में संग्राम शाह[1] को शाही सेना के साथ बड़ौनी पर आक्रमण के लिए भेजा, किन्तु यह दोनों ही अभियान असफल रहे ।[2] उसी समय सम्राट अकबर और उसके पुत्र सलीम में मतभेद हो गया । सलीम यह समझता था कि अबुल फजल सम्राट अकबर को उसके विरुद्ध कान भरता है तथा शहजादा खुसरों को उसके स्थान पर सिंहासन पर बैठाना चाहता है अतः उसने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । शहजादा सलीम को अबुल फजल से बड़ी घृणा थी ।[3] वीर सिंह देव ने इस वैमनस्य एवं घृणा का लाभ उठाया । उसने सलीम से मित्रता कर ली । शहजादा सलीम ने वीर सिंह देव पर अबुल फजल को मारने का कार्य सौंपा । वीर सिंह देव ने इस कार्य को इस शर्त पर करने का वायदा किया कि जब सलीम भारत का सम्राट बने तो वीर सिंह देव को ओरछा का राजा बना दें ।[4] वीर सिंह देव ने अपनी सेना के साथ 12 अगस्त 1602 ई० में आक्रमण किया और अबुल फजल का सिर धड़ से अलग कर दिया ।[5]

---

1. यह वीर सिंह देव का भतीजा और रामशाह का पुत्र था ।
2. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य (1531-1736) शोध प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ० 79.
3. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 6, हिन्दी (अनु०), मथुरा लाल शर्मा, पृ० 2.
4. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य (1531-1736) शोध-प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ० 81.
5. मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ० 9, इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 6, हिन्दी (अनु०) मथुरालाल शर्मा, पृ० 82.

वीर सिंह देव चम्पत राय के साथ अबुल फजल का सिर लेकर सलीम के पास पहुँचा, सलीम उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने वीर सिंह देव को उसका राज्य दिलाने का वचन दिया ।[1] शीघ्र ही सलीम ने मोतियों से सजी एक सोने की थाली में तिलक भेजा और वीर सिंह देव को राजा घोषित किया, कीमती जवाहरातों से जड़ी हुयी माला, छाता, तलवार, चँवर तथा डंका भेंट में उसे दिया गया । चम्पत राय बड़गूजर को भी शाही सिलअत दी गयी ।[2] शहजादा सलीम ने वीर सिंह देव को अपने वायदे के अनुसार रामशाह के जीवित रहते ही ओरछा का राजा बना दिया ।[3] इससे अकबर वीर सिंह देव से बड़ा रूष्ट हुआ । उसने खड्गराय तथा संग्रामशाह को वीर सिंह देव को मारने के लिए भेजा किन्तु खड्गराय का वध वीर सिंह ने कर दिया तथा संग्रामशाह वीर सिंह देव से मिल गया । इससे अकबर और क्रोधित हुआ । उसने अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व में एक सेना वीर सिंह देव के विरूद्ध भेजी किन्तु इस युद्ध में भी वीर सिंह देव की ही विजय हुयी । इस प्रकार सम्राट अकबर ने दो बार वीर सिंह देव के विरूद्ध सेना भेजी, किन्तु दोनों ही बार मुगल सेना पराजित हुयी । सन् 1604 ई0 में सम्राट अकबर ने राजा आसकरन को सेना सहित वीर सिंह देव के विरूद्ध भेजा, किन्तु वह भी पराजित हो गया । रामदास कछवाहा ने भी वीर सिंह देव का दमन करने की चेष्टा की किन्तु वह भी असफल रहा ।[4]

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव, बुन्देलों का इतिहास, पृ0 32.

2. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलों का इतिहास, पृ0 32, विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य 1531-1738, शोध-प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 82.

3. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग 3, अंक 4, पृ0 435, पं0 गोरे लाल तिवारी, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ0 134.

4. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध-प्रबन्ध, 1987, पृ0 87,90,91.

<u>सम्राट जहाँगीर एवं वीर सिंह देव बुन्देला</u>

24 अक्टूबर 1605 ई0 को शहजादा सलीम जहाँगीर के नाम से सम्राट बना। उसने वीर सिंह देव को आगरा बुलाया तथा ससम्मान उसे बुन्देलखण्ड का राजा बना दिया साथ में उसने उसे बहुमूल्य पारितोषिक एवं तीन हजारी मनसब भी प्रदान किया।[1] रामशाह को गद्दी से पदच्युत कर दिया गया। 1606 ई0 में रामशाह को गिरफ्तार कर लिया गया और उसकी पुत्री से जहाँगीर ने विवाह किया।[2] जिसके बदले में जहाँगीर ने उसे तीन लाख रूपये की बार [ललितपुर, उ0प्र0] की जागीर देकर मुक्त कर दिया। उस समय से रामशाह ओरछा छोड़कर पुत्र और पौत्रों सहित बार चले गये। उसने बार में एक दुर्ग की आधारशिला रखी तथा एक सुन्दर सरोवर बनवाया।[3]

सम्राट ने अपने शासन काल के तीसरे वर्ष उसे एक विशेष खिलअत और घोड़ा प्रदान किया और उसे महावत खाँ के साथ राणा के विरुद्ध भेजा, चौथे वर्ष खानेजहाँ के साथ दक्षिण भेजा गया। 7वें वर्ष उसका मनसब बढ़ाकर 4000 जात व 2200 सवार कर दिया गया व एक जड़ाऊ तलवार भेंट में दी गयी।[4] 8वें वर्ष उसे शहजादा खुर्रम के साथ राणा अमर सिंह का दमन करनेके लिये नियुक्त किया गया। 10वें वर्ष उसे एक घोड़ा उपहार में प्रदान किया गया।[5] 14वें वर्ष शहजादा खुर्रम के साथ दक्षिणियों

---

1. मुंशी देवीप्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 35, ब्रजरत्नदास मासिर-उल-उमरा, भाग 1, पृ0 396, जहाँगीर तुजुक-ए-जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 24, अबुल फजल, आईने-अकबरी, अं0 [अनु0], एच0एस0 जैरेट, पृ0 546, एम0अतहर अली, द आपरेटस आफ मुगल इम्पायर, पृ0 42.
2. मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 112.
3. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य 1531-1738, शोध प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 97, झाँसी डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 195.
4. एम0 अतहर अली, द आपरेटस आफ द इम्पायर, पृ0 52, मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 147, जहाँगीर तुजुक-ए-जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 204, प्रो0 राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटल्स, अण्डर द ग्रेट मुगल्स, पृ0 32.
5. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 280, प्रो0 राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटिल्स अण्डर द ग्रेट मुगल्स, पृ0 32.

के विरुद्ध युद्ध में बड़ी वीरता दिखायी । इस वर्ष सम्राट ने उसका मनसब बढ़ाकर 5000 5000 कर दिया । 18वें वर्ष सुल्तान परवेज के साथ उसे शाहजहाँ का पीछा करने के लिये नियुक्त किया गया ।[1] इस समय ओरछा नरेश वीर सिंह देव के ओरछा राज्य की सीमा नर्मदा से यमुना व टोंस से सम्बल तक थी । जिसमें 81 परगने और 1 लाख, पच्चीस हजार (1,25,000) गाँव थे, जिसकी आय दो करोड़ रूपये थी । उस समय वीर सिंह देव को जैसा ऐश्वर्य व वैभव प्राप्त था वह किसी हिन्दुस्तानी राजा को उस समय नहीं प्राप्त हुआ था ।[2] 22वें वर्ष 1627 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[3]

वीर सिंह देव ने अपने स्थापत्य के अनूठे आदर्श स्थापित किये जो बुन्देलखण्ड में ही नहीं, बल्कि भारत में अनूठे और बेजोड़ थे । उसने भारत और उसके बाहर 52 स्थापत्यों की नींव डाली । उसने करोड़ों रूपये लगाकर बुन्देलखण्ड के विभिन्न भागों में किले, महल, बावड़ियाँ, तालाब, स्नानाघाट एवं बाग-बगीचों का निर्माण करवाया । ओरछा का जहाँगीर महल, दतिया महल, गढ़कटार महल, वीर सागर कोठी, कूच की गढ़ी, काशी की हवेली आदि 15 महलों का निर्माण उसने कराया था । उसने झाँसी का किला एवं देवदुर्ग, दिनारा, धामोनी का किला, करेरा का किला, गढ़कटा का किला, गढ़मउ का किला एवं दतिया का किला बनवाया था । ओरछा के चतुर्भुज मन्दिर, धूम शिवालय, लक्ष्मी नारायण मन्दिर आदि अनेक मन्दिर, सरोवर, घाट व बावड़ी का निर्माण भी वीर सिंह देव ने कराया था ।[4]

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी (अनु0), ब्रजरत्नदास, भाग 1, पृ0 397, एम0एतहर अली, द आपरेटस आफ इम्पायर, पृ0 79.
2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी (अनु0), ब्रजरत्नदास, भाग 1, पृ0 397,
3. ब्रजरत्न दास मासिर-उल-उमरा, भाग 1, पृ0 397.
4. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 101-112.

वीर सिंह देव की तीन शादियाँ हुयी थीं, उसकी प्रथम महारानी अमृत कुंवरि से उसके पाँच पुत्र - जुझार सिंह, पहाड़ सिंह, नरहरदास, बेनीदास, तुलसीदास उत्पन्न हुए । उसकी द्वितीय महारानी गुमान कुँअरि से उसके चार पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुयी - दीवान हरदौल, भगवन्तराय, चन्द्रभान, किसन सिंह व पुत्री कुन्ज कुँअरि । वीरसिंह देव की तृतीय महारानी पंचम कुँअरि से उसके तीन पुत्र - बाघराज, मोधोसिंह व परमानन्द उत्पन्न हुये ।[1]

जुझार सिंह बुन्देला

1627 ई0 में वीर सिंह देव की मृत्यु के पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र जुझार सिंह ओरछा की गद्दी पर आसीन हुआ ।[2] राज्यारोहण के समय उसकी आयु 40 वर्ष थी । जुझार सिंह के राज्य के निकटवर्ती राजा और सूबेदार उसके विरुद्ध विद्रोह करने लगे, क्योंकि वीर सिंह देव ने अपनी शक्ति एवं पराक्रम से सबको दबा रखा था अतः उसकी मृत्यु के पश्चात इन राजाओं को विद्रोह करने का अवसर मिल गया । जुझार सिंह के 10 भाई थे, उसने अपने सभी भाइयों को जागीरें प्रदान की थीं - 1. पहाड़सिंह को टेहरी की जागीर दी थी । पहाड़सिंह अपनी वीरता एवं पराक्रम के लिये प्रसिद्ध था उसे 4 फरवरी 1628 ई0 को शाहजहाँ द्वारा 2000/1200 सवार का मनसब मिला था ।[3] कालान्तर में उसका मनसब 3500/2000 सवार कर दिया गया।[4]

---

1. विष्णुकुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध-प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 98-100.

2. पं0 कृष्णदास, बुन्देलखण्ड का इतिहास, ओरछा खण्ड, पृ0 121, विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 132, बनारसी प्रसाद, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 77, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 149, शाहजहाँनामा, मुंशी देवी प्रसाद, पृ0 49.

3. मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 15.

4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 50, मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 56.

2. नरहरिदास को धामौनी की जागीर प्रदान की गयी थी उसमें महावरा, मदनपुर एवं सागर का क्षेत्र सम्मिलित था । इस जागीर से एक लाख रूपया वार्षिक आय होती थी । नरहरिदास को सम्राट शाहजहाँ ने 500/200 सवारों का मनसब प्रदान किया था ।[1] 3. तुलसीदास को गढ़ की एक लाख रूपया वार्षिक आय की जागीर दी । 4. बेनीदास को कोंच तथा जैतपुरा की जागीर प्रदान की । शाहजहाँ ने उसे 500/200 का मनसब प्रदान किया था । 5. हरदौल को बड़गाँव की एक लाख रूपया वार्षिक आय की जागीर दी । इस जागीर में चिरगाँव, टोड़ी, फतेहपुर, धुमरई, बिजना, पंका, पहाड़ी, पसराई, दिगौड़ा एवं वनगाँव के क्षेत्र सम्मिलित थे। 6. भगवान राय को बड़ौनी की जागीर तथा दतिया का महल राजा वीर सिंह देव ने प्रदान किया था । शाहजहाँ ने उसे 1000/600 का मनसब प्रदान किया । 7. चन्द्रभान को एक लाख रूपया वार्षिक आय की गरौठा के पास ककरवई जागीर प्राप्त हुयी । सम्राट शाहजहाँ ने उसे 1500/800 का मनसब प्रदान किया । 8. बाघराज को निवाड़ी के पास टहरौली की एक लाख रूपये वार्षिक आय की जागीर प्रदान की। 9. किशनसिंह को एक लाख रूपया वार्षिक आय की जतारा परिक्षेत्र में देवराहा की जागीर दी । 10. माधवसिंह को धसान परिक्षेत्र में एक लाख रूपया वार्षिक आय की जागीर प्रदान की, यह जागीर कोठर की जागीर के नाम से प्रसिद्ध थी ।[2] इस प्रकार ओरछा राजा जुझार सिंह बुन्देला ने अपने भाइयों को ओरछा राज्य में स्थित दूर दूर स्थानों पर जागीरें दी जिससे प्रथम तो गृहकलह उत्पन्न नहीं हो सका, दूसरे राज्य की सुरक्षा-व्यवस्था में भी सहायता मिली, क्योंकि प्रत्येक भाई जागीरदार आपत्ति के समय संयुक्त होकर राज्य की सुरक्षा का दायित्व सँभाल सकते थे । सम्राट

---

1. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध-प्रबन्ध, 1987, पृ0 133. मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 12.

2. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध-प्रबन्ध, 1987, पृ0 136, मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 18, 20, 25.

जहाँगीर की मृत्यु के समय जुझार सिंह बुन्देला बुन्देलखण्ड के शक्तिशाली जमींदारों में से था। उसके अन्तर्गत बुन्देलखण्ड का विशाल भू-भाग राजस्व वाला प्रदेश तथा सैनिक साधन थे। मुगल सम्राट शाहजहाँ 4 फरवरी, 1628 ई० को आगरा में सिंहासनारूढ हुआ। 10 अप्रैल, 1628 ई० को जुझार सिंह बुन्देला शाहजहाँ से मिलने आगरा आया, उसने सम्राट को एक हाथी और 1000 मुहरें भेंट में दी।[1] सम्राट शाहजहाँ भी जुझार सिंह से अति प्रसन्न हुआ। उसने उसे जड़ाऊ फूल कटारें, नक्कारे और निशान प्रदान किये।[2] जुझार सिंह को 27 फरवरी, 1628 ई० को ही 4000/4000 का मनसब प्राप्त हो चुका था।[3] कुछ ही समय पश्चात सम्राट शाहजहाँ ने आदेश दिया कि वीर सिंह देव के अनुचित लाभों की छानबीन की जाये। बनारसी प्रसाद सक्सेना के अनुसार जुझार सिंह बुन्देला 11 जून, 1628 ई० को आगरा से ओरछा भाग गया। उसके भागने का प्रमुख कारण यह था कि जब वह सम्राट से मिलने आगरा आया था तो राज्य का प्रबन्ध विक्रमाजीत को सौंप गया था। विक्रमाजीत घमण्डी और निर्दयी प्रवृत्ति का व्यक्ति था, इस कारण राज्य के अनेक कर्मचारी उससे दुःखी थे, उसके कुकृत्यों की सूचना सम्राट को मिल गयी थी। सम्राट जुझार सिंह से इसकी पूँछ-ताछ करता इससे डरकर जुझार सिंह भाग गया। शाहजहाँ ने उससे रूष्ट होकर 2700 सवार 6000 पैदल बन्दूकची और 1500 बेलदार जुझार सिंह को पकड़ने के लिये

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 78.
2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, हिन्दी [अनु0], रघुबीर सिंह मनोहर सिंह राणावत, पृ० 51, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 78, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 149.
3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 51, रघुबीर सिंह मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ० 49, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 78, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 1, अंग्रेजी [अनु0], पृ० 756, लाहौरी बादशाहनामा, भाग, पृ० 216, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 1, पृ० 264, 269, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 149.

ओरछा भेजे ।[1] खानखाना 5 दिसम्बर, 1628 ई0 को ग्वालियर से ओरछा की ओर चला गया और खाने जहाँ लोदी नरवर से गढ़कटार आया । अब्दुल्ला खाँ भी कालपी से एरच का किला लेते हुये ओरछा के पास तक आया । इस स्थिति में राजा जुझार सिंह ने महावत खाँ को पत्र लिखा कि मेरा अपराध क्षमा कर दो अब उम्र भर मैं दरबार में रहकर बन्दगी करूँगा ।[2] महावत खाँ की सिफारिश पर सम्राट शाहजहाँ ने जुझार सिंह का अपराध क्षमा कर दिया और परस्पर मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो गये । बनारसी प्रसाद सक्सेना के अनुसार महावत खाँ जुझार सिंह को आगरा ले गया था । उसने सम्राट को 15 लाख रूपया 1000 मुहरें और 40 हाथी उपहार में प्रदान किये ।[3] सम्राट शाहजहाँ ने भी जुझार सिंह से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करते हुये उसे उसका पूर्व पद प्रदान कर दिया ।[4] परन्तु शाहजहाँ ने ओरछा राज्य के पश्चिमोत्तर भाग के एरच इलाका की कुछ भूमि लेकर खानेजहाँ, अब्दुल्ला खाँ, रशीद खाँ, सैय्यद मुजफ्फर खाँ और पहाड़ सिंह में विभक्त कर दी ।[5] सम्राट शाहजहाँ तथा जुझार सिंह के मध्य यह भी तय हुआ था कि जुझार सिंह अपने 2000 घुड़सवार और 2000 पैदल सैनिक लेकर शाही सेना के साथ दक्षिण जायेगा ।[6] जुझार सिंह खाने जहाँ के दमनार्थ आजम खाँ के साथ गया । मुगल झण्डे के नीचे वह वीरता

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, हिन्दी (अनु0), रघुबीर सिंह मनोहर सिंह राणावत, पृ0 53, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 81.
2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, हिन्दी (अनु0), रघुबीर सिंह मनोहर सिंह राणावत, पृ0 53.
3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 756, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 281, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 54, बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ डेल्ही, पृ0 82, मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 1, पृ0 756, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 150.
4. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 82.
5. ओरछा स्टेट गजेटियर, पृ0 25.
6. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 79, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 150.

से लड़ा । यही कारण है कि सम्राट शाहजहाँ ने प्रसन्न होकर जनवरी 1630 ई0 में जुझार सिंह का मनसब 5000/5000 कर दिया ।[1] वह 1634 ई0 तक दक्षिण में रहा। तत्पश्चात महावत खाँ की अनुमति से उसने दक्षिण में अपने स्थान पर अपने पुत्र जगराज को छोड़ा और स्वयं अपने देश लौट गया ।[2] जुझार सिंह की विद्रोहात्मक गति-विधियों से सम्राट सदैव परेशान रहता था । वह बार-बार शाही आज्ञाओं की अव-हेलना करता था । उसने राज्य विस्तार की अनूठी नीति अपनायी । जब दक्षिण में शाह जी भोसला मुगलों पर आक्रमण कर रहा था उसी समय जुझार सिंह ने बुन्देल-खण्ड में अपनी आक्रमणात्मक व विद्रोहात्मक गतिविधि प्रारम्भ कर दी । इससे सम्राट को बाध्य होकर कई मुहिमों पर युद्ध करना पड़ा । विद्रोही जुझार सिंह से रूष्ट होकर सम्राट शाहजहाँ ने 15 फरवरी, 1629 ई0 को आदेश दिया कि वह अपने मनसब 4000/4000 से अधिक सेना न रखे । सम्राट शाहजहाँ जुझार सिंह एवं उसके परिवार की वीरता एवं पराक्रम से भलीभाँति परिचित था । जुझार सिंह और उसके भाई पहाड़ सिंह, नरहरिदास, किसनसिंह शाही सेना के साथ हैदराबाद, बीजापुर एवं काबुल की लड़ाइयों में बहादुरी के साथ लड़े और उन्होंने विजय प्राप्त की । उन्होंने 16 जनवरी, 1631 ई0 के धारूर के युद्ध में विजय प्राप्त की थी और बहुत से हाँथी व ऊँट भेंट में सम्राट को दिये । सम्राट उससे बहुत प्रसन्न हुआ और 5 अप्रैल 1632 ई0 को आगरा जाते समय सम्राट ओरछा के राज्य की सीमाओं में रूका । जुझार सिंह के पुत्र विक्रमाजीत ने शाहजहाँ का स्वागत करते हुये उसे 1000 मुहरें और दो हाँथी भेंट में प्रदान किया ।[3] किन्तु जुझार सिंह ने कभी भी सम्राट शाहजहाँ की अधीनता

---

1. मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 40, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 150, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाह-जहाँ, पृ0 179.
2. कजवीनी, बादशाहनामा, पृ0 343, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, ~~1925~~, खण्ड 2, पृ0 95.
3. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध-प्रबन्ध, 1987, पृ0 147, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 215, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 51, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 1, पृ0 756.

स्वीकार नहीं की । जुझार सिंह बड़ा ही महत्वाकांक्षी था । उसकी राज्य विस्तार करने की आकांक्षा थी । इस समय सम्राट आगरा में न था और दक्षिण में अभी शान्ति स्थापित नहीं हो पायी थी, अतः राज्य विस्तार करने का यह अच्छा मौका था । उसने गोंडवाना के राजा प्रेम नारायण उर्फ भीम नारायण जो चौरागढ़ के दुर्ग में रहता था पर अकारण आक्रमण कर दिया । चौरागढ के गोंड राजा ने प्रेम नारायण से सन्धि की बात की, परन्तु जुझार सिंह ने सन्धि के प्रस्ताव को अमान्य कर दिया तथा वचन दिया कि चौरागढ के दुर्ग पर अधिकार कर लेने के पश्चात राजा की रक्षा के लिये वह वचनबद्ध है ।[1] परन्तु कालान्तर में जुझार सिंह ने अपने वचन को तोड़ते हुये प्रेम नारायण एवं उसके मंत्री जयदेव वाजपेयी को मार डाला ।[2] तथा उसके पैतृक कोष से दस लाख रूपया छीन लिया[3] और साथ ही बहुत सारा धन लूटा । जुझार सिंह द्वारा प्रेम नारायण पर आक्रमण की सूचना सम्राट शाहजहाँ को प्रेमनारायण के पुत्र द्वारा प्राप्त हुयी । प्रेम नारायण ने शाहजहाँ के अन्तर्गत शरण ली तदुपरान्त शाहजहाँ ने जुझारसिंह को समझौता कर लेने व युद्ध न करने का मौखिक सन्देश सुन्दर कवि के द्वारा भेजा, किन्तु जुझार सिंह ने शाही आदेश की अवहेलना की व युद्ध छेड़ दिया । इससे सम्राट शाहजहाँ बड़ा क्रोधित हुआ एक तो जुझार सिंह ने बिना राजाज्ञा के सहवर्गीय राजा पर चढ़ाई की थी, दूसरे सम्राट के आदेश की अवहेलना की थी । सम्राट को दक्षिण की सीमा पर एक शक्तिशाली राजा को बिना दण्डित किये छोड़ देना भी अनुचित लगा । किन्तु सम्राट शाहजहाँ ने जुझार सिंह के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने के स्थान पर यह उचित समझा

---

1. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग 3, अंक 4, पृ0 445.

2. गुरु रामप्यारे अग्निहोत्री, विन्ध्य प्रदेश का इतिहास, पृ0 350, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 78.

3. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगल कालीन ओरछा राज्य, शोध-प्रबन्ध, 1987, पृ0 138.

कि उससे कुछ शर्तें मानने के लिये कहा जाये और यदि वह उन शर्तों को मान ले तो उसे क्षमा कर दिया जाये ।[1] अतः सम्राट ने सुन्दर कविराय के हाँथों एक पत्र ओरछा भेजा, इस पत्र के माध्यम से यह कहलाया कि जुझार सिंह ने प्रेमनारायण के जो इलाके अधिकृत कर लिये हैं, वह उसे लौटा दें और जो धन उसने लूटा है उसमें से दस लाख रूपया दरबार में भेज दे और यदि अपहृत इलाके अपने पास रखना चाहता हो तो उतनी भूमि अपने राज्य से मुगल सम्राट को दे दे ।[2] जुझार सिंह ने सम्राट की माँगों को अस्वीकार कर दिया । उसने सन्देश वाहक को अनौपचारिक रूप से विदा कर दिया और दक्षिण में अपने पुत्र जगराज को कहला भेजा कि वह वहाँ से चुपचाप भाग आये । वह शिकार के बहाने दौलताबाद से भाग गया ।[3] जुझार सिंह की इन गतिविधियों से सम्राट शाहजहाँ उससे रूष्ट हो गया और उसने तीन विशिष्ट सेना-पतियों की कमान में 20,000 योद्धाओं की एक विशाल सेना ओरछा राज्य को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये भेजी । खानेदौरा की कमान में 6000 सैनिक थे, उसके साथ देवी सिंह भी था, इसके साथ-साथ आसफ खाँ को आज्ञा मिली कि ईरज को अधिकृत कर भांडेर में डेरा डाले और सैय्यद खाने जहाँ को आदेश मिला कि वह बदायूँ में वर्षा ऋतु व्यतीत करे वर्षा ऋतु की समाप्ति पर तीनों सेनापतियों को सुंयुक्त रूप से आक्रमण करने का आदेश दिया गया । इस विस्तृत सैनिक सज्जा से जुझार सिंह भयभीत हो गया, उसने आसफ खाँ से सम्पर्क स्थापित किया और यह कहा कि सम्राट से उसको

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 80.

2. कजवीनी, बादशाहनामा, पृ0 343, तबातबाई, बादशाहनामा, पृ0 136, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 81, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड 2, पृ0 95.

3. विक्रमाजीत को खानेजहाँ का पीछा करने के उपलक्ष्य में जगराज की उपाधि मिली थी । कजवीनी, बादशाहनामा, पृ0 299, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 339, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट, शाहजहाँ, पृ0 81.

क्षमा दिलवा दे, परन्तु इस बार शाही माँगे और भी बढ़ी चढ़ी थी । जुझार सिंह से यह कहा गया कि वह तीस लाख रूपया नगद क्षतिपूर्ति के रूप में दे, चौरागढ़ के बदले बयानवा की सरकार समर्पित करे और पुत्र जगराज को दक्षिण में खानेजहाँ की सेवा में तथा अपने पौत्र को जामिन के रूप में दरबार भेजे । सम्भवतः जुझार सिंह का भय-प्रदर्शन दिखावटी था, उसे तो सैनिक तैयारी करने के लिये समय चाहिये था। यही कारण है कि उसने शाहजहाँ के दूत सुन्दर कविराय के साथ अशिष्ट व्यवहार किया और बिना उसकी बात सुने ही उसे विदा कर दिया ।[1] जुझार सिंह के पास धन की कमी न थी, किन्तु वह सम्राट को धन देना नहीं चाहता था । उसकी गलती यह थी कि उसने शाही शक्ति का गलत अनुमान किया । सम्राट शाहजहाँ ने जुझार सिंह के उद्वेगकारी आचरण से तंग आकर शहजादा औरंगजेब को तीनों सेनापतियों का अध्यक्ष बनाकर जुझार सिंह के विरुद्ध भेजा । देखते ही देखते जुझार सिंह का एक एक किला शाही कर्मचारियों के हाँथ में चला गया, किन्तु सम्राट को इससे संतुष्टि नहीं मिली । वह तो जुझार सिंह के रक्त का प्यासा था । शाही सेनापतियों ने चौरा-गढ़ की ओर कूच किया । जुझार सिंह का साहस टूट चुका था, अतः वह चौरागढ़ से भागकर शाहपुर चला गया, वहाँ से वह सांजी होता हुआ दक्षिण की ओर गया । शाहपुर पहुँचने पर वहाँ के राधव चौधरी ने खानेदौरा को विद्रोहियों की गतिविधियों का कच्चा चिट्ठा बता दिया । अतः खानेदौरा और अब्दुल्ला खाँ ने तेजी से कूच किया ताकि जुझार सिंह को पकड़ सकें । खानेदौरा और अब्दुल्ला खाँ विद्रोहियों का चाँदा तक पीछा करते रहे और लगभग विद्रोहियों तक पहुँच भी गये । खानेजहाँ ने रात्रि में ही उन पर आक्रमण करने को कहा, किन्तु अब्दुल्ला खाँ ने उसे ऐसा करने से रोक दिया । परिणाम यह हुआ कि जुझार सिंह को समय पर सूचना मिल गयी और वह गोलकुण्डा की ओर बढ़ा, परन्तु शीघ्र ही खानेदौरा ने उसे पकड़ लिया ।

---

1. कजवीनी, बादशाहनामा, पृ0 344 ब, तबातबाई, बादशाहनामा, पृ0 137 ब, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड2, पृ0 98-99.

आतुर होकर बुन्देलों ने वीर सिंह देव की पटरानी पार्वती को मृत्युदायक आघात पहुँचाये तथा मुगल हरम के अपमान से बचाने के लिये अपनी स्त्रियों का अंगभंग कर डाला। फिर भी जुझार सिंह का पुत्र दुर्गभान और पौत्र दुर्जनसाल जीवित ही पकड़े गये। जुझार सिंह और जगराज ने भागकर जंगलों में शरण ली, परन्तु भाग्य ने उनका साथ न दिया अतः गोंडों ने उनका वध कर डाला। खानेदौरां को उनके शव मिल गये और उसने उनका सिर काटकर दरबार में भेज दिया।[1] जुझार सिंह की मृत्यु के उपरान्त शाहजहाँ ने खाने जहाँ को आदेश दिया कि उस धन-सम्पत्ति को खोज निकालें जो जुझार सिंह जंगलों और कूपों में गड़ी छोड़ गया था। इसहाक वेग यजदी, बाकी बेग कलमाक और मकरमत खाँ को खानेजहाँ की सहायता के लिये भेजा। स्थानीय जनता की निशानदेही के आधार पर उन्होंने धामुनी तथा दतिया के बीच का सारा प्रदेश छान डाला और थोड़े ही समय में 28 लाख नगद ढूँढ निकाला, अन्ततोगत्वा लगभग 1 करोड़ नगद शाही कोष में जमा हुआ। जो धन शाही अधिकारियो के हाथ में नहीं आया वह या तो स्थानीय जनता ने लूट लिया या सैनिकों एवं अहदियों ने हस्तगत कर लिया।[2]

जुझार सिंह वैष्णव धर्म का अनुयायी था, जबकि मुगल सम्राट शाहजहाँ इस्लाम धर्म का कट्टर अनुयायी था। सम्राट शाहजहाँ बुन्देलखण्ड के ओरछा राज्य में इस्लाम धर्म का प्रभाव स्थापित करना चाहता था, जब सम्राट शाहजहाँ ने कठोरता की नीति अपनायी तो जुझार सिंह ने उसका कठोर रूप से प्रतिकार किया और अपने पराक्रम से प्रदर्शित किया कि बुन्देला टूटना जानते हैं, झुकना नहीं। यह बात जुझार सिंह और शाहजहाँ की मुगल सेना के साथ होने वाले अन्तिम संघर्ष से भी प्रकट

---

1. कजवीनी, बादशाहनामा, पृ० 353 ब, 357-59 ब, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग,1,खण्ड 2, पृ० 110-116.

2. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 83,84, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 150.

हो जाती है। उसने अपने जीते जी बुन्देलखण्ड और ओरछा राज्य का इस्लामीकरण नहीं होने दिया। जुझार सिंह ही उस समय एकमात्र राजा था जिसने अपने जीवन भर मुगल सम्राट जैसे शक्तिशाली शासक से अपनी भूमि की स्वतन्त्रता और धर्म की रक्षा के लिये संघर्ष किया।

<u>राजा देवी सिंह</u>

जुझार सिंह की मृत्यु के उपरान्त सम्राट शाहजहाँ ने ओरछा राज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहा और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसने अपने हाँथ के खिलौने चन्देरी के राजा देवीसिंह जो भारत बुन्देला का पुत्र था, को ओरछा का प्रबन्ध बनाया। सम्राट शाहजहाँ ने ओरछा के जतारा परगने के 800 ग्राम अपने अधिकार में ले लिये तथा जतारा का नाम उस समय इस्लामाबाद रख दिया। इसी समय उसने झाँसी और दतिया क्षेत्र में 45 लाख रुपया तथा धामौनी के क्षेत्र से 34 लाख रुपया लूट लिया। इस प्रकार शाहजहाँ ने ओरछा राज्य बुन्देलखण्ड में अपने मुसलमान अधिकारियों को लूट करने तथा धर्म परिवर्तन करने जैसे कार्यों को प्रोत्साहन किया। जो मंदिर मूर्तियों को ध्वंस कर हिन्दुओं की धार्मिक आस्थाओं पर आघात करते थे। 26 नव0 1635 ई0 को सम्राट शाहजहाँ ओरछा के भ्रमण के लिये गया। राजा देवी सिंह ने उसका स्वागत किया और भेंट प्रदान की। सम्राट ने उसे 2000/2000 मनसब प्रदान किया और राजा की उपाधि से विभूषित किया।[1] सन् 1636 ई0 में सम्राट ने राजा देवीसिंह को नक्कारा प्रदान किया और खानेदौरां खान बहादुर के साथ जुझार सिंह बुन्देला का दमन करने के लिये नियुक्त किया। 1637 ई0 में ओरछा के प्रबन्ध से

---

1. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य, पृ0 166, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 194, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 13-14, प्रो0 राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटिल्स अण्डर द ग्रेट मुगल्स, पृ0 332,।

मुक्त होकर वह सम्राट के दरबार में उपस्थित हुआ । सम्राट ने खानेजहाँ बारहा के साथ उसे बीजापुर के अभियान पर भेजा । राजा ने उस युद्ध में बड़ी वीरता दिखलायी । सन् 1638 ई0 में सैय्यद खानेजहाँ की सिफारिश से उसे अलम और नक्कारा प्रदान किया गया ।[1] शाहजहाँ ने वीर सिंह देव द्वारा बनाये गये ओरछा के एक विशाल मन्दिर को गिरवा दिया था ।[2] काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका के अनुसार सम्राट शाहजहाँ ने ओरछा के अनेक भवनों एवं चतुर्दिक मन्दिर के अग्रभाग को ध्वस्त करवा दिया । इस तोड़फोड़ में कछवाहा, हाणा और राठौर छत्रिय जातियों ने भी सहयोग किया ।[3] मुसलमान ओरछा नगर में ताण्डव नृत्य करते रहे और राजा देवी सिंह चुपचाप देखता रहा ।[4] राजा देवी सिंह की उदासीनता और ओरछा विरोधी गतिविधियों से राज्य के बुन्देला जागीरदार विद्रोही हो गये, उन्होंने संगठित होकर जुझार सिंह के अल्पायु छोटे पुत्र पृथ्वीराज को ओरछा का राजा बनाने का निश्चय किया जिस कारण 1636 ई0 में राजा देवी सिंह ओरछा त्यागकर चन्देरी भागगया ।[5] जैसे ही बुन्देला जागीरदारों ने पृथ्वीराज को ओरछा का राजा बनाया, राज्य में अराजकता और लूट का वातावरण छा गया । जागीरदार निर्भीक रूप से राज्य की जनता को लूटने लगे । चम्पतराय जो नूना महेवा के जागीरदार उदयादित्य के पौत्र एवं भगवन्तराव के ज्येष्ठ पुत्र था, ओरछा की गद्दी पर आसीन होने के लिये लालायित हो उठा ।[6] चम्पतराय ने जतारा पर आक्रमण

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 194.
2. मुन्शी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, हिन्दी ।अनु0।, रघुबीर सिंह मनोहर सिंह राणावत, पृ0 104, बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ डेल्ही, पृ0 90.
3. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग 3, अंक 4, पृ0 453.
4. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 85.
5. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग 3, अंक 4, पृ0 454.
6. जदुनाथ सरकार, औरंगजेब, भाग 1, पृ0 30, डा0 काशी प्रसाद त्रिपाठी, बुन्देलखण्ड का सम्पूर्ण इतिहास, राजतंत्र से जनतंत्र ।अप्रकाशित ग्रन्थ। पृ0 64.

कर दिया। मुगल सेना ने उसे रोकने का प्रयास किया, किन्तु बुन्देलों की छापामार सामरिक नीति से उसकी योजनायें असफल रहीं। जनवरी 1639 ई० में चम्पतराय ने मुगल चौकियों पर हमला किया, सूबेदारों को लूटा। उसने लूटपाट का क्षेत्र - सिरोंज तथा भिलसा तक विस्तृत कर लिया। सम्राट शाहजहाँ ने अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व में सेना उसके विरुद्ध भेजी किन्तु असफल होने पर बहादुर खाँ रुहेला को उसके विरुद्ध भेजा किन्तु फिर भी चम्पतराय को पकड़ा नहीं जा सका। सम्राट शाहजहाँ ने स्थिति से निपटने के लिये जुझार सिंह के भाई पहाड़सिंह को ओरछा का राजा बना दिया।[1]

राजा पहाड़सिंह बुन्देला

पहाड़सिंह वीर सिंह देव के द्वितीय पुत्र थे। पहाड़सिंह शाहजहाँ की सेना में दक्षिण में था, वहाँ से उसे बुलाकर उसे 5000/2000 का मनसब देकर 1641 ई० में उसे ओरछा की गद्दी पर बिठाया गया।[2] सम्राट शाहजहाँ की गद्दी पर बैठने के समय उसका मनसब 2000/1200 था। सम्राट ने अपने शासनकाल के प्रथम वर्ष में उसका मनसब बढ़ाकर 3000/2000 कर दिया। जिसमें कालान्तर में 1000 जात और 800 सवार और सम्मिलित कर दिये गये।[3] राजा पहाड़सिंह बुन्देला को अब्दुल्ला खाँ फिरोज जंग के साथ जुझार सिंह को दण्डित करने भेजा गया और 1631 ई० में उसे राजा की उपाधि प्रदान की गयी। दौलताबाद तथा परेण्डा के दुर्ग के घेरे में उसने अद्भुत वीरता दिखायी व प्रसिद्धि पायी। सन् 1637 ई० में उसे शाहजी भोसला को दण्डित करने के लिए भेजा गया।[4] इसे 1643 ई० में चम्पतराय[5] का दमन करने का

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 87.
2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 118, ओरछा स्टेट गजेटियर, पृ० 31, बनारसीप्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 87.
3. लाहौरी, बादशाहनामा भाग 1, पृ० 226, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ०51, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 114, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 1, 2, अंग्रेजी।अनु०।पृ० 470, मुंशी देवीप्रसाद के शाहजहाँनामा में उसका मनसब 3500/2000 दिया हुआ है।
4. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 114.
5. यह महोबा के राजा उदयजीत का वंशज था। बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 86.

कार्य मुगल सम्राट शाहजहाँ ने सौंपा था किन्तु वह शक्ति से चम्पतराय का दमन नहीं कर सका । कालान्तर में उसने कुटिलनीति से विष मिला भोजन खिलाकर उसे मारना चाहा, किन्तु उसका यह प्रयास भी असफल रहा ।[1] पहाड़सिंह प्रभावशाली वीर योद्धा था । 1645 ई० में वह अली मर्दान खाँ और मुराद बख्श के साथ बल्ख अभियान पर गया था और उसने वीरतापूर्वक गूरी के दुर्ग को विजित किया ।[2] जब फारस की सेना ने कंधार पर आक्रमण किया तो सम्राट शाहजहाँ ने 1648 ई० में उसे काबुल मार्ग से कंधार भेजा । 3 वर्ष तक कठोर संघर्ष करने के उपरान्त उसने काबुल कन्धार पर विजय प्राप्त की ।[3] 1650-51 ई० में पहाड़सिंह ने अपने ज्येष्ठ भाई जुझार सिंह की हत्या का बदला लेने के लिये हृदयशाह के गोंडवाने राज्य पर आक्रमण किया । ओरछा स्टेट गजेटियर में गोंडवाने पर आक्रमण करने का वर्ष 1644 ई० दर्शाया गया है ।[4] जो सही नहीं प्रतीत होता क्योंकि उस समय पहाड़सिंह चम्पतराय के दमनात्मक अभियानों में व्यस्त था । जबकि काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका में 1652 ई० के मध्य गोंडवाना पर आक्रमण दर्शाया गया है ।[5] अस्तु गोंडवाने पर आक्रमण का सही वर्ष 1651 ई० प्रतीत होता है । गोंडवाने पर आक्रमण का दूसरा कारण यह था कि वहाँ गायों को जोता जाता था ।[6] पहाड़सिंह गोभक्त और धर्मपालक था, अतः उसे यह अनुचित लगा, किन्तु इस युद्ध में बुन्देला राजा को सफलता नहीं मिली । काशी

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 114.
2. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 203.
3. विष्णु कुमार मिश्रा, मुगलकालीन ओरछा राज्य शोध प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ० 172-73.
4. ओरछा स्टेट गजेटियर, पृ० 32.
5. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग 3, अंक 4, पृ० 458.
6. गोरे लाल तिवारी, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ० 151, पं० कृष्णदास, बुन्देलखण्ड का इतिहास, ओरछा खण्ड, पृ० 134.

नागरी प्रचारिणी पत्रिका में उल्लिखित है कि 1650 ई0 में पहाड़सिंह को सरदार खाँ के बदले चौरागढ़ की सूबेदारी भी सौंपी गयी । 1652 ई0 में उसका मनसब 4000/3000 दो अस्पा सेहअस्पा कर दिया गया ।[1] हृदयशाह गोर जो भीम नारायन उर्फ प्रेम नारायन गौड़ का पुत्र था । उस समय रीवां के राजा अनूपसिंह के संरक्षण में रहता था । पहाड़सिंह ने चौरागढ़ पर आक्रमण कर रायसेन एवं गिन्नूरगढ़ को विजय किया, वह बरार क्षेत्र के औरंगाबाद तक विजय करते हुए पहुँचा ।[2] गोंडवाना से पहाड़सिंह ने अनूपसिंह बघेला का पीछा किया तथा बघेल-खण्ड को लूटा । उसने रीवां की लूट में से एक हाँथी, तीन हँथिनी सम्राट को भेंट में दिये ।[3] 1651-52 ई0 में शाहजादा औरंगजेब के साथ कन्धान अभियान पर पहाड़सिंह गया था । 1652-53 ई0 में दाराशिकोह के साथ भी कन्धार अभियान पर गया था ।[4] 1652-53 ई0 में शाहजहाँ ने तीसरी बार कन्धार पर आक्रमण के लिये दाराशिकोह को भेजा । उसके साथ चम्पतराय भी गया था । चम्पतराय की बहादुरी से प्रसन्न होकर दाराशिकोह ने तीन लाख रुपये खिराज पर कौंच परगना उसे देना चाहा, परन्तु पहाड़सिंह ने नौ लाख खिराज देकर कौंच परगना ले लिया । उससे चम्पतराय ओरछा वालों से रुष्ट हो गया । उसने दाराशिकोह की नौकरी छोड़ दी व औरंगजेब की सेवा में चला गया । इसके पश्चात् चम्पतराय पुनः लूटमार करने लगा । उसने एरच भाण्डेर, सहरा, मोरनगांव में लूट व आतंक मचा दिया । 1653 ई0 में पहाड़ सिंह की मृत्यु हो गयी ।[5] उसकी महारानी का नाम हीरादेवी

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 114, मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँ-नामा, पृ0 306,
2. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग3, अंक 4, पृ0 458-59.
3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनु0, भाग 2, पृ0 258.
4. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 114.
5. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, के अनुसार उसकी मृत्यु 1656 ई0 में हुई । मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 114.

था जिससे उसके दो पुत्र - सुजान सिंह एवं इन्द्रमणि उत्पन्न हुये थे ।[1]

राजा पहाड़सिंह ने औरंगाबाद में पहाड़पुरा कस्बा बसाया ।[2] उसने गोंडवाना क्षेत्र में पहाड़पुरा नाम से एक तहसील भी बनवायी । उसने हीरानगर ग्राम में एक बावड़ी का निर्माण करवाया ।[3]

राजा सुजान सिंह बुन्देला

पहाड़सिंह की मृत्यु के पश्चात 1653 ई0 में सुजानसिंह ओरछा की गद्दी पर बैठा ।[x] शाहजहाँ के शासनकाल में उसका मनसब 2000/2000 दो अस्पा सेह अस्पा था । उसे राजा की उपाधि और एक विशेष खिलअत उपहार में दिया गया था ।[4] उसके शौर्य से प्रभावित होकर सम्राट औरंगजेब ने उसे 3000/2000 का मंसब प्रदान किया था ।[5]

1655 ई0 में सुजानसिंह कासिम खाँ मीर आतिश के साथ कश्मीर पर आक्रमण करने के लिये भेजा गया । 1657 ई0 में शहजादा औरंगजेब जब बीजापुर की घेराबन्दी के लिये भेजा गया तो सुजानसिंह भी उसके साथ गया ।[6] बीजापुर के

---

1. विष्णु कुमार मिश्र, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध प्रबन्ध, रीवां विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 175.
2. पं0 गोरेलाल तिवारी, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ0 115, पं0 कृष्णदास, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ0 134.
3. शिलालेख, ग्राम हीरानगर, बावरी संवत 1710.

x टिप्पणी :- xxxxxxxx विष्णुकुमार मिश्र के अनुसार, राजा सुजानसिंह अत्यन्त सुन्दर था । उसे शाहजहाँ ने अपने यहाँ जबरदस्ती कंचुकी बनाकर रखा था । कालान्तर में रायमंगल नामक एक सामन्त ने उसे महलों की कंचुकी के पेशे से मुक्त कराया । विष्णुकुमार मिश्र, मुगलकालीन ओरछा राज्य, शोध प्रबन्ध, रीवाँ विश्वविद्यालय, 1987, पृ0 177.

4. मनोहरसिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 29, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह भाग 3, पृ0 197, प्रो0 राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटिल्स अण्डर द ग्रेड मुगल्स, पृ0 332.
5. विष्णुकुमार मिश्र, मुगलकालीन ओरछा राज्य, पृ0 177.
6. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, हिन्दी (अनु0), भाग 7, पृ0 124, ओरछा स्टेट गजेटियर, पृ0 32, ओरछा दरबार रजिस्टर, पृ0 35 (अप्रकाशित) ।

आक्रमण में लड़ते हुये वह घायल भी हुआ । उसी समय सम्राट शाहजहाँ बीमार हो गया, जिससे औरंगजेब वापस लौट आया । ओरछा का राजा सुजान सिंह भी वहाँ से लौट आया और अपने देश ओरछा वापस चला गया । शाहजहाँ के चारों पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ जाने पर वह तटस्थ रहा । उसने मुगलों को कई अभियानों में सहयोग दिया था ।

सुजानसिंह जितना पराक्रमी और वीर था उतना ही स्थापत्य कला में भी रुचि रखता था । उसने निम्न स्थापत्यों का निर्माण कराया । उसने अडजार नामक ग्राम में सुजान सागर तालाब का निर्माण कराया । अपनी माता हीरादेवी के नाम पर हीरानगर कस्बा बसाया तथा वहाँ एक बावरी भी बनवायी । उसने रानीपुर नामक गाँव बसाया । ओरछा के बाग, कुँओं तथा यज्ञशाला का निर्माण सुजानसिंह ने ही कराया था । इसके अतिरिक्त उसने शिवालय तथा बिहारी जी के मन्दिर का भी निर्माण कराया । उसने अपने नाम पर सुजानपुर नामक नगर भी बसाया ।

भदौरिया

आगरा से दक्षिण-पूर्व में तीन कोस दूर भदावर नामक स्थान था । यहाँ के रहने वाले भदौरिया कहलाते थे । इनका मुख्य निवासस्थान हथकन्त था । ये वीर साहसी, लुटेरे के रूप में प्रसिद्ध थे । राजधानी के समीपस्थ होने के कारण यह स्वतन्त्र थे ।[1] अकबर ने एक बार उनके सरदार को हाथी के पैरों के नीचे डलवा दिया था, तभी से इन लोगों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी ।[2] सम्राट अकबर के

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, एच0एस0 जैरेट, भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 1, पृ0 335.

2. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, एच0एस0 जैरेट, भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 1, पृ0 335.

शासनकाल में राय मुकुन्द[1] ने शाही सेवा में प्रवेश किया । उसे प्रारम्भ में 500 का मनसब मिला ।[2] तदुपरान्त उसका मनसब बढ़कर 1000/1000 हो गया ।[3] राय मुकुन्द ने मुगलों को सैनिक सेवा भी प्रदान की ।[4]

जहाँगीर के शासनकाल में राजा विक्रमाजीत हथकंत का राजा था ।[5] उसने 1613-14 ई0 में अब्दुल्ला खाँ की अधीनता में राणा के विरुद्ध छेड़े गये अभियान में मुगलों को सहायता प्रदान की ।[6] राजा विक्रमाजीत ने दक्षिण के अभियान में भी मुगलों को सहयोग प्रदान किया । जहाँगीर के शासनकाल के 11वें वर्ष राजा विक्रमादित्य की मृत्यु हो गयी । उसके स्थान पर उसका पुत्र भोज गद्दी पर बैठा ।

---

1. अबुल फजल के अनुसार उसका नाम राय मुक्तामन था । - अबुल फजल, अकबरनामा अंग्रेजी (अनु0) भाग 3, पृ0 78.

2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 834, अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 163, अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 149.

3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 547, अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 423, 438, अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 149.

4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 424, 475, अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 149.

5. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 375.

6. अबुल फजल, आईने अकबरी, भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 1, पृ0 335, लाहौरी, बादशाहनामा0भाग 1, पृ0 166, के0के0 त्रिवेदी, नान-रूलिंग राजपूत फैमिलीज इन द मुगल नोबिलिटी इन सूबा, आगरा, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1978, पृ0 339.

वह भी शाही सेवा में कार्यरत रहा ।[1] तुजुक-ए-जहाँगीरी में एक भदौरिया राजा मंगत का विवरण मिलता है, जिसने जहाँगीर के शासन काल के 7वें वर्ष बंगश में मुगलों की सहायता की थी, किन्तु उसका नाम संदेहास्पद है ।[2]

शाहजहाँ के शासनकाल में भदौरिया जाति का राजा कृष्णसिंह था । वह शाहजहाँ के शासनकाल के प्रथम वर्ष महावत खाँ के साथ जुझार सिंह के विरुद्ध अभियान पर, और तीसरे वर्ष 1631 ई0 में शायस्ता खाँ के साथ खानेजहाँ लोदी एवं निजामुल मुल्क (निजामुल्मुल्क ने खाने जहाँ लोदी को शरण दी थी) के विरुद्ध भेजे गये मुगलों के अभियान में गया । 1634 ई0 में कृष्ण सिंह ने दौलताबाद दुर्ग के घेरे और विजय में अच्छी वीरता दिखलायी । 1637 ई0 में खाने जमाँ के साथ साहू भोंसला का दमन करने के लिये वह गया ।[3] लाहौरी के अनुसार उसे 1000/600 का मनसब प्राप्त था ।[4] सन् 1643 ई0 में कृष्णसिंह की मृत्यु हो गयी ।[5] राजा कृष्णसिंह के एक दासीपुत्र के अतिरिक्त अन्य कोई पुत्र नहीं था इसीलिये उसकी मृत्यु के पश्चात उसके चाचा का पौत्र बदनसिंह[6] गद्दी पर बैठा ।[7] सम्राट ने उसे एक खिलअत 1000/1000

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 335.
2. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 108.
3. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी (अनु0), भाग 1, पृ0 335, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 85.
4. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 309, अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी (अनु) भाग 1, पृ0 547, केवलराम, तजकिरातुल उमरा, पृ0 269.
5. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी (अनु0), भाग 1, पृ0 335.
6. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 732,
7. अबुल फजल, आईने अकबरी, भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी (अनु0) भाग 1, पृ0 335, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 348.

का मनसब और राजा की उपाधि दी ।[1] शाहजहाँ के शासन काल के 21वें वर्ष में एक दिन जिस समय बदनसिंह दरबार में उपस्थित था उसी समय एक मदमस्त हाँथी उसकी ओर दौड़ा, उसने एक अधे आदमी को अपने दाँतों के नीचे दबा लिया । अतः राजा ने आवेश में आकर उस हाँथी पर जमधर चलाया, हाथी ने उस आदमी को छोड़ दिया । वह आदमी दो दाँतों के बीच आने से सुरक्षित था, उसे चोट नहीं आयी । शाहजहाँ उसके शौर्य से अत्यधिक प्रसन्न हुआ । उसने उसे एक खिलअत भेंट में दी तथा भदावर जिले के दो लाख लगान में से पचास हजार लगान माफ कर दिया।[2] शाहनवाज खाँ के अनुसार सम्राट शाहजहाँ ने उसे एक खिलअत प्रदान की और ढाई लाख रूपया भेंट का जिसे उसने राज्य मिलते समय देने का वायदा किया था, क्षमा कर दिया ।[3] शाहजहाँ के शासन के 22वें वर्ष उसका मनसब 500 से बढ़ाकर 1500 कर दिया गया ।[4] राजा बदन सिंह अकेला भदौरिया राजा था, जिसे 1000 के ऊपर का मनसब मिला था ।[5] इसी वर्ष उसे शाहजादा औरंगजेब के साथ कंधार अभियान पर भेजा गया । शाहजहाँ के शासन के 25वें व 26वें वर्ष में भी वह औरंगजेब तथा दाराशिकोह के साथ क्रमशः कन्धार अभियान पर भेजा गया और 27वें वर्ष में वहीं उसकी मृत्यु हो गयी ।[6] बदनसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र <u>महासिंह</u>

---

1. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी ।अनु०। भाग 1, पृ० 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी ।अनु०। भाग 1, पृ० 336, लाहौरी, बादशाहनामा भाग 2, पृ० 348, प्रो० राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटिल्स अण्डर द ग्रेट मुगल्स, पृ० 379. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 161.

2. अबुल फजल, आईने अकबरी, भाग 1, पृ० 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी ।अनु०। भाग 1, पृ० 335.

3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी ।अनु०।, भाग 1, पृ०336.

4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी ।अनु०।, भाग 1, पृ०336.

5. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी ।अनु०।, भाग 1, पृ० 547.

5. जखीरतुल खवानीन, भाग 1, पृ० 334 पर राजा मुक्तामन का मनसब 2000/2000 दिया हुआ है, किन्तु किसी अन्य स्रोत से इसकी पुष्टि नहीं होती।

6. शाहनवाजखाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी ।अनु।भाग 1, पृ० 336, अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी ।अनु। भाग 1, पृ० 547.

गद्दी पर बैठा । उसे 1000/800 का मनसब राजा की पदवी तथा घोड़ा प्राप्त हुआ ।[1] शाहजहाँ के शासनकाल के 28वें वर्ष वह काबुल अभियान पर गया । तथा 31वें वर्ष में उसका मनसब 1000/1000 हो गया ।[2] शाहजहाँ के पश्चात् औरंगजेब के शासनकाल में भी वह उसी प्रकार मुगलों की सेवा करता रहा ।

बड़गूजर

बड़गूजर एक राजपूत जाति थी । उनके पूर्वज जमींदार थे ।[3] जो 17वीं शदी में मुगल शासनतंत्र में सम्मिलित हो गये थे । वह पहासु, खुरजा, डिबई के स्वतन्त्र जमींदार के रूप में थे और परगना शिकारपुर की दो जातियों के सहायक के रूप में थे ।[4] यह सभी स्थान अब बुलन्दशहर के अन्तर्गत हैं । अनीराय सिंह के पूर्व किसी भी बड़गूजर राजा का विवरण समकालीन इतिहासिक स्रोतों में नहीं मिलता ।[5] अनूपसिंह अकबर के शासन के अन्तिम वर्षों में उसके व्यक्तिगत खिदमतगारों का अध्यक्ष था, उसे खवास कहा जाता था । जहाँगीर के शासनकाल में भी वह उसी पद पर था । जहाँगीर के शासन काल के पाँचवें वर्ष बारी नामक स्थान पर चीते का शिकार

---

1. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी अनु० भाग 1, पृ० ~~336~~, 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी अनु० भाग 1, पृ० 336.

2. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी अनु० भाग 1, पृ० 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, हिन्दी अनु० भाग 1, पृ० 336.

3. के०के० त्रिवेदी, नान रूलिंग राजपूत फैमिलीज इन मुगल नोबिलिटी इन सूबा आगरा, भारतीय इतिहासकांग्रेस, 1978, भाग 1, पृ० 339, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 1, पृ० 261.

4. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी अनु०, भाग 1, पृ० 447,

5. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ० 315, इसमें वर्णित है कि अनूप सिंह राजा हर नारायन का पुत्र था, किन्तु हर नारायन राजा था यह किसी अन्य ग्रन्थ में वर्णित नहीं है और न ही आईने अकबरी के मनसबदारों में उसका वर्णन है ।

करते समय जब जहाँगीर की जान खतरे में पड़ गयी तब बड़ी बहादुरी से उसने उसकी जान बचायी थी । जहाँगीर ने उसकी वीरता, निर्भीकता से प्रसन्न होकर उसे अनीसिंह राय दालान की उपाधि से सम्मानित किया ।[1] अनीराय सिंह को ही कालान्तर में अनूपसिंह के नाम से जाना जाने लगा ।[2] उस समय उसके मनसब में भी वृद्धि हुयी । इसी समय उसे 164 गाँवों की एक वतन जागीर इनाम में दी गयी । उसने अपने नाम पर अनूप शहर की स्थापना की ।[3] तदुपरान्त उसे ग्वालियर का किलेदार नियुक्त किया गया ।[4] शहजादा खुसरो जो अपने पिता की कैद में था, उसकी देखभाल का कार्य उसे सम्राट ने प्रदान किया था । सम्राट ने उसे बंगश की लड़ाई तथा अन्य कई अभियानों में भेजा । इन अभियानों में सम्राट ने उसे सिपह-सालार के पद पर नियुक्त किया । उसने मुगलों की अनेक सैनिक अभियानों में सहा-यता की ।[5] एक बार जहाँगीर ने उसे किसी कार्य के लिये दोषी ठहराया, उसने तुरन्त जमधर निकालकर अपने पेट में मार लिया । उसके मनसब में वृद्धि की गयी व उसका प्रभाव भी उस समय से बढ़ गया । शाहजहाँ के शासन के तीसरे वर्ष जब उसका पिता वीर नारायन जिसका मनसब 1000/600 था, की मृत्यु हो गयी तब उसे राजा की उपाधि प्रदान की गयी । शाहजहाँ के राज्यारोहण के वर्ष उसका मनसब बढ़कर

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 59, 80, के0के0 त्रिवेदी, नान-रूलिंग राजपूत फैमिलीज इन मुगल नोबिलिटी इन सूबा आगरा, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1978, पृ0 340, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 262, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 53.
2. जहाँगीर, तुजुके-ए-जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 88-89, लाहौरी बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 493-95, जखीरतुल खवानीन, भाग2, पृ0360-64.
3. पीटरमण्डी, ट्रैवल्स ऑफ पीटरमण्डी, पृ0 74, ।
4. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 266-277.
5. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 82, 240, 324, 360, भाग 3, पृ0 97, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 54

3000/1500 हो गया। सम्राट ने उसे खिलअत जमधर मुरस्सा भी उपहार में प्रदान किया था।[1] उसने जुझार सिंह बुन्देला से लड़ाई और दक्कन की लड़ाई में मुगलों की सहायता की थी। शाहजहाँ के काल में खानेजहाँ लोदी के विद्रोह के दमन के लिये भी सम्राट ने उसे भेजा था।[2] सम्राट शाहजहाँ के शासन काल के 10वें वर्ष उसकी मृत्यु हो गयी। अनूपसिंह के जीवन काल में ही उसका पुत्र <u>जयराम</u> मुगल शासन तंत्र में शामिल हो गया था और वह सैनिक अभियानों पर भी भेजा गया था।[3] पिता की मृत्यु हो जाने पर शाहजहाँ के शासन के 11वें वर्ष जयराम को सम्राट ने एक खिलअत, राजा की उपाधि और 1000/800 का मनसब प्रदान किया।[4] शाहजहाँ के शासनकाल के 12वें वर्ष उसके मनसब में 200 की वृद्धि की गयी। 13वें वर्ष उसे मुराद बख्श के पास भेजा गया जो पहले भीरा में नियुक्त था और बाद में काबुल में। 15वें वर्ष उसका मनसब बढ़ाकर 1500/1000 कर दिया गया।[5] उस वर्ष उसे शहजादा मुराद बख्श के साथ बल्ख बदख्शां अभियान पर भेजा गया। बल्ख के समीप उजबेकों तथा अलमानों के दमन में उसने अत्यधिक वीरता प्रदर्शित की अतः सम्राट ने उसका मनसब बढ़ाकर 2000/1500 कर दिया। शाहजहाँ के शासनकाल के 21वें वर्ष 1647 ई० में वही उसकी मृत्यु हो गयी।[6]

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 3, देखिये परिशिष्ट बी., शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 1, पृ० 263, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 54, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 307.
2. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 71, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँ-नामा, पृ० 60.
3. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 3, पृ० 97, 140, 233, भाग 2, पृ० 485, 550, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1978, भाग 1, पृ० 340.
4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनु०, भाग 1, पृ० 731, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 152, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 130.
5. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ० 608,
6. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनु०, भाग 1, पृ० 731, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 152.

राजा जयराम की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र अमर सिंह शाही सेवा में सम्मिलित हुआ ।[1] सम्राट ने उसे राजा की उपाधि दी और उसे 500/500 का मनसब प्रदान किया ।[2] उसके बाद के किसी अनूप सिंह के वंशज का वर्णन मुगल इतिहास में नहीं मिलता ।

टिप्पणी : सूबा आगरा में स्थित मेवात में खानाजादों का शासन था । खानाजाद का अर्थ मनसबदारों के पुत्रों एवं वंशजों से है । मनसब एवं जागीरों के सम्बन्ध में उनको काफी हद तक वरीयता मिलती रही थी ।[1] खानाजादों के मेवात में अनेक परगने थे । अबुल फजल के अनुसार अलवर और तिजारा में खानाजादों के अन्तर्गत 19 परगने थे ।[2] 16वीं शदी के मध्य में हसन खां मेवाती मेवात का प्रमुख राजा था । अबुल फजल के अनुसार वह हिन्दुस्तान का एक प्रमुख जमींदार था ।[3] हुमायूँ ने हिन्दुस्तान की पुनर्विजय के पश्चात उसकी एक पुत्री के साथ विवाह किया था ।[4] अकबर के शासनकाल में खानाजादों के अन्तर्गत अलवर, भरतपुर और गुरगांव की रियासतें आ गयी थीं ।[5] राय बहादुर सिंह केन्द्र का प्रमुख राजा था । उत्तर में बहादुरगढ़ और फर्रुखनगर में बलोच राजा थे और दक्षिण में सूरजमल भरतपुर के राजा थे।[6]

---

1. एम0 अतहर अली, द मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब, पृ0 11.
2. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, एच0एस0जैरेट, भाग 2, पृ0 91-93.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 2, पृ0 48.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 2, पृ0 48.
5. पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ।गुरगांव।।1910।, पृ0 19.
6. पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ।गुरगांव।।1910।, पृ0 19.

---

1. वारिस, बादशाहनामा, पृ0 13, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 152,

2. शाहनवाज खां, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी ।अनु0।, बेवरिज, भाग 1, पृ0 731, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 152, केवल राम, तजकिरातुल उमरा, पृ0 246.

सूबा दिल्ली एवं आगरा मुगल साम्राज्य के केन्द्रीय भाग में स्थित थे। आगरा सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में तथा दिल्ली सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में राजधानी थी। यह दोनों ही सूबे राजनैतिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण थे।

सूबा दिल्ली में कुमायूँ तथा कटेहर में मुगलों को निरन्तर विद्रोह का सामना करना पड़ा। मुगलों ने अपनी सैनिक शक्ति से इन्हें अपने अधीनस्थ बनाये रखा। वहाँ के (करद) राजा या जमींदार न केवल मुगलों की प्रभुसत्ता को स्वीकार करते थे, बल्कि समय समय पर मुगलों को कर व पेशकश या उपहार भी प्रदान करते थे तथा आदेशानुसार सैनिक सेवा के लिए तत्पर रहते थे।

सूबा आगरा में ओरछा के वीर सिंह देव बुन्देला तथा उसके वंशजों, हथकंत के भदौरिया राजपूतों, तथा बड़गूजरों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। बुन्देलखण्ड में वीर सिंह देव बुन्देला की मृत्यु के उपरान्त कुछ समय तक बुन्देला राजाओं की विद्रोहात्मक प्रवृत्ति के कारण वहाँ अशान्ति बनी रही, किन्तु मुगल सत्ता के व्यापक संसाधनों के विपरीत बुन्देलों की धृष्टता अधिक समय तक नहीं चल सकी। शीघ्र ही बुन्देलों का दमन करके उस पर मुगल प्रभुसत्ता का पुन: आरोपण कर दिया गया। वीर सिंह देव बुन्देला, जुझार सिंह, पहाड़ सिंह, चम्पत राय इत्यादि के क्रमशः विद्रोहों से मुगलों को काफी कठिनाइयाँ हुई थीं, किन्तु वे मुगल सत्ता को मानने के लिए अन्ततः बाध्य हो गए। भदौरिया तथा बड़गूजरों ने भी मुगल सत्ता स्वीकार कर ली थी। इस प्रकार इन दोनों ही सूबों के राजाओं के साथ मुगलों के सम्बन्ध उतार-चढ़ाव के दौर से होते हुए बने रहे।

---------::0::---------

अध्याय तृतीय

क. सूबा अवध के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

ख. सूबा इलाहाबाद के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

क. सूबा अवध के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा अवध की लम्बाई गोरखपुर की सरकार से कन्नौज तक 135 कोस थी। उसकी चौड़ाई उत्तरी पहाड़ियों से सिद्धपुर जो इलाहाबाद सूबे की सीमा थी, तक 115 कोस थी। इसके पूर्व में बिहार स्थित था, उत्तर में पहाड़ियाँ थीं, दक्षिण में मानिकपुर स्थित था और पश्चिम में कन्नौज स्थित था।[1]

यह सूबा 5 सरकारों में और 38 परगनों में विभक्त था। यहाँ का क्षेत्रफल एक करोड़ इरक लाख इकहत्तर हजार एक सौ अस्सी (1,01,71,180) बीघा था। यहाँ से प्राप्त राजस्व बीस करोड़, सत्रह लाख अट्ठावन हजार एक सौ बहत्तर (20,17,58,172) दाम (50,43,954.4 रूपये) था, जिसमें से पच्चासी लाख इक्कीस हजार छः सौ अट्ठावन (85,21,658) दाम (2,13,041.7 रूपये) सयूरगल था।[2]

सूबा अवध में सम्राट जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में आजमगढ़, बहराइच, मझोली और जौनपुर के (करद) राजाओं या जमींदारों का वर्णन मिलता है।

आजमगढ़

आजमगढ़ राज्य का नाम विक्रमाजीत के पुत्र आजम खाँ के नाम पर पड़ा। आजमगढ़ राज्य की स्थापना 17वीं शदी के प्रथम दशक में अभिमन्‌ राय नामक व्यक्ति ने की थी। वह सरकार जौनपुर के अन्तर्गत परगना निजामाबाद में स्थित तप्पा दौलताबाद के मेहनगर नामक ग्राम का सहभागी जमींदार था।[3] अभिमन्‌ राय का

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 181.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 184.
3. गिरधारी, इन्तजाम-ए-राज-ए- आजमगढ़ (फारसी) इण्डिया आफिस, लन्दन, हस्तलिपि संख्या 237, पृ0 2ब

पिता चन्द्रसेन राय अर्गल परिवार से सम्बन्धित गौतम क्षत्रिय था ।[1] चन्द्रसेन राय अपनी जन्मभूमि का परित्याग करके मेहनगर में जो उस समय वीरान व निर्जन था, आकर बस गया था और उसने इस भूभाग को आबाद किया था । उसके अभिमन राय तथा सागर राय नामक दो पुत्र थे ।[2] अभिमन राय पारिवारिक कलह के कारण इलाहाबाद के सूबेदार अथवा उसके किसी रिसालेदार की सेवा में सम्मिलित हो गया ।[3] वहाँ उसे किसी कारणवश बलपूर्वक तथा स्वेच्छा से नपुंसक बना दिया गया । उसने इस्लाम-धर्म भी स्वीकार कर लिया । कुछ समय पश्चात वह अपने स्वामी के साथ दिल्ली गया और वहाँ मुगल सम्राट अकबर ने उससे प्रभावित होकर उसे शाही सेवा में सम्मिलित कर लिया व नाजिर के पद पर नियुक्त किया ।[4] अभिमन राय ने इस पद का लाभ उठाया और अपने भतीजे हरवंश सिंह को 30,000 रूपये वार्षिक राजस्व के प्रतिरूप में सरकार जौनपुर के परगना निजामाबाद सहित 22 परगनों की जमींदारी प्रदान करवाने में सफलता प्राप्त की ।[5]

---

1. तारीख़-ए-आजमगढ (लेखक अज्ञात), पृ0 2ब, जे0के0 हालोज डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आफ यूनाइटेड प्राविन्सेज खण्ड 33 डी. गोरखपुर डिवीजन, 1935 ई0 आजमगढ पृ0 35.

2. तारीख़-ए-आजमगढ (लेखक अज्ञात) पृ0 2ब,

3. तारीख़-ए-आजमगढ, पृ0 2ब, 6अ, सैय्यद अमीर अली रिजवी, सर गुजश्त-ए-राजा-ए-आजमगढ, पृ0 2ब, परन्तु गिरधारी, इन्तजाम-ए-राज-ए-आजमगढ, पृ0 4ब, 5अ, के अनुसार अभिमन राय दिल्ली में किसी उच्चाधिकारी की सेवा में सम्मिलित हुआ था ।

4. सैय्यद अमीर अली रिजवी, सर गुजश्त-ए-राजा-ए-आजमगढ, पृ0 2ब, 5अ, तारीख़-ए-आजमगढ, पृ0 4ब, 7ब किन्तु गिरधारी इन्तजाम-ए-राज-ए-आजमगढ, पृ0 5अ, 6ब, और तारीख़-ए-आजमगढ, पृ0 4ब के अनुसार अभिमन राय मुगल सम्राट जहाँ-गीर की सेवा में सम्मिलित हुआ ।

5. तारीख़-ए-आजमगढ, पृ0 8ब, सैय्यद अमीर अली रिजवी, सर गुजश्त-ए-राजा-ए-आजमगढ, पृ0 4ब के अनुसार हरवंश सिंह को 7000 रूपये वार्षिक राजस्व की जमींदारी तथा राजा की उपाधि प्राप्त हुयी । गिरधारी इन्तजाम-ए-राज-ए-आजमगढ, पृ0 8ब-9अ में न तो वार्षिक राजस्व और न ही परगनों की संख्या का उल्लेख किया गया है ।

हरवंश सिंह

अभिमन्न राय के भाई सागर राय के हरवंश सिंह, दयाल सिंह, गोपाल सिंह, जिउ नारायन सिंह तथा खड्ग सिंह नामक पाँच पुत्र थे।[1] इनमें से हरवंश सिंह को राजा की उपाधि व आजमगढ़ की जमींदारी प्राप्त हुयी। उसने इस्लाम-धर्म स्वीकार कर लिया तथा अपनी जमींदारी पर नियन्त्रण स्थापित करने का प्रयास किया। हरवंश सिंह ने परगना निजामाबाद के जमींदारों और ताल्लुकदारों को नियमित रूप से राजस्व देने के लिए विवश किया तथा निर्जन भू-भागों को आबाद किया। उसके इस कार्य में जिऊ नारायन[2] के अतिरिक्त अन्य सभी भाइयों ने सहयोग दिया।[3] सम्राट जहाँगीर के शासनकाल के 7वें वर्ष 1612 ई० में हरवंश सिंह को 1500 घोड़ों का मनसबदार बनाया गया और जौनपुर का फौजदार तथा सैनिक प्रान्तपति बनाया गया।[4] इसमें पहले कार्य के लिये उसे अतिरिक्त वेतन या जागीर मिली थी और दूसरे कार्य के लिये उसे अपने ही वतन के एक प्रदेश का प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी बनाया गया था।

---

1. सैय्यद नजमुल रजा रिजवी, 18वीं शदी के जमींदार, पृ० 27.
2. जिउ नारायन अपने भाइयों से नाराज होकर गोरखपुर के परगना सिलहट में जाकर रहने लगा था। तारीख-ए-आजमगढ़, पृ० 10ब. सैय्यद अमीर अली रिजवी सर गुजस्त-ए-राजा-ए-आजमगढ़, पृ० 59, परन्तु गिरधारी, इन्तजाम-ए-राज-ए-आजमगढ़, पृ० 9अ-10ब, के अनुसार जिऊ नारायन को परगना सिलहट की जमींदारी प्रदान की और इस पर अधिकार करने के प्रयास में जमींदारों द्वारा वह मारा गया।
3. तारीख-ए-आजमगढ़, पृ० 10 अ - ब, सैय्यद अमीर अली रिजवी, सर गुजस्त-ए-राजा-ए-आजमगढ़, पृ० 5अ-6ब.
4. आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० [illegible] इलाहाबाद (1935).

हरवंश सिंह ने मेहनगर में एक किले का निर्माण करवाया था तथा किले के अन्दर एक मकबरे का भी निर्माण करवाया था । इसके अतिरिक्त सिंचाई की सुविधा के लिये मेहनगर के दक्षिण में हरी बाँध का निर्माण करवाया । अपने इस कार्य में हरवंश को शाही सहायता भी प्राप्त हुयी थी । हरवंश ने हरवंशपुर के किले का भी पुनर्निर्माण करवाया, जो टानस के दक्षिण में परगना निजामाबाद में स्थित था । हरवंश की रानी रत्नज्योत जो खड्गपुर की बाइस राजपूतिन थी, उसे निजामाबाद में सिध्वल के जमींदार से भूमि का एक भाग प्राप्त हुआ था । वहाँ रानी ने एक बाजार की स्थापना की, जो रानी की सराय के नाम से विख्यात थी[1] हरवंश के नाम पर ही हरवंश के राज्य का नाम हरवंशपुर पड़ा । हरवंश वहाँ का प्रथम जमींदार था, जिसे राजा की उपाधि मिली थी ।[2] हरवंश की मृत्यु कब हुयी, यह ज्ञात नहीं है । एक प्राचीन विवरण से यह ज्ञात होता है कि 1629 ई0 में सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में हरवंश जीवित था । इसी वर्णन से यह भी ज्ञात होता है कि 17वीं शदी के पूर्वार्द्ध में ख्वाजा दौलत के वंशजों के अधिकार में निजामाबाद व देवगाँव का एक बड़ा क्षेत्र था और वह लोग इन जगहों के जमींदार थे तथा वहाँ से नियमित कर वसूल करते थे ।

राजा हरवंश सिंह के वंशज

हरवंश सिंह की मृत्यु सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में हुयी । राजा हरवंश सिंह के गम्भीर सिंह व धरनीधर नामक दो पुत्र थे । इनमें से गम्भीर सिंह परगना देवगाँव में स्थित नौरसिया गाँव में किसी बाँस राजपूत की लड़की को बलपूर्वक ले जाने के प्रयास में मार डाला गया ।[3] अतः राजा हरवंश सिंह की मृत्यु के पश्चात

---

1. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आफ यूनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा एण्ड अवध, भाग 33, इलाहाबाद 1935, आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट, पृ0 167.

2. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आफ यूनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा एण्ड अवध, भाग 33, इलाहाबाद 1935, आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट, पृ0 167.

3. गिरधारी, इन्तजाम-ए-राज-ए-आजमगढ़, पृ0 18 अ-ब.

धरनीधर समस्त जमींदारी का स्वामी बना । उस. . निजामाबाद के अतिरिक्त अपनी जमींदारी के अन्य परगनों पर भी अपना पर्याप्त नियन्त्रण स्थापित किया ।[1]

राजा धरनीधर के विक्रमाजीत, रुद्रसिंह तथा नारायन सिंह नामक तीन पुत्र थे । उसकी मृत्यु के पश्चात विक्रमाजीत राजा बना तथा बाबू रुद्रसिंह तथा बाबू नारायन सिंह को जीवनयापन हेतु कुछ ग्रामों की जमींदारी प्राप्त हुयी । बाबू रुद्र सिंह ने अपने भाइयों से अलग रहना प्रारम्भ किया परन्तु जब उसने अपनी लड़की के पुत्र को अपनी जमींदारी देने का निर्णय किया तो विक्रमाजीत ने कुछ बछगोती पठानों द्वारा उसकी हत्या करवा दी और उसके भू-भाग पर भी अधिकार कर लिया।[2] राजा विक्रमाजीत को इस अपराध के दण्ड से बचने के लिये इस्लाम धर्म स्वीकार करना पड़ा ।[3] परन्तु कुछ समय पश्चात किसी अन्य अपराध के कारण वह शाही सेना द्वारा मार डाला गया ।[4] उसकी मृत्यु के पश्चात कुछ समय तक रुद्रसिंह की विधवा रानी भवानी का जमींदारी पर अधिकार रहा परन्तु रानी भवानी ने विक्रमाजीत की मुसलमान पत्नी से उत्पन्न आजम खां व अजमत खां नामक दो पुत्रों को अपना दत्तक पुत्र बना लिया और आजम खां को जमींदारी सौंप दी ।[5] यह अपने परिवार का

---

1. सैय्यद नजमुल रजा रिजवी, 18वीं शदी के जमींदार, पृ0 27.
2. सैय्यद अमीर अली रिजवी, सर गुजस्त-ए-राजा-ए-आजमगढ़, पृ0 7अ-ब, तारीख ए-आजमगढ़, पृ0 12 अ, गिरधारी, इन्तजाम-ए-राज-ए-आजमगढ़, पृ0 26अ, 32 अ, के अनुसार रुद्रसिंह का नाम रुद्रशाही था और वह विक्रमाजीत का चाचा था उसने अवैध रूप से जमींदारों पर अधिकार कर लिया था जिसके कारण विक्रमादित्य ने उसकी और उसके दो पुत्रों की हत्या करवा दी ।
3. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आफ यूनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा एण्ड अवध, आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट, पृ0 168.
4. सैय्यद अमीर अली रिजवी, सर गुजस्त-ए-राजा-ए-आजमगढ़, पृ0 7 अ, 9ब, तारीख-ए-आजमगढ़, पृ0 12ब, 14अ, गिरधारी, तारीख-ए-राज-ए-आजमगढ़, पृ0 33अ, 39ब.
5. सैय्यद अमीर अली रिजवी, सर गुजस्त-ए-राजा-ए-आजमगढ़, पृ0 9ब, 10 अ, तारीख-ए-आजमगढ़, पृ0 14अ-ब, गिरधारी, तारीख-ए-राज-ए-आजमगढ़, पृ0 40अ, 44अ.

प्रथम ऐसा राजा था जिसका नाम टप्पा हरवंशपुर, दयालपुर, दौलताबाद की सीमा के बाहर भी जाना जाता था ।[1]

आजम ने 1665 ई0 में आजमगढ़ शहर की स्थापना की और अपने नाम पर इसका नाम आजमगढ़ रखा । अजमत ने आजमगढ़ के किले का निर्माण करवाया तथा परगना सगरी में आजमगढ़ की बाजार निर्मित करवायी ।[2]

आजम खाँ ने जमींदारी का अत्यधिक विस्तार किया । आजम खाँ के बारे में कहा जाता है कि जब उसे दक्षिण के अभियान पर भेजा गया था, उसी समय कुछ अज्ञात विद्रोहियों ने उसे बन्दी बना लिया व मार डाला । उसके पश्चात अजमत खाँ ने जमींदारी का सफलतापूर्वक विस्तार किया ।[3] परन्तु अजमत खाँ सरकारी राजस्व का विस्तार न कर पाने के कारण शाही कोप का भाजन बना । उसके विरुद्ध इलाहाबाद के सूबेदार ने सैन्य अभियान किया । अजमत खाँ ने अपनी जीवन रक्षा के लिये घाघरा नदी को पारकर भागना चाहा परन्तु शाही सेना ने उसका पीछा करके नदी पार करते समय 1668 ई0 में उसे डुबोकर मार डाला ।[4]

इस बात के प्रमाण नहीं मिलते कि आजम तथा अजमत को मुगल सम्राट की ओर से राजा की उपाधि प्राप्त थी या नहीं, किन्तु ये लोग निजामाबाद के अति-रिक्त अन्य परगनों के राजस्व विभाग का संचालन करते थे । उनको उनके पड़ोसी व आश्रित व्यक्ति राजा नाम से पुकारते थे । सन् 1660 ई0 में गजनफर खाँ फौजदार

---

1. आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 168.

2. आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 168.

3. भारतीय इतिहास कांग्रेस, बम्बई, 1980, पृ0 241.

4. अजमत खाँ की मृत्यु 1100 हिजरी 1688-89 ई0 में हुयी । तारीख-ए-आजमगढ़, पृ0 18 अ.

आजम को राजा आजम नाम से सम्बोधित करते हुये उसे भितुपुर के किले को ध्वस्त करने का तथा फौजदार से मिलने का आदेश दिया गया ।[1] इसके विपरीत 1677 ई0 में असद उल्ला खां औरंगजेब का वजीर अजमत खां को बिना राजा की उपाधि के सम्बोधित करता है । अतः यह स्पष्ट नहीं है कि उन्हें सम्राट से राजा की उपाधि प्राप्त थी या नहीं ।

बहराईच

1600 ई0 के लगभग बमनौती या बूंदी राज्य का विभाजन कर दिया गया और जितदेव के बड़े पुत्र पारसराम को उसका 3/5 भाग तथा उसके भाई को उसका शेष 2/5 भाग दे दिया गया । यह 2/5 भाग रीवां नाम से जाना जाता था । लगभग 30 वर्ष पश्चात इसकी तीसरी शाखा भी बन गयी । बूंदी के पारसराम के पौत्र तथा सबल सिंह के भाई ने इस तीसरी शाखा की स्थापना की थी । उसने राजपुर का प्रदेश ले लिया व स्वयं को वहीं प्रतिष्ठित किया । इसी समय हरहरदेव को हक चहर्रुम प्रदान किया गया उसमें उसे फखरापुर, हिसामपुर, सैलुक और आधे फिरोजाबाद पर अधिकार मिला । नसीरसिंह ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और अपना नाम इस्लाम सिंह परिवर्तित कर लिया और शाही दरबार के प्रभाव से उसने 20 गांवों पर अधिकार कर लिया जो कथा इलाका के नाम से जाने जाते थे किन्तु यह क्षेत्र कालान्तर में रीवां द्वारा वापस ले लिया गया ।[2] इस समय <u>इकौना के जनवार</u> अपनी सीमा विस्तार कर रहे थे । बरियार शाह की सातवीं पीढ़ी के माधोसिंह ने बलरामपुर[3] नामक एक नये राज्य की स्थापना की जबकि उसका भाई गनेश सिंह इकौना में ही रहा । इस राज्य में जनवार राज्य की स्थापना बड़ी ही महत्त्वपूर्ण थी ।

---

1. आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 168.
2. एच0आर0 नेविल, बहराइच ए गजेटियर, इलाहाबाद, 1903, पृ0 127.
3. एच0आर0 नेविल, बहराइच ए गजेटियर, इलाहाबाद 1911, पृ0 128.
   बलरामपुर का प्राचीन नाम टप्पा रामगढ़ गौरी था ।

महेश सिंह की तीसरी पीढ़ी में लक्ष्मी नारायन सिंह इकौना का राजा था । उसके पश्चात वीर नारायन उसका उत्तराधिकारी बना । उसका पुत्र महा सिंह इकौना के परिवार का महत्त्वपूर्ण राजा था । महा सिंह ने सम्राट शाहजहाँ के काल में ख्याति अर्जित की । सन् 1627 ई0 में महा सिंह को सम्राट शाहजहाँ के फरमान द्वारा हकचौधरी के नाम से उतना ही राजस्व वाला क्षेत्र प्रदान किया गया जितना गायकवार हरहरदेव को प्राप्त था । इसके अन्तर्गत बहराइच, सलोनाबाद, सुजौली, राजहाट, सुल्तानपुर, किला, नावागढ़, दन्दोइ, बहराह, खुरासार के टप्पा भिती और टप्पा रामगढ़ गौरी जो बलरामपुर का पुराना नाम था, का परगना सम्मिलित था ।[1] अपने इस फरमान द्वारा सम्राट ने जनवारों को आदेश दिया कि वह अपने क्षेत्र में उत्तर व पूर्व को उन्नत करे व उस दूरस्थ स्थल पर मुगल आधिपत्य स्थापित करे ।[2]

महा सिंह ने उस अवसर का लाभ उठाया और अपने परिवार के सदस्यों को अपने ही राज्य में जगह-जगह नियुक्त करना प्रारम्भ किया । जगन्नाथ सिंह पहले ही चरदा चला गया था । महा सिंह ने अपने भाई को पश्चिम की ओर जम्दान और मलहीपुर जो कालान्तर में गुजीगंज कहलाया वहाँ अपनी रियासत बनाने के लिये भेज दिया । सम्भवतः उसके पूर्व ही इस परिवार का एक सदस्य नदी पार करके भिंगा राज्य जो बहराइच में है पहुँच गया था व उस पर अधिकार कर लिया था । सम्राट के फरमान के अनुरूप महा सिंह ने जंगल व छोटे छोटे गाँव ब्राह्मणों व अन्य लोगों को दान के रूप में दे दिये । महा सिंह ने दनदोई और दनदून के क्षेत्र से छोड़कर तराई परगना में कहीं भी अपनी सम्प्रभुता नहीं प्रदर्शित की और बहराइच के गाँव में कभी भी अपना अधिकार स्थापित नहीं किया ।

महा सिंह के पश्चात उसका पुत्र मानसिंह तथा उसके पश्चात उसका पौत्र श्याम सिंह उत्तराधिकारी बना । श्यामसिंह की दो पत्नियाँ थीं प्रत्येक पत्नी के एक-एक

---

1. एच0आर0 नेविल, बहराइच ए गजेटियर, इलाहाबाद, 1911, पृ0 128.
2. एच0आर0 नेविल, बहराइच ए गजेटियर, इलाहाबाद 1911, पृ0 128.

पुत्र था। बड़ा पुत्र इकौना का मोहनसिंह तथा दूसरा पुत्र प्रागशाह था। श्याम सिंह ने कुछ समय के लिये इकौना का परित्याग कर दिया और दिल्ली के सम्राट की सेवा में चला गया। वहाँ उसे अपनी सैनिक योग्यता से रसूलदार का पद प्राप्त हुआ। उसके पश्चात वह नवाब सादात खाँ के साथ अवध लौट आया जहाँ उसे बहराइच के बन्जारों का दमन करने का कार्य मिला, जिसका उसने सफलतापूर्वक निर्वाह किया।[1]

जौनपुर

सम्राट अकबर की मृत्यु के चार वर्ष पश्चात जौनपुर की सीमा का क्षेत्रफल कम हो गया, क्योंकि सम्राट जहाँगीर ने आजमगढ़ के राजा को इस प्रदेश से 21 महालों वाला आजमगढ़ चकला प्रदान कर दिया था। सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में जौनपुर के दो बड़े जागीरदारों का वर्णन मिलता है। इनमें से एक मिर्जा चिन कुलीज खान था। वह कुलीज खान का पुत्र था। उसे 800/500 का मनसब 1605 ई0 में प्राप्त था और 1611-12 ई0 में उसे खान की उपाधि प्रदान की गई थी।[2] उसे

---

1. यह विवरण पयागपुर के राजा के वर्णन से प्राप्त होता है। मिस्टर ब्वायज ने श्यामसिंह का कोई वर्णन नहीं किया है तथा प्रागशाह के इकौना परिवार से सम्बन्धित होने में उन्हें सन्देह है। उनके अनुसार प्रागशाह एक किसान था, जिसके पास चार पाँच गाँव थे। मिस्टर ब्वायज ने जो वंशावली दी है उसमें महासिंह के पहले और बाद के कई नामों का कोई विवरण नहीं दिया है। इस बात के कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है जिससे यह प्रकट हो जाये कि श्याम सिंह इकौना का था। बहराइच के जनवारों का यह मत है कि वह गुजरात का रहने वाला था। इसीलिये संभवतः इकौना का श्याम सिंह अपने को गुजरात का रहने वाला कह सकता था। इसीलिये एक अन्य विवरण में कहा गया है कि श्यामसिंह गुजरात से दिल्ली गया था, उसके पश्चात् अवध वापस लौटा।

2. जहाँगीर-तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0) भाग 1, पृ0 35, एम0 अतहर अली, द आपरेटस आफ इम्पायर, पृ0 45, एच0आर0 नेविल, जौनपुर गजेटियर, इलाहाबाद प्रेस, 1908, पृ0 174.

जौनपुर 1615 ई0 में प्राप्त हुआ, किन्तु अगले ही वर्ष उसकी मृत्यु हो गई। दूसरा प्रमुख जागीरदार जहाँगीर कुली खान था, जो खाने आजम मिर्जा कोका का पुत्र था, यह 1624 ई0 में जौनपुर में था।[1]

मझौली

उमराये हुनूद में सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में मझौली के जमींदार नथमल का उल्लेख मिलता है। सन् 1605 ई0 में सम्राट जहाँगीर ने उसे 500 रूपया इनाम में दिया था और 1615 ई0 में उसे राजा की उपाधि प्रदान की थी और उसे 2000/1200 का मन्सब प्रदान किया था।[2]

सूबा अवध में सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आजमगढ़ की नवीन जमींदारी की स्थापना एक प्रमुख घटना थी। आजमगढ़, बहराइच, जौनपुर व मझौली के जमींदारों ने मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली थी। मुगलों से उन्हें शाही सेवा में मनसब प्राप्त था और वह समय समय पर मुगलों को सैनिक सहायता प्रदान करते थे।

---

1. एच0आर0 नेविल, जौनपुर गजेटियर, इलाहाबाद प्रेस, 1908, पृ0 174.

2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 366, एम0 अतहर अली, द आपरेटस आफ इम्पायर, पृ0 57, केवलराम, तजकिरातुल-उमरा, पृ0 275.

ख. सूबा इलाहाबाद के अन्तर्गत(करद)राजा या जमींदार

सूबा इलाहाबाद की लम्बाई जौनपुर में सिंझौली से दक्षिण की पहाड़ियों तक 160 कोस थी इसकी चौड़ाई चौसा घाट से घतमपुर तक 122 कोस थी । इसके पूर्व में बिहार, उत्तर में अवध, दक्षिण में बन्धु और पश्चिम में आगरा स्थित था ।[1]

इस सूबे के अन्तर्गत 10 सरकारें थीं और 177 परगने थे । यहाँ से प्राप्त राजस्व इक्कीस करोड़ चौदह लाख सत्रह हजार आठ सौ उन्नीस (21, 14, 17,819) दाम 53, 10, 695.79 रूपये) था । इसमें से एक करोड़ ग्यारह लाख पैंसठ हजार चार सौ सत्रह (1, 11, 65, 417) दाम (2, 79, 135.66 रूपये) सयूरगल था ।[2]

सूबा इलाहाबाद में बान्धोगढ के बघेला राजाओं का वर्णन सम्राट जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में मिलता है ।

भट्टा

भट्टा के राजा सूबा इलाहाबाद के प्रमुख राजा थे ।[3] आईने अकबरी में भट्टा को भट्टोरा कहा गया है ।* अबुल फजल के अनुसार भटकोरा में 39 महाल थे।[4] अबकरनामा के निम्नलिखित उद्धरण से बघेल क्षेत्र की सीमा का ज्ञान होता है । "भट्टा की जनसंख्या बहुत है और इसका एक अलग राजा है । बान्धोगढ का किला यहाँ के राजा की राजधानी है । यह क्षेत्र पूर्व में 60 कुरोह है और इसके बाद उन राजाओं का क्षेत्र है जो उनकी प्रजा के अन्तर्गत नहीं है । इसके बाहर सरगुजा और

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 169.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 171.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), एच0 बेवरिज, पृ0 14.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), अच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 76.

रोहतास का क्षेत्र है । पश्चिम में यह 12 कुरोह है जिसके बाहर अन्य राजाओं का क्षेत्र है, जो कुछ सीमा तक उनके अधीनस्थ है । उसके बाहर गढ का क्षेत्र है । उत्तर में गंगा और यमुना है । इस दिशा में यह प्रदेश 60 कुरोह तक विस्तृत है और सूबा इलाहाबाद से मिला हुआ है । दक्षिण में यह 16 करोह तक विस्तृत है और उसके बाद गढ का क्षेत्र है । दक्षिण और पूर्व के मध्य यह 70 कुरोह तक विस्तृत है और उसके पश्चात इलाहाबाद है । उत्तर पश्चिम में यह 50 कुरोह तक विस्तृत है और कालिन्जर के किले से मिला हुआ है । दक्षिण-पश्चिम में यह 25 कुरोह तक विस्तृत है और उसके बाद गढ़ का क्षेत्र है ----- ।"[1]

<u>सम्राट अकबर एवं भट्टा के राजा</u>

सम्राट अकबर के शासनकाल में भट्टा का राजा रामचन्द्र था । उसके समय तक कालिन्जर का किला भी इस बघेल रियासत भट्टा के अन्तर्गत आ गया था ।[2] यमुना के उत्तरी किनारे पर स्थित कन्त और अरइल पहले ही रामचन्द्र के बाबा राजा राय सिंह ।जो सिकन्दर लोदी का समकालीन था। के समय में बघेल रियासत में शामिल हो गया था ।[3] राजा रामचन्द्र ने 1569-70 ई0 में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लीथी। इसी वर्ष मुगलों ने कालिन्जर के दुर्ग को अधिकृत कर लिया ।[4]

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी अनु0, बेवरिज, भाग 3, पृ0 728, अबुल फजल, आइने-अकबरी अंग्रेजी अनु0, एच0एस0 जैरेट, भाग 3, पृ0 1088-89.

2. बदायूँनी, मुन्तखब-उल-तवारीख, भाग 1, पृ0 344, अब्बास खाँ शेरवानी, तारीख-ए-शेरशाही, पृ0 101-102.

3. नियामतुल्ला खाँ, तारीख-ए-खान-ए-जहाँनी, एम0एम0 इमाम अलदीन ।ढाका 1960।, पृ0 179.

4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी अनु0, एच0 बेवरिज, भाग 2, पृ0 340.

राजा रामचन्द्र समय समय पर मुगलों को पेशकश प्रदान करता था व सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करता था । उसे 2000/2000 का मनसब प्राप्त था ।[1]

1580 ई० में सूबा इलाहाबाद की अकबर द्वारा स्थापना के समय इसमें कड़ा मानिकपुर, जौनपुर एवं बघेलों की एक बड़ी रियासत बान्धोगढ़ सम्मिलित थी ।[2]

1592-93 ई० में राजा रामचन्द्र की मृत्यु हो जाने पर उसका पुत्र राजा बलभद्र राजा बना । उसे राजा की उपाधि प्रदान की गयी किन्तु भट्टा जाते समय रास्ते में अचानक उसकी मृत्यु हो गयी ।[3] बलभद्र की मृत्यु होते ही स्थानीय लोगों ने विक्रमाजीत को राजा बनाना चाहा फलत: वहाँ उत्तराधिकार की समस्या उत्पन्न हो गयी । अत: अकबर ने राय पाथर दास को बान्धोगढ़ के किले को विजित करने के लिये भेजा । सम्राट द्वारा यह कदम उठाये जाने के दो कारण थे । 1. राजा रामचन्द्र व बलभद्र की मृत्यु हो जाने पर बघेला राज्य का स्थायित्व भंग हो गया था । 2. स्वार्थी बघेला अमीरों के आन्तरिक षड्यन्त्र से वहाँ की स्थिति बड़ी संशयपूर्ण हो गयी थी ।[4] इसके पूर्व अकबर चित्तौड़, रणथम्भौर, कालिन्जर, चुनार व रोहतासगढ़ के प्रमुख दुर्गों पर अधिकार कर चुका था अत: बान्धोगढ़ के किले की ओर उसका आकर्षण होना स्वाभाविक था । 3 जुलाई 1597 ई० में मुगलों ने बान्धोगढ़ के किले पर अधिकार कर लिया ।[5]

---

1. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी अनु०, एच०एस० जैरेट, पृ० 161.
2. सुरेन्द्रनाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, [शोध-प्रबन्ध] इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ० 2.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी अनु०, भाग 3, पृ० 630-631, अहसान रज़ा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ० 159.
4. सुरेन्द्र नाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ० 135, बदायूँनी मुन्तखब तवारीख, भाग 1, पृ० 469, अबुल फजल, आईने अकबरी, भाग 3, पृ० 997, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ० 469.
5. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी अनु०, एच०एस० जैरेट, भाग 3, पृ० 997, बदायूँनी मुन्तखब तवारीख, भाग 2, पृ० 534.

<u>सम्राट जहाँगीर और राजा दुर्जोधन</u>

विक्रमाजीत राजा वीरभद्र का ज्येष्ठ पुत्र था तथा राजा दुर्जोधन उसका छोटा पुत्र था ।[1] 28 मार्च, 1601 ई0 में अकबर ने राजा विक्रमाजीत के राजा बनने की माँग को नकार कर उसके छोटे भाई दुर्जोधन को राजा की उपाधि दी । बघेलखण्ड की रियासत दी और अल्पवयस्क होने के कारण भारती चन्द्र को उसका संरक्षक नियुक्त किया ।[2] सन् 1610 ई0 में राजा विक्रमादित्य ने पुन: अपने अधिकार का दावा किया व विद्रोह कर दिया । वह बान्धोगढ़ पर अधिकार करना चाहता था परन्तु सम्राट को यह स्वीकार नहीं था । उसने राजा महासिंह (मानसिंह कछवाहा के पोते) को विद्रोह का दमन करने के लिये भेजा उसने विद्रोह का दमन किया अत: 1612 ई0 में सम्राट ने बघेलखण्ड की रियासत राजा महासिंह को जागीर मे दे दी । इस प्रकार मुगलों का अधिकार पुन: बान्धोगढ़ पर हो गया ।[3] सन् 1624 ई0 में राजा दुर्जोधन की मृत्यु हो गयी ।[4]

<u>राजा अमरसिंह</u>

राजा दुर्जोधन के कोई पुत्र नहीं था । अत: उसके पश्चात (विक्रमादित्य) विक्रमाजीत का ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह गद्दी पर बैठा ।[5] सन् 1626 ई0 में राजा

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 1, हिन्दी अनु0, ब्रजरत्नदास, पृ0 331.
2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 1, पृ0 331, सुरेन्द्र नाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 167.
3. सुरेन्द्र नाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 153, मुतामिद खाँ, इकबालनामा, पृ0 94, जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0,) राजर्स बेवरिज, भाग 1, पृ0 168.
4. रीवाँ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 110, अमरसिंह का शासन, 1624-1640 ई0 के मध्य था । राजा दुर्जोधन की मृत्यु के विषय में कोई सन्दर्भ प्राप्त नहीं होता।
5. सुरेन्द्रनाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 168.

अमरसिंह सम्राट जहाँगीर से मिला । संभवत: वह अपने पिता विक्रमाजीत का सम्राट अकबर के बीच पनपे मनमुटाव को समाप्त करना चाहता था । जहाँगीर ने कान्हा राठौर जो बान्धोगढ की भाषा में अच्छी कविता कर लेता था, के हाथों एक विशेष खिलअत एक घोड़ा युवा बघेल राजा के लिये भिजवाया ।[1] राजा अमरसिंह को सशस्त्ररक्षक दल के साथ राजधानी ले आया जहाँ सम्राट उससे बड़ी उदारता से मिला। सम्भवत: इसी समय उसे राजा की उपाधि दी गयी और सरकारी तौर पर उसे बान्धोगढ की रियासत पर शासन करने का अधिकार दिया गया ।[2]

शाहजहाँ के शासन के आठवें वर्ष 1634-35 ई0 में राजा अमरसिंह बघेला ने मुगलों को सहायता प्रदान की । रत्नपुर के जमींदार[3] के विद्रोह करने पर सम्राट ने अब्दुल्ला खाँ (बिहार का सूबेदार) को उसका दमन करने के लिये भेजा, इस अभियान में अमरसिंह ने मुगलों का साथ दिया । उसने रत्नपुर के राजा की पुत्री से विवाह कर लिया । अमरसिंह की मध्यस्थता करने के कारण रत्नपुर के जमींदार ने अब्दुल्ला खाँ की अधीनता मान ली व उसे सम्मान दिया ।[4] इस प्रकार मुगलों व विद्रोही जमींदार में सुलह हो गयी । इसके अनन्तर वह मुगल दरबार गया । पुन: वह अब्दुल्ला खाँ के साथ जुझारसिंह बुन्देला का दमन करने के लिये नियुक्त हुआ ।[5]

---

1. सुरेन्द्रनाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 168, शाहनवाज खाँ मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु0,) एच0 बेवरिज भाग 1, पृ0 331, मुतामिद खाँ, इकबालनामा, पृ0 288-89, बदायुँनी, मुन्तखब उलतवारीख, भाग 2, पृ0 584.
2. सुरेन्द्र नाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 168.
3. बिहार सूबे के रोहतास सरकार ने रत्नपुर अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी अनु0, भाग 2, पृ0 188, बदायुँनी मुन्तखब उल तवारीख, अंग्रेजी अनु0, भाग 1, पृ0 102.
4. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 209, बनारसीप्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 112.
5. सुरेन्द्रनाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 169, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनु0, भाग 1, पृ0 332

<u>अनूप सिंह बघेला</u>

राजा अमरसिंह की मृत्यु हो जाने पर उसका पुत्र अनूप सिंह बघेलों का राजा बना ।[1] शाहजहाँ के शासनकाल के 24वें वर्ष 1634-35 ई0 में चौरागढ़ के जागीरदार राजा पहाड़सिंह बुन्देला ने वहाँ (चौरागढ़) के जमींदार हृदयराम पर आक्रमण किया तो उसने अधीनता मान ली व बन्दी बनाये जाने के भय से अनूप सिंह के पास रीवाँ में शरण ली । इस समय तक बान्धोगढ़ का किला पूरी तरह से नष्ट हो गया था और रीवाँ बघेलों की नयी राजधानी बन गयी थी ।[2] पहाड़सिंह बुन्देला जो 1650 ई0 में चौरागढ़ का तियूलदार नियुक्त हुआ था उसने हृदयराम से बदला लेने के लिये रीवाँ पर आक्रमण कर दिया । हृदयराम व अनूपसिंह अपनी स्थिति दयनीय जानकर परिवार सहित नाथूनथर[3] के पहाड़ों में भाग गये । दाराशिकोह इलाहाबाद का सूबेदार था । उसने सैय्यद सलावत खान को इलाहाबाद का नायब-ए-नाजिम नियुक्त किया ।[4] अनूप सिंह की स्थिति अब बड़ी दयनीय थी । उसके पास अब कोई विकल्प शेष नहीं बचा था । अतः उसने सैय्यद सलावत खाँ की अधीनता स्वीकार कर ली व क्षमा माँग ली । अतः सलावत खान अनूपसिंह को उसके अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार करने के लिये मुगल दरबार में ले आया । 25 जुलाई 1655 ई0 में वह शाहजहाँ के सम्मुख उपस्थित हुआ था । सम्राट

---

1. शाह नवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनु0, भाग 1, पृ0 332, रीवाँ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार अमरसिंह के दो पुत्र थे अनूप सिंह और फतहसिंह । अनूप सिंह ने 1640-1660 ई0 तक शासन किया । मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 209.

2. शाहनवाज खाँ, मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनु0, भाग 1, पृ0 332, सुरेन्द्र नाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय पृ0 177.

3. यह रीवाँ के उत्तर तथा इलाहाबाद के दक्षिण में स्थित पहाड़ी प्रदेश था ।

4. सुरेन्द्र नाथ, सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोधप्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 179.

उससे बड़ी उदारता से मिला । उसने उसे 3000/2000 दो अस्पा सेह अस्पा का मनसब प्रदान किया ।[1] उसके अतिरिक्त खिलअत व जमधर प्रदान किया ।[1] बघेला राजा की रियासतें अनूप सिंह को वतन जागीर के रूप में दी गयी और उसके अन्य कार्यालय भी शाही पुरस्कार के रूप में उसे प्रदान किये गये ।[2]

बान्धोगढ़ के बघेला राजाओं में राजा रामचन्द्र से लेकर राजा अमरसिंह तक सभी ने मुगलों के प्रति अपनी स्वामिभक्ति प्रकट की थी किन्तु अनूपसिंह के पहले कोई भी राजा स्थायी रूप से मुगल सेवा में सम्मिलित नहीं हुआ था । अनूप सिंह बघेला ने पुरानी परम्परा को तोड़ा, उसने मुगलों की पूर्ण अधीनता स्वीकार कर ली । उसके समय में मुगलों एवं बघेलों ने स्थायी मैत्री ही नहीं हुयी बल्कि उसके समय से बघेलों ने मुगलों की सैनिक सेवा स्वीकार कर ली ।

---------::0::---------

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 209, केवल राम, तजकिरात उल-उमरा, पृ0 247.

2. सुरेन्द्र नाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ सूबा आफ इलाहाबाद, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 179, शाहनवाज खां, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु0,) बेवरिज पृ0 332, मुल्ला, मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 209, वारिस, बादशाहनामा, भाग 2, एफ, 13बी., रीवां डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 16, इसमें अनूपसिंह का मनसब 2000/3000 दिया गया है । अबुल फजल आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0,) ब्लोचमैन, भाग 1, पृ0 407, पर उसे 3000/2000 का मनसबदार बताया गया है ।

अध्याय - चतुर्थ

सूबा अजमेर के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा अजमेर के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा अजमेर में आधुनिक राजस्थान का लगभग समस्त क्षेत्र सम्मिलित था। यह आगरा तथा गुजरात के मध्य एक कड़ी की भाँति था। दिल्ली या आगरा के किसी शासक के लिये गुजरात पर अपना आधिपत्य बनाये रखने के लिये इस सूबे पर नियंत्रण रखना आवश्यक था।[1]

सूबा अजमेर बहुत ही विस्तृत था। इसकी लम्बाई पुष्कर और आम्बेर से बीकानेर तथा जैसलमेर तक 168 कोस थी और चौड़ाई अजमेर से बांसवाडा तक 150 कोस थी। इसके पूर्व में आगरा, उत्तर में दिल्ली का प्रदेश, दक्षिण में गुजरात और पश्चिम में दीपालपुर तथा मुल्तान था।[2]

इस सूबे अन्तर्गत 7 सरकारें, 197 परगने थे। इसका कुल क्षेत्रफल 2 करोड़ 14 लाख 35941 बीघा 7 बिस्वा था। यहाँ से प्राप्त राजस्व 28 करोड़ 84 लाख 1557 दाम था जिसमें से 23 लाख 26336 दाम सयूरगाल था।[3] सूबा अजमेर में मेवाड़, शाहपुरा, प्रतापगढ़, देवलिया, करौली, सिरोही, कोटा, बूँदी, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, आम्बेर, शाम्भर, नरवर, लाम्बी या शेखावाटी, जालौर, मारवाड़, बीकानेर और जैसलमेर के प्रदेश थे।

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 97.

2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 273.

3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 273.

मेवाड़ और उसके अधीनस्थ राज्य

मेवाड़

अजमेर सूबे के अन्तर्गत मेवाड़ राज्य एक प्रमुख प्रदेश था । 'मासिर-उल उमरा' के अनुसार मेवाड़, अजमेर प्रान्त की चित्तौड़ सरकार के अन्तर्गत था । इसके अन्तर्गत 10,000 गाँव थे, यह 40 कोस लम्बा और 33 कोस चौड़ा था इसमें तीन भारी दुर्ग थे चित्तौड़, कुम्भलमेर और माण्डल । यहाँ के सरदार पहले रावल कहलाते थे । कालान्तर में वह राणा कहलाने लगे । उनकी जाति गुहिलौत थी ।[1] वह सिसोद ग्राम के रहने वाले थे इसलिये सिसोदिया कहलाते थे ।

इस राज्य का महाप्रतापी शासक राणा संग्राम सिंह था, जो राणा सांगा के नाम से विख्यात था । उसने राजस्थान पर अपना ऐसा प्रभुत्व जमाया कि तत्कालीन राजपूताने के करीब 200 छोटे बड़े नरेश उसके अनुयायी हो गये थे। आमतौर पर राजपूतों में एकता का अभाव दिखायी पड़ता था किन्तु इस अवसर पर ऐसा प्रतीत होता था कि वे दिल्ली में हिन्दू शासन की स्थापना करने का मन ही मन विचार बना चुके थे । किन्तु यह विचार फलीभूत न हो सका । 17 मार्च 1527 ई0 को खनुआ के युद्ध में राजपूतों की विशाल सेना मुगलों की तोपों की गोलाबारी के आगे ध्वस्त हो गयी ।[2]

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 273,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, अंग्रेजी (अनु0), एच0बेवरिज, भाग 1, पृ076।
   मुल्ला अहमद ठट्टवी और आसफ खान, तारीख-ए अल्फी, पृ-24।

2. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0 29.

राणा सांगा के पश्चात 1530 ई0 में राजा उदयसिंह गद्दी पर बैठा । राणा ने मुगल विरोधी नीति अपनायी किन्तु वह मुगलों का दृढ़ता से प्रतिरोध न कर सका । 1567 ई0 में मुगल सेनाओं ने मेवाड़ को तहस नहस कर डाला । राणा ने भागकर पहाड़ियों में शरण ली । राणा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात् राणा प्रताप ने भी मुगल विरोधी यही नीति जारी रखी और मुगल सम्राट की अधीनता नहीं स्वीकार की ।

राणा प्रताप

राणा प्रताप 1572 ई0 में अपने पिता के उत्तराधिकारी बने । अकबर ने राणा को अधीनता स्वीकार कर लेने के लिए पहले शान्तिपरक रास्ता अपनाया। राजा मानसिंह व राजा भगवानदास क्रमशः राणा को समझाने के लिए भेजे गए । किन्तु जब शान्तिपूर्वक समझाने का राणा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो अकबर ने मेवाड़ पर पुनः आक्रमण का निश्चय किया और इसका परिणाम था हल्दी घाटी का युद्ध ।18 जून 1576 ई0। जिसमें राजा मानसिंह ने राणाप्रताप को पराजित किया फिर भी यह संघर्ष समाप्त नहीं हुआ क्योंकि राणा पहाड़ियों में भाग गया और अधीनता स्वीकार करने से बचता रहा । पच्चीस वर्षों के शासन के बाद उसकी मृत्यु हुई ।

राणा अमरसिंह

1597 ई0 में राणाप्रताप की मृत्यु के पश्चात् राणा अमरसिंह चांवण गांव में सिंहासन पर बैठा । जब जहांगीर तख्त पर बैठा तो उसने भी अपने पिता की नीति के अनुसार महाराणा को अधीनस्थ बनाने की चेष्टा की ।[1] उसने शहजादा

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 244.

परवेज को बीस हजार सवारों की सेना के साथ मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए भेजा। परवेज को सफलता नहीं मिली वह वापस आगरा लौट आया। इस पर जहाँगीर ने नाराज होकर परवेज को युवराज पद से हटा दिया।[1] तत्पश्चात् जहाँगीर ने 1608 ई0 में महावत खाँ को मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए भेजा। वह भी असफल रहा। अतः महावत खाँ को वापस बुलाकर उसकी जगह पर अब्दुल्ला खाँ को मेवाड़ अभियान पर भेजा गया।[2] जब वह भी असफल रहा तो 1611 ई0 में उसे गुजरात का सूबेदार बनाकर भेज दिया और राजा बासु तंवर को राणा के विरुद्ध भेजा गया। राजा बासु भी राणा अमरसिंह के विरुद्ध कुछ कर न सका और मेवाड़ की सीमा पर शाहाबाद में ही मर गया।[3] जहाँगीर किसी भी प्रकार मेवाड़ी प्रतिरोध को तोड़कर उसे अपनी अधीनता में लाने के लिए आतुर हो रहा था, अतः अब उसने अपने सर्वाधिक पराक्रमी शहजादे खुर्रम को इस अभियान पर भेजा। 8 नवम्बर 1613 ई0 में सम्राट स्वयं अजमेर में जाकर रुका और उसने शहजादा खुर्रम के साथ एक विशाल सेना भेजी। इस सेना में मालवा के सूबेदार खाने आजम, गुजरात के सूबेदार अब्दुल्ला खाँ राजा नरसिंह देव बुन्देला, मुहम्मद खान, याकूब खान नियाजी, हाजीकोका उजबेग, मिर्जा मुराद सधवी, शरजा खान, अल्लाह मार लूका, गजनी खान जालौरी, जोधपुर के सवाई राजा सूरसिंह राठौर तथा किशनगढ़

---

1. कर्नल अलेक्जेण्डर डो, हिस्ट्री ऑफ हिन्दुस्तान, भाग 3, पृ0 43,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (उदयपुर) पृ0 48.
2. राजेन्द्रशंकर भट्ट, मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर, पृ0 376, 379.
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0) एलेक्जेण्डर रोजर्स, भाग 1, पृ0155,
3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 252,
   गोपीनाथ शर्मा, मेवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 131,
   राजेन्द्र शंकर भट्ट, मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर, पृ0 381.

के किशनसिंह राठौर आदि अपनी अपनी सेना सहित उपस्थित हुये । इतनी बड़ी, इतने उच्च और अनुभवी सेनापतियों सहित शाही सेना इससे पहले कभी मेवाड़ नहीं भेजी गई थी । इस सेना की संख्या तथा संगठन किसी भी शत्रु का दिल कंपा सकता था।[1] खुर्रम ने माण्डलगढ़ व उदयपुर पहुँचकर पहाड़ी इलाकों को लूटना व गाँवों को जलाना शुरू कर दिया । शाही फौज चावंण तक पहुँच गयी । राणा अमरसिंह ने खुर्रम के इस तूफानी अभियान से त्रस्त होकर समझलिया कि अधिक समय तक मुगलों का प्रतिरोध नहीं किया जा सकेगा । अत: उसने सन्धि कर लेना ही उचित समझा । 15 फरवरी 1615 ई0 को महाराणा अमरसिंह अपने दोनों भाइयों तीनों पुत्रों व कई सरदारों के साथ शहजादा खुर्रम से गोगूंदे में मिलने के लिए गये । कुंअर कर्ण के शहजादा खुर्रम से भेंट करने पर शहजादा ने बड़ी उदारता से उसका स्वागत किया और उसे एक उत्तम सरोपा, एक जड़ाऊ तलवार, एक कटार, एक स्वर्ण जीन से सुसज्जित घोड़ा और एक विशेष हाथी उपहार में प्रदान किया । खुर्रम के इस मैत्रीपूर्ण व्यवहार से कुंअर कर्ण उसका आजीवन मित्र बन गया ।[2]

सन् 1615 ई0 में मुगलों तथा सिसोदियों के बीच खनुवा के युद्ध के समय से ही चला आने वाला वैमनस्य समाप्त हो गया । मेवाड़ ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । दोनों में निम्नलिखित शर्तों पर सन्धि हो गयी । सन्धि में यह निश्चित किया गया कि महाराणा स्वयं खुर्रम से मिलेंगे, किन्तु सम्राट के दरबार में उपस्थित नहीं होंगे । दरबार में उनका प्रतिनिधित्व उनका पुत्र कर्ण करेगा । यह भी तय हुआ कि मुगल सेना में महाराणा के एक हजार सैनिक रहेंगे । एक शर्त

---

1. राजेन्द्र शंकर भट्ट, मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर, पृ0 390.

2. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 15-16.

   डॉ0 बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 237, 248.

यह थी कि कभी भी चित्तौड़ के दुर्ग की मरम्मत नहीं करायी जायेगी । इस सन्धि से मेवाड़ भी मुगलों का अधीनस्थ राज्य हो गया । गुहिल से लेकर लगभग 1000 वर्ष तक मेवाड़ किसी के अधीन नहीं हुआ था और जैतसिंह से लेकर महाराणा अमरसिंह अर्थात् 400 वर्ष तक मेवाड़ अपनी स्वतन्त्रता के लिए मुसलमानों से संघर्ष करता रहा था ।[1] राणा अमरसिंह ने वास्तविकता के समक्ष घुटने तो टेक दिए किन्तु वे हृदय से इस सत्ता को स्वीकार न कर सके । इस सन्धि के पश्चात् महाराणा अमरसिंह को इतनी ग्लानि हुई कि वे राजकाज अपने पुत्र कुंअर कर्णसिंह को सौंपकर उदयपुर के एकान्तमहल में रहने लगे । उदयपुर में 16 जनवरी 1620 ई० को उनकी मृत्यु हो गई ।[2]

राणा कर्णसिंह

महाराणा अमरसिंह के 26 रानियों से 6 पुत्र और एक कन्या हुई थी । उनमें महाराणा कर्ण ज्येष्ठ थे और गद्दी के उत्तराधिकारी थे । शहजादा खुर्रम कुंअर कर्णसिंह को लेकर सम्राट जहाँगीर के पास अजमेर गया । सम्राट ने कर्णसिंह को 5000/5000 का मनसब प्रदान किया ।[3] तथा साथ ही पन्ना व मोतियों की

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 247.

2. राजेन्द्र शंकर भट्ट, मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर, पृ0 421, गौरी शंकर हीरा चन्द्र ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ0513.

3. रघुबीरसिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 513,
जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 248,
उदयपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 49,
बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 246,
बी0पी0 सक्सेना, हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ ऑफ देहली, पृ0 17,
गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 340.

एक माला भेंट में दी ।[1] जिसके बीच में एक लाल लगा हुआ था, इसे हिन्दी में सुमरनी कहते हैं । महाराणा अमरसिंह और कुंअर कर्ण की संगमरमर की दो आदम कद मूर्तियाँ बनवाकर आगरा के किले के नीचे बाग में स्थापित कराई ।[2] एतद् द्वारा सम्राट ने उनके प्रति प्रतिष्ठा प्रकट किया । मुगलों के विरुद्ध युद्धों में लम्बे समय तक उलझे रहने के कारण मेवाड़ की आर्थिक दशा करीब-करीब उजड़ गई थी । महाराणा कर्णसिंह के ऊपर मेवाड़ की इस अस्त-व्यस्त दशा को सुधारने का भारी दायित्व था । उसने उजड़े हुए प्रदेशों को पुन: बसाने के लिए प्रयत्न किया। उसने कई महल एवं भवन भी बनवाये । उसने उदयपुर में नगरकोट का निर्माण प्रारम्भ किया । उदयपुर के डिस्ट्रिक्ट गजेटियर से ज्ञात होता है कि महाराणा कर्ण सिंह ने मेवाड़ को परगनों में बाँटा और ग्रामीण प्रशासन में पटेल, पटवारी व चौकीदार की नियुक्ति की ।[3] इस प्रकार प्रशासनिक व्यवस्था करके मेवाड़ को पुन: शान्ति एवं समृद्धि के मार्ग पर उसने प्रवृत्त कर दिया ।

मुगल सिसोदिया मैत्री अविच्छिन्न रूप से तब तक विद्यमान रही जब तक कि औरंगजेब के समय इसमें व्यवधान नहीं आ गया । सन् 1618 ई० में जब जहाँगीर गुजरात से आगरा जाते समय राणा के राज्य के पास पहुँचा तब कुंअर कर्ण सम्राट से मिलने आया । सम्राट जहाँगीर ने कुँअर कर्ण को राणा की पदवी, खिलअत, घोड़ा और हाथी उपहार में प्रदान किया । सन् 1622 ई० में शाहजादा खुर्रम जिसने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था उदयपुर आया । महाराणा कर्णसिंह ने अपने छोटे भाई भीमसिंह को खुर्रम की सहायता के लिये एक सेना के साथ भेजा । दोनों में इतनी अगाध मैत्री हो गयी कि महाराणा और खुर्रम

---

1. जहाँगीर, तुज़ुक-ए जहाँगीरी, पृ० 255.
2. जहाँगीर, तुज़ुक-ए जहाँगीरी, पृ० 332.
3. उदयपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 50.

में आपस में पगड़ी बदल भाई-चारा हुआ ।[1] भीमसिंह सिसोदिया ने खुर्रम के युद्धों में बड़ी सहायता की थी और वह परवेज के साथ युद्ध करता हुआ 16 अक्टूबर 1624 ई0 को पटना के समीप हाजीपुर गाँव के पास मारा गया ।[2] जब शाहजहाँ अपने पिता की मृत्यु पर जुनेर से आगरा जाते समय मेवाड़ राज्य के पास पहुँचा तब राणाकर्ण उससे मिलने आया । शहजादा खुर्रम ने उस पर अपनी कृपा-दृष्टि बनाये रखी और उसे मेवाड़ का शासन पूर्ववत सौंप दिया ।

<u>शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल-सिसौदिया सम्बन्ध</u>

शाहजहाँ जब सिंहासन की प्राप्ति हेतु दक्षिण से आगरा की ओर चला तो मेवाड़ होकर गया । 1 जनवरी 1628 ई0 में शाहजहाँ गोगूंदा पहुँचा । यहाँ पर मेवाड़ के महाराणा कर्ण ने उनका स्वागत सत्कार किया और बहुत से बहुमूल्य उपहार प्रदान किये । शाहजहाँ ने प्रसन्न होकर एक कीमती सरोपा एक जड़ाऊ तलवार एक कटोरा जिसमें अमूल्य रत्न जड़े हुये थे और 3000 रूपये का एक कुत्बी बदख्शानी शाल और एक सुनहरी जीन से आभूषित घोड़ा प्रदान किया ।[3] शाहजहाँ के शासन काल के प्रथम वर्ष में ही महाराणा कर्णसिंह की मृत्यु हो गयी । उसके 7 पुत्र-जगतसिंह, गरीबदास, मानसिंह, छत्रसिंह, मोहनसिंह, गजसिंह और सूरजसिंह और दो पुत्रियाँ थीं ।

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 249.

2. टॉड एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज आफ राजस्थान, भाग 1, पृ0 294.

3. जी0एन0 शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 142-143,
मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 49,
अब्दुल हमीद लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 80,
गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, राजपूताने का इतिहास, पृ0 88,
बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 59.

महाराणा जगतसिंह

महाराणा कर्ण की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र जगतसिंह प्रथम हुआ 1628 ई0 में। उसे सम्राट ने राणा की पदवी 5000/5000 का मनसब और उसका पैतृक वतन जागीर के रूप में प्रदान किया।[1] उसके समय में मुगल मेवाड़ सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बने रहे। राणा जगतसिंह एक महत्त्वाकांक्षी शासक था। जब उसने देखा कि शाहजहाँ अपनी आन्तरिक परेशानियों में व्यस्त है और जुझार सिंह बुन्देला के विद्रोह के दमन में उसका पूरा ध्यान लगा हुआ है तब उसने अपने पड़ोसी राजपूत राज्यों, सिरोही, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़, देवलिया के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया।[2] जब देवलिया के राजा जसवन्तसिंह ने महाराणा की अधीनता से मुक्त होने की कोशिश की तो उसने शक्तिपूर्वक उसका दमन कर दिया। इसमें जसवन्तसिंह तथा उसका पुत्र मानसिंह ॥1628 ई0॥ में मारे गये। इस घटना के पश्चात् जसवन्तसिंह का छोटा पुत्र रावत हरिसिंह जो कि उसका उत्तराधिकारी था सम्राट से मिलने गया। सम्राट ने उसे देवलिया का स्वतन्त्र शासक बना दिया। इसी वर्ष से प्रतापगढ़ ॥देवलिया॥ मेवाड़ से पृथक हो गया।[3]

---

1. गोपीनाथ शर्मा, मेवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 142, 148,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 49,
   अब्दुल हमीद लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 179,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 763.
2. गोपीनाथ शर्मा, मेवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 142-143.
3. राजप्रशस्ति महाकाव्य सर्ग 5, श्लोक 21, नैणसी की ख्यात, भाग 1, पृ0 96,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ0 134,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ0 522,
   जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 250.

राणा जगतसिंह के विरुद्ध डूंगरपुर के महारावल पुंजा तथा सिरोही के राव अखयराज ने विद्रोहात्मक दृष्टिकोण अपनाया तो राणा ने उनका भी दमन कर दिया । बांसवाड़ा के महारावल ने विद्रोह किया तो उसने उसके विरुद्ध भी सेना भेजी । महारावल ने एक लाख रूपया जुर्माना देकर क्षमा माँग लिया । जब सम्राट को राणा जगतसिंह की इन गतिविधियों की सूचना मिली तो वह बहुत नाराज हुआ । राणा जगतसिंह सम्राट से मिलने गया और एक हाथी उपहार में प्रदान किया । सम्राट और राणा के बीच सम्बन्ध सुधर गए ।

सन् 1634 ई0 में सम्राट ने राणा जगतसिंह को एक बहुमूल्य खिलअत, जड़ाऊ उरबसी (एक प्रकार की माला) एक हाथी और दो विशेष घोड़े सोने और चाँदी की जीन सहित प्रदान किये । सन् 1636 ई0 में सम्राट ने राणा जगतसिंह के लिए एक जड़ाऊ सरपेच और जड़ाऊ तलवार उपहार स्वरूप भेजी । इसी वर्ष सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत, सुनहरी जीन सहित एक उत्तम घोड़ा और एक हाथी प्रदान किया ।[1] सन् 1630 ई0 में राणा जगतसिंह ने अपने विश्वासपात्र अनुचर कल्याण झाला को कुछ वस्तुएं उपहार के रूप में लेकर सम्राट के पास भेजा । सम्राट ने भी उसके लिए एक विशेष खिलअत व हाथी भेजा ।[2] सन् 1643 ई0 में जब सम्राट अजमेर आया उस समय महाराणा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र राजसिंह को अजमेर भेजकर हाथी आदि भेंट में प्रदान किया । सम्राट ने भी उसे जड़ाऊ सरपेच, खिलअत, घोड़े, हाथी आदि बहुमूल्य वस्तुयें प्रदान की ।[3] सन् 1647 ई0 में सम्राट ने राणा जगतसिंह व उसके पुत्र राजसिंह के लिये एक खिलअत और सोने की जीवन सहित घोड़ा भेजा ।[4]

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 88, 113, 118, 139.
2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 139.
3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 209.
4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 209.

स्पष्ट है कि राणा जगतसिंह के सम्राट से सम्बन्ध मधुर बने रहे थे, किन्तु चित्तौड़ किले की मरम्मत को लेकर सम्बन्धों में तनाव आ गया । अब्दाल बेग से सम्राट को इस बात की सूचना मिली कि महाराणा ने चित्तौड़ के दुर्ग के उन फाटकों की मरम्मत करवायी है जो नष्ट हो गये थे । सम्राट इस पर बहुत ही क्रुद्ध हुआ और उसनेमरम्मत का कार्य बन्द कर देने तथा नवनिर्मित भागों को गिरा देने का आदेश दिया । किन्तु महाराणा जगतसिंह की शीघ्र ही मृत्यु हो गई । अत: उसके समय कोई सैनिक कार्यवाही शाहजहाँ के द्वारा नहीं की जा सकी । मरम्मत का यह कार्य उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी राजसिंह ने भी जारी रखा । अत: सम्राट ने उसके विरुद्ध सेना भेजी ।

महाराजा जगतसिंह बड़ा दानी था । वह अपने सिंहासनारोहण के वर्ष से हर वर्ष रजत तुलादान करता था और 1648 ई0 से स्वर्ण तुलादान करता था । उसकी दानशीलता का सबसे बड़ा उदाहरण कल्पवृक्ष सप्तसागर, रत्नधेनु और विश्व-चक्र का दान था । उसने उदयपुर में जगन्नाथ राय का मन्दिर बनवाया । इसमें लाखों रूपये खर्च हुये ।[1] इसके अतिरिक्त कई महल और तालाब बनवाये । 1652 ई0 में राणा जगतसिंह का उदयपुर में स्वर्गवास हो गया । उसकी 11 रानियाँ थीं जिनसे इसके 5 पुत्र और 4 पुत्रियाँ थीं ।

<u>राणा राजसिंह</u>

10 अक्टूबर सन् 1652 ई0 को महाराणा जगतसिंह का पुत्र राजसिंह मेवाड़ के सिंहासन पर बैठा । उसका जन्म 24 सितम्बर 1629 ई0 को हुआ था । सम्राट

---

1. रामबल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ मेवाड़, पृ0 256-257,
   गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ0 526-27.
   रघुबीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 95-106,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, भाग 1, पृ0 346.

ने उसको राणा राजसिंह की उपाधि, 5000/5000 का मनसब, उसका स्वयं का वतन, हाथी, घोड़े, जड़ाऊ व जमधर आदि उपहार ने प्रदान किये ।[1] राणा राजसिंह अपने पिता के समय से ही शाही कृपा का पात्र रहा था । 1 दिसम्बर सन् 1636 ई0 को राणा राजसिंह ने सम्राट के दरबार में उपस्थित होकर 9 घोड़े सम्राट को उपहार में दिये थे । सम्राट ने उसके बदले में उसको एक खिलअत, जड़ाऊ सरपेच और मोतियों की माला प्रदान की थी । 4 दिसम्बर 1636 ई0 को सम्राट ने राजसिंह को एक खिलअत, एक जड़ाऊ खपवा, मीनाकारी की हुई एक तलवार व हाथी घोड़ा प्रदान किये ।[2] 10 दिसम्बर 1643 ई0 को राणा राजसिंह ने सम्राट को एक हाथी उपहार में दिया । सम्राट ने उसको एक खिलअत, जड़ाऊ सरपेच, जड़ाऊ जमधर और सोने की जीन सहित घोड़ा प्रदान किया ।[3] मार्च 1648 ई0 में राजसिंह बल्ख-बदख्शां अभियान की विजय का अपने पिता द्वारा भेजा गया बधाई पत्र लेकर सम्राट के सम्मुख उपस्थित हुआ । सम्राट ने उसे लालों और मोतियों की एक माला तथा हाथी और घोड़ा ~~को~~ देकर विदा किया ।[4]

गद्दी पर बैठने के बाद राणा राजसिंह ने अपने पिता द्वारा प्रारम्भ किए गए चित्तौण के किले की मरम्मत के कार्य को जारी रखा । उसने शाहजहाँ के

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 255,
   बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 340,
   मुहम्मद सालेह, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 614,
   अतहर अली, द आप्रेटस ऑफ इम्पायर, पृ0 271.

2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृष्ठ 115-118.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 180-181.

4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 226-227.

नाराज होने की कोई परवाह नहीं की तथा उसकी धमकियों से विचलित नहीं हुआ । इस पर शाहजहाँ ने चित्तौण पर सैनिक आक्रमण करने का निश्चय किया और उसके आदेशानुसार सादुल्ला खाँ तीन हजार सेना के साथ अचानक चित्तौड़ जा पहुँचा । उसने चित्तौड़ में नवनिर्मित सभी बुर्जों को गिरा दिया ।[1] और राजसिंह देखता रह गया । अब राजसिंह की आँख खुली और उसने पुनः क्षमा माँग लेने में ही अपनी भलाई समझा । उसके क्षमा माँग लेने पर शाहजहाँ ने उसे क्षमा कर दिया । मुगलों और सिसोदियों के बीच वैमनस्य का एक नया अध्याय प्रारम्भ होते होते खत्म हो गया । दोनों के मध्य पूर्ववत मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बने रहे ।

सितम्बर 1651 ई0 में जब शाहजहाँ बीमार हुआ तो उसके पुत्रों ।दारा, शिकोह, शुजा, मुराद और औरंगजेब। में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष छिड़ गया । अधिकांश राजपूत मनसबदारों ने इस युद्ध में दारा शिकोह का साथ दिया, यद्यपि सभी शहजादों के साथ राजपूत मनसबदार बंटे हुए थे, यह अतहर अली की निम्नलिखित पंक्तियों से पूर्णतया स्पष्ट है ।

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 250,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 264,
   बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 340,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, ।चित्तौड़गढ़।, पृ0 45,
   गोपीनाथ शर्मा, मेवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 152,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ।उदयपुर।, पृ0 50.

   इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 7, पृ0 104.

उत्तराधिकार के युद्ध में प्रतिद्वन्द्वी शाहजादों के राजपूत समर्थक

	5000 व उसके ऊपर के मनसबदार	3000 व उसके ऊपर 4500 तक के मनसबदार	1000 से 2500 तक के मन-सबदार	योग
दारा शिकोह	2	6	14	22
औरंगजेब	2	2	5	9
शाहशुजा	-	-	-	-
मुरादबख्श	-	-	2	2

[1]

अतहर अली ने विभिन्न जातीय गुटों का अलग-अलग उल्लेख करते हुये जो विवरण दिया है उससे स्पष्ट है कि राजपूतों ने न केवल दारा बल्कि औरंगजेब व मुराद का भी साथ दिया । औरंगजेब ने राणा राजसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह और महाराणा जसवन्त सिंह को अपनी ओर मिलाने की भरपूर कोशिश की थी ।[2]

औरंगजेब ने राणा राजसिंह को जो निशान जारी किये उनका विवरण वीर विनोद में दिया हुआ है । इसमें राणा को यह वायदा किया कि 1654 ई0 में उसके जो क्षेत्र अधिगृहीत कर लिये गये थे। चित्तौड़ के पुनर्दुर्गीकरण के दण्ड के तौर पर। वह उसे लौटा दिये जायेंगे । एक निशान में उसने अपने पूर्वजों के द्वारा अपनाई गयी धार्मिक नीति के पालन करने का वायदा किया ।[3]

---

1. एम0 अतहर अली, द मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब, पृ0 96,
2. एम0 अतहर अली, द मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब, पृ0 22-97.
3. एम0 अतहर अली, द मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब, पृ0 112,
कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, पृ0423, 424, 426, 427.

महाराणा, राजसिंह ने मुगलों की इस धृष्टता का लाभ उठाना चाहा । उसने माण्डलगढ़, दरीबा, बनेड़ा, शाहपुरा, मालपुरा, टोंक, साम्भर, चाटसू आदि रियासतों पर अपना अधिकार जमा लिया । वह उत्तराधिकार के युद्ध में तटस्थ रहकर अपनी शक्ति के संवर्द्धन में लगा हुआ था ।

जब औरंगजेब सम्राट बन गया (23 जुलाई 1658 ई0) तो उसने राजपूतों को अपनी ओर मिलाने की पुन: कोशिश की । राणा राजसिंह व उसके कुंअर सुल्तान सिंह को खिलअत, हाथी, घोड़े जवाहरात आदि देकर उनका सम्मान किया गया । बदनोर, माण्डलगढ़, डूंगरपुर, बांसवाडा आदि इलाके भी महाराणा को वापस कर दिये गये ।[1] इस प्रकार औरंगजेब के शासनकाल के प्रारम्भ में मुगल सिसोदिया सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बने रहे ।

महाराणा राजसिंह बड़ा ही साहसी, रण-कुशल, धार्मिक व दानी था । उसने राजा बनते ही रत्नों का तुलादान किया था । ऐसे तुलादान का उल्लेख भारतवर्ष से अलग किसी इतिहास में नहीं मिलता । मेवाड़ को अकालों से बचाने के लिए उसने कांकरोली गांव के पास राजसमुन्द्र नामक झील बनवायी थी और इस झील के पास ही राजनगर नामक नगर बसाया था । इसके अतिरिक्त महाराणा ने अनेक छोटे बड़े मन्दिर, महल, तालाब, बावड़ी आदि बनवाये । राजप्रशस्ति नामक महाकाव्य जो 25 अध्यायों में है, संगमरमर पर उत्कीर्ण करवाया ।[2] यह ग्रन्थ मेवाड़ के इतिहास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है । इसकी 19 रानियाँ, 9 पुत्र और 1 पुत्री थी । यह कवि और विद्वानों का आश्रयदाता भी था ।

---

1. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 434.

2. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 250.

शाहपुरा

मेवाड़ के अन्तर्गत एक राज्य (रियासत) शाहपुरा था । शाहपुरा राजघराने का संस्थापक सुजानसिंह था ।[1] सन् 1631 ई0 में सम्राट शाहजहाँ ने फूलिये का परगना मेवाड़ से अलग करके उसे दिया था । इसके अतिरिक्त शाहपुरा राज्य के 74 गांवों की काछोला परगने की जागीर भी थी ।[2] सुजान सिंह सूरजमल का ज्येष्ठ पुत्र था । अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त वह खराड़ जागीर का स्वामी बना और 1626 ई0 तक मेवाड़ की अधीनता में रहा । एक बार मेवाड़ के महाराणा जगतसिंह और उसके बीच शिकार के दौरान अनबन हो गई, इसलिए यह सम्राट शाहजहाँ की सेवा में चला गया और वहीं रहने लगा । शाहजहाँ ने उसे 800/300 का मनसब प्रदान किया । एक लाख रूपये का परगना उसे जागीर के रूप में प्रदान किया ।[3] सुजानसिंह पचास सवारों के साथ शाही सेना में आ गया (14 दिसम्बर 1631 ई0) । अब से शाहपुरा एक अलग रियासत बन गई । शाहपुरा नामक कस्बे को बसाने का श्रेय सुजानसिंह को ही है । उसने शाहजहाँ को प्रसन्न करने के लिए शाहपुर नामक कस्बा बसाया ।[4] सुजानसिंह का पद व सम्मान धीरे-धीरे बढ़ता गया । सन् 1643 ई0 में उसका मनसब 1000/500 का हो गया

---

1. यह मेवाड़ के महाराणा अमरसिंह प्रथम के दूसरे पुत्र सूरजमल सिसौदिया का पुत्र था ।

2. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 555.

3. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 556.

4. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 556.

जो 1445 ई0 में बढ़कर 1500/700 का और 1651 ई0 में 2000/800 का हो गया।[1] शहजादा मुराद की शाही सेना के साथ 1646 ई0 में बल्ख एवं बदख्शां अभियान पर भी गया। जब महाराणा राजसिंह ने चित्तौड़ के किले की मरम्मत करायी, तब शाहजहाँ ने 1654 ई0 में इन मरम्मत किये हुए स्थानों को नष्ट करने के लिए सादुल्ला खाँ और सुजान सिंह को भेजा था। इससे रुष्ट होकर महाराणा राजसिंह ने 1658 ई0 में शाहपुरा पर आक्रमण किया, व सुजानसिंह से 22000 रूपये दण्ड के रूप में वसूल कर के वापस चला गया।[2] उत्तराधिकार के युद्ध में सुजानसिंह अपने पुत्रों सहित दाराशिकोह की ओर से लड़ा और लड़ते हुए फतेहाबाद में मारा गया।[3]

प्रतापगढ़ देवलिया

सन् 1603 ई0 में महारावत भानुसिंह की मृत्यु के उपरान्त उसका छोटा भाई सिंहा तेजावत देवलिया के राज-सिंहासन पर बैठा।[4]

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 555,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 308,
   वारिस, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 202,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 830,
   एम0 अतहरअली, आप्रेटस ऑफ मुगल इम्पायर, पृ0 306.
2. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 559,
3. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 557.
4. जगदीश सिंह गहलौत ने राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 521 पर लिखा है कि सिंहा तेजावत 1604 ई0 में गद्दी पर बैठा। गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा ने प्रतापगढ़ राज्य के इतिहास पृ0 118 पर लिखा है कि वह 1597 ई0 में गद्दी पर बैठा। भानुसिंह के कोई पुत्र नहीं था।

देवलिया की सीमा मालवा की सीमा को स्पर्श करती थी । जहाँगीर ने जब महावत खाँ के विरुद्ध सेना खानखाना के सेनापतित्व में भेजी तो महावत खाँ ने देवलिया के राजा सिंहा तेजावत के यहाँ शरण ली थी । महावत खाँ ने जाते समय इस सौजन्य के बदले महारावत को एक कीमती अँगूठी दी थी, जिसका मूल्य साठ हजार रूपये के लगभग था ।[1]

वीर विनोद में 1622 ई0 में महारावत सिंहा की मृत्यु होना लिखा है[2] किन्तु गयासपुर की बावड़ी के 8 अप्रैल, 1627 ई0 के शिलालेख से उसका सन् 1622 ई0 में जीवित होना पाया जाता है ।[3] उदयपुर के महाराणा राजसिंह के बनवाये हुये राजसमुद्र तालाब के 'राजप्रशस्ति' नामक वृहत काव्य और 'अमरकाव्य' में महाराणा जगतसिंह प्रथम के प्रसंग में उक्त महाराणा का जसवंत सिंह के समय देवलिया पर सेना भेजने का वर्णन 1628 ई0 की घटनाओं में हुआ है । ऐसी स्थिति में महारावत सिंहा का परलोकवास 1628 ई0 के लगभग मानना पड़ेगा और ऐसा ही प्रतापगढ़ राज्य के बड़वे की तथा वहाँ से प्राप्त एक दूसरी पुरानी ख्यात से भी पाया जाता है ।[4]

---

1. कविवर श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, पृ0 1057 में महावत खाँ का राजा जसवन्तसिंह के समय में देवलिया में शरण लेने का उल्लेख मिलता है, जो ठीक नहीं है, क्योंकि महारावत सिंहा जहाँगीर का समकालीन था, ~~जो ठीक नहीं है, क्योंकि महारावत सिंहा जहाँगीर का समकालीन था~~ । इसी तरह प्रतापगढ़ गजेटियर में मेजर के0डी0 आर्सकिन ने महावत खाँ का भानुसिंह के समय प्रतापगढ़ में रहना लिखा है, यह भी सत्य नहीं है ।

2. कविवर श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1057.

3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ0 123.
   जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 521.

4. प्रतापगढ़ राज्य के बड़वे की ख्यात, पृ0 4,
   प्रतापगढ़ राज्य की पुरानी ख्यात, पृ0 6.

महारावत सिंहा की 13 रानियाँ व दो पुत्र थे - जसवन्त सिंह तथा जगन्नाथ सिंह ।[1]

महारावत सिंहा बहुत नीति-निपुण राजा था । वह युद्ध की अपेक्षा मित्रता में अधिक विश्वास रखता था । मेवाड़ और देवलिया राज्यों की सीमा मिली हुयी होने से समय समय पर सीमा सम्बन्धी झगड़े होते रहते थे, परन्तु महारावत सिंहा ने अपनी बुद्धिमत्ता से कोई झगड़ा बढ़ने नहीं दिया । उसने मेवाड़ के महाराणाओं से मेल रखकर अपने राज्य की स्थिति सुदृढ़ की । उसके किसी मेवाड़-विरोधी युद्ध मेंभाग लेने का उदाहरण नहीं मिलता है । मुहणोत नैणसी की ख्यात में वर्णित है कि उसने सोनगरे चौहानों से 84 गांव छीन लिये थे ।[2] उसने मुगलों से अपना संपर्क नहीं बढ़ाया । यदि वह भी अन्य राजपूत नरेशों की भाँति शाही दरबार से सम्बन्ध बढ़ाता तो बहुत कुछ लाभ उठा सकता था ।

महारावत सिंहा का देहान्त होने पर उसका ज्येष्ठ पुत्र जसवन्त सिंह 1628 ई0 में देवलिया की गद्दी पर बैठा ।[3] जसवन्त सिंह मेवाड़ से असंतुष्ट था क्योंकि बसाढ और अरणोद के इलाके मेवाड़ को मिले हुए थे । साथ ही 1615 ई0 की सन्धि के पश्चात एक फरमान जारी करके डूंगरपुर, बांसवाड़ा व देवलिया को मेवाड़ के अधीनस्थ बना दिया गया था । परन्तु उन रियासतों के राजा मेवाड़ के अधीनस्थ नहीं रहना चाहते थे । अतः उनमें समय समय पर संघर्ष होता रहता था ।[4]

---

1. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग, पृ0 521.
2. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, पृ0 1056.
3. मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ0 93.
3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ0 126.
4. जसवन्त सिंह, शकावत नरहरदास का पुत्र था ।

बसाढ़ परगने के मोड़ी गाँव के थाने पर जसवन्तसिंह शकावत कर्णसिंह के समय से नियुक्त था । अत: जब शाहजहाँ ने फरमान जारी करके वह परगना जां निसार खां के नाम कर दिया तो जसवन्तसिंह शकावत ने जां निसार खां के विरुद्ध सेना भेजी तथा सम्राट के पास जां निसार खां के विरुद्ध शिकायत भेजी । युद्ध में शक्तावत मारा गया । सम्राट ने जा निसार खाँ की शिकायत सुनकर उसे बसाड़ परगने से बेदखल कर दिया व वह परगना मेवाड़ के महाराणा को दे दिया । मेवाड़ का महाराणा बसाढ़ के परगने को जां निसार खां द्वारा लेने में जसवन्त सिंह का भी हाथ समझ रहे थे, अत: उन्होंने छल से उसे मारने की योजना बनाई । जगत-सिंह ने जसवन्त सिंह को जसवन्त सिंह शक्तावत का बदला लेने के लिए उदयपुर 1633 ई0 में बुलवाया ।[1] वह अपने पुत्र महा सिंह के साथ उदयपुर गया । वहाँ चंपा बाग में उसने अपना डेरा लगाया । जगतसिंह ने एक रात्रि को रामसिंह[2] को सेना सहित भेजकर चंपा बाग का घेरा डलवा दिया, फलत: दोनों पक्षों में युद्ध हुआ इस युद्ध में जसवन्तसिंह अपने पुत्र महा सिंह सहित मारा गया ।[3] गहलौत ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि इन कपटपूर्ण कार्यों से महाराणा की बड़ी निन्दा हुई और इसका फल यह हुआ कि देवलिया सदा के लिए मेवाड़ के अधिकार से निकल गया व मुगलों के अधीन हो गया ।

प्रतापगढ़ राज्य की ख्यात, वीर विनोद, मालकम की रिपोर्ट एवं प्रताप-गढ़ राज्य के गजेटियरों आदि में महारावत जसवन्त सिंह का उदयपुर में महाराणा जगतसिंह की सेना से लड़कर मारे जाने का उल्लेख है । इसका समर्थन नैणसी की ख्यात से भी होता है ।[4] जो उपर्युक्त पुस्तकों में सबसे समकालीन और महारावत हरिसिंह के समय की संग्रहीत है ।

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 522.
2. राठौर रामसिंह जोधपुर के राव चन्द्रसेन का प्रपौत्र, उग्रसेन का पौत्र और कर्मसेन का पुत्र था ।
3. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 523.
4. नैणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ0 96.

महारावत जसवंत सिंह की मृत्यु 1628 ई० में हुयी ।[1] महारावत जसवन्त सिंह की आठ रानियाँ थीं । उसके महासिंह, हरिसिंह, मानसिंह, केसरीसिंह, उदयसिंह नामक पाँच पुत्र और रूपकुंवरी तथा सूरजकुंवरी नामक दो कन्यायें थीं ।

जसवन्तसिंह व महासिंह की मृत्यु हो जाने पर जसवन्त सिंह के दूसरे पुत्र हरिसिंह को धमोतर के ठाकुर जोधसिंह ने देवलिया की गद्दी पर बिठाया ।[2] मेवाड़ से देवलिया के सम्बन्ध खराब होने पर देवलिया के राजा ने मुगलों से सम्बन्ध सुदृढ़ करने का विचार किया अत: हरिसिंह जोधसिंह के साथ सम्राट शाहजहाँ के दरबार में गये । महावत खाँ की मित्रता के कारण महारावत का भी वहाँ परिचय था । उधर महाराणा देवलिया वालों से अप्रसन्न था और उक्त राज्य को नष्ट करना चाहता था । अत: राठौर रामसिंह के साथ उसने देवलिया पर सेना भेजी जिसने राजधानी देवलिया को लूटकर नष्ट कर दिया ।[3]

सम्राट शाहजहाँ भी महाराणा से प्रसन्न नहीं था, क्योंकि उन्हीं दिनों महाराणा ने डूंगरपुर के स्वामी महारावल पुंजराज के समय सेना भेजकर वहाँ युद्ध किया था । फलत: सम्राट शाहजहाँ ने महारावत हरिसिंह को अपने अमीरों में

---

1. अमरकाव्य एवं राजप्रशस्ति महाकाव्य में जसवन्त सिंह की मृत्यु की घटना 1628 ई० की लिखी है, जबकि वीर विनोद में एक स्थान पर इस घटना के लिए 1628 ई० वर्णित है तो दूसरे स्थान पर 1633 ई० । प्रतापगढ़ राज्य की ख्यात, माल्कम की रिपोर्ट, प्रतापगढ़ राज्य के गजेटियर, कविराज, बांकीदास की ऐतिहासिक बातें आदि में इस घटना का 1633 ई० में होना लिखा है ।

2. मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ0 96,
कविवर श्यामल दास वीर विनोद, भाग 2, पृ0 1060.

3. कविवर श्यामल दास, वीरविनोद, भाग-2 पृ 1060
गौरीशंकर हीराचन्द्र, ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, जिल्द 2, पृ0 522.

प्रविष्ट कर मनसब आदि से उसे सम्मानित किया[1] एवं शाही सेना देकर उसे देवलिया पर अधिकार करने भेजा । इस पर महाराणा ने देवलिया से अपनी सेना हटा ली । किन्तु महाराणा ने धरियावद का परगना हथिया लिया । इसे वापस लेने का हरिसिंह ने प्रयत्न किया, परन्तु असफल रहा ।[2] यह स्पष्ट नहीं है कि किस सन् में हरिसिंह ने देवलिया पर अधिकार किया । महावत खाँ की 1634 ई0 में मृत्यु हो गयी अत: ऐसा अनुमान है कि देवलिया पर अधिकार इसके पूर्व ही हुआ होगा ।

सन् 1644 ई0 में हरिसिंह पुन: सम्राट के दरबार में उपस्थित हुआ ।

प्रतापगढ़ राज्य के पुराने संग्रह में महारावत हरिसिंह के समय के बने हुये कई चित्र हैं, जिनमें एक शाहजहाँ और हरिसिंह का चित्र है । इस चित्र के पीछे लिखा है कि 1648 ई0 में सम्राट शाहजहाँ ने उसे खिलअत, हाथी, घोड़ा, सरपेच, हीरे की पहुँचियाँ, मोतियों की कंठी, आम्ली, कलंगी आदि प्रदान की ।[3]

---

1. प्रतापगढ़ राज्य की ख्यात में मिलता है कि सम्राट ने हरिसिंह को 7000 का मनसब महारावत महाराजाधिराज की उपाधि निशान आदि प्रदान किये । इस कथन की पुष्टि कैप्टन सी0ए0 गेट के गजेटियर आॅफ प्रतापगढ़ से भी होती है । साथ ही उसमें यह भी लिखा है कि शाहजहाँ ने हरिसिंह को खासा, खिलअत प्रदान कर नौ लाख रूपये आय की कांठल की जागीर का फरमान उसके नाम कर दिया एवं 15000 रूपये वार्षिक खिराज जमा करना निश्चित हुआ । प्रतापगढ़ राज्य के महारावत हरिसिंह के नाम से सम्राट शाहजहाँ और औरंगजेब के समय के कई फरमान, शाहजहाँ के निशान आदि मिलते हैं जिससे यह स्पष्ट है कि वह सम्राट
शाहजहाँ का विश्वासपात्र था। जगदीश सिंह गहलोत ने लिखा है कि हरिसिंह को सम्राट
ने 15000 सालाना खिराज पर कांठल प्रदेश, खिलअत व सफेद निशान दिया ।

2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ0 144.

3. इस चित्र में शाहजहाँ तख्त पर बैठा हुआ है और सामने महारावत हरिसिंह खड़ा है ।

महारावत हरिसिंह ने शाहजहाँ के सम्पूर्ण शासनकाल में मुगलों से मित्रता बनाये रखी। 9 अगस्त 1652 ई0 में शाहजहाँ ने हरिसिंह की असीम स्वामिभक्ति से प्रेरित होकर उसे दरबार में बुलाया। महारावत हरिसिंह शाही दरबार में सम्राट की सेवा में कई महीने तक रहा। सम्राट ने इसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर मंदसोर इलाके का 40000 दाम आय का कोटड़ी परगना, दीवानी और काली स्वत्वों के साथ, जो जां बाज खां[1] की जागीर में था उसको प्रदान करने का 9 फरवरी 1653 ई0 को फरमान जारी कर दिया।[2]

शाहजहाँ के रोगग्रस्त होने पर उसके पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। दारा मुराद दोनों ने ही हरिसिंह को अपनी अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया, किन्तु वह किसी के भी पक्ष में युद्ध करने नहीं गया। इस पर भी मुराद ने उसको क्षमा कर दिया और 3 मई 1658 ई0 को उसके पास एक निशान भेजा जिसके अनुसार उसे मंदसोर का परगना सुखेरी प्रदान किया। एक सिरोपाव भी उसके पास भेजा।[3] उसके कुछ ही दिनों पश्चात औरंगजेब ने अपने पिता व छोटे भाई को कैद कर लिया और 21 जुलाई 1658 ई0 को स्वयं सम्राट बन बैठा।

---

1. जां बांज खां सम्राट शाहजहाँ के समय 1500 जात और 1000 सवार का मनसबदार था। संभव है कि वह मालवे की तरफ का कोई मुसलमान हाकिम हो और उसके मर जाने या उसकी जागीर जब्त हो जाने पर सम्राट की तरफ से कोटड़ी का परगना महारावत को दे दिया गया हो।

2. सम्राट शाहजहाँ के फारसी भाषा के मूल फरमान का अनुवाद, गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ0 147.

3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ0 153.

महारावत हरिसिंह का 1673 ई० में देहान्त हो गया । महारावत हरिसिंह एक विद्वान राजा था । उसने स्वयं अपने दरबारी कवि पंडित जयदेव रचित हरिविजय नाटक पर सुबोधिनी टीका लिखी थी तथा व्याकरण पर हरिसारस्वत की रचना की थी ।[1]

प्रतापगढ़ राज्य के नरेशों में सर्वप्रथम उसने ही शाही दरबार से अपना संबंध बढ़ाकर मेवाड़ राज्य के अधिकार में गये हुये अपने राज्य को मुक्त किया । वह सम्राट शाहजहाँ और उसके पुत्रों का पूर्ण विश्वासपात्र था । नीतिकुशल होने के कारण उसने शहजादों के किसी युद्ध में भाग नहीं लिया । वह ईश्वरभक्त मेधावी और योग्य शासक था । अपनी रचना में उसने अपने को 'सांधिविग्रहक' उपाधि से अलंकृत किया है ।[2] कवि गंगाराम ने हरिभूषण महाकाव्य की उसके नाम पर रचना की थी ।[3]

करौली

करौली का छोटा सा राज्य राजपूताने के पूर्वी भाग में था । इसकी राजधानी का नाम करौली होने से राज्य का नाम भी करौली पड़ा था । इस राज्य के उत्तर में भरतपुर राज्य, उत्तर-पश्चिम और पश्चिम में जयपुर राज्य, दक्षिण व दक्षिण-पूर्व में ग्वालियर तथा चम्बल नदी और पूर्व में धौलपुर था ।[4]

---

1. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ० 170.
2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ० 175.
3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, पृ० 176.
4. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ० 583.

करौली राज्य का मूल पुरुष महाराजा विजयपाल मथुरा के यादव राजवंश का था ।[1] महाराजा मुकुन्द दास भी इसी वंश का था । मुकुन्ददास द्वारकादास का पुत्र था । वह 1604 ई0 में करौली की गद्दी पर बैठा । उसके शासनकाल में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी । उसके पुत्र जगमन, चतरमन, देवमन, मदनमन और महामन थे । उसकी सन्तान मुकुन्द यादव कहलाती थी ।[2] मुकुन्ददास के पश्चात उसका पुत्र महाराजा जगमन [जगन्मणि] 1622 ई0 के लगभग करौली की गद्दी पर बैठा । उसके समय में मुक्तावत तथा बहादुर शाखाओं ने विद्रोह किया किन्तु उसने उन्हें शान्त कर दिया । शाहजहाँ ने उसे 500/400 का मनसब दिया ।[3] उसके कई पुत्रों में से एक का नाम अनुमन मिलता है । अनुमन के वंशधर मजूरा या कोट्ड़ी के यादव थे । जगमन के पश्चात् उसका छोटा भाई महाराजा छत्रमन [छत्र-मणि] 1643 ई0 में गद्दी पर बैठा । उसके समय में करौली में गृहकलह के कारण अशान्ति थी, फिर भी उसने सम्राट औरंगजेब के साथ दक्षिण के अभियानों में भाग लिया । छत्रमन के पश्चात महाराजा धर्मपाल [द्वितीय] 1655 ई0 में करौली की गद्दी पर आसीन हुआ । उसके पश्चात् 1671 ई0 में उनका ज्येष्ठ पुत्र रतनपाल गद्दी पर बैठा ।

सिरोही

सूबा अजमेर के दक्षिण-पश्चिम में देवड़ा चौहानों की रियासत थी । सिरोही देवड़ा की राजधानी थी । इसमें अबूगढ़ भी शामिल था । सिरोही व अबूगढ़ के राजा मेवाड़ के अधीनस्थ थे ।[4]

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 597.
2. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 650.
3. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 605.
4. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 108.

अकबर के शासन के प्रारम्भिक 17 वर्षों तक मुगलों का आक्रमण सिरोही नहीं हुआ था। 1576-77 ई0 में सिरोही के राय मानसिंह ने विद्रोह कर दिया। इसका दमन करने के लिए अकबर ने बीकानेर के राय रायसिंह को सिरोही की ओर भेजा। इस युद्ध में राय रायसिंह की विजय हुई और सिरोही तथा अबूगढ़ पर उसका अधिकार हो गया। अन्ततः राव सुरताण (देवड़ा का राजा) रायसिंह के पास गया। वह उसे सम्राट के सम्मुख ले गया। वहाँ उसने सम्राट के प्रति निष्ठा प्रकट की। अतः सिरोही और अबूगढ़ पर मुगलों का अधिकार हो गया और इसे सैय्यद हाशिम भक्करी के अधिकार में दे दिया।[1] कुछ समय पश्चात 1583-84 ई0 में सम्राट ने सिरोही का आधा भाग राणाप्रताप के भाई जगमल तथा आधा भाग सिरोही के राजा सुरताण को दे दिया।[2] राव सुरताण सम्राट को पेशकश भी देता था। किन्तु उसने अकबर के शासन के उत्तरार्द्ध में विद्रोह कर दिया। अतः जोधपुर के मोटा राजा उदयसिंह के नेतृत्व में एक अभियान भेजा गया। उसने उसे अधीनता

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 189, 190, 196.

   मीराते अहमदी के पृष्ठ 226 के ~~पृष्ठ 226 के~~ अनुसार सिरोही की सरकार गुजरात सूबे के नाजिम को जागीर के तौर पर दी गई और बदले में 2000 सवार शाही सेना के लिए रखने का आदेश दिया।

2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 413,

   निजामुद्दीन अहमद, तबकात-ए अकबरी, भाग 2, पृष्ठ 370,

   नैणसी की ख्यात, भाग 1, पृ0 131-132,

   सिरोही के भाजन के सन्दर्भ में फारसी स्त्रोत व्यर्थ है, उनमें लिखा है कि पूरा सिरोही जगमल को दे दिया गया जबकि नैणसी ने इसका दो भागों में विभाजन किया है जो अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है। मनोहरसिंह राणावत, नैणसी और उनके इतिहास ग्रन्थ, पृ0 130.

स्वीकार करने के लिये बाध्य कर दिया और निश्चित किया कि राव सुरताण 2 लाख फिरोजी और 16 घोड़े पेशकश के रूप में देगा ।[1] कहा जाता है कि सुरताण ने अपने समय में 50 लड़ाईयां लड़ीं ।[2] राव सुरताण की मृत्यु की तिथि बड़ी आलोचनापूर्ण है । कुछ इतिहासकारों के अनुसार 12 सितम्बर 1610 ई0 में सुरताण की मृत्यु हुयी[3] जबकि कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार 1620-22 ई0 में कभी उसकी मृत्यु हुयी ।[4]

राय सुरताण की मृत्यु के पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र राजसिंह गद्दी पर बैठा और उसका छोटा भाई सूरसिंह उसका प्रधानमन्त्री बना ।[5] सूरसिंह बहुत महत्त्वाकांक्षी था अतः वह जोधपुर के महाराणा सूरतसिंह के साथ मिलकर राजसिंह को गद्दी से उतारने का षड्यन्त्र करने लगा । श्यामलदास के अनुसार वह सिरोही का बँटवारा करने के लिये झगड़ा करने लगा ।[6] फलतः दोनों में गृहयुद्ध प्रारम्भ हो गया । इस युद्ध में देवड़ा भैरवदास, समरावत डूंगरोत आदि सूरसिंह के साथ थे तथा देवड़ा पृथ्वीराज सूजावत राजसिंह की ओर था । इस युद्ध में राजसिंह की विजय

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 641,
   बांकीदास की ख्यात, पृ0 223, नैणसी की ख्यात, भाग 1, पृ0 138।
2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिरोही, पृ0 66.
3. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1098.
4. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिरोही, पृ0 66.
5. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिरोही, पृ0 67,
   नैणसी और उसके इतिहास ग्रन्थ, पृ0 131.
6. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1098.

व सूरसिंह को सिरोही से निकाल दिया गया ।[1] पृथ्वीराज सूजावत राजसिंह का नया प्रधानमन्त्री बना । किन्तु वह भी राजसिंह के लिये समस्यायें उत्पन्न करने लगा । अतः राजसिंह ने भैरवदास को पृथ्वीराज को मारने के लिये भेजा परन्तु पृथ्वीराज के कुटुम्बियों ने भैरवदास को ही मार डाला और एक दिन पृथ्वीराज ने अचानक अपने परिवार के साथ महल में घुसकर राजसिंह को मार डाला[2] और उसके दो वर्ष के बेटे अखैराज को मारना चाहा किन्तु रानियों ने उसे बचा लिया । थोड़ी देर बाद सिसोदिया पर्वतसिंह व रामा भैरवदासोत आदि ने राजपूतों से लड़ाई शुरू कर दी । एक ओर से दीवार तोड़कर उन्होंने अखैराज को सुरक्षित बाहर निकाल दिया । पृथ्वीराज भाग गया किन्तु उसके कई राजपूत भाई व पुत्र मारे गये ।[3]

सन् 1618 ई0 में पर्वतसिंह, रामा भैरवदासोत, चीबा, ॅदा, करमसी, साह तेजपाल आदि ने दो वर्षीय राव अखैराज को सिरोही की गद्दी पर बिठाया और पृथ्वीराज को सबने मिलकर सिरोही से बाहर निकाल दिया ।[4] अखैराज द्वितीय ने पृथ्वीराज को मारकर अपनी पिता की मृत्यु का बदला ले लिया ।[5]

पृथ्वीराज के पुत्र राव चांदा ने अम्बाव के पहाड़ों में रहते हुए सिरोही नगर

---

1. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिरोही, पृ0 67.
2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिरोही, पृ0 67,
   कविवर श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1098.
3. कविवर श्यामलदास, वीरविनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1098.
4. कविवर श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1098.
5. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिरोही, पृ0 67.

को खूब लूटा और अन्तत: 1644 ई0 मे 120 गाँवों पर अधिकार करके नीमज में रहने लगा ।[1] सन् 1656 ई0 में राव आवैराज द्वितीय ने देवड़ा, रामा, चीबा, करबसी, खवास केसर आदि के साथ नीमज पर आक्रमण किया दोनों (आवैराज व चांदा) में युद्ध हुआ जिसमें अखैराज की सेना परास्त हुई ।

राव अखैराज के मुगलों से अच्छे सम्बन्ध थे|इसीलिये उत्तराधिकार के युद्ध के समय शहजादों ने अखैराज के नाम निशान भेजा था व उससे सहायता माँगी थी ।[2]

कोटा

बूँदी और कोटा अजमेर सूबे के रणथम्भौर सरकार के अन्तर्गत थे ।[3] सर जदु नाथ सरकार के अनुसार वर्तमान बूँदी और कोटा नागर सरकार के नाम से जाने जाते थे ।[4] जिसके अन्तर्गत 31 महाल थे और जो 8037450 बीघा तक विस्तृत था।

सन् 1545 ई0 में केसर खान और दोदर खान नामक पठान सिपाहियों ने शक्तिपूर्वक कोटा पर अधिकार कर लिया तथा बूँदी पर मालवा के मुस्लिम शासकों ने अधिकार कर लिया । राव सुर्जन (1533-1585) ने इन पठानों को पराजित

---

1. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1098-1099.
2. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1099.
3. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, कोटा, 1982, पृ0 28,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, भाग 1, पृ0 415-16.
   रघुवीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 101.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 273, 277, 281.

किया । उसने कोटा का प्रदेश अपने पुत्र भोज को दिया । जब राव सुर्जन की मृत्यु हो गयी तो राजा भोज अपने पिता के स्थान पर बूँदी की गद्दी पर बैठा और उसने राव सुर्जन के दूसरे पुत्र हृदयनारायन को कोटा का राज्य दिया । इस तथ्य की पुष्टि एक शाही फरमान द्वारा भी होती है ।[1] हृदयनारायन ने कोटा पर 15 वर्षों तक राज्य किया ।

राव रतन

राजा भोज की 1607 ई0 में मृत्यु हो जाने के पश्चात उसका पुत्र राव रतन उसका उत्तराधिकारी हुआ ।[2] राव रतन तथा उसके पुत्र माधो सिंह ने खुर्रम के विद्रोह को दबाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था । सन् 1624 ई0 में इलाहाबाद के निकट शाही सेना व खुर्रम की सेना के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें राव रतन व माधो सिंह शाही सेना की ओर से लड़े थे । युद्ध इतना भयंकर हुआ था कि हृदयनारायन मैदान छोड़कर भाग गया । उसके इस कायरतापूर्ण कार्य के कारण सम्राट ने कोटा पर अधिकार कर लिया व अस्थायी तौर पर कोटा राव रतन को दे दिया ।[3] कुछ समय पश्चात शहजादा खुर्रम ने मलिक अम्बर के साथ समझौता करके बुरहानपुर पर आक्रमण कर दिया । इस युद्ध में खुर्रम पराजित हुआ । इस युद्ध में माधो सिंह ने उल्लेखनीय वीरता का प्रदर्शन किया था । राव रतन कोटा की जागीर अपने पुत्र माधो सिंह को देना चाहता था । अत: जब खुर्रम पराजित हो गया तो उसे बुर-हानपुर में राव रतन तथा महावत खां की निगरानी में रखा गया । राव रतन ने
इस समय माधोसिंह को शाहजादा खुर्रम की देखभाल के लिये नियुक्त किया।
इस समय माधो सिंह को शहजादा खुर्रम का विश्वास प्राप्त करने में सफल हो गया ।

---

1. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, कोटा, पृ0 28-29.
2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, कोटा, पृ0 29.
3. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, कोटा, पृ0 29.

<u>माधोसिंह</u>

जब शाहजहाँ सम्राट बना तो उसने माधोसिंह को न केवल कोटा की जागीर दी बल्कि आठ और परगने खजूरी, अरन्द खेड़ा, कैथून, अनवा, खनवास, मधुकरगढ़ दिगोद और राहल और दिये और उसे बूँदी के स्वतन्त्र राजा के रूप में मान्यता दी ।[1] तथा उसे मुगल शासन की अधीनता में रखा तभी से बूँदी और कोटा पृथक-पृथक माने जाने लगे । श्यामलदास के अनुसार यह घटना 1631 ई0 की है ।

कर्नल टाड ने राजस्थान के इतिहास द्वितीय भाग में लिखा है कि -"सम्राट शाहजहाँ ने बुरहानपुर की लड़ाई में माधोसिंह की साहस व वीरता से प्रसन्न होकर उसे 360 नगर और गाँवों से पूर्व कोटा राज्य पुरस्कार के रूप में दिया । पहले यह कोटा राज्य बूँदी राज्य के प्रधान सामन्तों के अधीन था और उसका राजकर दो लाख रूपया मिलता था । माधोसिंह ने बादशाह से राजा की उपाधि प्राप्त की और वह उक्त कोटा राज्य पर स्वाधीन भाव से शासन करने लगा ।[2] माधोसिंह को 2500 जात व 1500 सवार का मनसब तथा कोटा और पलायता की जागीर दी गयी ।[3] जिस समय माधोसिंह ने शाहजहाँ से कोटा राज्य का अधिकार प्राप्त

---

1. मथुरा लाल शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 104-105,
   कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1408.
2. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2 (अनु0) बलदेव प्रसाद मिश्र, पृ0 864,
   श्यामलदास, वीरविनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1407,
   लाहौरी, बादशाहनामा, पहली जिल्द, पृ0 401.
3. लाहौरी, बादशाहनामा, पहली जिल्द, पृ0 401,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 1-3.
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 875-876,
   मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 69.
   एम0 अतहर अली, द आप्रेटस ऑफ इम्पायर, पृ0 115,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, अप्रकाशित (शोध-प्रबन्ध) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1988, पृ0 249.

किया, उस समय कोटा के दक्षिण में गागरौन और घाटोली प्रदेश था, पूर्वी सीमा में मांगरोल और नाहरगढ़ था । उत्तर में कोटा राज्य की सीमा सुल्तानपुर तक थी ।

माधोसिंह ने सम्राट शाहजहाँ का सहयोग पाकर थोड़े ही दिनों में कोटा राज्य की सीमा बहुत विस्तृत कर ली । माधोसिंह की मृत्यु के समय मालवा तथा हाणोती की सीमा तक कोटा राज्य की सीमा विस्तृत थी ।

माधोसिंह को मुगल साम्राज्य में सन् 1628 ई० में 1000/700 का मनसब प्राप्त था ।[1] शाहजहाँ के विद्रोही खानेजहाँ लोदी के विरुद्ध किये गये अभियान में माधोसिंह साथ गया था और युद्ध में बड़ी वीरता दिखलायी थी । अतः उसका मनसब बढ़ाकर 2000 जात व 1000 सवार कर दिया गया और उसे परगने भी प्रदान किये गये, इस प्रकार उसके क्षेत्र का भी विस्तार हुआ ।[2] सन् 1633 ई० में माधोसिंह सुल्तान शुजा के साथ दक्षिण गया और दक्षिण के सूबेदार महावत खाँ के मर जाने पर खानेदौरां सूबेदार बुरहानपुर में नियुक्त हुआ और दौलताबाद में शाहू भोंसले के विद्रोह करने पर खानेदौरां दौलताबाद की ओर गया और माधोसिंह को बुरहानपुर की सुरक्षा के लिये नियुक्त किया ।[3] सन् 1635 ई० में जुझारसिंह बुन्देला का दमन करने के लिए भेजी गयी सेना के साथ भी वह गया था ।[4] इसके बाद

---

1. मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 50.
2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, कोटा, पृ० 29.
3. श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ० 1408.
4. राजस्थान गजेटियर , कोटा, पृ० 29.
   मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 98.

माधोसिंह जब सम्राट के दरबार में गया तो उसका मनसब 3000 जात व 1600 सवार का दिया गया ।[1] सन् 1636 ई0 में माधोसिंह का मनसब 3000/2000 कर दिया गया ।[2] सन् 1638 ई0 में सुल्तान शुजा के साथ माधोसिंह कन्धार गया व 1639 ई0 में मुराद बख्श के साथ काबुल अभियान पर गया । सन् 1640 ई0 में दरबार वापस आने पर उसका मनसब 3000/2500 कर दिया गया ।[3] 1642 ई0 में उसके मनसब के 500 सवार बढ़ा दिये गये और उसका मनसब 3000/3000 हो गया ।[4] सन् 1646 ई0 में वह शहजादा मुराद बख्श के साथ बल्ख बदख्शां अभियान पर गया । उसने तीन माह तक बल्ख के किले को घेरे रखा । सम्राट ने उसकी अद्भुत वीरता के लिये उसे सुनहली जीन सहित घोड़ा इनाम में दिया ।[5] बल्ख अभियान के पश्चात् वह कोटा लौट गया और वहीं कुछ समय पश्चात् 1648 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।

<u>मुकुन्द सिंह</u>

माधोसिंह के पाँच पुत्र थे - मुकुन्द सिंह, मोहन सिंह, जुझार सिंह, कनीराम और किशोर सिंह । मुकुन्द कोटा का राजा बना ।[6] मोहन सिंह को पलायता

---

1. श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1409,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, कोटा, पृ0 29,
   मुंशी देवीप्रसाद,कृत शाहजहाँनामा, पृ0 198.
2. मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 163,
   श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 1408.
3. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1409,
   मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 163.
4. मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 177,
   वारिस, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 198,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 2, पृ0 308,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, पृ0 270.
5. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर कोटा, पृ0 29, मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 98-211.
6. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर कोटा, पृ0 30.

कान्हसिंह को कोमला, जुझारसिंह को कोटड़ा और किशोर सिंह को सांगोत जागीर में मिला ।

शाहजहाँ के 21वें जुलूस वर्ष में मुकुन्दसिंह को 2000/500 का मनसब मिला[1] और कोटा का राज्य मिला । उसके मनसब में 500 की वृद्धि की गयी । सन् 1648 ई0 में मुकुन्दसिंह शाहजादा औरंगजेब के साथ कन्धार अभियान पर गया वहाँ से 1651 ई0 में लौटने पर उसके मनसब में 500 जात की वृद्धि तथा नक्कारा निशान उसे दिया गया ।[2] सन् 1651 ई0 में औरंगजेब तथा 1652 ई0 में दारा के साथ कन्धार अभियान पर भी मुकुन्दसिंह गया और वहाँ से लौटने पर उसका मनसब 3000/2000 का हो गया ।[3] मुकुन्दसिंह सन् 1654 ई0 में सरदुल्ला खाँ के साथ चित्तौड़ के दुर्ग की दीवारें गिराने के लिये भी नियुक्त हुआ था । सन् 1657 ई0 में मुकुन्दसिंह जसवन्तसिंह के साथ शहजादा औरंगजेब को रोकने के लिये मालवा में नियुक्त हुआ ।[4] सन् 1658 ई0 में उज्जैन के निकट फतेहाबाद की लड़ाई में मुकुन्द सिंह अपने चारों भाइयों के साथ बड़ी वीरतापूर्वक लड़ा । इस लड़ाई में किशोरसिंह को छोड़कर सभी भाई मारे गये केवल वह क्षत विक्षत अवस्था में बचा था ।[5]

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 241,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 526,
   श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1410,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी, अण्डर शाहजहाँ, पृ0 306.
2. कविवर श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1410.
3. कविवर श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1410,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 306,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ (शोध-प्रबन्ध), पृ0 306.
4. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1410,
5. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ030, टाड, राजस्थान का इतिहास, अनुवादक बलदेव प्रसाद मिश्र, पृ0 865.

बूँदी

अजमेर सूबे के दक्षिण पश्चिम में हाड़ोती रियासत थी जहाँ हाड़ा राजपूत रहा करते थे। बूँदी राज्य मेवाड़ के सिसोदिया, मालवा के खिलजी, आगरा के अफगानों की शक्तिशाली रियासतों से घिरा हुआ था।[1]

अकबर के समय में बूँदी का प्रमुख राजा सुर्जन हाणा था। उसने 1569-70 ई0 में रणथम्भौर का किला सम्राट को प्रदान किया था व पेशकश दी। राजा सुर्जन तथा उसके पुत्र राजा भोज शाही सेवकों के थे। उन्हें मनसब तथा जागीरें मिली थीं। अबुल फजल के अनुसार सुर्जन हाणा को 2000 का मनसब मिला था।[2] नैणसी के अनुसार जिस समय सुर्जन ने अधीनता स्वीकार की उस समय उसे चुनार के चार परगने जागीर में दिये गये।[3] उसे गढ़कटंगा की जागीर भी दी गयी जिस पर 1575-76 ई0 तक उसका अधिकार था। कालान्तर में उसके मनसब एवं जागीरों में वृद्धि की गयी। वंश भास्कर के अनुसार अकबर के समय में उसका मनसब 5000 का हो गया था व उसे बूँदी के समीप 26 परगने तथा बनारस के समीप 26 परगने प्रदान कियेगये थे। सम्राट ने उसे राव राजा की उपाधि प्रदान की।[4] अबुल फजल के अनुसार उसके पुत्र भोज का मनसब 1000/1000 था।[5]

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 104.

2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 161.

3. नैणसी की ख्यात, भाग 1, पृ0 111.

4. सूर्यमल, वंश भास्कर, भाग 3, पृ0 2290,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 116.

5. अबुल-फजल, आईने-अकबरी, पृ0 162,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 92.

राजा सुर्जन तथा राजा भोज ने समय समय पर मुगलों को सैनिक सेवा प्रदान की थी । राजा सुर्जन ने मालवा के गोंड राजाओं के दमन में तथा बिहार में मुगलों को सैनिक सेवा प्रदान की ।[1] राजा भोज ने उड़ीसा एवं दक्षिण में मुगलों की सहायता की ।[2] राजा सुर्जन के ज्येष्ठ पुत्र दौदा जिसने मुगलों की अधीनता नहीं स्वीकार की थी व बूँदी में अव्यवस्था उत्पन्न कर रहा था उसके विरुद्ध भी राजा सुर्जन तथा भोज दोनों ने ही मुगलों का सहयोग दिया ।[3]

राजा भोज के तीन पुत्र थे :- 1. राव रतन, 2. हृदय नारायन और 3. केशवदास ।

अकबर की मृत्यु के कुछ ही समय पश्चात् राजा भोज की भी मृत्यु हो गयी व राव रतन बूँदी की गद्दी पर बैठा ।[4] सन् 1622 ई0 में शाहजादा खुर्रम ने विद्रोह किया तब खुर्रम[5] के साथ 22 राजपूत राजा सेना सहित उसकी मदद के लिए उपस्थित थे । वे जहाँगीर को गद्दी से उतारकर व परवेज को मारकर खुर्रम को गद्दी पर बिठाना चाहते थे, परन्तु इस समय एकमात्र बूँदी के राजा राव रतन ने जहाँगीर का साथ दिया ।[6]

---

1. सूर्यमल, वंश भास्कर, भाग 3, पृ0 2284, 2288.
2. अब्दुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 851,855.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 184.
4. टाड, राजस्थान का इतिहास, ।अनुवादक। बलदेव प्रसाद मिश्र, पृ0 810.
5. खुर्रम राजपूत माँ के गर्भ से जन्मा था, इसलिए राजपूत राजा बड़ी संख्या में उसका साथ दे रहे थे ।
6. उसके सम्बन्ध में हाणा कवि ने लिखा है -

    सरवर फूटा जल बहा, अब क्या करो यतन ?
    जाता घर जहाँगीर का राखा राव रतन।

बुरहानपुर में शाही सेना ने खुर्रम को जा घेरा । उस युद्ध में शाही सेना में राव रतन अपने पुत्रों माधोसिंह व हरिसिंह के साथ था । वह बड़ी वीरतापूर्वक इस युद्ध में लड़ा और खुर्रम की पराजय हुई । इस वीरता से प्रसन्न होकर सम्राट ने राव रतन को बुरहानपुर के शासनकर्त्ता का पद दिया और उसके पुत्र माधव को स्वाधीनभाव से कोटा का राज्य दिया ।[1] राव रतन ने बुरहानपुर में एक नगर की स्थापना की और उसका नाम रतनपुर रखा ।[2]

दरिया खां नामक एक मुसलमान अमीर सम्राट की आज्ञा न मानकर मेवाड़ राज्य के प्रजापुंज के ऊपर अत्याचार कर रहा था । राव रतन ने उसका दमन किया व उसे सम्राट के सम्मुख ले आया । सम्राट ने उसकी वीरता से प्रसन्न होकर पुरस्कार में उसको एक दल नौबत के बाजे दिया और रतन को लाल पताका उड़ाने की आज्ञा दी ।[3] राव रतन ने बुरहानपुर, खानदेश, कन्धार और बल्ख एवं बदख्शां की लड़ाईयों में शाहजहाँ की सहायता की और इस सहायता के फलस्वरूप सम्राट ने उसे 3000/3000 का मनसब प्रदान किया था ।[4] 5 मार्च 1628 ई0 को सम्राट ने उसे एक खिलअत, एक जड़ाऊ जमधर और 5000 जात व 5000 सवारों का मनसब प्रदान

---

1. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 811,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, भाग 1, पृ0 415-416,
   रघुवीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 101.
2. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, (अनु0) बलदेवप्रसाद मिश्र, पृ0 811.
3. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, (अनु0), बलदेवप्रसाद मिश्र, पृ0 811.
4. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, भाग 1, पृ0 415-416,
   रघुवीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 101.

किया ।[1] सम्राट ने उसे एक ध्वज, नक्कारा, जीन सहित घोड़ा और हाथी भी उपहार में प्रदान किया ।

राव रतन के चार पुत्र थे - 1. गोपीनाथ, 2. माधवसिंह, 3. हरि जी, 4. जगन्नाथ । इसमें माधोसिंह जो राव रतन हाड़ा का दूसरा पुत्र था, उसका 1000 तथा 600 सवार का मनसब था ।[2] गोपीनाथ की मृत्यु अपने पिता के सामने ही हो गयी थी । राव रतन की मृत्यु के पश्चात् उसका ज्येष्ठ पौत्र शत्रुशाल (गोपीनाथ का बड़ा पुत्र) बूँदी के राजसिंहासन पर बैठा । सम्राट ने उसे 3000 जात व 2000 सवार का मनसब प्रदान किया और राव की उपाधि प्रदान की साथ ही उसे बूंदी, कोटा और समीपवर्ती प्रदेश उपहार में प्रदान किया । कोटा और पलायता का परगना उसे जागीर में प्रदान किया ।[3] 19 फरवरी 1632 ई0 को राव शत्रुशाल ने सम्राट को 50 हाथी उपहार में दिया । लाहौरी के अनुसार इसमें से 18 हाथियों का मूल्य 2 लाख 50 हजार रूपये था, इसमें से जो हाथी शाही सेना में सम्मिलित करने योग्य थे, उन्हे सम्राट ने ले लिया व शेष हाथी वापस कर दिये । इस अवसर पर सम्राट ने उसे एक खिलअत, चाँदी की जीन सहित एक घोड़ा, नक्कारा और निशान उपहार में प्रदान किया ।[4] शत्रुशाल शहजादा औरंगजेब के साथ दक्षिण

---

1. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 203,
   मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 50,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 1, पृ0 260.
2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 50.
3. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 441,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 1, पृ0 425,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 1, पृ0 1.
   मुंशी देवी प्रसाद शाहजहाँनामा, पृ0 69,
   अतहर अली व आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 115.
4. लाहौरी , बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 457,
   मुंशी देवीप्रसाद शाहजहाँनामा, पृ0 71.

अभियान पर भी गया ।[1] उसने दौलताबाद तथा बीदर के किले को विजित करने में अद्भुत वीरता दिखलायी थी । धामुनी नामक स्थान के किले को जीतने में भी उसने बहुत वीरता दिखायी थी । कालान्तर में शत्रुशाल का मनसब 4 हजारी जात 4 हजार सवार हो गया था ।[2] शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध होने पर शत्रुशाल दक्षिण औरंगजेब की सेना से शाहजहाँ के आदेश से वापस लौट आया, यद्यपि औरंगजेब तथा उसकी सेना ने उसे रोकने का बहुत प्रयास किया । औरंगजेब व दारा के मध्य धौलपुर में हुयी लड़ाई में वह दारा के पक्ष में बड़ी वीरता से बढ़ा व लड़ते हुये युद्धभूमि में मारा गया ।[3] बूंदी के इतिहास में वर्णित है कि राव शत्रु-शाल ने अपने जीवन में 52 युद्ध करके असीम वीरता का परिचय दिया था । उसने बूँदी के राजमहल का विस्तार कर 'छत्रमहल' नामक एक अंश का निर्माण करवाया व पाटन नामक स्थान पर केशवराज भगवान का सुन्दर मन्दिर बनवाया ।[4] संवत् 1715 ई0 में राव शत्रुशाल की मृत्यु हो गयी ।

---

1. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2 (अनु0) बलदेव प्रसाद मिश्र, पृ0 811.

2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 306.

3. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 816.

4. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 817.

डूंगरपुर-बांसवाड़ा

डूंगरपुर बांसवाड़ा पहले एक रियासत बागर के नाम से जानी जाती थी। बागर गुजरात और मालवा की सीमा का दक्षिणवर्ती पर्वतीय प्रदेश था। इसमें 3500 गाँव थे।[1] इस पर एक रावल राज्य करता था। 1527 ई0 में खनवा की लड़ाई में रावल उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात बागर को उनके दो पुत्रों रावल पृथ्वी राज और राव जगमल में बराबर बाँट दिया गया। रावल पृथ्वीराज को डूंगरपुर और जगमल को बांसवाड़ा दिया गया।[2] अबुल फजल के अनुसार डूंगरपुर बांसवाड़ा सिरोही महाल के अन्तर्गत आता था।[3] अबुल फजल सूबा गुजरात का वर्णन करते समय इस क्षेत्र को पकपाल कहता है। अबुल फजल के अनुसार मारा और मंगरेज के समीप एक क्षेत्र है, जिसे पकपाल कहते हैं। महेन्द्री नदी इसके बीच से होती हुयी गुजरात जाती है। इसके अलग-अलग राजा हैं। डूंगरपुर राजधानी है। मालवा की ओर बांसवाड़ा है और उसका अलग राजा है। प्रत्येक के पास 5000 घुड़सवार और 10000 पैदल सेना है। दोनों ही सिसोदिया हैं, और राना के वंशज हैं।[4]

डूंगरपुर

रावल आसकरन

रावल आसकरन 1549 ई0 में डूंगरपुर के राजसिंहासन पर बैठा। 1577 ई0 में रावल आसकरन ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। वह गुजरात के

---

1. नैणसी की ख्यात, भाग 1, पृ0 78.
2. नैणसी की ख्यात, भाग 1, पृ0 86,88,
   सिकन्दर बिन मुहम्मद, मीरात-ए सिकन्दरी, पृ0 274.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 132-133.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 119,
   अहसान रजा खॉ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 107.

सूबेदार के माध्यम से सम्राट को वार्षिक खिराज देने लगा ।[1] 1577 ई0 में रावल आसकरन ने अपनी पुत्री का विवाह अकबर के साथ कर दिया ।[2] अकबर के समय में डूंगरपुर के राजा को कोई मनसब नहीं प्राप्त था ।

महारावल सहस्रमल

आसकरन की मृत्यु के पश्चात् सहस्रमल 1580 ई0 में डूंगरपुर के राजसिंहासन पर बैठा । उसने 25 वर्ष तक राज्य किया । रावल सहस्रमल मुगलों की अधीनता से मुक्त होना चाहता था, वह अधीनता की शर्तों के अनुसार नहीं चल रहा था । 1585-86 ई0 में अकबर ने उसके विरुद्ध सेना भेजी । इससे सहस्रमल की अवज्ञाकारिता पर विराम लग गया और उसने मुगलों को बड़ी मात्रा में धन व पशु वगैरह कर के रूप में देकर संकट को टाल दिया ।

कर्मसिंह

महारावल सहस्रमल की मृत्यु के पश्चात् 2 जुलाई 1606 ई0 को महारावल कर्मसिंह का राज्याभिषेक हुआ । उसके गद्दी पर बैठने के बाद डूंगरपुर और बांसवाड़ा के सम्बन्ध बिगड़ गए और युद्ध की परिस्थितियाँ बनने लगी । डूंगरपुर ने सदैव बांसवाड़ा के राजा की सहायता की थी, फिर भी बांसवाड़ा का महारावल उग्रसेन उन सब उपकारों को भूल गया और उसने डूंगरपुर से युद्ध छेड़ दिया ।[3] माही

---

1. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 409.

2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 196-210.

3. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग, पृ0 411, मुहणोत नैणसी की ख्यात, पृ0 173.

नदी के तट पर युद्ध हुआ । इस युद्ध में कर्मसिंह ने अत्यधिक वीरता दिखलायी, किन्तु पराजित हुआ । इस युद्ध में चौहान वीरभानु[1] भी मारा गया । डूंगरपुर के 1623 ई0 का गोवर्धन नाथ मंदिर का शिलालेख में वर्णित है कि करम सिंह ने शत्रु को पराजित करने के लिए अद्भुत वीरता का परिचय दिया ।[2]

पुंजराज

महारावल कर्मसिंह का देहान्त दिसम्बर 1609 ई0 के आस-पास हुआ, क्योंकि उसके उत्तराधिकारी महारावल पुंजराज का 29 दिसम्बर 1629 ई0 को डूंगरपुर की गद्दी पर बैठना ज्ञात होता है । महारावल कर्मसिंह का देहान्त 1612 ई0 के पहले हो गया था । यह शिला लेखीय साक्ष्य से स्पष्ट है ।

महारावल कर्मसिंह का एक शिलालेख (13 अप्रैल 1609 ई0 का) सागवाड़ा के जैन मन्दिर में लगा है । तत्पश्चात् जो शिलालेख मिलता है वह उसके उत्तराधिकारी महारावल पुंजराज का है, जिसकी तिथि 23 अप्रैल 1612 ई0 है । इससे निश्चित है कि 1612 ई0 के पूर्व महारावल कर्म सिंह का देहान्त हो गया था । डूंगरपुर राज्य की 'बड़वे की ख्यात' में दिया है कि महारावल पुंजराज का सिंहासनारोहण 29 दिसम्बर 1609 ई0 को हुआ था ।[3] आसकरन ने अकबर की अधीनता

---

1. वीरभानु (वीरमाण) चौहान डूंगरसी बलावत का पौत्र और लालसिंह का पुत्र था । काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित मुहणोत नैणसी की ख्यात आदि पुस्तकों में उसे बोरी का जागीरदार और उसके छोटे पुत्र-सूरजमल के बेटे परसा को बनकोड़ा वालों का पूर्वज बताया गया है ।

2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, पृ0 106, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, डूंगरपुर, पृ0 30.

3. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 411.

स्वीकार की थी, परन्तु वह दरबार में नहीं गया और न ही उसने सम्राट की सैन्य सेवा की। सन् 1615 ई० में मुगल मेवाड़ सम्बन्ध हो जाने पर जहाँगीर ने 11 फरवरी 1615 ई० में एक फरमान जारी किया, जिसके अनुसार डूंगरपुर, बांसवाड़ा और देवलिया आदि मेवाड़ के बाहर के इलाके भी मेवाड़ को दे दिये गये।[1] डूंगरपुर, बांसवाड़ा, देवलिया (प्रतापगढ़) आदि मेवाड़ के पड़ोस में थे। अतः मेवाड़ इन राज्यों को अपने अधिकार में कर लेने के लिए हमेशा तत्पर रहता था। जब सम्राट से फरमान मिल गया तो मेवाड़ की शक्ति और भी बढ़ गयी। डूंगरपुर को अब स्पष्ट रूप से आभास हो गया कि वह मेवाड़ का अधिकृत क्षेत्र बनकर रह जाएगा तथा अपनी स्वतंत्रता बनाए नहीं रख पाएगा। अतः डूंगरपुर ने मुगलों से सम्बन्ध प्रगाढ़ कर लेने में ही अपनी भलाई समझा। उसने खुर्रम की कृपादृष्टि प्राप्त कर ली। खुर्रम के विद्रोह के समय खुर्रम से मिल गया।[2] शाहजहाँ के सिंहासनारोहण के पश्चात् वह मुगल दरबार गया और उसे 1000/500 का मनसब मिला।[3] सन् 1629 ई० में शाहजहाँ के साथ दक्षिण की लड़ाइयों में अच्छी सेवा करने के कारण उसका मनसब बढ़ाकर 1500/500 कर दिया गया और उसे माही मरातिब भी प्राप्त हुआ।[4]

---

1. कविवर श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ० 239-249,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, पृ० 107.
2. श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, ग्यारहवां प्रकरण, पृ० 1008,
   जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ० 411.
3. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग2, पृ० 202,
   एम० अतहर अली, द आप्रेटस ऑफ इम्पायर, पृ० 100,
   पी०एल० विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, पृ० 257.
4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ० 12,

   जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ० 411.

महाराणा कर्णसिंह के समय डूंगरपुर, बांसवाड़ा व देवलिया पर मेवाड़ी अधिकार नहीं स्थापित हो सका। कर्णसिंह मेवाड़ के प्रबन्ध में व्यस्त रहा, किन्तु महाराणा जगतसिंह ने 1615 ई0 के फरमान के अनुसार डूंगरपुर, बांसवाड़ा व देवलिया पर अधिकार करने की चेष्टा की। इसके लिए उसने अपने मंत्री अक्षयराज कावड़िया को सेना सहित डूंगरपुर भेजा। महाराजा की सेना का मुकाबला करने में महारावल पुंजा सक्षम नहीं सिद्ध हुआ। वह पहाड़ों में चला गया और सेना ने डूंगरपुर को लूटा। यह वृत्तान्त राजसमन्द की राजप्रशस्ति में खुदा हुआ है। किन्तु सेना के हटते ही महारावल पुंजराज ने अपने क्षेत्र पर पुनः अधिकार कर लिया।[1] महारावल पुंजराज का देहान्त 9 फरवरी 1657 ई0 को हुआ।[2]

महारावल पुंजराज ने वास्तु एवं अन्य निर्माण कार्यों के क्षेत्र में अपना योगदान दिया। उसने दो तालाब बनवाए एक पुंजेला गाँव में दूसरा धारणी गाँव में। उसने राजधानी, डूंगरपुर में नौलखा बाग बनवाया। गैब सागर तालाब के समीप गोवर्धननाथ का मंदिर उसी ने बनवाया। उस मन्दिर को बसई गाँव भेंट में दिया।[3] महारावल पुंजराज की 12 रानियाँ थीं। उसके गिरधर दास, लालसिंह, प्रतापसिंह भानुसिंह, और सुजानसिंह नामक पाँच पुत्र थे।

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 28,
   जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 411.

2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, डूंगरपुर का इतिहास, पृ0 110,
   जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 411.

3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, डूंगरपुर का इतिहास, पृ0 111.

गिरधरदास

महारावल पुंजराज का देहान्त 1657 ई0 में हो जाने के पश्चात् गिरधरदास डूंगरपुर राज्य का स्वामी बना । अपने पिता की जीवितावस्था में ही वह शाहजहाँ के दरबार में गया था तथा सम्राट ने उसे 600/600 का मनसब दिया ।[1] सन् 1661 ई0 राजा गिरधर दास की मृत्यु हो गयी ।[2]

बांसवाड़ा

उग्रसेन

बांसवाड़ा के उग्रसेन 1586 ई0 में गद्दी प्राप्त की थी । वह महारावल जगमन का पौत्र व कल्याण मल का पुत्र था । बांसवाड़ा का करीब आधा भाग रावत मानसिंह चौहान के पास था । मानसिंह चौहान ने मुगलों के साथ मिलकर उग्रसेन पर आक्रमण करवाया ताकि वह पूरा बांसवाड़ा स्वयं ले सके । उग्रसेन पहाड़ों में भाग गया किन्तु मुगल सेना के ते ही उसने अपने राज्य पर पुन: अधिकार कर लिया । सन् 1601 ई0 में राठौड़ सूरजमल ने धोखा देकर चौहान मानसिंह को मार डाला ।[3] इस पर अकबर ने पुन: अपनी सेना बांसवाड़ा भेजी। उग्रसेन ने कुछ समय तक तो प्रतिरोध किया, किन्तु जब समझ लिया कि प्रतिरोध करना व्यर्थ होगा तो वह पुन: पहाड़ों की ओर भाग गया । जब मुगल सेना मालवा की ओर बढ़ी तब उसने फिर अपने राज्य पर अधिकार कर लिया ।

---

1. गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, पृ0 112, जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0412.
2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, पृ0 112, जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 412.
3. मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग 1, पृ0 92.

उग्रसेन ने 1613 ई0 तक बांसवाड़ा पर राज्य किया । बांसवाड़े की ख्यात से ज्ञात होता है कि माही नदी पर डूंगरपुर के महारावल कर्मसिंह और बांसवाड़े के उग्रसेन के बीच युद्ध हुआ, जिसमें बांसवाड़ा की विजय हुई ।[1]

उदयभान

महारावल उग्रसेन की मृत्यु के उपरान्त सन् 1615 ई0 में उसका पुत्र उदय भान उसका उत्तराधिकारी बना । परन्तु 6 माह के पश्चात ही उसका देहान्त हो गया ।

रावल समर सिंह (समरसी) : महारावल उदयभान की मृत्यु के पश्चात 1615 ई0 में उसका पुत्र समरसिंह जिसका नाम ख्यातों में समरसी लिखा है, बांसवाड़ा की गद्दी पर बैठा । समरसिंह मुगल दरबार से अपना सम्बन्ध बनाये रखना चाहता था, इसलिये जब जहांगीर 1617 ई0 में मालवा की ओर आया तो समरसिंह ने माण्डू आकर सम्राट को 30 हजार रूपये, तीन हाथी, एक जड़ाऊ पानदान और एक जड़ाऊ कमर पट्टा भेंट किया ।[2] शाहजहां ने अपने शासन के प्रारम्भ में ही महारावल समरसिंह को खिलअत तथा 1000/1000 का मनसब दिया ।[3] मेवाड़ के महाराणा

---

1. डूंगरपुर राज्य की ख्यात में यद्यपि इस युद्ध का वर्णन नहीं है, तो भी कर्मसिंह के उत्तराधिकारी पुंजराज के समय की 25 अप्रैल 1623 ई0 की डूंगरपुर के गोवर्धननाथ मंदिर की प्रशस्ति से स्पष्ट है कि कर्मसिंह ने माही नदी के तट पर युद्ध कर पूर्ण पराक्रम प्रदर्शित किया था ।

2. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 468,
गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बांसवाड़ा राज्य का इतिहास, पृ0 89,
राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बांसवाड़ा, पृ0 26.

3. जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 468,
मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहांनामा, पृ0 11,
गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बांसवाड़ा राज्य का इतिहास, पृ0 93,
राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बांसवाड़ा, पृ0 26.

जगतसिंह ने बांसवाड़ा का मुगलों से सम्बन्ध बढ़ता देखकर दमनकारी नीति अपनाना शुरू कर दिया । मेवाड़ वहाँ से कर वसूल करने लगा । समरसिंह ने मेवाड़ की ओर से कर वसूल करने वाले को वहाँ से निकाल दिया । इस पर क्रुद्ध होकर महाराणा जगतसिंह ने अपने प्रधान कायस्थ भागचन्द्र को सेना सहित बांसवाड़ा भेजा । बहुत समय तक संघर्ष चलता रहा । महारावल समरसिंह की स्थिति जब कमजोर हो गई तो वह पहाड़ों में भाग गया । भागचन्द्र ने नगर की घेराबन्दी कर ली और नगर में घुसकर लूटपाट कराया । छह महीने तक वह बांसवाड़ा में ही रहा । समरसिंह अपने राज्य की बर्बादी देखकर बांसवाड़ा लौट आया और दो लाख रूपये तथा 10 गाँव दण्ड के रूप में देकर मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ली ।[1]

सादुल्ला खाँ ने मेवाड़ में शाही आदेशानुसार जो अभियान 1654 ई0 में किया उसके द्वारा उसने मरम्मत किये हुये बुर्जों को 1654 ई0 में गिरवा दिया । डूंगरपुर, बांसवाड़ा और देवलिया को मेवाड़ के अधीनस्थ बनाने सम्बन्धी फरमान को भी वापस ले लिया ।[2] और साथ ही साथ पुर, मांडल, खैराबाद, मांडलगढ़, जहाजपुर, सरवर, फूलिया, बनेड़ा, बदनोर आदि परगने भी मेवाड़ से अलग कर दिये ।[3]

---

1. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बांसवाड़ा राज्य का इतिहास, पृ0 93,
   बड़वास नामक ग्राम की बावड़ी की 1668 ई0 की प्रशस्ति । मेवाड़ के राज समुद्र नामक तालाब की शिलाओं पर खुदा राजप्रशस्ति महाकाव्य । अमर काव्य के अनुसार यह युद्ध 1635 ई0 में हुआ ।

2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बांसवाड़ा, पृ0 26,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बांसवाड़ा राज्य का इतिहास, पृ0 94.

3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बांसवाड़ा राज्य का इतिहास, पृ0 94.

महारावल समरसिंह की मृत्यु और औरंगजेब के शासनकाल में सन् 1660 ई० हुई । महारावल समरसिंह बहुत दानी राजा था । उसने अपने राज्यकाल में कई गाँव दान में दिये । उसके सम्बन्ध जहाँगीर एवं शाहजहाँ से अच्छे रहे । उसे मनसब की प्राप्त था । यद्यपि उसके मनसब में अधिक वृद्धि नहीं हुई । इसका कारण यही ज्ञात होता है कि मेवाड़ के महाराणा जगतसिंह और राजसिंह के आक्रामक रूख एवं आक्रमण के कारण उसकी बढ़ती हुई शक्ति रुक गई थी ।

जालौर

सिरोही के उत्तर में जालौर की अफगान जमींदारी थी ।[1] अकबर के समय यहाँ के जमींदार ताज खानने मुगलों की अधीनता को मान लिया था । किन्तु बाद में उसने मेवाड़ के महाराणा प्रताप से सन्धि कर ली । अब वह मुगलों का विरोध करने लगा । अत: अकबर ने उसके विरुद्ध सेना भेजी । उसने युद्ध करना व्यर्थ समझकर समझौता कर लिया ।[2] अकबर ने जिन मुस्लिम रियासतों पर विजय की थी उस पर अधिकार कर लिया था किन्तु जालौर के राजा को उसने उसकी रियासत में ही रहने दिया ।[3] ताज खान के बाद का काल-निर्धारण थोड़ा संशयपूर्ण है ।[4] ताज

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ० 14.
2. ए०एल० श्रीवास्तव, अकबर द ग्रेट, भाग 1, पृ० 214.
3. ए०एल० श्रीवास्तव, अकबर द ग्रेट, भाग 1, पृ० 214.
4. अकबर ने लगता है कि यह रियासत दलपत राठौर की सेवा व ईमानदारी के लिये दे दी । महेशदास राठौर भी इस रियासत की देखभाल करता था ।

   आसोपा रामकरन, मारवाड़ का मूल इतिहास, पृ० 383.

खान का उत्तराधिकारी गजनी खान था ।[1] गजनी खान के बाद पहाड़ खान 1617 ई० में गद्दी पर बैठा, किन्तु वह सम्राट का आदर सम्मान नहीं प्राप्त कर सका । व 1619 ई० में मार डाला गया ।[2] उसके पश्चात् जालौर शहजादा खुर्रम को दे दिया गया और फतेह उल्ला बेग को उसकी देखभाल के लिये भेजा गया । जब फतेह उल्ला खान ने जालौर पर कब्जा करना चाहा तो पहाड खान के समर्थकों ने उसे रोक दिया तत्पश्चात् जोधपुर के सूरसिंह को जालौर रियासत के प्रबन्ध का कार्य सौंपा गया । उसने अपने पुत्र गजसिंह को इस कार्य के लिये भेजा । गजसिंह पठानों के दृढ़ विरोध के बावजूद उन्हें जालौर से बाहर निकालने में सफल हो गया । पठान भागकर भिनमल चले गये । वहाँ भी उनका पीछा किये जाने पर उन्होंने भागकर पालनपुर में शरण ली ।[3] 1656 ई० में शाहजहाँ ने जालौर का परगना जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह को प्रदान किया ।[4]

आमेर

कछवाहा

चित्तौड़ के उत्तर पूर्व में ढूंढर का देश था । यहाँ कछवाहा जाति का शासन था ।[5] आमेर या आम्बेर कछवाहों का प्रमुख निवासस्थान था । अबुल-फजल के अनुसार देवास, न्योता, लूनी, मारोत तथा साम्भर में भी कछवाहों का

---

1. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 28.
2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, राजपूताने का इतिहास, पृ० 383.
3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, राजपूताने का इतिहास, पृ० 384.
4. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड का इतिहास, पृ० 219.
5. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ० 102.

शासन था । इसके अतिरिक्त लाम्बी, झरती, अमरसर, सनगानेर आदि में भी कछवाहों का शासन था ।[1] 16वीं शदी में सम्पूर्ण ढूंढार में कछवाहों का शासन नहीं रह गया था । नाइन में मीना राजा का शासन था ।[2] जबकि खण्डेला और उदयपुर में चौहानों की किसी शाखा का शासन था ।[3] इसके अतिरिक्त चात्सू, नारायना, टोंक, टोडा, मालपुरा, मालारना और लालसोत में कछवाहा शासन का कोई उल्लेख नहीं मिलता । 16वीं शदी के मध्य तक उपरोक्त रियासतों पर सूरों का तथा जोधपुर के मालदेव का शासन हो गया ।[4]

अकबर के समय में राजा भारमल, जिसे भारा एवं बिहारीमल भी कहा गया है, आमेर का शासक था । इसकी राजधानी जयपुर थी । वह प्रथम राजपूत राजा था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की । राजा भारमल तथा उसके परिवार के लोग समय-समय पर मुगलों को सैनिक व प्रशासनिक सहयोग प्रदान किए ।

राजा मानसिंह

राजा भारमल का पौत्र राजा मानसिंह सन् 1590 ई0 में आमेर की गद्दी पर बैठा ।[5] अकबर ने उसे सात हजारी (7000) का मनसब प्रदान किया । इतना

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, (अंग्रेजी अनु0), भाग 2, पृ0 156.
2. नाइन के मीना राजा को राजा भारमल ने पराजित किया था ।
   टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 282-283.
3. उदयपुर व खण्डेला के चौहान कछवाहों से स्वतन्त्र थे, उन्हें अकबर के समय में राय साल दरबारी शेखावत ने पराजित किया था । देखिये, नैणसी की ख्यात, भाग 2, पृ0 35, टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 316-317.
4. अहसान रजा खां, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 103.
5. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1279.

मनसब उसके अतिरिक्त अकबर के शासन में केवल मिर्जा अजीज कोका को प्राप्त था। जिस वर्ष राजा मानसिंह गद्दी पर बैठा उसी वर्ष उसने राजा पूर्णमल केदोरिया के राज्य पर आक्रमण करके उस पर विजय प्राप्त कर ली। 1594 ई0 में वह खुसरो के सहयोगी के रूप में उड़ीसा में नियुक्त हुआ। उसके पश्चात् उसे बंगाल भी भेजा गया। मानसिंह ने 1596 ई0 में अकबरनगर नामक एक शहर बसाया। राजा मानसिंह शहजादा सलीम के साथ उदयपुर की चढ़ाई पर भी गया।[1]

जहाँगीरनेउसे बंगाल की सूबेदारी से हटाकर रोहतास के सर्कशों को सजा देने के लिए नियुक्त किया। सन् 1607 ई0 में उसे अहमदनगर अभियान पर खानखाना की सहायता के लिए भेजा गया। राजा मानसिंह ने दक्षिण में बहुत समय शाही सेवा की। 17 जुलाई 1614 ई0 को दक्षिण में ही उसकी मृत्यु हो गई।[2] मानसिंह के समय आमेर राज्य की सीमा एवं उसकी प्रसिद्धि में वृद्धि हुई। राजा मानसिंहनेकछवाहों के गौरव को बढ़ाया।[3]

राजा भावसिंह

मानसिंह की मृत्योपरान्त उसके छोटे पुत्र भावसिंह को आंबेर की गद्दी पर बैठा।[4] भावसिंह शाही कृपा प्राप्त करता रहा, सम्राट ने उसे मिर्जा राजा की

---

1. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1280.
2. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1283.
3. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 574.
4. कविवर श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1286,

   भावसिंह शहजादगी के समय से ही सम्राट की बहुत खिदमत करता था।
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, पृ0 130,
   टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 574, कुंअर रिफाकत अली खान, कछवाहास अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 136.

उपाधि और 4000/3000 सवार का मनसब दिया ।[1] सन् 1616 ई0 में सम्राट ने उसके लिए एक जड़ाऊ पगड़ी भेजी ।[2] और 1617 ई0 में नववर्ष के समारोह में जब भावसिंह सम्राट के दरबार में आया तो उसके मनसब में 1000 की वृद्धि की गयी । अब वह पाँच हजारी मनसबदार बना दिया गया ।[3] अक्टूबर 1617 ई0 में जब जहाँगीर माण्डू में था उसके पास भावसिंह के द्वारा पेशकश भेजे जाने का उल्लेख मिलता है, पेशकश में आभूषण जड़ाऊ वस्तुएं तथा एक हजार रूपये भेजे गये । भावसिंह सम्राट के पास नियमित रूप से उपहार भेजा करता था । जहाँगीर मार्च 1619 ई0 के नववर्ष के समारोह के अवसर पर उन उपहारों का वर्णन करता है । सन् 1619 ई0 में सम्राट ने उसे एक घोड़ा और खिलअत दिया और दक्षिण की मुहिम पर शाही सेना का साथ देने के लिए भेजा ।[4]

राजा महासिंह एवं जयसिंह

राजा भावसिंह अत्यधिक मदिरा पान करता था । इसी कारण से वह दक्षिण में रोगग्रस्त हुआ और वहीं 23 दिसम्बर 1621 ई0 को उसकी मृत्यु हो गई।[5]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, पृ0 130,
   कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहास अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 136.

2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 329.

3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 337,
   टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 574,
   कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहास अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 137,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 98-99.

4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगिरी, भाग 2, पृ0 1081.

5. श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1286.

कर्नल टाड के अनुसार भावसिंह के बाद उसका पुत्र महासिंह गद्दी पर बैठा । महासिंह दुर्व्यसनों के कारण शीघ्र ही मर गया । उसके मरने के बाद जयसिंह आम्बेर के सिंहासन पर बैठा ।[1] राजा भावसिंह के कोई पुत्र नहीं था, इसलिए राजा मानसिंह के बड़े पुत्र जगतसिंह[2] के पोते और महासिंह के पुत्र जयसिंह को 23 दिसम्बर 1621 ई0 को आम्बेर की गद्दी पर बिठाया गया ।[3] सम्राट ने उसे राजा की उपाधि और 2000/2000 का मनसब प्रदान किया ।[4] शहजादा खुर्रम के विद्रोह के समय यह जहाँगीर की ओर से बड़ी वीरता से लड़ा था ।[5] जहाँगीर के शासनकाल में राजा जयसिंह का उत्कर्ष प्रारम्भ हुआ, शाहजहाँ के शासनकाल में उसे अपने पराक्रम दिखाने के अनेक अवसर मिले ।

---

1. टाड राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 574.

2. जगतसिंह अपने पिता मानसिंह के सामने ही काल कवलित हो गया था ।

3. श्यामलदास वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1287.

4. श्यामलदास वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1287.

5. कुंअर रिफाकत अली खाँ कछवाहास अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 153, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 1621.

सन् 1628 ई0 में जब शाहजहाँ दक्षिण से आगरा जा रहा था, उस समय मार्ग में जयसिंह ने आकर उससे मुलाकात की ।[1] शाहजहाँ ने आगरा पहुँचकर गद्दी प्राप्त करने के बाद जयसिंह को शाही सेवा में लिया । उसे महावन में हुए विद्रोह को शान्त करने के लिए भेजा । 5 मार्च 1630 ई0 को सम्राट ने उसे अहमदनगर के निजामशाह के विरुद्ध भेजा । उस समय उसके मनसब में 1000 की वृद्धि करके उसका मनसब 4000/4000 कर दिया गया और उसे उस सेना का सेनापति नियुक्त किया गया ।[2] 25 दिसम्बर 1630 ई0 को सम्राट ने बीजापुर के विरुद्ध जो सेना भेजी, उसमें भी जयसिंह को भेजा । 8 जून 1633 ई0 राजा जयसिंह ने एक ऐसे शौर्य का प्रदर्शन किया कि सब दंग रह गए । हाथियों की लड़ाई में एक हाथी ने शाहजादा औरंगजेब पर अचानक हमला कर दिया, राजा जयसिंह ने पीछे से पहुँचकर उस हाथी पर एक बरछा मारा, फलतः वह हाथी मर गया । शाहजादा औरंगजेब की जान बचाने के कारण सम्राट ने उसे उपहार में एक विशेष खिलअत और सोने की जीन सहित घोड़ा प्रदान किया ।[3] 29 अगस्त 1633 ई0 में शाहजादा शुजा के साथ बीजापुर की ओर भेजे गये अभियान में वह भी साथ गया था । वहाँ उसने बहुत वीरता दिखलायी थी । 18 अप्रैल 1635 ई0 को सम्राट ने उसको 5000/5000 का मनसब दिया ।[4] 25 जनवरी 1636 ई0 को शाहजी और निजामशाह के विद्रोह करने पर

---

1. श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1288.
2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 163,
   श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1288.
3. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 163,
   श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1288.
4. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 163,

   श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1288.

20000 सेना के साथ जयसिंह को उनके विरुद्ध भेजा गया । यह सेना बड़ी बहादुरी से लड़ी और किले पर अधिकार कर लिया । 22 मार्च, 1637 ई0 को दक्षिण से खानेदौरां अपने साथ इब्राहीम आदिलशाह के पौत्र इस्माइल को साथ लेकर सम्राट के सम्मुख आया । सम्राट ने उसे चात्सू का परगना खिलअत, जड़ाऊ खपुआ, फूल कटारा इनाम में दिया ।[1] सन् 1638 ई0 में शाहजहाँ अजमेर से आगरा जाते समय मौजाबाद से होकर गुजरा । मौजाबाद राजा जयसिंह की जागीर में था । शाहजहाँ वहाँ रुका । राजा जयसिंह ने अपनी ओर से कुछ अच्छे घोड़े एक हाथी व बीस हजार रुपये सम्राट को प्रदान किये । सम्राट ने घोड़े हाथी स्वीकार कर लिये, परन्तु नकद रुपया वापस कर दिया । राजा जयसिंह दक्षिण की लड़ाइयों में निरन्तर मुगलों की सहायता करता रहा था । अत: सम्राट ने उससे प्रसन्न होकर उसे एक खिलअत, एक हाथी और बीस घोड़ियां देकर सम्मानित किया । अगले ही वर्ष 1639 ई0 में पुन: उसे एक खिलअत और सोने की जीन सहित घोड़ा सम्राट ने प्रदान किया ।[2] जयसिंह ने शाहजहाँ की बड़ी निष्ठापूर्वक सेवा की । अनेक बड़े बड़े अभियानों पर उसे भेजा गया । कन्धार अभियान पर जयसिंह को भेजा ।[3] 29 अप्रैल 1639 ई0 को राजा जयसिंह शाहजहाँ से मिला । उस समय राजा जयसिंह नौशहर में शहजादा दारा शिकोह के साथ था । रावलपिण्डी में यह मुलाकात तब हुई जब शाहजहाँ काबुल जाते समय वहाँ आया । सम्राट ने उसे एक घोड़ा और मिर्जा राजा की उपाधि दी ।[4] 21 मार्च,

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, पृ0 294,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ [शोध-प्रबन्ध], पृ0244,
   अतहर अली, द आप्रेटस ऑफ इम्पायर, पृ0 133, 143.

2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 164-165.

3. श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1289.

4. श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1289,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराए-हुनूद, पृ0 165.

1641 ई0 को उसे शाहजादा मुराद बख्श के साथ काबुल भेजा गया और खिलअत मीनाकार जमधर, फूलकटारा और सुनहरी जीन समेत घोड़ा इनाम में दिया गया । इस समय उसका मनसब 5000/5000 दो अस्पा सेअस्पा था ।[1] अप्रैल 1642 ई0 में शाहजादा दारा शिकोह के कन्धार अभियान पर जाने के समय राजा जयसिंह को भी खिलअत, जड़ाऊ जमधर, फूलकटारा घोड़ा हाथी इनाम में देकर साथ भेजा गया । 14 नवम्बर को सम्राट ने लाहौर से आगरा आते हुये उसे एक विशेष खिलअत दिया ।[2] सन् 1644 ई0 में सम्राट ने उसे खिलअत, जमधर, मुरस्सा, फूल कटारा और हाथी उपहार में प्रदान किये व उसे दारा के साथ करनाल के युद्ध में भेजा । 1645 ई0 में शाहजहाँ के अजमेर आगमन पर राजा जयसिंह उससे परगना चाट्सू में मिला । राजा जयसिंह ने सम्राट को हाथी, घोड़े पेशकश में दिये ।[3] 1646 ई0 में राजा जयसिंह दरबार में उपस्थित हुआ । इस अवसर पर भी उसने सम्राट को एक हाथी पेशकश में दिया । इसी वर्ष उसे दक्षिण के प्रशासन का कार्यभार सौंपा गया । सन् 1647 ई0 में वह दक्षिण अभियान से वापस लौटा । सम्राट ने उसे, खिलअत जमधर, घोड़ा व हाथी प्रदान किया और उसे दो लाख रूपया नक्द प्रदान कर शाहजादा औरंगजेब के साथ बल्ख अभियान पर भेजा ।[4] सन् 1650 ई0 में उसके मनसब में 1000/1000 दो अस्पा की वृद्धि करके उसका मनसब 6000/6000 दो अस्पा सेह अस्पा कर दिया गया।

---

1. श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1290,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराए-हुनूद, पृ0 165,
   अतहर अली, द आप्रेटस ऑफ इम्पायर, पृ0 143,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, पृ0 244-245.

2. श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1290,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराए-हुनूद, पृ0 165.
3. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराए-हुनूद, पृ0 167.
4. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराए-हुनूद, पृ0 167.

अब उसे शाहजादा औरंगजेब के साथ कन्धार अभियान पर भेजा गया और उसे जागीर कुलियाना जिसकी मालगुजारी 70 लाख दाम थी॥40दाम=1रूपया॥ जागीर के रूप में प्रदान किया ।[1]

सन् 1653 ई0 में उसे पुन: शाहजादा औरंगजेब के साथ कन्धार अभियान पर भेजा गया । सन् 1655 ई0 में वहाँ से वापस लौटने पर वह अपने वतन आमेर वापस लौट गया । सितम्बर 1657 ई0 में शाहजहाँ के बीमार हो जाने पर उसके पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया । 1 फरवरी 1658 ई0 को राजा जयसिंह का मनसब बढ़ाकर 6000/6000 दो अस्पा सेह अस्पा कर दिया गया ।[2] राजा जयसिंह को सुलेमान शिकोह के साथ शुजा का मुकाबला करने के लिये भेजा गया । बनारस के पास बहादुरपुर की लड़ाई 24 फरवरी ॥1658॥ ई0 में राजा जयसिंह ने बड़ी वीरता दिखलायी व शुजा को पराजित कर दिया । शुजा बंगाल की ओर भाग जाने के लिये विवश हो गया ।[3]

औरंगजेब ने भी राज्यारोहण के बाद राजा जयसिंह को 7000/7000 का मनसब प्रदान किया व उसे दक्षिण में शिवाजी के विरुद्ध भेजा । शिवाजी को पुरन्दर की सन्धि ॥12 जुलाई 1666 ई0॥ के लिये विवश करने के बाद उसे बीजापुर के

---

1. रघुबीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 104,
   सी0बी0 त्रिपाठी, मिर्जा राजा जयसिंह और उसका समय, पृ0 104,
   मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 306,
   टाड, एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भाग 2, पृ0 286, श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, पृ0 1290.
2. मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 290, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 167, पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, पृ0 120, 302.
3. ए0एल0 श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ0 328.

विरुद्ध भेजा गया वहीं उसकी मृत्यु हो गयी ।[1] राजा जयसिंह के दो पुत्र थे - रामसिंह और कीरत सिंह ।

राजा जयसिंह ने मुगलों की बड़ी निष्ठापूर्वक सेवा की थी । उमराये हुनूद के अनुसार राजा जयसिंह की याद में औरंगाबाद में गुर्दल्या जयसिंहपुरा नामक कस्बे बसाये गये । आगरा में एक मुहल्ला बसाया गया जिसे जयसिंह पुरा के नाम से जाना जाता था । 110 बीघा जमीन में यहाँ इमारतें और बाग स्थित थे । राजा जयसिंह संस्कृत के विद्वान् थे । तुर्की फारसी तथा अरबी भाषा का भी उ— अच्छा ज्ञान था ।[2]

साम्भर

राजा लोकरन कछवाहों की शेखावत शाखा का राजा था । इन राजाओं ने अकबर के समय में भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी उन राजाओं का साम्भर व अमृतसर पर अधिकार था । उसका पुत्र मनोहर था । मनोहर ने अकबर के शासन के 22वें वर्ष सम्राट को सूचित किया कि आम्बेर के समीप एक पुराना शहर है जो इस समय पत्थरों से भरा हुआ है । अकबर ने उसे उस शहर के पुनर्निर्माण का आदेश दिया । इस नये शहर का नाम मोल मनोहर नगर रखा गया । अकबर के शासन के 45वें वर्ष उसे राय दुर्गालाल के साथ मुजफ्फर हुसैन मिर्जा जिसे ख्वाजा वैसी ने पकड़ रखा था का पीछा करने के लिये नियुक्त किया गया ।[3]

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 169,
   कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1290.

2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 175-176.

3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 554.

जहाँगीर के शासनकाल के प्रथम वर्ष में उसे शाहजादा परवेज के साथ राणा अमरसिंह के विरुद्ध छेड़े गये अभियान में भेजा गया । जहाँगीर के शासन के दूसरे वर्ष उसे 1500/600 सवार का मनसबदार बना दिया गया ।[1] उसने दक्षिण में दीर्घकाल तक मुगलों की सहायता की और जहाँगीर के शासन के 11वें वर्ष दक्षिण में ही 1616 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[2]

पृथीचन्द्र

उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र पृथी चन्द्र साम्भर की गद्दी पर बैठा । उसे राय की उपाधि मिली और 500/300 का मनसब मिला ।[3] तुजुक-ए जहाँगीरी के अनुसार जब वह गद्दी पर बैठा तो उसका मनसब 500/400 का था और जब उसकी मृत्यु हुयी, उस समय उसका मनसब 700/450 था ।[4] वह कांगड़ा अभियान पर गया । वहाँ 1620 ई0 में शत्रुओं ने उसका वध कर दिया ।[5]

नरवर

नरवर आम्बेर से स्वतंत्र एक जमींदारी थी ।[6] नरवर के राजाओं को राजा की उपाधि प्राप्त थी । राजा आसकरण का पुत्र राजा राजसिंह था । उसके

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 17, 64.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी [अनु0] भाग 1, पृ0 554.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 1, पृ0 554,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 1, पृ0 17.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 1, पृ0 321, 328,
   भाग 2, पृ0 26.
5. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 2, पृ0 25 26, 155.
6. कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 170.

पिता की मृत्यु के पश्चात उसे राजा की उपाधि प्राप्त हुई थी ।[1] यहाँ के राजाओं ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी । राजा राजसिंह ने दक्षिण में मुगलों का साथ दिया । 1599 ई0 में अकबर ने उसे दक्षिण से बुलवाया और उसे ग्वालियर के किले का जहाँ महत्त्वपूर्ण कैदी रखे जाते थे किलेदार बनाया ।[2] यह बहुत ही विश्वास का पद था । जब अकबर ने खानदेश को विजित करने का विचार किया तब उसने वहाँ के राजा को पकड़ने के लिये राजसिंह को ग्वालियर से आसीरगढ़ बुलवाया । असीरगढ़ के दुर्ग की विजय के उपरान्त खानदेश के फारूकी शासक बहादुर खाँ को बन्दी बना लिया गया । तदुपरान्त अकबर ने राजसिंह को आदेश दिया कि वह बन्दी बहादुर खाँ को अपने साथ ग्वालियर ले जाकर वहाँ के दुर्ग के बन्दीगृह में डाल दे ।[3] 1601 ई0 में राजसिंह ने अकबर से आगरा में भेंट की तत्पश्चात् वह मालवा लौट गया ।

वीरसिंह देव बुन्देला ने जिस समय अबुल फजल की हत्या करवायी । उस समय राजसिंह बुन्देलखण्ड में ही था । वह अबुल फजल के हत्यारे वीर सिंह देव बुन्देला का दमन करने के लिये गया परन्तु वह उसे पकड़ नहीं सका । सन् 1604 ई0 में अकबर ने राजसिंह का मनसब बढ़ाकर 3500/3000 कर दिया, साथ ही अकबर ने उसे एक घोड़ा, शाल, नगाड़ा उपहार में प्रदान किया और एक बार फिर उसे मुगल अधिकारियों के साथ वीर सिंह देव बुन्देला के विरुद्ध भेजा ।[4] 1605 ई0 में

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 204.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 751, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 204.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 779, 785.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 827.

वीर सिंह देव बुन्देला घायल हो गया । उसके कुछ अन्य साथी मारे गये परन्तु वह बच गया ।

जहाँगीर के सिंहासनारोहण के पश्चात वीर सिंह देव बुन्देला का भाग्योदय हो गया जबकि नरवर के जमींदार राजसिंह का भाग्य मन्द रहा किन्तु वह पूर्णत: मुगलों की सेवा में रहा । सम्राट ने उसे दक्षिण अभियान पर भेजा, जहाँ उसने लगभग दस वर्ष तक मुगलों की सेवा की और वहीं 1615 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[1]

<u>रामदास नरवरी</u>

राजसिंह की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र रामदास नरवर का राजा बना ।[2] जहाँगीर ने उसे 1000/400 का मनसब दिया किन्तु उस समय उसे टीका नहीं प्रदान किया । दो वर्ष पश्चात् सम्राट ने उसे टीका प्रदान किया । सन् 1623 ई0 में उसके मनसब में वृद्धि करके सम्राट ने उसका मनसब 2000/1000 कर दिया ।[3] खुर्रम के विद्रोह के समय उसने जहाँगीर का साथ दिया था ।[4]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 300-301.
   कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 171.
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 205.

2. कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 171.

3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 225, 260, 300, 301, 418.
   अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 509.
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 205.

4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 225-226.

शाहजहाँ के शासनकाल के ~~आठवें वर्ष राजा रामदास नरवरी का मनसब 1500/500 था।~~ दसवें वर्ष में उसका मनसब 2000/1000 हो गया ।[1] 1641 ई0 में राजा रामदास नरवरी की मृत्यु हो गयी ।

<u>अमरसिंह नरवरी</u>

रामदास की मृत्यु के पश्चात उसका पौत्र राजा अमर सिंह नरवर का राजा बना । सम्राट ने उसे राजा की उपाधि प्रदान की । उसे 1000/600 का मनसब प्रदान किया और नरवर का प्रदेश उसे जागीर के रूप में प्रदान किया ।[2] सन् 1641 ई0 में अमरसिंह शाहजहाँ के दरबार में उपस्थित हुआ तो सम्राट ने उसे नक्कारा भेंट में दिया ।[3] शाहजहाँ ने अपने शासनकाल के 19वें वर्ष उसे शाहजादा मुराद बख्श के साथ तथा 25वें वर्ष शाहजादा औरंगजेब के साथ बल्ख बदख्शां अभियान पर भेजा । उसके पश्चात रुस्तम खाँ के साथ उसे किलेबन्दी के कार्य पर नियुक्त किया । शाहजहाँ ने अपने शासनकाल के 30वें वर्ष उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर उसके मनसब में वृद्धि की । अब उसका मनसब 1500/1000 हो गया ।[4]

---

1. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 712, 1008.

   अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 128 पर मनसब 2000/1500 लिखा है । जबकि लाहौरी ने दसवें वर्ष में मनसब 2000/1000 दिया है । अतहर अली ने भी पृ0 146 पर यही मनसब दिया है ।

2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 57,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 2, पृ0 259,
   लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 174,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 586.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 165, 309.

4. वारिस, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 204,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 832,
   अतहर अली, द आप्रेटस ऑफ इम्पायर, पृ0 360,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, पृ0 315.

लाम्बी या शेखावटी

राय साल शेखावत कछवाहा था । अपने पिता सुजा की मृत्यु के पश्चात रायसाल को लाम्बी की छोटी जमींदारी प्राप्त हुयी, जबकि पैतृक जागीर साम्भर व अमृतसर उसके बड़े भाई लोकरन को प्राप्त हुयी । अकबर ने रायसाल को दरबारी की उपाधि दी और उसे रेवासा व कौसली का परगना जो चन्देला राजपूतों के अधिकार में था, जागीर में प्रदान किया । रायसाल ने भटनेर पर अधिकार कर लिया । कुछ समय बाद खण्डेला व उदयपुर जिस पर निरबाण राजपूतों का अधिकार था, उसे प्रदान किये गये तत्पश्चात् शेखावाटी राजपूतों का प्रमुख केन्द्र खण्डेला हो गया ।[1] रायसाल के उत्तराधिकारी रायसालोत कहलाते थे और वह शेखावाटी के दक्षिण में रहते थे ।[2] रायसाल को 1565 ई0 में टोडरमल व लश्कर खाँ के साथ उजबेकों के विरुद्ध भेजा गया । उसने खैराबाद की लड़ाई में भी भाग लिया था ।[3] उसने गुजरात के दोनों अभियानों में 1572-73 ई0 में अकबर के सम्मुख अपनी वीरता प्रदर्शित की थी ।[4] 1580-83 ई0 के संकट के समय रायसाल ने काबुल व पंजाब में मुगलों की सेवा की ।[5] दरबार में उसकी स्थिति एक विश्वस्त सहायक की थी, क्योंकि शाहबाज

---

1. कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 168, टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 144.
2. कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 663, 665. टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 144.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 261, 262.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 12, 49, 50, 56.
5. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 353, 513.

खाँ जैसा महत्त्वपूर्ण अमीर उसे कैदी के रूप में दो बार 1582 एवं 1590 ई0 में सौंपा गया था ।[1] अबुल फजल के अनुसार वह 1250/1250 का मनसबदार था । अकबर के शासन के उत्तरार्द्ध में तीव्र गति से उसकी पदोन्नति हुयी । निजामुद्दीन अहमद के अनुसार उसका मनसब 2000 था ।[2] 1602 ई0 में उसका मनसब बढ़ाकर 2500/1250 कर दिया गया ।[3] जहाँगीर के उत्तराधिकार के सन्दर्भ में रायसाल ने अपने जान की बाजी लगा दी थी इसलिये जहाँगीर ने पुरस्कारस्वरूप उसका मनसब बढ़ाकर 3000 जात कर दिया । जहाँगीर के समय में भी उसने मुगलों को सक्रिय सैनिक सहायता प्रदान की थी । उसकी मृत्यु कब हुयी यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं है । ऐसा प्रतीत होता है कि 1615 ई0 में दक्षिण में उसकी मृत्यु हुई क्योंकि उसी वर्ष उसके पुत्र गिरधर को 800/800 का मनसब प्रदान किया गया था ।[4]

रायसाल ने अपने विस्तृत जमींदारी को अपने सात पुत्रों में विभाजित किया। यह क्षेत्र कालान्तर में अपने पैतृक आदि पुरुष के नाम-भोजानी, सिद्धानी, लाडरवानी, ताजरवानी, परशुरामपोता, हररामपोता, के नाम से विख्यात हुये । पारिवारिक सूत्रों से पता चलता है कि रायसाल का ज्येष्ठ पुत्र गिरधर राजा हुआ और उसे अपने पिता के अधिकारी देशों का प्रधान अंश खण्डेला एवं रेवासा प्राप्त हुआ । उसकी वीरता एवं साहस से प्रभावित होकर मुगल सम्राट ने उसे 'खण्डेला के राजा' की उपाधि दी ।[5]

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 375, 641.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 809.
2. निजामुद्दीन अहमद, तबकात-ए अकबरी, भाग 2, पृ0 671.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 225, 260.
5. कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 139, टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 701.

राजा गिरधर

राजा गिरधर ने अकबर एवं जहाँगीर के शासनकाल में दक्षिण में मुगलों की सेवा की। 1615 ई0 में उसे 800/800 का मनसब मिला। तीन वर्ष पश्चात् उसके मनसब में 200 जात की वृद्धि हुयी। अगले तीन वर्ष पश्चात् पुन: उसके मनसब में 200/100 की वृद्धि हुयी। इस प्रकार 1621 ई0 में उसका मनसब 1200/900 हो गया।[1] 1623 ई0 में गिरधर दक्षिण से वापस आकर सम्राट से मिला। सम्राट उसकी दक्षिण की सेवाओं से बहुत प्रसन्न था अत: उसने उसका मनसब 2000/1500 कर दिया।[2] साथ ही उसे एक खिलअत, राजा की उपाधि दी और उसे दक्षिण भेजा। उसी वर्ष दक्षिण के विद्रोहियों ने उसकी हत्या कर दी।[3]

द्वारकादास

राजा गिरधर की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र द्वारकादास गद्दी पर बैठा। वह भी मुगल सम्राट का कृपापात्र था। शाहजहाँ के शासनकाल के प्रथम वर्ष में उसका मनसब 1000/800 निश्चित हुआ। 1631 ई0 में उसने निजामुल्मुल्क दक्किनी के साथ युद्ध में सम्मिलित होकर बहुत वीरता दिखलायी थी। अत: सम्राट उससे प्रसन्न हो गया और उसने उसे 1500/1000 का मनसब प्रदान किया।[4] 1632 ई0 में उसे खाने

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 298, भाग 2, पृ0 44, 45, 209, अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ0 807.
2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 252.
3. कुंअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 140.
4. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 335,
   अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 109,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 198.

जहाँ लोदी का दमन करने के लिये भेजा गया। वहाँ वह बड़ी वीरतापूर्वक लड़ते हुये मारा गया ।[1]

वीरसिंहदेव

द्वारकादास के पश्चात उसका पुत्र वीरसिंह देव अपने पिता की गद्दी पर बैठा । खण्डेला के इतिहास लेखक लिखते हैं कि वीरसिंह आम्बेर के राजा की अधीनता में न रहकर स्वतंत्र भाव से कार्य करता था, परन्तु कर्नल टाड लिखते हैं कि मिर्जा राजा जयसिंह समस्त राजपूत राजाओं में सम्राट की सभा में सबसे अधिक सम्मानित और प्रसिद्ध व्यक्ति था । सेनानी के रूप में वह बहुत अधिक सामर्थ्यवान था । वीरसिंह देव उसकी अधीनता में आज्ञा पालन करता था । उसने दक्षिण में मुगलों की सेवा की और वहीं उसकी मृत्यु हो गयी । वीरसिंह देव के बाद उसका पुत्र अनूप सिंह गद्दी पर बैठा ।[2]

मारवाड़

मुगलकाल में मारवाड़ सूबा अजमेर के अन्तर्गत था । यह 100 कोस लम्बा और 60 कोस चौड़ा था । सूबा अजमेर में सिरोही जोधपुर नागौर और बीकानेर आदि सम्मिलित थे ।[3] अकबर के समय मारवाड़ का राज्य मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ हो गया था ।

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 198,
   टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 704,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, पृ0 258.

2. टाड, राजस्थान का इतिहास, पृ0 704

3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 3, पृ0 179.

<u>सूरसिंह</u>

मोटा राजा उदयसिंह की लाहौर में 1595 ई0 में मृत्यु हुई ।[1] राजा उदयसिंह की मृत्यु के उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र सूरसिंह[2] 1595 ई0 में मारवाड़ के सिंहासन पर बैठा । राजा उदयसिंह की मृत्यु के समय सूरसिंह सम्राट की सेना के साथ लाहौर में भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों की रक्षा में कार्यरत था ।[3] वह बड़ा ही पराक्रमी और रणकुशल था । पिता के समय में ही उसने इतनी रणकुशलता व वीरता दिखलायी थी कि सम्राट अकबर ने उस पर प्रसन्न होकर उसे एक उच्च पद प्रदान किया तथा सवाई राजा की उपाधि से सम्मानित किया ।[4] प्रारम्भ में उसे 2000/2000 का मनसब मिला था ।[5] राजा सूरसिंह को गद्दी पर बैठते समय जोधपुर सीवाणा और सोजत जागीर में मिले थे ।

---

1. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 36,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 51.

2. ख्यातों के अनुसार सूरसिंह राजा उदयसिंह के छठें पुत्र थे ।

3. कर्नल जेम्स, टाड राजस्थान का इतिहास, भाग 2, हिन्दी (अनु0), पृ0 64,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 434.

4. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 36,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 434,
   जेम्स टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 64.

5. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 36,

   विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 181.

सूरसिंह बड़ा ही पराक्रमी व बलशाली था । सिरोही का राजा सुरताण मुगलों की अधीनता नहीं स्वीकार करता था । वह बहुत ही स्वाभिमानी था । राजा सूरसिंह से भी उसका विवाद हुआ था । सिरोही के राजा सुरताण ने मारवाड़ नरेश चन्द्रसेन के पुत्र राव रायसिंह को रात्रि में अचानक आक्रमण करके मार डाला था ।[1] अतः मुगल सम्राट अकबर के आदेश पर राजा सूरसिंह ने राव सुरताण के विरुद्ध युद्ध किया जिसमें सुरताण पराजित हुआ । सूरसिंह ने सिरोही के नगर को लूटा । कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा है कि उसने सिरोही के नगर को इस तरह लूटा कि राव सुरताण के पास चारपाई व बिछौना तक न रहा । उनकी स्त्रियों को पृथ्वी पर सोना पड़ता था ।[2] इस तरह राजा सूरसिंह ने राव सुरताण का गर्व चूर कर दिया । राव सुरताण ने अब मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी सेना सहित मुगल सम्राट की सेवा में उपस्थित हुआ ।

सम्राट की आज्ञानुसार राजा सूरसिंह गुजरात के विरुद्ध अभियान पर गए । राव सुरताण भी इस अभियान में सेना सहित उसकी सहायता के लिये आया । धुंधुका नामक स्थान पर शाही एवं गुजराती सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ । इस युद्ध में राजा सूरसिंह की विजय हुई यद्यपि उसके बहुत से राठौर सैनिक मारे गये । मुजफ्फर शाह पराजित हुआ । कर्नल टॉड के अनुसार "मुजफ्फर के सत्रह सहस्र नगर विजयी राठौरों के अधिकार में आ गये । उन नगरों का धनरत्न लूटकर अधिकांश सम्पदा सूरसिंह ने आगरा के सम्राट के पास भेज दी और थोड़ा सा ही धन अपने पास रखा ।"[3] इस विजय से अकबर उस पर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसकी

---

1. विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 182.
2. कर्नल जेम्स टॉड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, अनुवादक बलदेव प्रसाद मिश्र, पृ0 65.
3. कर्नल जेम्स टॉड का यह विवरण कि उसने 17 सहस्र नगर पर अधिकार कर लिया विश्वसनीय नहीं प्रतीत होता और अन्य इतिहासकारों के विवरण से भी इसकी पुष्टि नहीं होती ।

पदोन्नति कर दी तथा उसे एक तलवार अत्यधिक इनाम और नयी भू-सम्पत्ति पुरस्कार में दी ।[1] गुजरात विजय से सूरसिंह को जो धन-सम्पत्ति प्राप्त हुयी उससे उसने जोधपुर नगर और दुर्गों के कुछ भागों की वृद्धि की और समरकोट को सुसज्जित किया । शेष धन मारवाड़ के 6 भाट कवियों में बाँट दिया प्रत्येक भाट कवि को दो लाख रूपया मिला ।

सम्राट अकबर ने राजा सूरसिंह को नर्मदा के उस पार के अमर बलेचा नामक राजपूत राजा के विरुद्ध भेजा । उसने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की थी । राजा सूरसिंह ने एक बड़ी सेना लेकर चौहान वीर अमर बलेचा पर आक्रमण किया । इस सेना में 13000 घुड़सवार, 10 बड़ी-बड़ी तोपें व 20 मदमस्त हाथी थे । अमर बलेचा पराजित हुआ व मारा गया । अकबर ने इस विजय से प्रसन्न होकर सूरसिंह को नौबत भेजी और भार तथा उसमें मिला हुआ समस्त राज्य उसको अर्पित कर दिया ।[2]

राजा सूरसिंह शहजादा मुराद व शहजादा दानियाल के साथ दक्षिण के अभियान पर नियुक्त हुआ । वह सन् 1600 ई0 में दौलत खाँ लोदी के साथ राजू दक्किनी को दण्ड देने के लिये शहजादे की सेना में नियुक्त हुआ ।[3] वह सन् 1602 ई0 में अब्दुर्रहीम खानखाना के साथ खुदाबन्द खाँ दक्किनी (जिसने पालम और

---

1. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जोधपुर, पृ0 36.

   सम्राट अकबर ने राजा सूरसिंह को उनकी उपरोक्त सेवाओं के बदले पहले पाँच जागीरें और बाद में एक जागीर और पुरस्कार में दी साथ ही मेड़ता और जैतारण के परगने भी उसे वतन जागीर के रूप में दिये गये ।

2. कर्नल जेम्स टॉड, राजस्थान का इतिहास, हिन्दी (अनु0), भाग 2, पृ0 66.

3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 182-183,
   अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 801.

पाथरी में विद्रोह मचाया था। का दमन करने के लिये नियुक्त हुआ ।[1] इस प्रदेश में उसने अच्छा कार्य किया था इसलिये 1603 ई0 में शहजादा दानियाल ने खान-खाना की संस्तुति पर उसे डंका इनाम में दिया ।[2]

<u>जहाँगीर के अन्तर्गत मारवाड़ की अधीनस्थ राजशाही</u>

सन् 1605 ई0 में जहाँगीर के मुगल सम्राट बनने के पश्चात भी मुगल मारवाड़ सम्बन्ध पूर्ववत मैत्रीपूर्ण बने रहे । जहाँगीर के सिंहासन पर बैठते ही गुजरात में पुन: उपद्रव उठ खड़ा हुआ । उससे अन्य शाही अमीरों के साथ सवाई राजा सूरसिंह को भी उधर जाना पड़ा । इस विद्रोह के दमन करने में सूरसिंह ने अत्यधिक साहस का परिचय दिया ।[3]

राजा सूरसिंह 29 मार्च, 1608 ई0 को दरबार में उपस्थित हुआ ।[4] उसी समय सम्राट ने उसके मनसब में वृद्धि करके उसे 4000/2000 का मनसबदार बना दिया।[5]

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 806.
2. शाहनवाज खां, मासिरुउल उमरा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 2, पृ0 182-183.
3. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 185.
4. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 817.
5. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 817,
   विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 187,
   गोपीनाथ शर्मा ने राजस्थान के इतिहास ।पृष्ठ 435। में लिखा है कि सूरसिंह का मनसब बढ़ाकर 3000 जात व 2000 सवार कर दिया गया था ।
   निर्मल चन्द्र राय ने अपनी पुस्तक महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय ।पृष्ठ 16। पर सूरसिंह का मनसब 3000/2000 दिया है ।

जहाँगीर ने उसे अन्य मनसबदारों के साथ दक्षिण में खानखाना की मदद के लिये भेजा।[1] उसके कार्यों से प्रसन्न होकर सम्राट ने अपने चौथे राज्यवर्ष में उसका मनसब बढ़ाकर 4000/4000 कर दिया । 11 मार्च सन् 1613 ई० में जहाँगीर अजमेर गया । कुछ दिन पश्चात् उसने शहजादा खुर्रम की सहायता के लिये सूरसिंह को मेवाड़ की ओर भेजा ।[2] सूरसिंह की सलाह से शहजादे ने मेवाड़ के चारों तरफ अपनी सेना के थाने डलवा दिये । इनमें से सादड़ी का थाना राजकुमार गजसिंह को सौंपा गया । महाराणा अमरसिंह ने विजय असंभव देखकर सन्धि कर ली । सन्धि करवाने में भी सूरसिंह ने खुर्रम की बहुत सहायता की ।

सन् 1615 ई० में सूरसिंह सम्राट के पास अजमेर आया और उसने 45000 रूपये 100 मुहरें और हाथी सम्राट को भेंट मे दिये ।[3] इनमें से एक प्रसिद्ध हाथी का नाम रणरावत था । कुछ दिन बाद उसने सिनगार नामक एक हाथी और सम्राट को भेंट में दिया ।[4] इस पर सम्राट ने उसे एक अच्छा हाथी दिया और शीघ्र ही उसका

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ० 74.
2. लाहौरी, बादशाहनामा, अंग्रेजी [अनु०] भाग 1, पृ० 166,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, अंग्रेजी [अनु०], भाग 2, पृ० 183,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह, जीवन व समय, पृ० 17.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, पृ० 139, 140, 143,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्तसिंह, जीवन व समय, पृ० 17.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1 में सम्राट लिखता है "यह हाँथी भी अच्छा होने से खास हाथियों में शामिल किया गया, परन्तु पहला हाथी रणरावत अपूर्व वस्तु है, और दुनिया की आश्चर्योत्पादक वस्तुओं में उसे गिना जा सकता है । उसकी कीमत 20000 रूपये थी, मैंने भी उसके एवज में 10000 रूपये की कीमत का एक खास हाथी सूरजसिंह को दिया ।" पृ० 143.

मनसब बढ़ाकर 5000/3000 कर दिया ।[1] इस मनसब में वृद्धि के साथ उसे फलोधी का परगना जागीर में मिला । फलोधी का यह परगना पहले बीकानेर के राय रायसिंह और उसके पुत्र सूरसिंह के अधिकार में रह चुका था ।

6 जून 1615 ई0 को राजा सूरसिंह के भाई राजा कृष्णसिंह ने गोविन्द दास भाटी[2] को मार डाला क्योंकि उसके पहले गोविन्द दास ने भगवानदास उदयसिंहोत के बेटे गोपालदास को मारा था । राजा कृष्णसिंह भी इसी झगड़े में मारा गया । कुछ दिन बाद सम्राट ने सूरसिंह को एक जोड़ी हाथी और बहुत कीमती श्वासा देकर दक्षिण भेजने की इच्छा प्रकट की । सूरसिंह दो महीने के लिये जोधपुर आया । यहाँ सूरसागर के बगीचे में उसने सोने और चाँदी से अपना तुलादान करवाया ।[3] इसी बीच दो बार वह अपने पुत्रसहित मुगल दरबार में उपस्थित हुआ । सम्राट ने उसके मनसब में 300 की वृद्धि करके उसका मनसब 5000/3300 का कर दिया ।[4] साथ ही जहाँगीर ने उसे एक खिलअत और श्वासा घोड़ा भी प्रदान किया ।[5] उसके पश्चात् वह खाने जहाँ लोदी आदि शाही सेनानायकों के साथ दक्षिण जाकर वहाँ के उपद्रवों को दबाने में और शत्रुओं को परास्त करके उनके प्रदेशों

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 142,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराणा जसवन्तसिंह, जीवन व समय, पृ0 17.

2. गोविन्ददास भाटी, सूरजसिंह का प्रधान था ।

3. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 435,
   विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 193.

4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 149,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराणा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ0 17.

5. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 148.

को विजय करने में लग गया । तारीखे पालनपुर में लिखा है कि 1617 ई0 में जहाँगीर ने जालौर के शासक पहाड़ खाँ को मरवाकर उक्त प्रदेश को शहजादा खुर्रम की जागीर में मिला दिया, परन्तु वहाँ का प्रबन्ध ठीक न हो सकने के कारण बाद में वह प्रान्त राजा सूरसिंह को दे दिया ।[1]

6 सितम्बर 1619 ई0 को दक्षिण में मेहकर के थाने पर उसकी मृत्यु हो गयी ।[2]

राजा सूरसिंह बहुत ही साहसी, पराक्रमी व प्रशासन कार्य में दक्ष था । राव मालदेव के पश्चात राजा सूरसिंह का ही नाम मारवाड़ के महान नरेशों में लिया जाता है । दोनों में अन्तर यह है कि मालदेव ने स्वतन्त्र रूप से अपनी रियासत का प्रबन्ध व विस्तार किया जबकि राजा सूरसिंह ने मुगलों की अधीनता में रहकर कार्य किया और लगभग अपने अधिकांश शासनकाल में सम्राट के आदेशों का पालन करते हुए अपनी रियासत से दूर रहा ।

राजा सूरसिंह ने मुगलों के लिये जो असीम आत्मत्याग किया सम्राट उसे विस्मृत नहीं कर सके । सम्राट ने उसे समय समय पर बहुमूल्य उपहार दिये और 6 बड़ी-बड़ी जागीरें दीं । उसे सवाई राजा की उपाधि से भी विभूषित किया ।[3]

---

1. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 194.
2. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 435,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 125, 261.
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय, पृ0 17,
   कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 304-318.
3. कर्नल जेम्स टॉड, राजस्थान का इतिहास, (अनु0), भाग 2, पृ0 70,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 36.

उसके शासन में मारवाड़ के अतिरिक्त गुजरात के 5 परगने, मालवा का 1 परगना तथा दक्षिण का 1 परगना था । ये परगने उसे सम्राट से उपहारस्वरूप मिले थे । उसका अधिक समय दक्षिण और गुजरात के युद्धों में व्यतीत हुआ । वहाँ उसने अविस्मरणीय वीरता प्रदर्शित की ।[1]

राजा गज सिंह

महाराजा सूरसिंह के 6 पुत्र और 7 पुत्रियाँ थीं । राजा गजसिंह सूरसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे । वह सूरसिंह की कछवाही रानी सौभाग्यदेवी का पुत्र था । उसका जन्म लाहौर में 11 नवम्बर 1595 ई० को हुआ था ।[2] जब वह राजकुमार था तभी से सम्राट उसकी वीरता से प्रभावित था । उसने जालौर के रणक्षेत्र में अद्भुत वीरता दिखलायी और जालौर को गुजरात के अधिकार से छीनकर मुगल सम्राट के अधिकार में कर दिया । जालौर जीतने के कुछ ही दिन पश्चात गजसिंह ने मेवाड़ के राणा अमरसिंह के विरुद्ध मुगलों द्वारा छेड़े गये अभियान में भी भाग लिया था ।[3] 8 अक्टूबर 1619 ई० को बुरहानपुर में उसका राज्याभिषेक हुआ ।

राजा गजसिंह जहाँगीर के शासन के 10वें वर्ष अपने पिता के साथ मुगल सम्राट की सेवा में आया और सम्राट के शासन के 14वें वर्ष जब उसके पिता की मृत्यु

---

1. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ० 197.
2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ० 37,
   टॉड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ० 71,
   विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ० 128,
   कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ० 818.

3. टॉड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ० 67.

हो गयी तो राजा गजसिंह को 3000/2000 का मनसब मिला तथा झण्डा और राजा की उपाधि से उसे सम्मानित किया गया । जोधपुर, जैतारण, सोजत, सिवाना, तेलवाड़ा, सातलमेर, पोकरण के परगने उसे जागीर में दिये गये ।[1] पिता की मृत्यु के समय वह बुरहानपुर में था अत: दाराब खाँ सम्राट का प्रतिनिधि होकर उसके डेरे में पहुँचा और उसने उसके मस्तक पर मुकुट और ललाट में राजतिलक और कमर में तलवार सजाई । पितृराज्य नौकोट मारवाड़ के उसके राजगद्दी पर बैठने के दिन से गुजरात के सप्त विभाग ढूँढाग के अन्तर्गत मिलाप और अजमेर के निकट का मसूदानगर उसे जागीर में दिया गया । इसके अतिरिक्त सम्राट ने उसे दक्षिण की सूबेदारी भी दी। और साथ में इसी समय से यह नियम भी बना दिया कि अब से उसके सरदारों के घोड़े न दागे जायें । इस नियम से मुगल सम्राट ने राठौर सामन्तों की एक घोर अपमान से रक्षा की । दक्षिण की सूबेदारी में गजसिंह ने खिड़कीगढ़, गोलकुण्डा, केलिया, परनाला, कंचनगढ़, आमेर और सतारा को विजित करके मुगल साम्राज्य में मिला दिया । दक्षिण में गजसिंह ने अहमदनगर के निजामशाह के प्रधानमंत्री मलिक अम्बर (चंपू) को करारी मात दी । इस युद्ध में उसने मलिक अम्बर का लाल झंडा छीन लिया । इस घटना की यादगार के उपलक्ष में उसी दिन से जोधपुर के राजकीय

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, अंग्रेजी अनु0, भाग 2, पृ0 223,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 37,
   विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 199,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 100, 280,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 435,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ0 18,
   विश्वेश्वर स्वरूप भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर, पृ0 70.

झण्डेमें लाल रंग की पट्टी लगायी जाने लगी ।[1] उसकी असीम वीरता व रणदक्षता से प्रसन्न होकर सम्राट ने उसको दलथंभन की उपाधि दी । 11 मार्च 1622 ई0 को सम्राट ने उसकी वीरता से प्रसन्न होकर उसे एक नक्कारा उपहार में दिया और उसके मनसब में 1000/1000 की वृद्धि की अब उसका मनसब 4000/3000 का हो गया ।[2] इन सब युद्धों में गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह ने भी अद्भुत वीरता व साहस का परिचय दिया ।

19 मई 1623 ई0 को शहजादा खुर्रम अपने पिता व भाई के विरुद्ध विद्रोह के समय राजा गजसिंह शहजादा परवेज और महावत खाँ के साथ सम्राट के पक्ष में खुर्रम का सामना करने गया । 1624 ई0 में दोनों पक्षों में युद्ध हुआ । इस युद्ध में खुर्रम भाग गया । शाही सेना की विजय हुई । इस युद्ध में गजसिंह की वीरता से प्रसन्न होकर सम्राट ने उसका मनसब बढ़ाकर 5000/4000 कर दिया ।[3] इसके बाद

---

1. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 201.
2. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 819,
   विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 200,
   टॉड, राजस्थान का इतिहास (अनु0), पृ0 12,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 35,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 435,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ0 19,
   वी0एस0 भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 71.
3. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 203-204,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 435,
   लाहोरी, बादशाहनामा, पृ0 158,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, जोधपुर, राज्य का इतिहास, पृ0 391-392.

वह प्रयाग चला गया वहाँ उसने चाँदी से अपना तुलादान करवाया । उसको पहली पदोन्नति के समय जालोर का परगना तथा दूसरी पदोन्नति के समय फलोदी और मेड़ता का परगना मिला ।[1]

सन् 1628 ई० में शाहजहाँ के राज्यारोहण के पश्चात् राजा गजसिंह दरबार में गया । शाहजहाँ ने उसे बहुमूल्य खिलअत, जड़ाऊ जमधर व फूलकटार समेत जड़ाऊ तलवार प्रदान किया । 5000/5000 का उसका पुराना मनसब दे दिया और साथ ही निशान, नक्कारा, घोड़ा खास सुनहरी जीन समेत और खास हल्के रंग का हाथी दिया ।[2] सन् 1630 ई० में विद्रोही खाने जहाँ लोदी ने अहमद नगर के निजामो-शाही शासक के पास शरण ली । शाहजहाँ ने उसका दमन करने के लिये तीन सेनायें भेजी । उनमें से एक का सेनानायक गजसिंह था । 1633 ई० में गजसिंह वहाँ से लौटकर दरबार में आया । सम्राट ने उसे दूसरी बार सुनहरी जीन समेत घोड़ा और बहुमूल्य खिलअत प्रदान की ।[3] सन् 1636 ई० में वह अपने वतन जोधपुर लौट आया।

---

1. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 820,
   विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 204,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ0 19,20.
   वी0एस0 भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 72.

2. वी0एस0 भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 72-74,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 224,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ0 21,
   कविवर श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 817,
   लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 158-159.
   विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 206,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 49.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 60,
   कविवर श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 820,
   विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 207.

26 नवम्बर 1637 ई0 में वह अपने बेटे जसवन्त सिंह के साथ पुन: दरबार में उपस्थित हुआ । सम्राट ने राजा गजसिंह की इच्छा के अनुरूप उसके बड़े बेटे अमरसिंह के स्थान पर छोटे बेटे जसवन्तसिंह को राजा की उपाधि, खिलअत, जड़ाऊ जमधर, 4000/4000 का मनसब डंका निशान, सुनहली जीन का घोड़ा और अपना एक हाथी उपहार में दिया ।[1] राजा गजसिंह बीजापुर व कन्धार अभियान में भी शाही सेना के साथ गया था । वहाँ उसने अच्छी वीरता दिखलायी थी । सन् 1638 ई0 में सम्राट ने गजसिंह को पुन: खिलअत देकर उसका सम्मान किया ।[2] 6 मई 1638 ई0 को आगरा में ही राजा गजसिंह की मृत्यु हो गयी ।[3]

महाराजा गजसिंह बड़ा ही साहसी, पराक्रमी व उदार था । ख्यातों के अनुसार उसने छोटे बड़े 52 युद्धों में भाग लिया और इनमें से प्रत्येक युद्ध में यह मुगल सेना के अग्रिम दल का सेनानायक रहा । गुणरूपक चन्द के अनुसार महाराजा गजसिंह का 5004 गाँवों तथा 9 किलों पर अधिकार था ।

सम्राट जहाँगीर ने राठौर कुल की एक कन्या से विवाह किया था । परवेज उसी का पुत्र था । महाराजा गजसिंह के तीन पुत्र थे 1. अमरसिंह, 2. अचल सिंह जो बचपन में ही मर गया, 3. जसवन्त सिंह ।[4]

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर उल उमरा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 224, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 139,

2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 100, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 303.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 149, निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ0 25, वी0एस0 भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 26.

4. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 821.

महाराजा जसवन्त सिंह

महाराजा जसवन्तसिंह का जन्म 6 जनवरी 1627 ई० को हुआ था ।[1] अमरसिंह गजसिंह का ज्येष्ठा पुत्र था । साधारणत: ज्येष्ठ पुत्र ही गद्दी का उत्तराधिकारी होता है लेकिन राजा गजसिंह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह के स्थान पर जसवन्त सिंह को अपना उत्तराधिकारी चुना । अमरसिंह से राजा गजसिंह अनेक कारणों से रूष्ट था । इसलिये उसने उसे अपना उत्तराधिकारी नहीं चुना । साधारणत: यह भी देखा गया है कि सबसे प्रिय रानी के पुत्र को ही सिंहासन मिलता है । जसवन्त सिंह के उत्तराधिकारी बनने में इस तथ्य ने भी सहयोग दिया ।[2] फलत: शाहजहाँ ने राजा गजसिंह की इच्छानुसार जसवन्त सिंह को 25 मई 1638 ई० को खिलअत, जड़ाऊ जमधर, 4000/4000 का मनसब राजा की उपाधि, निशान, नक्कारा, सुनहरी जीन सहित घोड़ा और हाथी दिया । जसवन्तसिंह ने भी इस अवसर पर सम्राट को 1000 मुहरें 12 हाथी और कुछ जड़ाऊ शस्त्र भेंट में दिये ।[3] 1639 ई० में जैतारण का

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ० 105,
   श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, पृ० 822,
   विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ० 210,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ० 437,
   वी०एस० भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ० 80-81,
   एन०सी० राय महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ० 30.
2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, (अनु०), भाग 3, पृ० 599,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 149.
3. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 2, पृ० 97,

   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ० 30,

   वी०एस० भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ० 81 के अनुसार इसी अवसर पर सम्राट ने उसे जोधपुर, फलोदी, सोजत, सिवाना एवं मेड़ता के परगने प्रदान किये ।

   वारिस, बादशाहनामा, भाग 2, पृ० 212.

परगना उसे जागीर में मिला । अक्टूबर 1650 ई0 में जसवन्त सिंह ने परगना पोहकरण पर अधिकार कर लिया । 1656 ई0 में परगना जालोर और बदनोर उसे दिये गये । अगस्त 1658 ई0 से पूर्व इनमें से मेड़ता और नागौर वापस ले लिये गये ।[1]

25 मई 1638 ई0 को आगरा में जसवन्त सिंह का राजतिलक हुआ । 12 जुलाई को सम्राट ने उसे खिलअत, जमधर, मुरस्सा, झण्डा, नक्कारा व घोड़ा देकर पुनः सम्मानित किया और उसे राजा की उपाधि प्रदान की और 4000/4000 का मनसब प्रदान किया ।[2] उस समय जसवन्तसिंह की उम्र 11 वर्ष थी इसीलिये सम्राट ने मारवाड़ के राजकार्य की देखभाल के लिये राजसिंह[3] को उसका प्रधान नियुक्त किया गया जिस समय शाहजहाँ लाहौर गया जसवन्त सिंह भी साथ था । इख्तियारपुर पहुँचने पर सम्राट ने उसे पुनः विशेष खिलअत और सुनहरी जीन समेत घोड़ा देकर सम्मानित किया । सर्दियों में जसवन्त सिंह के लिये एक पोस्तीन जिसके ऊपर जरी और नीचे संभूर के बाल लगे थे भेजा ।[4]

13 जनवरी 1639 ई0 में राजा जसवन्तसिंह का मनसब 5000/5000 कर दिया गया । ख्यातों से ज्ञात होता है कि उसी के साथ उसे जैतारन का परगना भी दिया गया ।[5] उसके तीन माह बाद सम्राट ने उसे एक हाथी देकर सम्मानित

---

1. मनोहर सिंह राणावत, मुहणोत नैणसी की ख्यात और उसके इतिहास, ग्रन्थ, पृ0 120.
2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 155.
3. राजसिंह को सम्राट ने 1000/400 का मनसब प्रदान किया था ।
4. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 128, यह घटना 12 दिसम्बर की है ।
5. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 134,
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय, पृ0 35,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 2, पृ0 301,
   वी0एस0 भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 81.

किया ।[1] 25 अप्रैल 1639 ई0 को सम्राट के पेशावर जाते समय जसवन्त सिंह उसके साथ था । 25 सितम्बर 1609 ई0 को सम्राट ने उसे खिलअत और सुनहरी जीन सहित एक घोड़ा प्रदान किया ।[2] 21 फरवरी 1640 ई0 को जसवन्त सिंह के जोधपुर जाते समय सम्राट ने उसे खिलअत और सुनहरी जीन का घोड़ा देकर विदा किया। जोधपुर पहुँचने पर वहाँ की प्रथा के अनुसार जसवन्त सिंह के राजतिलक का उत्सव मनाया गया ।

23 नवम्बर 1640 ई0 में जसवन्त सिंह के प्रधानमंत्री कूंपावत राजसिंह की मृत्यु हुयी अत: उसके स्थान पर महेशदास की नियुक्ति की गयी । 19 मार्च 1641 ई0 में जसवन्त सिंह आगरा गया । शाहजहाँ ने उसे खिलअत और जड़ाऊ धोप[3] देकर सम्मानित किया ।[4] 12 अप्रैल को जसवन्त सिंह के मनसब के सवारों की संख्या 1000 सवार दुहअस्पा[5] और सेहअस्पा[6] कर दी गयी ।[7] मई में सम्राट ने उसे एक विशेष हाथी और जुलाई में एक विशेष घोड़ा दिया और अक्टूबर में एक घोड़ा सुनहरी जीन सहित उसकी सवारी के लिये दिया । जसवन्त सिंह ने भी वहाँ तीन

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग-2, पृ0 144, यह घटना 4 अप्रैल 1639 ई0 की है । विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 211, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 155.

2. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 162.

3. किरच या सीधी तलवार ।

4. इस घटना की तिथि 30 मार्च लिखी है । उसके चौथे दिन सम्राट ने अपनी ओर से महेशदास को घोड़ा और खिलअत देकर राजा जसवन्तसिंह का प्रधानमन्त्री नियुक्त किया ।

5. दो घोड़ों की तनख्वाह पाने वाला सवार दुहअस्पा कहलाता था ।

6. तीन घोड़ों की तनख्वाह पाने वाला सवार सेहअस्पा कहलाता था ।

7. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 230.

हाथी 22 घोड़े अपने सरदारों को इनाम में देकर और चारणों के दान में देकर अपनी महत्ता प्रकट की ।

सन् 1642 ई0 में राजा जसवन्त सिंह को शहजादा दारा के साथ कन्धार अभियान पर भेजा गया । इस अवसर पर उसे प्रसन्न रखने के लिये एक विशेष खिलअत जड़ाऊ जमधर, फूलकटार, सुनहरी जीन वाला अच्छा घोड़ा और एक खासा हाथी उपहार में दिया गया ।[1] परन्तु ईरान का बादशाह कन्धार पहुँचने के पूर्व (काशान में ही) मर गया । इससे यह झगड़ा अपने आप शान्त हो गया और वह गजनी से ही वापस लौट गया । सन् 1645 ई0 में राजा जसवन्त सिंह को शेख फरीदुद्दीन कोका के पुत्र के आगमन तक आगरा के प्रबन्ध के लिये नियुक्त किया और उसके पश्चात दरबार आने की आज्ञा दी गयी ।[2] अगस्त 1645 ई0 में जसवन्त सिंह लाहौर पहुँचा और 25 अक्टूबर 1645 ई0 को सम्राट भी लाहौर पहुँचा । 10 अप्रैल 1646 ई0 को शाही डेरा चिनाब के पास लगा । तब सम्राट ने जसवन्त सिंह को जड़ाऊ जमधर, फूल कटार और सुनहरी जीन सहित अरबी घोड़ा देकर सम्मानित किया ।[3] 14 मई को जसवन्त सिंह के 2000 सवार दुहअस्पा सेहअस्पा कर दिये गये।

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 293-294,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 156,
   विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 214,
   एन0सी0 राय, महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय, पृ0 38,
   श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 339, 822, 823.

2. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 407.

3. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 501,

   विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 216.

इसके दूसरे ही दिन सम्राट की इच्छानुसार जसवन्तसिंह पेशावर से खाना होकर शाही लश्कर से एक पड़ाव आगे हो गया । जब सम्राट सकुशल काबुल पहुँच गया तब 18 अगस्त को सुनहरी जीन सहित एक घोड़ा सवारी के लिये उसे दिया और 21 जनवरी 1647 ई0 को उसका मनसब 2500 सवार दुहअस्पा सेहअस्पा कर दिया ।[1]

1647 ई0 में उसका मनसब 3000 सवार दुहअस्पा सेहअस्पा कर दिया गया ।[2] उसके साथ ही उसे खर्च के लिये हिंडौन का परगना भी दिया गया ।[3] सन् 1648 ई0 में जसवन्त सिंह का मनसब 5000/5000 दुहअस्पा सेहअस्पा कर दिया गया ।[4] सन् 1649 ई0 में शहजादा औरंगजेब के साथ भी जसवन्तसिंह कन्धार अभियान पर गया ।[5]

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 627,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 156.

2. यह शाहजहाँ के 21वें राज्यवर्ष की घटना है जो 24 जून 1647 ई0 से प्रारम्भ हुई थी ।

3. ख्यातों से ज्ञात होता है कि यह परगना नौ वर्ष तक महाराज के अधिकार में रहा ।

4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 3, पृ0 599-600. यह घटना शाहजहाँ के 21वें राज्यवर्ष के अन्तिम समय की है ।
   निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह और उसका समय, पृ0 43.

5. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 37,
   लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 505,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 202,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 34,
   मुहम्मद मुल्ला सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 156.

20 नवम्बर 1649 ई० में जैसलमेर के रावल मनोहरदास की मृत्यु हो गयी। उसका उत्तराधिकारी सबलसिंह था परन्तु वहाँ के सरदारों ने रामचन्द्र को गद्दी पर बिठा दिया। सबलसिंह शाहजहाँ के पास रहता था इसलिये उसकी सहायता के लिये सम्राट ने राजा जसवन्त सिंह को भेजा। जसवन्त सिंह ने जोधपुर से रियाँ के मेड़तिया गोपालदासोत, व कूंपावत नाहर खाँ राजसिंहोत आसोप को 2000 सवार व 2500 पैदल सैनिक देकर सबलसिंह के साथ भेजा। 5 दिसम्बर 1649 ई० को शाहजहाँ ने विशेष खिलअत, जमधर, मुरस्सा और घोड़ा देकर उसे सम्मानित किया।[1] 16 अक्टूबर 1650 ई० में उस सेना ने पोहकरण के किले पर अधिकार कर लिया। सबल सिंह ने यह किला जसवन्त सिंह को देने का वायदा किया था अत: जसवन्त सिंह को दे दिया।[2] इसी सेना ने जैसलमेर को घेर लिया, रामचन्द्र भाग गया और जसवन्त सिंह के सरदारों ने सबल सिंह को जैसलमेर का रावल बना दिया।[3]

सन् 1653 ई० में जसवन्त सिंह का मनसब 6000/6000 दो अस्पा सेहअस्पा कर दिया गया।[4] जसवन्त सिंह शाहजादा दारा शिकोह के साथ कन्धार अभियान पर गया परन्तु इस अभियान में शाही सेना को सफलता नहीं मिली। सन् 1654 ई०

---

1. निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ० 45, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ० 71.

2. मुहणोत नैणसी, परगना री विगत, पृ० 305.

3. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ० 105-108.

4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 3, पृ० 600.

   ख्यातों से ज्ञात होता है कि इसके साथ-साथ उसे मलारना प्रान्त जागीर में प्राप्त हुआ था।

   मुहम्मद मुल्ला सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ० 156.

में शाहजहाँ ने उसको मेवाड़ के मल्का और बदनोर के परगने जागीर के रूप में प्रदान किये । इसी वर्ष इसकी भतीजी (अमरसिंह की पुत्री) का दारा के ज्येष्ठ पुत्र सुलेमान शिकोह के साथ विवाह हुआ ।[1] 1655 ई0 में उसे महाराजा की उपाधि प्रदान की गयी ।[2] ख्यातों में यह भी लिखा है कि सम्राट ने 1654 ई0 में मेवाड़ के महाराणा राजसिंह से चार परगने हस्तगत कर लिये । उनमें से बदनोर का परगना और भेरूंदे का परगना जसवन्त सिंह को जागीर के रूप में दे दिया । सन् 1655 ई0 में महेशदास के पुत्र रत्न सिंह के जालौर छोड़कर मालवा चले जाने पर सम्राट ने उसकी जागीर भी जसवन्त सिंह को दे दी । 11 जनवरी 1656 ई0 को सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत प्रदान की ।[3] इन्हीं दिनों मारवाड़ में सींधलों ने विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया । जसवन्त सिंह ने सेना भेजकर उनके विद्रोह का दमन कर दिया और उनके मुख्य स्थान पांचोटा और कवलां नामक गांवों को लूट लिया ।[4] सितम्बर 1657 ई0 में शाहजहाँ की बीमारी के उपरान्त उत्तराधिकार के लिए छिड़ने वाले युद्ध की सम्भावना को देखकर शाहजहाँ ने 18 दिसम्बर 1657 ई0 को जसवन्तसिंह को 7000/7000 का मनसब महाराजा की उपाधि, 100 घोड़े, एक लाख रूपया नगद और मालवा की सूबेदारी प्रदान की ।[4] सम्राट ने दारा को अपना

---

1. निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह, जीवन व समय, पृ0 49,
   श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, पृ0 342-343.

2. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0 219.

3. निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, पृ0 50.

4. विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग, पृ0 219.

5. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, भाग 1, पृ0 433-439,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 1, पृ0388-424.
   बी0एस0 भार्गव, मारवाड़ एण्ड द मुगल इम्परर्स, पृ0 75-90.
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 290, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 156, एन0सी0 राय, महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय, पृ0 54.

उत्तराधिकारी मनोनीत किया तथा दारा को जसवन्तसिंह के साथ औरंगजेब और मुराद का मार्ग रोकने के लिये भेजा । जसवन्तसिंह को शायस्ता खाँ के स्थान पर मालवा का सूबेदार नियुक्त किया और उसे सौ घोड़े एक सुनहरी जीन सहित घोडा दो हाथी और एक लाख रूपये भी दिये । जसवन्तसिंह उज्जैन पहुँचा । औरंगजेब पहले ही वहाँ पहुँच गया था उसकी सेना को तुरन्त आक्रमण करके हराया जा सकता था क्योंकि लम्बी यात्रा व गर्मी से उसकी सेना थकी थी । जसवन्त सिंह यह चाहता था कि मैं औरंगजेब और मुराद की सेना को एक साथ हराऊँगा ।[1] दोनों सेनाओं के मध्य धर्मठ के मैदान में घमासान युद्ध हुआ ।16 अप्रैल 1658 ई0। जिसमें मारवाड़ की सेना बुरी तरह पराजित हुयी ।[2] जसवन्तसिंह किसी तरह अपने बचे हुये राजपूतों को लेकर जोधपुर पहुँचा । जोधपुर में महाराजा जसवन्त सिंह की महारानी बूँदी के राव शत्रुसाल की बेटी ने किले के द्वार बन्द करवा दिये, महाराजा जसवन्तसिंह को किले में प्रवेश नहीं करने दिया और जो लोग रानी से महाराजा की कुशलता की सूचना देने आये, उनसे रानी ने कहा "मेरा पति लड़ाई से भागकर नहीं आयेगा, वह वहाँ जरूर मारा गया है और यह जो आया है बनावटी होगा मेरे जलने के लिए चिता की तैयारी करो ।"[3] इतना ही नहीं यह विश्वास हो जाने पर कि यह महाराजा जसवन्तसिंह ही है उसकी रानी ने उसके लिये लकड़ी, मिट्टी और पत्थर के बर्तनों में खाना परोसा । महाराजा ने जब इस तरह के बर्तनों में खाना देने का कारण पूछा तो महारानी ने कहा धातु के शस्त्रों की आवाज

---

1. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जोधपुर, पृ0 38.

2. एन0सी0 राय, महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय, पृ0 58.

3. कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 821.

सुनकर आप यहाँ चले आये हैं और यहाँ भी धातु के बर्तनों की ध्वनि आपके कानों में पड़े तो जाने क्या हालत हो । इस घटना से जसवन्तसिंह बहुत शर्मिन्दा हुआ ।[1] एन0सी0 राय के अनुसार इस घटना का कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिलता ।[2] औरंगजेब के शासन के प्रथम वर्ष आम्बेर के राजा जयसिंह के कहने पर औरंगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह को क्षमा कर दिया और उसे अपनी सेना में मिला लिया ।[3] उसका मनसब भी 7000/7000 ही रहने दिया । 28 नवम्बर 1678 ई0 को महाराजा जसवन्त सिंह की मृत्यु जामरूद में हो गई ।[4]

---

1. कविवर श्यामलदास, वीर--विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 822,
   बर्नियर की पुस्तक के प्रथम भाग के 47वें पृष्ठ पर भी इस घटना का उल्लेख है ।
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 156.
2. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 38,
   एन0सी0 राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, परिशिष्ट अ,
   पृ0 154, 159.
3. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जोधपुर, पृ0 38,
   कविवर श्यामलदास वीर--विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 822,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 157.
4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा (अंग्रेजी अनु0), भाग 3, पृ0 603,
   साकी मुस्तैद खाँ, मासीरे-आलमगीरी, पृ0 171,
   गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 446,
   एन0सी0 राय, महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय, पृ0 108.

बीकानेर

अकबरकालीन परिस्थितियाँ

महाराज बीका ।1542-71 ई0। ने जांगलू के संकल, जाट, भट्टी और कुछ अन्य जातियों को पराजित करके बीकानेर की जमींदारी स्थापित की थी ।[1] शेर-शाह और अकबर के समय में कल्याणमल ने मालदेव से बीकानेर की जागीर विजित की थी और इस कार्य में उसे शेरशाह का सहयोग मिला था । दलपत विलास के लेखक के विवरण के अनुसार शेरशाह ने कल्याणमल को अनेक परगने उपहार में दिये । कल्याणमल ने बीकानेर की जागीर का विस्तार किया । कल्याणमल की ओर मुगल इतिहासकारों का ध्यान सर्वप्रथम अकबर के शासनकाल के पाँचवें वर्ष में गया । जब उसने बैराम खाँ के विद्रोह के समय उसे शरण दी फिर भी कल्याणमल के विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाया गया व बीकानेर अगले 10 वर्ष तक मुगलों के अधिकार क्षेत्र के बाहर रहा, किन्तु मुगलों के जेफरान, मेड़ता, जोधपुर, चित्तौड़, रणथम्भौर पर विजय प्राप्त कर लेने के पश्चात कल्याणमल को मुगलों की बढ़ती शक्ति का अहसास हो गया और 1570 ई0 में वह अपने पुत्र रायसिंह के साथ सम्राट से नागौर में मिला और सम्राट के प्रति उसने अपनी स्वामिभक्ति प्रकट की ।[2] इस अवसर पर उसने अपने भाई की पुत्री का विवाह सम्राट के साथ कर दिया ।[3] कल्याणमल और रायसिंह दोनों

---

1. मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग 2, पृ0 198, 201-204,
   टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ0 137-138,
   कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 478-479.

2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 2, पृ0 358.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 2, पृ0 358,
   दलपत विलास के पृष्ठ 14 के अनुसार कल्याणमल ने स्वयं अपनी पुत्री का विवाह सम्राट से किया था ।
   अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 1, पृ0 384.

ही शाही सेवा में सम्मिलित हो गये । आईन में उनका नाम क्रमशः 2000 व 4000 के मनसबदारों में है ।[1] रायसिंह के पुत्र दलपत को भी 500 का मनसब प्रदान किया गया ।[2] अकबर ने नागौर को जीतकर रायसिंह को दे दिया इससे उसका सम्मान बढ़ गया ।

रायसिंह

सन् 1574 ई० में कल्याणमल की मृत्यु हो जाने पर रायसिंह गद्दी पर बैठा ।[3] महाराजा रायसिंह का जन्म 20 जुलाई 1541 ई० को हुआ था ।[4] महाराजा रायसिंह ने गद्दी पर बैठने पर अपनी उपाधि महाराजाधिराज और महाराजा रखी ।[5] रायसिंह अपने पिता के जीवनकाल में ही 1570 ई० में सम्राट अकबर के दरबार में गया । 1571 ई० में गुजरात में बड़ी अव्यवस्था फैली हुयी थी व महाराणा का आतंक भी बढ़ने लगा था अतः 2 जुलाई 1572 ई० को अकबर ने सेनासहित गुजरात विजय के लिये प्रस्थान किया इस अवसर पर रायसिंह भी उसके

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ० 160-161.

2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ० 163.

3. मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग 2, पृ० 199.

4. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ० 24,
कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ० 485, चंदू की जन्मपत्रियों का संग्रह ।

5. --- अथ संवत् 1650 वर्षे महामासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां गुरौ रेवतीनक्षत्रे साध्यनामि-योगे महाराजाधिराज महाराज श्री श्री श्री रायसिंहेन दुर्गप्रतोली संपूर्णीकारिता --- । बीकानेर दुर्ग के सूरजपोल दरवाजे की बड़ी प्रशस्ति का अन्तिम भाग । जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल (न्यू सीरीज) भाग 16, पृ० 279.

साथ था । मार्ग में सिरोही के राजपूतों के सिर उठाने पर उसने उनका दमन किया । अकबर ने गुजरात के विद्रोह का दमन करने के लिये अन्य सरदारों के साथ रायसिंह को भी भेजा । रायसिंह ने इस अभियान में बड़ी वीरता दिखलायी । सन् 1574 ई0 में रावमालदेव के पुत्र चन्द्रसेन के विद्रोह का दमन करने के लिये भी रामसिंह को भेजा गया । परन्तु दो वर्षों के लगातार संघर्ष के बाद भी जब दुर्ग विजित न हो सका तब सम्राट ने रायसिंह को बुलाकर उसके स्थान पर शाहबाज खां[1] को इस कार्य के लिये नियुक्त किया । जिसने कुछ ही दिनों में उस किले को जीत लिया ।

सन् 1576 ई0 में जालौर के ताज खां एवं सिरोही के सुरताड़ देवड़ा ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया । सम्राट ने उसके विरुद्ध जो सेना भेजी उसमें तरसू खां, सैय्यद हाशिम बारहा के अलावा रायसिंह भी शामिल थे । शाही सेना के जालौर पहुँचते ही ताज खां ने अधीनता स्वीकार कर ली । सुरताण ने भी उस समय अधीनता स्वीकार कर ली । नाडोल[2] के विद्रोहियों ने भी उत्पात मचा रखा था उनका भी दमन कर दिया गया । 1577 ई0 में सुरताण ने पुन: विद्रोह कर दिया व राजसिंह के परिवार वालों पर आक्रमण कर दिया । रायसिंह ने उस पर आक्रमण किया और उसे पराजित करके बन्दी बना लिया तथा दरबार में प्रस्तुत किया ।[3] 1581 ई0 में

---

1. शाहबाज खां का छठा पूर्वज हाजी जमाल था यह मुल्तान के शेख बहाउद्दीन जकारिया का शिष्य था ।

2. फारसी तवारीखों में नादोत लिखा है परन्तु यह स्थल नाडोल होना चाहिये जो आजकल जोधपुर राज्य के गोड़वाड़ जिले में है ।

3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 266, 267, 278,

मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 213-214.

अकबर के सौतेले भाई मिर्जा हकीम[1] के विद्रोह एवं 1585 ई0 में बलूचिस्तान के विद्रोह का दमन करने के लिये गई शाही सेना में रायसिंह भी था । इसी वर्ष रायसिंह की पुत्री का विवाह शहजादा सलीम के साथ हुआ ।[2] रायसिंह को अकबर ने 1586 ई0 में भगवानदास के साथ लाहौर में नियुक्त किया । सन् 1591 ई0 में वह खानखाना के थट्टा अभियान में उसके साथ गया ।[3] सन् 1593 ई0 में सम्राट ने जूनागढ़ का प्रदेश ।दक्षिणी काठियावाड़। रायसिंह के नाम कर दिया ।[4] सन् 1594 ई0 में रायसिंह ने बीकानेर के नये किले का निर्माण करवाया । 20 दिसम्बर सन् 1597 ई0 में सम्राट ने एक फरमान जारी करके सोरठ की जागीर उसे प्रदान की । सन् 1600 ई0 में नागौर आदि के परगने भी उसे प्रदान किये ।[5] सन् 1604 ई0 में सम्राट ने परगना शम्साबाद के दो भाग कर दिये और उन्हें भी जागीर के रूप में उसे प्रदान कर दिया ।[6]

---

1. हकीम मिर्जा [illegible]कुल का शासक था ।

2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 384-385.

3. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 5, पृ0 462,
   बदायुँनी मुन्तखब-उल तवारीख, अंग्रेजी ।अनु0। लो, भाग 2, पृ0 392,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 182.

4. बदायुँनी, मुन्तखब-उल तवारीख, अंग्रेजी।अनु0।, लो, भाग 2, पृ0 400,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 184.

5. अकबर का 15 अक्टूबर 1600 ई0 का फरमान,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 186.

6. अकबर का 31 मई 1604 ई0 का फरमान,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 189.

<u>जहाँगीरकालीन परिस्थितियाँ</u>

जहाँगीर के शासन के प्रथम वर्ष में रायसिंह का मनसब 4000 से बढ़ाकर 5000 कर दिया गया ।[1] 1606 ई0 में खुसरो के विद्रोह के समय रायसिंह को आगरा की देखभाल के लिये नियुक्त किया गया । कुछ समय बाद रायसिंह बीकानेर लौट गया । नागौर के पास रायसिंह के पुत्र दलपत ने विद्रोह कर दिया अतः शाही सेना उसके विरुद्ध भेजी गयी । दलपत ने कुछ समय तक तो शाही सेना का सामना किया किन्तु अन्त में उसे भाग जाना पड़ा ।[2] 14 जनवरी 1608 ई0 को रायसिंह दरबार में उपस्थित हुआ । सम्राट ने उसे क्षमा कर दिया तथा उसे उसके पुराने पद एवं जागीर पर रहने दिया ।[3] जहाँगीर ने रायसिंह की नियुक्ति दक्षिण में की । वह अपने पुत्र सूरसिंह के साथ दक्षिण गया । वहाँ पर अचानक बहुत बीमार हो गया । 22 जनवरी 1612 ई0 को बुरहानपुर में उसकी मृत्यु हो गयी ।

राजा रायसिंह की छः रानियाँ थीं । उसके तीन पुत्र थे :- 1. भूपतसिंह, 2. दलपतसिंह, एवं 3. सूरसिंह ।

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 386,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 1, 49,
   मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 22, 52,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 215,
   ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा, हिन्दी, पृ0 360.

2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 84,
   मुंशी देवीप्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 66-70,
   मुहम्मद हलीम सिद्धिकी, नागौर राज्य का इतिहास (शोध-प्रबन्ध) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 174-175.

3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 130-131,
   मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 97,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 5, खण्ड 1, पृ0 192.
   अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 386.

रायसिंह अकबर के वीर तथा कार्यकुशल एवं राजनीतिनिपुण योद्धाओं में से एक था । बहुत थोड़े समय में ही वह अकबर का कृपापात्र बन गया था । अधिकांश अभियानों में अकबर की सेना का रायसिंह ने सफलतापूर्वक संचालन किया । जहाँगीर के समय उसका मनसब पाँच हजारी हो गया । अकबर के समय के हिन्दू नरेशों में जयपुर के बाद बीकानेर के नरेशों का सम्मान अत्यधिक था ।[1]

रायसिंह बड़ा दानी था, उदयपुर और जैसलमेर में अपने विवाह के समय उसने चारणों आदि को बहुत धन, दान में दिया था । इसके अतिरिक्त उसने कई अवसरों पर अपने आश्रित कवियों और ख्यातकारों को करोड़ और सवा करोड़ पसाव दिये थे ।[2] उसे राजपूताना का कर्ण कहा जाता था । वह विद्वानों तथा कवियों का बड़ा सम्मान करता था । वह संस्कृत भाषा में उच्चकोटि की कविता कर लेता था । उसके आश्रय में कई उत्तम ग्रन्थों का निर्माण हुआ । उसने स्वयं भी 'रायसिंह महोत्सव' और 'ज्योतिष रत्नाकर' नाम के दो अमूल्य ग्रन्थ लिखे । इनमें से पहला ग्रन्थ बहुत बड़ा और वैद्यक का तथा दूसरा ज्योतिष का है जो रायसिंह की तद्विषयक योग्यता प्रकट करता है ।[3] बीकानेर दुर्ग के भीतर की उसकी खुदवायी हुयी वृहद् प्रशस्ति इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व की है ।[4]

---

1. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 197.
2. ऐसा प्रसिद्ध है कि एक बार रायसिंह ने शंकर बारहट को करोड़ पसाव देने का हुक्म दिया । उसने रूपये देखकर कहा कि बस करोड़ रूपये यही हैं । मैं तो समझता था कि बहुत होते हैं सवा करोड़ दिये जायें ।
3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 201-202.
4. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 204.

रायसिंह स्वभाव का बड़ा नम्र, उदार तथा दयालु था । प्रजा के कष्टों की ओर उसका सदैव ध्यान रहता था । हिन्दू धर्म में उसकी आस्था अधिक होने पर भी वह इतर धर्मों का समादर करता था । तरसू खां ने सिरोही पर आक्रमण कर उसे लूटा उस समय वहां के जैन मन्दिरों से सर्वधातु से बनी हुयी एक हजार मूर्तियां वह अपने साथ ले गया । सम्राट इसे गलवाकर सोना निकलवाना चाहता था किन्तु रायसिंह के कहने पर सम्राट ने वह मूर्ति उसे दी । उसने अपने मंत्री कर्मचंद्र को जो जैनधर्म मतावलम्बी था वह मूर्ति दे दी । उसने उसको बीकानेर के जैन मन्दिर में रखवा दिया ।[1] कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनकं काव्यं में उसे राजेन्द्र कहा गया है और उसके सम्बन्ध में लिखा है कि वह विजित शत्रुओं के साथ भी बड़े सम्मान का व्यवहार करता था ।[2]

रायसिंह का ज्येष्ठ पुत्र दलपत सिंह था । उसका जन्म 24 जनवरी 1565 ई0 को हुआ था ।[3] रायसिंह का ज्येष्ठ पुत्र दलपतसिंह था किन्तु रायसिंह अपनी भटियाणी रानी गंगा के प्रति विशेष प्रेम होने के कारण उसके पुत्र सूरसिंह को गद्दी पर बिठाना चाहता था । अतएव उसने सूरसिंह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया ।

---

1. ये मूर्तियां अब तक बीकानेर के एक जैन मन्दिर के तहखाने में रखी हुयी हैं और जब कभी कोई प्रसिद्ध आचार्य आता है तब उनका पूजन अर्चन होता है । पूजन में अधिक व्यय होने के कारण ही वे पीछी तहखाने में रख दी जाती हैं ।

2. गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 205.

3. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 34,
   पाइलेट गजेटियर आफ द बीकानेर स्टेट, पृ0 31.

दलपतसिंह

रायसिंह का दक्षिण में देहान्त हो जाने पर दलपतसिंह बीकानेर की गद्दी पर बैठा। 28 मार्च 1612 ई0 को वह जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ। सम्राट ने उसे राय की उपाधि दी व खिलअत प्रदान किया।[1] सूरसिंह भी इस अवसर पर दरबार में उपस्थित था। उसने उद्दंड भाव से कहा कि मेरे पिता ने मुझे टीका दिया है और अपना उत्तराधिकारी बनाया है। जहाँगीर इस वाक्य को सुनकर बड़ा रुष्ट हुआ और उसने कहा कि यदि तुझे तेरे पिता ने टीका दिया है तो मैं दलपतसिंह को टीका देता हूँ। इस पर उसने अपने हाथ से दलपतसिंह के टीका लगाकर उसका पैतृक राज्य उसे सौंप दिया।[2]

14 अगस्त 1612 ई0 को सम्राट ने मिर्जा रुस्तम के मनसब में वृद्धि कर उसे थट्टा का हाकिम बनाकर भेजा। इस अवसर पर दलपतसिंह का भी मनसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी से दो हजारी[4] कर दिया तथा उसे भी मिर्जा रुस्तम का सहायक बनाकर थट्टा भेजा गया।[5] उमराये-हुनूद में लिखा है कि इस अवसर पर दलपतसिंह थट्टा

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 386.
2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 206,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, (अनु0) राजर्स, भाग 1, पृ0 217-218,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 194,
   ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा, हिन्दी, पृ0 361-362,
   मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 152,
   श्यामल दास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 488.
3. यह फारस के बादशाह इस्माइल के पौत्र मिर्जा सुल्तान हुसैन का पुत्र था जो 1592 ई0 में सम्राट अकबर की सेवा में प्रविष्ट हुआ। इसकी साम्राज्य के अमीरों में गणना होती थी और बड़े बड़े कार्य इसे सौंपे जाते थे। 1641 ई0 में आगरा में इसका देहान्त हो गया।
4. अकबर के समय में इसका मनसब केवल 500 था, संभव है बाद में बढ़कर डेढ़ हजारी हो गया पर ऐसा कब हुआ यह पता नहीं चलता।
5. मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 159, ------

जाने के बजाय सीधे बीकानेर चला गया ।[1] इससे सम्राट अप्रसन्न हो गया । आस-पास के भाटियों पर अपना नियन्त्रण सुदृढ़ करने के लिये दलपतसिंह ने चूड़ेहर ।वर्तमान अनूपगढ़ के निकट। में एक गढ़ बनवाना प्रारम्भ किया । इस कार्य का भाटी बराबर विरोध करते रहे जिससे वह कार्य सफल न हो सका । भाटियों ने 17 नवम्बर 1612 ई0 को वहाँ का थाना भी नष्ट कर दिया ।[2]

रायसिंह ने सूरसिंह को 84 गाँवों के साथ फलोधी दिया था जहाँ वह रहता था । दलपतसिंह ने अपने पुरोहित मानमहेश के कहने पर फलोधी के अतिरिक्त अन्य सब गाँव खालसा कर दिये ।[3]

सूरसिंह अपनी माता की इच्छानुसार उन्हें सोरम तीर्थ की यात्रा कराने ले गया । सोरम पहुँचने पर उसे जहाँगीर का फरमान प्राप्त हुआ । तदनुसार वह

--- मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 194,
ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा, हिन्दी, पृ0 362,
तुजुक-ए जहाँगीरी में घदटा के स्थान पर पटना लिखा है ।राजर्स और वेवरिज, अंग्रेजी ।अनु0।, पृ0 229,
मुंशी देवी प्रसाद के मतानुसार पटना पाठ अशुद्ध है शुद्ध पाठ घदटा होना चाहिए।

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 194.

2. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 34,
पाउलेट गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट, पृ0 31,
गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, बीकानेर का इतिहास, पृ0 207.

3. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 208.

दिल्ली गया । वहाँ सम्राट ने दलपत सिंह के स्थान पर उसे बीकानेर का राजा बना दिया । दलपतसिंह को गद्दी से हटाने के लिये नवाज जावदीन खाँ को एक विशाल सेना के साथ उसकी सहायता के लिये भेजा ।[1] दलपतसिंह मुकाबला करने के लिए तत्पर हो गया । दोनों दलों में युद्ध हुआ । पहले तो दलपतसिंह की विजय हुयी व जावदीन को भागना पड़ा किन्तु बाद में दलपतसिंह की पराजय हुई । उसे कैद करके हिसार भेज दिया गया । उसे वहाँ से अजमेर भेजा गया जहाँ उसे बन्दी बनाया गया ।[2] तुजुक-ए जहाँगीरी में लिखा है कि सम्राट ने उस पर क्रोधित होकर उसे मृत्युदण्ड दे दिया व सूरसिंह के मनसब में 500 की वृद्धि की ।[3] ख्यातों में ऐसा लिखा है कि दलपतसिंह को कैद से छुड़ाने के लिये हाथीसिंह आदि कुछ राठौड़ आये परन्तु दलपतसिंह सहित वह सब राठौड़ मारे गये । दलपतसिंह के मरने की सूचना भटनेर में पाकर उनकी छः रानियाँ सती हो गयीं ।[4]

---

1. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 35,
   कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 489,
   पाउलेट गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट, पृ0 21,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी में इसका उल्लेख नहीं है ।

2. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 35-36,
   श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 489-490,
   पाउलेट गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट, पृ0 31.

3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 258-259,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 194,
   11 जनवरी 1614 ई0 के फरमान में भी जहाँगीर ने दलपत की पराजय और सूर-सिंह की वीरता का उल्लेख किया है ।

4. नैणसी की ख्यात, भाग 2, पृ0 199,
   कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 490,
   गजेटियर आफ बीकानेर स्टेट, पृ0 31-32,
   दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 35.

<u>राजा सूरसिंह</u>

महाराजा रायसिंह के दूसरे पुत्र सूरसिंह का जन्म 28 नवम्बर 1594 ई० को हुआ था। जहाँगीर की आज्ञा से अपने बड़े भाई दलपतसिंह को मारकर 1613 ई० में वह बीकानेर की गद्दी पर बैठा। इसके पश्चात सूरसिंह दिल्ली गया जहाँ सम्राट ने उसके मनसब में वृद्धि की।

खुर्रम के विद्रोह के समय जहाँगीर ने शाही सेना के साथ सूरसिंह को उसके विरुद्ध दक्षिण भेजा।[1] मासिर उल उमरा में लिखा है कि जहाँगीर के समय सूरसिंह का मनसब 3000/2000 हो गया था।[2]

जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात जब शाहजहाँ सिंहासन पर बैठा[3] तब उसने बहुत से रूपये बाँटे और बहुत से सरदारों के मनसब में वृद्धि की। इस अवसर पर सूरसिंह का मनसब 4000/2500 कर दिया गया तथा उसे हाथी, घोड़ा, नक्कारा, निशान आदि दिये गये।[4] सन् 1627 ई० में सूरसिंह को नागौर का परगना तथा

---

1. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ० 37,

   श्यामलदास, वीर-विनोद में भी लिखा है कि जब शाहजादा खुर्रम व परवेज के मध्य युद्ध हुआ तो सूरसिंह भी शाही सेना के साथ था। भाग 2, पृ० 492। परन्तु फारसी तवारीखों में सूरसिंह का उल्लेख नहीं मिलता।

2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा। हिन्दी। ब्रजरत्नदास, पृ० 456.
   मुंशी देवीप्रसाद ने जहाँगीरनामा के प्रारम्भ में दी हुयी मनसबदारों की सूची में सूरसिंह का मनसब 2000 जात व 2000 सवार दिया है, पृ० 161.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 599.

4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ० 348,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ० 215.

कई स्थान जहाँगीर ने दिये । । नवम्बर 1627 ई0 को मारोठ का गढ़ सूरसिंह को दिया गया ।[1]

10 मई 1628 ई0 में बुखारा के इमाम कुली खाँ के भाई नज्र मुहम्मद खाँ ने काबुल पर घेरा डाल दिया अत: सम्राट ने 20000 सैनिकों सहित सूरसिंह, रावरतन-

---

1. 29 सितम्बर 1627 ई0 का फरमान ।
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 226.

टिप्पणी :

शाहजहाँ ने अपने शासन के प्रारम्भिक वर्षों में नागौर की सामरिक स्थिति को ध्यान में रखते हुये नागौर सरकार को बीकानेर नरेश सूरसिंह से वापस ले लिया। यह बात शाहजहाँ के समय के नागौर राज्य के एक फारसी अभिलेख से स्पष्ट है ।

पी0डब्ल्यू पाउलेट गजेटियर ऑफ बीकानेर स्टेट, पृ0 34, तथा के0डी0 इरस्किन ।राजपूताना गजेटियर्स, भाग 3 ए, पृ0 320। महोदयों के अनुसार -

नागौर की जागीर बीकानेर के राजा सूरसिंह की मृत्यु के पश्चात भी कुछ वर्षों तक उसके पुत्र कर्णसिंह के अधिकार में रही । किन्तु कर्णसिंह के सिंहासनारोहण के कुछ वर्षों पश्चात् नागौर की जागीर उससे लेकर जोधपुर नरेश के एक चाचा अमरसिंह को दे दी गयी ।"

जबकि डा0 कैलाशचन्द्र जैन महोदय ।ऐन्सेन्ट सिटीज एण्ड टाउन्स आफ राजस्थान, पृ0 246। का कथन है कि "अकबर ने सन् 1572 ई0 को नागौर जागीर बीकानेर नरेश रायसिंह को दी किन्तु यह सन् 1684 ई0 में बीकानेर नरेश रायसिंह के पौत्र कर्णसिंह द्वारा खो दी गयी । शाहजहाँ ने नागौर की जागीर अमरसिंह को प्रदान की परन्तु ये सभी उपरोक्त उल्लेख निराधार एवं असत्य हैं ।

मुहम्मद हलीम सिद्दीकी, नागौर राज्य का इतिहास।1206-1752।, पृ0177.

हाड़ा राजा[1] जयसिंह[2], महावत खां खानखाना[3] और मोतमिद खां को उसके विरुद्ध लड़ने के लिये भेजा । काबुल के सूबेदार लश्कर खां ने इसके पहले ही आक्रमण कर मुहम्मद खां को भगा दिया था । अतः सम्राट ने सूरसिंह महावत खां आदि को वापस बुला लिया ।[4]

जुझारसिंह बुन्देला के विद्रोही रुख अपनाने पर शाहजहाँ ने एक बड़ी सेना देकर महावत खां को सैय्यद मुजफ्फर खां, दिलावर खां, राजा रामदासनरवरी, भगवानदास बुन्देला आदि के साथ उसके विरुद्ध भेजा । मालवा के सूबेदार खानेजहाँ लोदी को भी राजा बिठ्ठलदास गौड़ अनीराय 'सिंहदलन' राजा गिरधर, राजा भारत आदि के साथ भेजा । कन्नौज के सूबेदार अब्दुल्ला खां को भी पूरब की ओर से ओरछा जाने का आदेश हुआ । इस सेना के साथ सूरसिंह, बहादुर खां रुहेला, पहाड़सिंह बुन्देला, किशनसिंह भदोरिया तथा आसफ खां भी थे । जुझारसिंह पराजित हुआ व दरबार में उपस्थित हुआ ।[5] सम्राट ने जुझारसिंह को क्षमा कर दिया ।

---

1. बूँदी का स्वामी ।

2. कछवाहा राजा महासिंह का पुत्र ।

3. इसका वास्तविक नाम जमाना बेग था और यह काबुल के निवासी गोरबेग का पुत्र था । अकबर के समय में इसका मनसब केवल 500 था । जहाँगीर के समय इसको उच्चतम स्थान प्राप्त था । शाहजहाँ के राज्यकाल में भी यह उसी पद पर रहा । सन् 1634 ई0 में दक्षिण में इसकी मृत्यु हो गयी ।

4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 15-18,
   ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा, हिन्दी, पृ0 456,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 257.

5. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 15-20,
   ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा, हिन्दी, पृ0 456.

3 अक्टूबर 1629 ई० की शनिवार की रात को खानेजहाँ लोदी[1] आगरा से भाग गया । अतः सम्राट ने सूरसिंह, राजा बिठ्ठलदास गौड़, राजा भारत बुन्देला, माधोसिंह हाड़ा, पृथ्वीराज राठौड़, राजा वीर नारायण, राय हरचंद पड़िहार आदि के साथ ख्वाजा अबुल हसन को सेना सहित भेजा । इस सेना ने खानेजहाँ को धौलपुर मे घेर लिया । कुछ देर तो उसने लड़ाई की । पर अन्त में वह भाग गया व ओरछा पहुँचने पर विक्रमाजीत ने उसे गुप्त मार्ग से निकाल दिया । जहाँ से वह निजामुल्मुल्क के पास पहुँच गया, अतः सम्राट ने अपनी सेना वापस बुला ली ।[2] 22 फरवरी 1630 को शाहजहाँ ने अलग-अलग तीन सेनाएं खानेजहाँ लोदी के विरुद्ध भेजी । यह सेनाएं क्रमशः इरादत खाँ, गजसिंह[3] व सूरसिंह के नेतृत्व में भेजी गयीं । इस सेना का हरावल राजा जयसिंह[4] था । राजौरी नामक स्थान पर दोनों पक्षों में युद्ध हुआ, व खानेजहाँ लोदी हारकर भाग गया ।[5]

राजा सूरसिंह ने अपने गुणों एवं वीरता से मुगल दरबार में सम्मानित स्थान प्राप्त किया था । जहाँगीर और शाहजहाँ के समय के उसके नाम के 51 फरमान तथा निशान मिले हैं । 14 जुलाई 1616 ई० के जहाँगीर के समय के शहजादा खुर्रम

---

1. इसका ठीक-ठीक वंश परिचय ज्ञात नहीं होता, जहाँगीर के राज्यकाल में इसे पाँच हजारी मनसब प्राप्त था ।

2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 23-26,
ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा, हिन्दी, पृ0 456.

3. जोधपुर के राजा सूरसिंह का पुत्र ।

4. राजा महासिंह कछवाहा का पुत्र ।

5. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 27-40,
गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 219.

की मुहर के निशान में सूरसिंह को राजा की उपाधि से सम्मानित किया गया है। आगे भी कई फरमानों में उसके नाम के पूर्व राजा लिखा है। 4 दिसम्बर 1617 ई0 के निशान में शहजादे खुर्रम ने उसे "कुलीनवंश के राजाओं में सर्वश्रेष्ठ" लिखा है।

बुरहानपुर में बाहरी गाँव में 1631 ई0 में सूरसिंह का देहान्त हो गया।[1] सूरसिंह के तीन पुत्र थे - 1. कर्णसिंह, 2. शत्रुसाल एवं 3. अर्जुन सिंह।[2]

कर्णसिंह

महाराजा सूरसिंह के ज्येष्ठ पुत्र कर्णसिंह का जन्म बुधवार 10 जुलाई 1616 ई0 को हुआ था[3] और पिता की मृत्यु होने पर 13 अक्टूबर 1631 ई0 को वह बीकानेर की गद्दी पर बैठा।[4] पिता की मृत्यु के कुछ समय पश्चात रावकर्णसिंह भूरतिया शाहजहाँ के दरबार में गया। उसने उसे 2000/500 का मनसब, राव का खिताब और बीकानेर का राज्य तयूल में दिया। तथा इस अवसर पर उसके भाई शत्रुसाल को भी 500/200 का मनसब दिया।[5] 26 जनवरी 1632 ई0 को कर्णसिंह ने सम्राट को एक हाथी भेंट में दिया।[6] 5 फरवरी 1632 ई0 को फतह खाँ को दण्ड देने एवं

---

1. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 39,
   पाउलेट गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट, पृ0 34.
2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 228.
3. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 39,
   श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 433.
4. दयालदास की ख्यात, भाग 2, पृ0 39.
5. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 61, 68.
   अब्दुल हमीद लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 437,
   अतहर अली, द आप्रेटस ऑफ इम्पायर, पृ0 116.
6. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 66.

दौलताबाद की विजय करने के लिये भेजे गये शाही सेवकों में राजा कर्णसिंह भी था । शाहजहाँ द्वारा भेजे गये दक्षिण अभियान में कर्णसिंह भी महावत खाँ के साथ गया । सन् 1633 ई0 में दौलताबाद के गढ़ पर मुगलों का अधिकार हो गया । इस अभियान में महाराजा कर्णसिंह ने महावत खाँ के आदेशानुसार 8 मार्च, 1633 ई0 को खाने जमा तथा राव शत्रुसाल हाणा के साथ रहकर विपक्षियों का बहुत सारा सामान लूटा ।[1] कर्णसिंह परेंडा के दुर्ग पर आक्रमण के समय भी शाही सेना की ओर से बड़ी वीरता से लड़ा था परन्तु यह अभियान सफल न रहा ।[2] जुझारसिंह के पुत्र विक्रमाजीत के सम्राट के क्रोध व अपने पिता के आदेशानुसार वहाँ से भागने पर कर्णसिंह ने भी शाही सेवा के साथ उसका पीछा किया था ।[3] सन् 1636 ई0 में खानेदौरां तथा खानेजमां के साथ शाह जी के विरुद्ध भेजे गये अभियान में कर्णसिंह भी साथ था ।[4] शाहजहाँ के दसवें जुलूसी वर्ष में राव कर्ण सिंह भुरतिया का मनसब 2000/1500 था।[5]

शाहजहाँ के 22वें राज्यवर्ष 1648-49 ई0 में कर्णसिंह का मनसब बढ़कर 2000/2000 का हो गया और सआदत खाँ के स्थान पर वह सम्राट की ओर से दौलताबाद का किलेदार नियुक्त हुआ । लगभग एक वर्ष पश्चात् ही उसके मनसब में पुनः वृद्धि की गयी अब उसका मनसब 2500/2000 का हो गया ।[6] सन् 1652 ई0 में कर्णसिंह

---

1. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 228.
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 100-101.

2. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर का इतिहास, पृ0 233-235.
3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर का इतिहास, पृ0 236-37.

4. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर का इतिहास, पृ0 237-38.
5. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 1000,
   अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 138.
6. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 298, ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा, (हिन्दी) पृ0 86, अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 259, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 563.

का मनसब बढ़कर 3000/2000 हो गया ।[1]

शाहजादा औरंगजेब के दक्षिण अभियान पर जाने पर कर्णसिंह भी साथ गया था । औरंगाबाद सूबे के अन्तर्गत जवार का प्रान्त लेना निश्चित हुआ था इसलिये शाहजादा औरंगजेब की सम्मति पर वहाँ का वेतन कर्णसिंह के मनसब में निश्चित कर उसे उस प्रान्त में भेजा गया । वहाँ के जमींदार की सामर्थ्य कर्णसिंह का सामना करने की नहीं थी अतएव उसने धन आदि भेंट में देकर वहाँ की तहसील उगाहना अपने अधिकार में ले लिया और अपने पुत्र को ओल ।जमानत। में उसके साथ कर दिया ।[2]

सन् 1657-58 ई० में शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ने पर कर्णसिंह ने किसी भी शाहजादा के पक्ष में युद्ध न किया व बिना बताये बीकानेर चला गया ।[3] 23 जून 1669 ई० को कर्णसिंह का देहान्त हो गया ।[4]

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 307,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ० 298,
   ब्रजरत्नदास, मासिर-उल उमरा ।हिन्दी। पृ० 31,
   टाड, राजस्थान का इतिहास, भाग 2, पृ० 286,
   गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर का इतिहास, भाग 2, पृ० 286.
2. उमराये हुनूद में केवल इतना लिखा है कि कर्णसिंह औरंगजेब के साथ की दक्षिण की प्रत्येक लड़ाई में शामिल था ।पृ० 298। -

   दयालदास की ख्यात में भी बादशाह द्वारा कर्णसिंह को जवारी का परगना एवं उसका वहाँ अपना थाना स्थापित करना लिखा है ।भाग 2, पृ० 40।, परंतु उपर्युक्त ख्यात के अनुसार इस घटना का संवत 1701 ।ई०स० 1644। पाया जाता है जो फारसी तावारीख़ के कथन से मेल नहीं खाता । साथ ही उसमें वहाँ के स्वामी का नाम नेमशाह लिखा है । मासिर-उल उमरा में उसका नाम श्रीपति दिया है ।
3. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर का इतिहास, पृ० 242.
4. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर का इतिहास, पृ० 249.

जैसलमेर

अजमेर सूबे के उत्तर पश्चिम में जैसलमेर में भट्टियों की रियासत थी ।[1] और इस समय तक सिन्ध के सोधा लोगों की भाँति उन्होंने भी अपने क्षेत्र का विस्तार कर लिया था । नैणसी ने लिखा है कैलान नामक जैसलमेर का एक राजा अपनी पैतृक रियासत से पृथक हो गया और उसने 15वीं शदी के प्रारम्भ में मुल्तान के असनीकोट, कहरोर और मारोत और अजमेर के पुंगल बीकमपुर, देरावर, मोटासार और हपसार पर अधिकार कर अपने लिये एक पृथक राज्य की स्थापना की ।[2] 15वीं व 16वीं शदी के पूर्वार्द्ध में कैलान के अधिकारी क्षेत्र उसके विभिन्न उत्तराधिकारियों के मध्य बँट गये जो आपस में समय समय पर युद्ध करते थे । परिणामतः 16वीं शदी के उत्तरार्द्ध तक बीकमपुर और पुंगल क्रमशः डूंगरसी तथा राव आसकरण के हाथ में चले गये यह दोनों ही स्वतंत्र रियासतें थीं । किन्तु अकबर के समय तक जैसलमेर का भट्टी राजा ही भट्टी रियासतों का प्रधान था । अकबर के शासन के प्रारम्भ में हरराज जैसलमेर का राजा था । उसने 1570 ई0 में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी । उसने अपनी एक पुत्री का विवाह सम्राट अकबर के साथ किया था । सन् 1577 ई0 में हरराज की मृत्यु हो गयी ।[3]

भीम

महारावल हरराज की मृत्यु के पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र भीम 1577 ई0 में जैसलमेर की गद्दी पर बैठा ।[4] आईने-अकबरी में इसका नाम 500 सवारों के मनसब-

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 118.
2. नैणसी की ख्यात, भाग 2, पृ0 354-356, श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 176.
3. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 36.
4. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जैसलमेर, पृ0 36.

दारों में लिखा है[1] और तुजुक-ए जहाँगीरी में जहाँगीर ने उसे एक ऊँचे पद एवं प्रभाव वाला व्यक्ति लिखा है ।[2] राजा भीम ने केवल 17 वर्ष शासन किया उसने अपनी पुत्री का विवाह शहजादा सलीम के साथ किया । सन् 1605 ई0 में जब जहाँगीर सिंहासन पर बैठा तो उसने उसका नाम मलिका-ए जहाँ रखा ।[3]

महारावल भीमसिंह ने बीकानेर के राजा सूरसिंह की भतीजी से विवाह किया था । उसके नाथूसिंह नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था, परन्तु कल्याणदास (भीम सिंह के छोटे भाई) ने दो माह के बालक नाथूसिंह को एक स्त्री द्वारा विष दिलवा कर मरवा डाला और स्वयं जैसलमेर का राजा बन बैठा । इससे क्रुद्ध होकर नाथूसिंह की माता जो बीकानेर की राजकुमारी थी बीकानेर चली गयी और बीकानेर के राजा सूरसिंह ने यह शपथ ली कि बीकानेर वाले अपनी पुत्री जैसलमेर के भट्टियों को नहीं देंगे ।[4] सूरसिंह ने जैसलमेर के प्रदेश फलोधी को अपने राज्य में मिला लिया ।[5]

---

1. जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताना का इतिहास, प्रथम भाग, पृ0 673, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जैसलमेर, पृ0 36.

2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी, पृ0 159.

3. जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 673, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जैसलमेर, पृ0 36.

4. जगदीश सिंह गलहोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 673, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जैसलमेर, पृ0 37.

5. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 673.

कल्याण

सन् 1613 ई0 में राजा भीम की मृत्यु हो गयी व उसका छोटा भाई कल्याण गद्दी पर बैठा । आईने-अकबरी में लिखा है कि 1610 ई0 में कल्याणदास उड़ीसा का सूबेदार नियुक्त हुआ । तुजुक-ए जहाँगीरी में लिखा है कि 6 वर्ष पश्चात् उसे 2000/1000 का मनसब दिया गया । जहाँगीर लिखता है कि "हि0 सन् 1025 (वि0सं0 1673 = ई0 सन् 1616) में मैंने राजा कृष्णदास को भेजकर कल्याण जैसलमेरी को शाही दरबार में बुलाया और उसे राजगी का टीका देकर जैसलमेर के रावल का खिताब दिया ।[1]

मनोहरदास

कल्याणदास के पश्चात् उसका पुत्र मनोहरदास 1627 ई0 में जैसलमेर की गद्दी पर बैठा ।[2] उसने 1627-1650 ई0 तक शासन किया ।[3] उसके कोई पुत्र न होने के कारण रामचन्द्र भाटी को जो रावल मालदेव का पौत्र था और भवानीदास का पुत्र था, गद्दी पर बिठाया ।[4] परन्तु वह एक योग्य शासक नहीं था अतः वहाँ की जनता व सरदारों ने उसे कुछ ही दिनों में गद्दी से उतार दिया व रावल मालदेव के तीसरे पुत्र खेतसी के पौत्र व दयालदास के पुत्र सबलसिंह को गद्दी पर बैठाने के लिये बुलाया ।[5]

---

1. मुहणोत, नैणसी की ख्यात, भाग 2, पृ0 346.
2. जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 674,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 37.
3. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 674.
4. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 674.
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 37.
5. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 675.

<u>सबलसिंह</u>

सबलसिंह ने शाहजहाँ के आदेश तथा जसवन्तसिंह राठौर की सहायता से रावल रामचन्द्र को गद्दी से उतारकर 1650 ई० में जैसलमेर का राज्य प्राप्त किया।[1] सबलसिंह आम्बेर के राजा जयसिंह कछवाहा का भानजा था। उसने शाहजहाँ की सेना में एक उच्च पद पर रहकर बड़ी सेवायें की थीं। एक बार पेशावर में उसने अफगानों का दमन करके शाही खजाने को लूटने से बचाया था।[2] उसकी इस सेवा से प्रसन्न होकर शाहजहाँ ने यह आदेश दिया कि सबलसिंह को जैसलमेर की गद्दी पर बिठाया जाये यद्यपि वह जैसलमेर की गद्दी का वास्तविक उत्तराधिकारी नहीं था।[3]

टाड के अनुसार रावल सबलसिंह जैसलमेर का प्रथम राजकुमार था जिसने मुगल सम्राट की ओर से जागीरदार के रूप में अपना अधिकार जैसलमेर पर किया था।[4] शाहजहाँ ने जैसलमेर के भट्टी राज्य का महत्त्व बढ़ाया इसका प्रमाण यह है कि उसने सबलसिंह को 1000/700 का मनसब दिया और 'माही मरातिब' प्रदान किया।[5]

---

1. जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 675,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 576,
   पी0एल0 विश्वकर्मा, हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, पृ0 318,

2. जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 675,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 37,
   टाड, राजस्थान का इतिहास, पृ0 520.

3. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 675,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 37.

4. टाड, राजस्थान का इतिहास, पृ0 1225,
   राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 37.

5. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 38,
   श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0 371,
   जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 676 पर लिखा है
   है कि सबलसिंह को 1000/700 का मनसब प्राप्त था।
   अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 268.

जैसलमेर मुगल साम्राज्य का करद राज्य बन गया ।[1] सबलसिंह के समय में जैसलमेर राज्य विस्तार की चरम सीमा पर था । इसके अन्तर्गत वर्तमान भावलपुर का पूर्ण क्षेत्र और मारवाड़ तथा बीकानेर के कुछ क्षेत्र थे ।[2] सबल सिंह की 18 जून 1659 ई0 को मृत्यु हो गयी ।[3]

मुगल साम्राज्य के सूबों में राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से सूबा अजमेर का महत्व अत्यधिक था । सूबा अजमेर से होकर ही व्यापारी अपना माल लेकर राजपूताना गुजरात तथा दक्षिण आते जाते थे । इन मार्गों से ही व्यापार, वाणिज्य होता था । इस सूबे के अन्तर्गत राजपूताना आता था जो कि अपनी स्वातन्त्र्यप्रियता के लिये प्रसिद्ध रहा है अत: यहाँ का अत्यधिक महत्त्व था । मेवाड़, मारवाड़, बीकानेर, जालौर, सिरोही, कोटा, बूँदी आदि के राजाओं पर आधिपत्य स्थापित करना एवं उनमें उनकी सेवायें प्राप्त करना सभी मुगल सम्राट अपना लक्ष्य समझते थे । अकबर ने उनके प्रति मित्रता एवं आक्रामकता की नीतियाँ अपनायी और मेवाड़ के राज्य को छोड़कर अन्य सभी राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की । राजपूत राजाओं के वतन राज्य अकबर ने उन्हीं के पास रहने दिये और उसके उत्तराधिकारी जहाँगीर तथा शाहजहाँ भी यही नीति अपनाते रहे । जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने अकबर के अधूरे कार्य को पूरा करते हुये मेवाड़ को 1614 ई0 में अधीनस्थ बना लिया । सूबा अजमेर के सभी राजाओं ने मुगल आधिपत्य को स्वीकार किया ।

---

1. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 37.

2. हैण्डली, थामस हालवियन 'द रूलर ऑफ इण्डिया एण्ड द चीफ्स ऑफ राजपूताना' पृ0 31.

3. जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 676.

उनकी सेवायें सम्राट को प्राप्त हुईं। जब राणा जगतसिंह एवं उसके पुत्र राणा राज सिंह ने 1615 ई0 की सन्धि का उल्लंघन करके चित्तौड़ के किले की मरम्मत करवानी शुरू की तो शाहजहाँ को चित्तौड़ के विरुद्ध सेना भेजनी पड़ी। तब मेवाड़ पुनः पूर्व वत अधीनस्थ बने रहने के लिये बाध्य हो गया। इसके अतिरिक्त राजपूताने की ओर से कोई गम्भीर अवज्ञाकारिता या विद्रोह का प्रकरण शाहजहाँ के समय नहीं मिलता। सूबा अजमेर पर कड़ा नियन्त्रण मुगल साम्राज्य की सुदृढ़ शक्ति का द्योतक था।

----------::0::----------

अध्याय पंचम

सूबा मालवा के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा मालवा के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा मालवा सम्राट अकबर के शासनकाल के विशाल सूबों में से एक था। उसकी लम्बाई गढमण्डला से बांसवाड़ा तक 245 कोस थी और चौड़ाई चन्देरी से नन्दरबार तक 230 कोस थी। इसके पूर्व में बान्धु (रीवां), उत्तर में नरवर, दक्षिण में बगलाना और पश्चिम में गुजरात तथा अजमेर स्थित था।[1]

इस सूबे के अन्तर्गत 12 सरकारें थी जो 302 उपखण्डों में विभाजित थीं। इसका क्षेत्रफल बयालीस लाख छाछठ हजार दो सौ इक्कीस (42,66,221) बीघा 6 बिस्वा था। यहाँ से प्राप्त कुल राजस्व चौबीस करोड़ छः लाख पन्चान्बे हजार बावन (24,06,95,052) दाम (60,17,376.42 रूपये) था। इसमें से 24,06, 95,052 दाम सयूरगल था।[2]

वर्णन की सुविधा के लिये इस सूबे को दो भागों में बाँट सकते हैं, पूर्वी मालवा और पश्चिमी मालवा। पूर्वी मालवा के अन्तर्गत गढ का क्षेत्र था और पश्चिमी मालवा के अन्तर्गत शेष मालवा आता था।

सूबा मालवा में प्रमुखतः गढकटंगा, धंदेरा, जेतपुर एवं देवगढ के स्वायत्त शासकों का वर्णन मिलता है। उन शासकों की स्थिति एवं मुगल सम्राट से उनके सम्बन्धों की विवेचना प्रस्तुत अध्याय में की गयी है।

पूर्वी मालवा या गढकटंगा या गढमण्डल

मध्यकाल में पूर्वी मालवा गोंडवाना के नाम से जाना जाता था यहाँ पर गढ के शक्तिशाली राजा शासन करते थे। यहाँ पर गोंड जाति का शासन था। इस राज्य की पूर्वी सीमा पर रतनपुर स्थित था जो झारखण्ड के प्रदेश के अन्तर्गत

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 206.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 209.

आता था । पश्चिमी सीमा पर रायसीन था जो मालवा के अधीनस्थ था । यह 150 कुरोह तक विस्तृत था । इस क्षेत्र के उत्तर में भट्टा का राज्य था तथा दक्षिण में दक्षिण के स्वतन्त्र राज्य थे । इसकी चौड़ाई 80 कोस थी । इस प्रदेश को गढ़-कटंगा भी कहा जाता था । गढ़कटंगा में 70,000 गाँव थे । इसमें गढ़ एक बड़ा शहर था और कटंगा एक गाँव का नाम था । इन दोनों नामों को मिलाकर इस क्षेत्र का नाम गढ़कटंगा पड़ा । चौरागढ़ का किला इस देश की राजधानी थी ।[1] 17वीं शदी के मध्य तक गढ़कटंगा राज्य गढ़मण्डल राज्य के नाम से जाना जाने लगा ।[2]

सम्राट अकबर एवं गढ़कटंगा

सम्राट अकबर के शासनकाल में गढ़कटंगा में गढ़, करोला, हुरिया, सलवानी, टंकी, कथोला, मगध, मण्डल, देवहरलनजी और बैरागढ़ के राजाओं का शासन था । यह सभी गोंड जाति के थे और स्वतंत्र रूप से शासन करते थे । सम्राट अकबर के शासनकाल में गढ़कटंगा के प्रमुख शासक चन्द्रशाह (1566-1576 ई0) और मधुकरशाह (1576 - 1590ई0) थे ।

सम्राट जहाँगीर एवं प्रेमशाह

सन् 1605 ई0 में जहाँगीर मुगल राजसिंहासन पर बैठा । सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में मधुकरशाह का पुत्र प्रेम नारायन या प्रेमशाह गढ़कटंगा का शासक बना। उसने 1590 ई0 से 1634 ई0 तक गढ़कटंगा पर शासन किया । मधुकरशाह एवं प्रेमशाह दोनों के ही मुगलों से मधुर सम्बन्ध थे उन दोनों ने मुगल सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 208.

2. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 138.

भी प्रकट की थी । उन्होंने अपने अपने पुत्रों को मुगल राजदरबार में अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा था ।[1] स्लीमैन[2] के अनुसार जब मधुकरशाह की मृत्यु हुयी उस समय प्रेमशाह मुगल दरबार में था । पिता की मृत्यु की सूचना मिलते ही वह अपने देश वापस लौटा और लौटते समय अपने पुत्र हृदयशाह को बन्धक के रूप में दरबार में छोड़ गया ।

समसामयिक मुगल इतिहास से ज्ञात होता है कि अकबर के शासनकाल के अन्त तक मुगलों द्वारा गढ़ में अपने जागीरदार नियुक्त करने की प्रथा लगभग समाप्त हो गयी थी और यह अधिकार वहाँ के महाराजा को प्राप्त हो गया था ।[3] प्रेम नारायन सम्राट जहाँगीर के समय से ही मुगलों की सेवा में था वह 1634 ई0 में गोढ़ का शासक बना । जहाँगीर के शासन के 12वें वर्ष 1617 ई0 में वह सम्राट जहाँगीर से मिलने गया और उसने सम्राट को 7 हाँथी नर व मादा भेंट में दिये ।[4] सम्राट ने इसी वर्ष प्रेमशाह के मनसब में वृद्धि करके उसका मनसब 1000/500 कर दिया और उसे उसके पैतृक देश में एक जागीर भी प्रदान की ।[5]

<u>प्रेमशाह एवं जुझारसिंह बुन्देला</u>

प्रेमशाह जिस वर्ष गद्दी पर बैठा उसी वर्ष सन् 1634 ई0 में जुझारसिंह बुन्देला ने प्रेम शाह के राज्य पर आक्रमण किया । स्लीमैन[6] के अनुसार उस आक्रमण का कारण

---

1. डी0एस0 चौहान, ए स्टडी आफ द लेटर हिस्ट्री आफ राजगोण्ड किंगडम आफ गढ़मण्डल, 1564-1678, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1966, मैसूर, पृ0 156.
2. जनरल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग 6, 1837, पृ0 631.
3. डी0एस0 चौहान, ए स्टडी आफ द लेटर हिस्ट्री आफ राजगोण्ड किंगडम आफ गढ़मण्डल, 1564-1678, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1966, मैसूर, पृ0 156.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 379,
5. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 388, 411, केवलराम, तज-किरातुल उमेरा, पृ0 251.
6. जनरल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग 6, 1837, पृ0 681.

यह था कि प्रेमशाह दिल्ली से अपने देश लौटते समय वीरसिंह देव बुन्देला से मिलने नहीं गया था अतः वीरसिंह देव ने मरते समय (1594 ई0) अपने पुत्र जुझार सिंह को इस अपमान का बदला लेने के लिये कहा था किन्तु यह कारण सत्य नहीं प्रतीत होता क्योंकि वीरसिंह देव के पास ही पर्याप्त समय था अगर वह बदला लेना चाहता तो ले सकता था ।[1] इस अभियान में मुगलों ने बुन्देलों को उत्साहित किया किन्तु कोई सहायता प्रदान की हो ऐसा विवरण नहीं प्राप्त होता । वास्तव में इस युद्ध का कारण यह था कि जुझार सिंह बहुत महत्त्वाकांक्षी था तथा वह अपना अधिकार-क्षेत्र गढ राज्य तक विस्तृत करना चाहता था । इस युद्ध में प्रेमशाह ने बड़ी वीरता से जुझारसिंह का सामना किया । जुझारसिंह ने गोंड राजा को शक्ति से पराजित करना असम्भव जानकर उसे छल से मारने का निश्चय किया । उसने उससे झूठा वादा करके उसे अपने पड़ाव में बुलाया और वहीं छल से उसकी हत्या कर दी ।[2] फलतः चौरागढ़ के किले तथा लाखों रुपयों पर जुझारसिंह का अधिकार हो गया ।

<u>हृदयशाह</u>

प्रेमशाह के पुत्र हृदयशाह ने जो उस समय मुगल दरबार में था अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुना तो उसने स्थानीय राजा विशेषकर भोपाल के राजा के साथ मिलकर जुझारसिंह बुन्देला पर आक्रमण कर दिया । कनूरी गाँव के निकट दोनों में युद्ध हुआ । इस युद्ध में जुझारसिंह पराजित हुआ और चौरागढ पर हृदयशाह का अधिकार हो गया । हृदयशाह ने 300 गाँव सहित उपदगढ जिला भोपाल के राजा को उसकी सहायता के बदले में दिया ।[3] बादशाहनामा के अनुसार

---

1. कैप्टन वर्डला का यह मत है ।

2. जनरल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग 6, 1837, पृ0 632, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 149, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 95.

3. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा अंग्रेजी (अनु0), पृ0 149, जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग 6, 1837, पृ0 632.

प्रेमशाह की मृत्यु के पश्चात हृदयशाह खानेदौरां के साथ मुगल सम्राट शाहजहाँ से मिलने गया और उसने सम्राट को प्रेमशाह की मृत्यु तथा जुझारसिंह के आक्रमण की सूचना दी। सम्राट ने जुझारसिंह के नाम एक फरमान जारी किया । इस फरमान में उसने यह आदेश पारितकिया - जुझारसिंह ने सम्राट की अनुमति के बिना प्रेमशाह पर आक्रमण किया है व गढ पर अधिकार किया है अत: वह गढ को हृदयशाह को लौटा दे, साथ में जो रूपया भीमनारायन या प्रेमनारायन या प्रेमशाह से लिया है उसमें से दो लाख रूपया भी दरबार में भेज दे ।[1] किन्तु जुझारसिंह शाही आदेश को मानने को तैयार न हुआ। अत: सम्राट ने सुन्दर कवि राय को जुझार सिंह को समझाने के लिये भेजा कि वह 3 लाख रूपया तथा चौरागढ के स्थान पर बयावान का क्षेत्र गढ के शासक को लौटा दे । किन्तु जुझारसिंह इससे सहमत नहीं हुआ । अत: शहजादा औरंगजेब को जुझारसिंह का दमन करने के लिये भेजा गया । उसने जुझारसिंह का पूर्ण रूप से दमन कर दिया । जुझारसिंह की सारी सम्पत्ति जला दी और भीम नारायन की सारी सम्पत्ति वहाँ से उठा लाया ।[2] चौरागढ पर शाही सेना का अधिकार हो गया । जुझारसिंह मुगल सेना के भय से भागता हुआ चान्दा पहुँचा और वहाँ गोंड लोगों द्वारा उसका वध कर दिया गया ।[3] चौरागढ का प्रदेश हृदयशाह को मिल गया । हृदयशाह ने मुगलों के जुझारसिंह के विरुद्ध भेजे गये अभियान में मुगलों का साथ दिया था ।[4]

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 80-81, इलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास, हिन्दी अनु0, भाग 7, पृ0 47-50, लाहौरी, बादशाह-नामा, बिब्लोथिका इण्डिया सीरीज, भाग 1, खण्ड 2, पृ0 94.
2. इनायत खां शाहजहाँनामा, अंग्रेजी अनु0, पृ0 158-159, बनारसी प्रसाद सक्सेना मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 84, इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, हिन्दी (अनु0,) भाग 7, पृ0 47-50, लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड 2, पृ0 94.
3. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 84.
4. डी0एस0 चौहान, ए स्टडी आफ द लेटर हिस्ट्री आफ द राजगोण्ड किंगडम आफ गढ़मण्डल, 1564-1678 ई0, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1966, मैसूर, पृ0 158.

हृदयशाह के शासनकाल में राजगोंड राज्य की राजधानी चौरागढ़ से बदलकर रामनगर[1] कर दी गयी । यह परिवर्तन पहाड़सिंह बुन्देला के आक्रमण और चौरागढ़ पर अधिकार करने के कारण आवश्यक हो गया था । पहाड़सिंह जुझारसिंह बुन्देला का भाई और वीरसिंह का पुत्र था । वह अपने भाई की हत्या का बदला लेना चाहता था अतः उसने चौरागढ़ पर आक्रमण किया । शाहजहाँ के शासनकाल के 24वें वर्ष 1651 ई0 में पहाड़सिंह के मनसब में वृद्धि करके उसका मनसब 1000 कर दिया गया और उसे चौरागढ़ का जागीरदार बना दिया गया ।[2] जब पहाड़सिंह चौरागढ़ पहुँचा तो चौरागढ़ का जमींदार आश्रय लेने के लिये कान्धों के जमींदार अनूपसिंह के पास चला गया । अनूपसिंह उस समय रीवाँ में था । पहाड़सिंह रीवां की ओर अग्रसर हुआ । अनूपसिंह विरोध करने में अपने को असमर्थ जानकर अपने परिवार वालों तथा हृदयशाह के साथ नाथू नाहर की पहाड़ियों में चला गया । पहाड़सिंह रीवां पहुँचा और उसे नष्ट भ्रष्ट किया । इस प्रकार चौरागढ़ का गढ़ राजा पूरी तरह से वहाँ से निकाल दिया गया ।[3] इसी समय उसे शाही दरबार में पहुँचने का आदेश मिला । 1652 ई0 में वह दरबार में पहुँचा । औरंगजेब के कन्धार के दूसरे अभियान में पहाड़सिंह भी साथ गया था ।[4]

उपरोक्त विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि 1657 ई0 में पूर्व हृदयशाह ने सम्राट को वार्षिक कर नहीं प्रदान किया तथा शाही माँग की पूर्ति नहीं की । इसीलिये मुगल सम्राट ने हृदयशाह को चौरागढ़ से हटाने के लिये सरदार खान को

---

1. यह मण्डल से 10 मील दूर है ।

2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, खण्ड 1, पृ0 470, एम0अतहर अली, द आपरेटस आफ मुगल इम्पायर, पृ0 256.

3. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 462, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, पृ0 201.

4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, पृ0 258.

भेजा । जब वह इस कार्य में सफल न हो सका तो पहाड़सिंह को यह कार्य सौंपा गया । कुछ समय पश्चात हृदयशाह पुन: अपने वतन राज्य का स्वामी बना ।

हृदयशाह ने रामनगर में एक नया महल बनवाया ।[1] उसने हृदयनगर[2] नामक एक गाँव की भी स्थापना की । हृदयशाह की प्रमुख रानी का नाम सुन्दरी देवी था ।[3] उसने रीवां के बघेल राजा की पुत्री से भी विवाह किया था ।[4] हृदयशाह की 1678 ई0 में मृत्यु हो गयी । उसके दो पुत्र थे - छत्रशाह और हरीशाह । वह गढ़ राज्य का अन्तिम महत्त्वपूर्ण राजा था ।

धंधेरा

धंधेरा राजपूतों की एक जाति थी । उनके बुन्देलों तथा पँवारों से अच्छे सम्बन्ध थे । धंधेरा मालवा के सरकार सारंगपुर सहरा में स्थित एक राजपूत रियासत थी । सम्राट जहाँगीर के समय जगमणि धंधेरा का राजा था ।[5] सन् 1612 ई0 में सम्राट जहाँगीर ने राजा जगमणि की जागीर व पुश्तैनी भूमि महावत खाँ को दे दी क्योंकि वह दक्षिण में भेजे गये अभियान में असफल हो गया था ।[6]

---

1. डी0एस0 चौहान, ए स्टडी आफ द लेटर हिस्ट्री आफ द राजगोण्ड किंगडम आफ गढ़मण्डल, 1564-1678, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1966, मैसूर, पृ0 158.

2. मण्डल से 5 मील दूर है ।

3. रामनगर के लेख में इसका विवरण मिलता है ।

4. सी0यू0 विल्सस, राजगोण्ड महाराजास आफ द सतपुरा हिल्स, टिप्पणी, पृ0 121.

5. अबुल फजल, अकबरनामा (अनु0) बेवरिज, पृ0 112, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 61-62.

6. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), बेवरिज, पृ0 241.

जगमणि की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र चतुर्भुज पिता की गद्दी पर आसीन हुआ । उसे मुगल सम्राट जहाँगीर ने मनसब और राजा की उपाधि प्रदान की थी ।[1]

सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में धँधेरा में राजा इन्द्रमणि धँधेरा का शासन था । शाहजहाँ के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में उसे 2500 का मनसब प्राप्त था।[2] उस समय इन्द्रमणि और सम्राट के मध्य सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध थे किन्तु कुछ समय पश्चात उनमें कुछ वैमनस्य उत्पन्न हो गया और सम्राट शाहजहाँ ने राजा बिठ्ठलदास गौड के भतीजे शिवराम गौड को धँधेरा जागीर के रूप में प्रदान कर दिया । अतः इन्द्रमणि धँधेरा ने सैन्यबल से उसे धँधेरा से बाहर निकाल दिया और उस प्रान्त पर पुनः अधिकार कर लिया ।[3] शाहजहाँ ने अपने शासनकाल के 10वें वर्ष अपने सरदार मोतमिद खाँ तथा राजा बिठ्ठलदास गौड को उसे दण्डित करने के लिये भेजा । राजा इन्द्रमणि ने इस समय मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेना ही उचित समझा अतः वह सम्राट के दरबार में गया और सम्राट ने उसे उसकी धृष्टता का दण्ड देने के लिये जुनेर के दुर्ग में कैद कर लिया किन्तु कुछ ही समय पश्चात उसे कैद से मुक्त कर दिया गया ।[4] इस वर्ष उसका मनसब 3000/2000 था । इसी वर्ष उत्तराधिकार का युद्ध प्रारम्भ हो जाने पर शहजादा औरंगजेब ने उसे मुहम्मद सुल्तान के साथ दक्षिण से उत्तर की ओर भेजा ।[5] महाराजा जसवंत सिंह के साथ धर्मट के युद्ध के पश्चात उसे

1. अहसान रजा खाँ चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 134, केवलराम, तजकिरातुल उमरा, पृ0- 258.
2. केवलराम, तजकिरातुल उमरा, पृ0 245-246.
3. शाहनवाज खाँ, मासिर उल उमरा ।अनु0। बेवरिज, पृ0 682, इनायत खाँ शाहजहाँनामा, पृ0 195, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 61-62.
4. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा ।अंग्रेजी।अनु0।, पृ0 202.
5. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, अंग्रेजी ।अनु0।, पृ0 683.

झंडा और डंका देकर सम्मानित किया गया । खजुवा में मुहम्मद शुजा के साथ युद्ध के उपरान्त बंगाल में उसकी नियुक्ति हुयी जहाँ अपनी मृत्यु पर्यन्त वह सम्राट की सेवा में रहा ।[1]

शाहजहाँ के शासनकाल में धंधेरा में राजा शिवराम गौड का उल्लेख मिलता है ।[2] शिवराम गौड राजा गोपालदास का पौत्र, बलराम का पुत्र था । उसके पिता और बाबा दोनों ही सिन्ध अभियान में मारे गये थे । उस समय शाहजहाँ शाहजादा था । शिवराम गौड शाहजहाँ का बहुत कृपापात्र था । शाहजहाँ ने गद्दी पर बैठते ही उसे 1000/500 का मनसब प्रदान किया था और उसे धंधेरा, जिसके अन्तर्गत मालवा में सारंगपुर का क्षेत्र सम्मिलित था, प्रदान किया ।[3] शाहजहाँ के शासनकाल के दसवें वर्ष उसका मनसब 1500/1000 हो गया ।[4] कुछ समय तक वह असीरगढ का किलेदार रहा । शाहजहाँ के शासनकाल के 18वें वर्ष में उसे उस पद में अपदस्थ कर दिया गया।[5]

---

1. साकी मुस्तैद खाँ, मासीरे आलमगीरी, पृ0 61 पर उद्धृत है कि राजा इन्द्रमणि बुन्देला था तथा 1177 ई0 में उसकी मृत्यु हुयी थी । मिस्टर सिलवर्ड बुन्देलखण्ड के विवरण में ।जनरल एशियाटिक सोसायटी बंगाल, 1902, पृ0 116। लिखते हैं कि इन्द्रमणि पहाडसिंह का पुत्र था और चम्पतराय का भाई था । 1673 ई0 में उसकी मृत्यु हुयी । आलमगीरनामा से ज्ञात होता है कि उसने शिवालिक तथा दक्षिण में मुगलों की सहायता की थी । देखिये पृ0 517, 533, 989. शाहनवाज खाँ, मासिर उल उमरा, भाग 2, पृ0 683, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 61.

2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 48, 114.

4. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड 2, पृ0 304, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी ।अनु0। भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875, केवल राम, तजकिरातुल उमरा, पृ0 266.

5. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 388, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 190.

और 19वें वर्ष में उसे शाहजादा मुराद बख्श के साथ बलख व बदख्शाँ के अभियान पर भेजा गया ।[1] इस अभियान पर जाते समय सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत तथा घोड़ा प्रदान किया ।[2] सम्राट ने अपने शासन के 20वें वर्ष में उसे काबुल का किलेदार नियुक्त किया ।[3] इस वर्ष शिवराम गौड के मनसब में 200 सवारों की वृद्धि की गयी अब उसका मनसब 1500/1200 हो गया ।[4] 21वें वर्ष में उसे काबुल के किलेदार पद से हटा दिया गया और उसे अब्दुल अजीज खाँ और नज्र मुहम्मद खाँ के मध्य के संघर्ष का दमन करने के लिये भेजा गया । तदुपरान्त उसे शाहजादा औरंगजेब के साथ दक्षिण अभियान पर भेजा गया । शाहजहाँ के शासनकाल के 25वें वर्ष में जब उसके चाचा राजा बिट्ठलदास गौड की मृत्यु हो गयी तब उसके मन्सब में वृद्धि करके उसका मनसब 2000/1000 कर दिया गया ।[5] और राजा की उपाधि प्रदान की गयी ।[6] इसी वर्ष पुन: उसे शाहजादा औरंगजेब के साथ दक्षिण अभियान पर भेजा गया । 26वें वर्ष में उसे शाहजादा दारा के साथ कन्धार अभियान पर भेजा गया[7] और वहाँ

---

1. लाहौरी, बादशानामा, भाग 2, पृ0 484, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 198, केवलराम, तजकिरातुल उमरा, पृ0 267.

2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 199.

3. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 641, केवलराम, तजकिरातुल उमरा, पृ0 267.

4. एम0 अतहर अली, द आपरेटस आफ इम्पायर, पृ0 236.

5. शाह नवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875, केवलराम, तजकिरात-उल-उमरा, पृ0 267.

6. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 133, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875.

7. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 157, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875.

से रुस्तम खाँ फिरोज जंग के साथ बुस्त दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया । 28वें वर्ष उसने चित्तौड़ के दुर्ग को ध्वस्त करने में अपनी वीरता प्रकट की । 31वें वर्ष में उसका मनसब 2500/2500 कर दिया गया और उसे माण्डू के दुर्ग की किलेदारी प्रदान की गई ।[1] सन् 1659 ई0 में सामूगढ़ के युद्ध में दारा शिकोह के पक्ष में लड़ते हुए उसने युद्धक्षेत्र में वीरगति पायी ।[2] इस प्रकार उसने आजीवन मुगलों की सेवा की।

जैतपुर

हमीर जैतपुरी मालवा का राजा था । अबुल फजल उसे मालवा का जमींदार कहता है ।[3] वह मालवा में स्थित जैतपुर का राजा था । जहाँगीर के अनुसार जैतपुर मालवा में माण्डू के निकट स्थित है ।[4] 1585-86 ई0 में जब माण्डू का शाही अधिकारी बरार पर आक्रमण के लिये गया था तब हमीर जैतपुरी ने माण्डू पर चढ़ाई कर दी ।[5] मिर्जा अजीज कोका ने हमीर जैतपुरी पर चढ़ाई कर दी और उसे दण्डित भी किया ।[6] फिर भी अकबर के शासनकाल तक मुगल उसे अधीनस्थ नहीं बना पाये ।

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, में शिवराम गौड़ का मनसब 2000/500 दिया गया है । मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 308.

2. मुहम्मद काजिम, आलमगीरनामा, पृ0 95, 102, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 390-392, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 293.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 491.

4. जहाँगीर, तुजुके जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0 बेवरिज, पृ0 389.

5. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 491.

6. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 491.

जहाँगीर के शासनकाल में सन् 1617 ई० में जब सम्राट माण्डू में था तब जैतपुर का राजा सम्राट से मिलने नहीं आया। इससे क्रुद्ध होकर सम्राट ने फिदाई खान को सेना सहित जैतपुर के राजा के विरुद्ध भेजा। जब फिदाई खान की विजयी सेना जैतपुर पहुँची तब जैतपुर का राजा अपने परिवार वालों के साथ वहाँ से भाग गया। और उसने एक गाँव में जाकर शरण ली। कुछ ही समय पश्चात अपने पुत्र शाहजहाँ के अनुरोध पर सम्राट जहाँगीर ने उसे क्षमा कर दिया। जैतपुर का राजा सम्राट जहाँगीर की सेवा में उसके दरबार में 1617 ई० में उपस्थित हुआ।[1]

सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में जैतपुर के राजा ने समुद्री डकैती करना प्रारम्भ कर दिया। वह बहुत शक्तिशाली हो गया था। वह सम्राट के आदेशों का पालन नहीं कर रहा था अतः सम्राट ने सन् 1636 ई० में तर्बियत खाँ को जैतपुर के राजा के दमन के लिये भेजा। 4-5 दिनों तक दोनों में युद्ध चलता रहा अन्ततः जैतपुर के राजा ने अपने को कमजोर समझकर मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लिया। वह मुगल सम्राट के सम्मुख उपस्थित हुआ व उसने सम्राट के प्रति निष्ठा प्रकट की।[2] तद-नन्तर वह मुगल सम्राट के प्रति निष्ठावान बना रहा।

देवगढ के गोंड राजा

देवगढ़ के गोंड राजा नागपुर के क्षेत्र पर शासन करते थे। यहाँ के राजाओं का विवरण समकालीन स्रोतों में प्राप्त नहीं होता। अबुल फजल की आईने-अकबरी से ज्ञात होता है कि जतबा नामक देवगढ का राजा अकबर का अधीनस्थ था। वह अकबर को वार्षिक कर भी प्रदान करता था।[3] अहसान रजा खाँ ने जतबा के लिये

---

1. जहाँगीर, तुजुके-जहाँगीरी, अंग्रेजी अनु०, राजर्स बेवरिज, भाग 1, पृ० 389,391, 403.
2. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ० 192, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 113.
3. ~~वाई०के० देशमाण्डेय, इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1950, नागपुर, पृ० 231.~~
   प्रेस लाइट आन द हिस्ट्री आफ द गोंड राजास आफ देवगढ, पृ० 231.

जतिया नाम लिखा है ।[1] यद्यपि अकबरनामा में जतिया के क्षेत्र का विवरण नहीं मिलता है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि गढ क्षेत्र के दक्षिण पश्चिम में उसका क्षेत्र था । उसके पास 2000 सवार 50000 प्यादे और 100 हाँथी थे । उसका विवरण खेरला के पूर्व के क्षेत्र के जमींदार के रूप में प्राप्त होता है ।[2]

स्वर्गीय श्री वाइ०एम० काले ने मराठी में अपने नागपुर प्रान्त की यात्रा के विवरण में लिखा है कि जतबा देवगढ़ परिवार का संस्थापक था । वह हरियागढ से आया था और गढ़मण्डल के गोंड राजा का अधीनस्थ था ।[3]

जतबा के पश्चात उसके चार पुत्र कोकाशाह, केसरीशाह, दुर्गशाह और दलशाह क्रमशः देवगढ की गद्दी पर बैठे ।[4] सन् 1638 ई० में देवगढ के राजा कोका ने मुगल अधिकारी खानेदौरां बहादुर को कर प्रदान किया व अधीनता स्वीकार की । उसने खानेदौरां को 150 नर व मादा हाँथी भेंट में दिये । इससे यह स्पष्ट होता है कि इन राजाओं ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी तथा यह मुगलों के करद राज्य बन गये थे ।[5] सन् 1657 ई० में देवगढ के जमींदार कीरतसिंह ने अपने पिता कोका की भाँति मुगलों को कर देने की प्रथा को समाप्त कर दिया । अतः सम्राट ने शहजादा औरंगजेब को कीरतसिंह के विरुद्ध भेजा अन्ततः कीरत सिंह ने अधीनता स्वीकार कर ली उसने शहजादा औरंगजेब से भेंट की । उसने सम्राट को 20 हाँथी भेंट में दिये और बकाया करद का भुगतान करने का वचन दिया । साथ ही साथ उसने

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफ्टेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ० 135.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ० 100
3. डा० वाई०के० देशमाण्डे, फ्रेश लाइट आन द हिस्ट्री आफ द गोंड राजास आफ देवगढ, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1950, नागपुर, पृ० 231.
4. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ० 200-201, 514. डा० वाई०के० देशमाण्डे फ्रेस लाइट आन दि हिस्ट्री आफ गोंड राजास आफ देवगढ, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1950, नागपुर, पृ० 231.
5. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ० 200-201.

भविष्य में भी करद का भुगतान करने का वायदा किया ।[1]

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सूबा मालवा के (करद) राजाओं पर सम्राट जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने अपनी सम्प्रभुता बनाये रखने की नीति का अनुसरण किया । कुछ (करद) राजाओं या जमींदारों ने स्वेच्छा से मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली व कुछ (करद) राजाओं को अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया ।

---------::0::---------

---

1. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 514, 515.

अध्याय - षष्ठम्

सूबा गुजरात के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा गुजरात के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

गुजरात एक समृद्धिशाली प्रदेश था । अबुल फजल के अनुसार इसकी लम्बाई बुरहानपुर से जगत (काठियावाड़ में द्वारका) तक 302 कोस और चौड़ाई जालौर से दमन बन्दरगाह तक 260 कोस थी और ईडर से खम्भात तक 70 कोस थी । इसके पूर्व में खानदेश, उत्तर में जालौर और ईडर, दक्षिण में दमन और खम्भात और पश्चिम में जगत नामक समुद्र तट था ।[1]

विदेशी व्यापार के क्षेत्र में गुजरात के बन्दरगाहों की महत्ता थी । इस पर आधिपत्य जमाने के लिए अकबर प्रयत्नशील था । 1572-73 ई0 में मुजफ्फरशाह गुजराती को पराजित कर देने के पश्चात मुगलों को समुद्र तट तक पहुँचने का मार्ग मिल गया । लेकिन सोरथ का शक्तिशाली बन्दरगाह अभी भी मुगलों के अधिकार से बाहर था । इसलिए सम्राट अकबर इस पर भी अपनी प्रभुता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहा ।

सूबा गुजरात में कच्छ-ए बुजुर्ग, झाबुआ, राजकोट, बगलाना, कच्छ-ए खुर्द, कानकरेज, ईडर, राधनपुर, पालनपुर, काथी, रामनगर, बघेल और कोली के राजाओं का वर्णन अकबर के शासनकाल से ही प्राप्त होता है और जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में उनका अपने प्रदेश में महत्त्वपूर्ण स्थान था ।

कच्छ-ए बुजुर्ग

गुजरात सूबे में उत्तरी भाग में खानगार, कच्छ-ए बुजुर्ग या बड़ी कच्छ में जड़ेजा राजाओं का शासन था ।[2] अबुल फजल ने आईने अकबरी में बड़े कच्छ का

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0) एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 246.
2. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 77.

वर्णन इस प्रकार से किया है - झालावाड़ के पश्चिम में एक विशाल प्रदेश है जिसे कच्छ नाम से जाना जाता है। इसकी लम्बाई 250 कुरोह है। सिन्ध इसके पश्चिम में है। यह प्रदेश जंगल के रूप में है। यहाँ पर घोड़े खूब पाये जाते हैं। अरबी घोड़े अधिक मिलते हैं। ऊँट और बकरियाँ भी पायीं जाती हैं। यहाँ के राजा जाडौन जाति के कहलाते हैं, जिन्हें जड़ेजा राजा कहते हैं। इस जाति की सेना में 10,000 सवार और 50,000 प्यादे हैं। भुज यहाँ की राजधानी है कच्छ-ए बुजुर्ग में दो शक्तिशाली किले हैं - भारा और खनकोट।[1]

मुगलों के जड़ेजा राजाओं से अच्छे सम्बन्ध थे। अब्दुर्रहीम खानखाना (1575-78 ई0) की सूबेदारी के काल में उसके नायब वजीरखान ने मौरवी का कस्बा खानगार को प्रदान किया था।[2]

भारमल

खानगार के बाद उसका पुत्र भारा 1585-86 ई0 में गद्दी पर बैठा।[3] भारा या भारमल के शासन में मुगल जड़ेजा संघर्ष का उल्लेख मिलता है। सन् 1587-1589 ई0 के मध्य खानगार के भतीजो पंचमन तथा जसा ने सुल्तान मुजफ्फर तथा नावानगर के जाम के साथ समझौता करके दो बार गुजरात में अव्यवस्था फैलायी और हलवद तथा राधनपुर जिस पर झाला और बलोच राजाओं का अधिकार था, चढ़ाई की, किन्तु दोनों ही अवसरों पर मुगल सेना ने उन्हें पराजित किया व अधीनता मानने पर विवश किया।[4] सन् 1591 ई0 में भारा ने मुजफ्फर के साथ मुगलों के

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 119.
   गजेटियर आफ द बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल प्रेस, बम्बई, 1880 पृ0 136.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 530.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 472.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 524, 430.

विरुद्ध विद्रोह कर दिया । मुगलों ने उसके विद्रोह का दमन किया ।[1] भारा पराजित होकर भाग गया और उसने सुल्तान मुजफ्फर के यहाँ शरण ली, किन्तु मुगल सेनानायक मिर्जा कोकलताश सुल्तान मुजफ्फर का पीछा करते हुये भारा के प्रदेश तक पहुँच गया, नावानगर के जाम ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी, अत: सम्राट भारा के प्रदेश को नावानगर के जाम को देना चाहता था । इससे भारमल डर गया और सुल्तान मुजफ्फर के साथ जाकर 1592-93 ई0 में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली, और उसने मुगलों को निश्चित कर देने का आश्वासन किया ।[2] उसके बाद से भारा अपने शासनपर्यन्त मुगलों के प्रति स्वामीभक्त बना रहा ।[3] भारा ने 1631 ई0 तक शासन किया । उसके शासनकाल में गुजरात का शासन अहमदाबाद के शासकों के हाँथ से मुगलों के हाथ में चलाग्र गया ।[4] कच्छ के राजा अहमदाबाद के राजा को कोई नियमित कर नहीं देते थे, किन्तु वह अहमदाबाद के राजा को 5000 सवारों की सेवा प्रदान करने के लिए बाध्य थे ।[5] जहाँगीर पहली बार अहमदाबाद गया था तो भारा सम्राट से मिलने नहीं गया । अत: सम्राट ने राजा विक्रमाजीत के नेतृत्व में एक सेना उसके विरुद्ध भेजी थी, भारा पराजित हुआ व उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । उसने सम्राट के लिए 2000 रूपये और 100 घोड़े उपहार के रूप में भेजे । सम्राट उससे बहुत प्रसन्न हुआ और वहाँ से जाते समय सम्राट ने उसे दो हाथी, एक जड़ाऊ कटार, कीमती

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 593.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, पृ0 629,
   अली मुहम्मद खान, मीराते अहमदी (बड़ौदा - 1927-1930) भाग 1, पृ0 180.
   अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 326, 419.
3. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 79.
4. गजेटियर आफ द बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, (गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल प्रेस) बम्बई, 1880, पृ0 136.
5. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, पृ0 127.

पत्थरों से जड़ी हुई चार अँगूठियाँ उपहार के रूप में प्रदान थी ।[1] सन 1618 ई0 में दूसरी बार जहाँगीर अहमदाबाद गया । उस समय राजा भारमल ने सम्राट जहाँगीर से मुलाकात की । उसने सम्राट को 100 कच्छ के घोड़े 100 अशर्फी और 2000 रूपये पेशकश के रूप में दिये ।[2] राजा भारा को गुजरात का सबसे बड़ा राजा या जमींदार कहा जाता था, उसके पास 5000 से 6000 सवार सदैव रहते थे और युद्ध के समय इसकी दुगुनी संख्या के सवार रखने की वह सामर्थ्य रखता था ।[3] जहाँगीर राजा भारमल से बहुत प्रसन्न रहता था । उसने एक घोड़ा, एक नर व मादा हाथी, एक कटार, एक तलवार जिसमें हीरे जड़े हुये थे और चार अँगूठियाँ उपहार में दी थी ।[4] सम्राट ने यात्रियों को मक्का जाने के लिए मार्ग देते समय कच्छ को कर से मुक्त कर दिया ।[5]

राजा भोजराज

सन 1631 ई0 में राजाभारा की मृत्यु हो गई व उसके पश्चात भोजराज गद्दी पर बैठा । सन् 1636 ई0 में उसा या उदगीर में उसने मुगलों के विरुद्ध घेराबन्दी की, अन्ततः घेराबन्दी बहुत सुदृढ़ होने के कारण मुगल सूबेदार खानेदौरां ने उससे समझौता कर लिया व उससे मिल गया और अन्ततः खानेदौरां की सिफारिश पर सम्राट ने भोजराज को 2000/1200 का मनसब प्रदान किया और उसे तेलंगाना के इलाके की जागीर प्रदान की ।[6] इसमे 1645 ई0 तक शासन किया और उसके पश्चात उसका भतीजा खानगार द्वितीय गद्दी पर बैठा । खानगार द्वितीय की मृत्यु के पश्चात तमाची गद्दी पर बैठा, उसकी 1662 ई0 में मृत्यु हो गयी ।[7]

---

1. एम0एस0एस0 कामीसैरियट-हिस्ट्री आफ गुजरात, भाग 2, पृ0 76.
2. गजेटियर आफ द बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, पृ0 136, अली मुहम्मद खाँ, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, पृ0 169, बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0262.
3. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 6, वाकियात-ए जहाँगीरी, पृ0 356.
4. वाट्सन्स, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ0 70.
5. गजेटियर आफ द बाम्बे प्रेसीडेन्सी, पृ0136.

झाबुआ

झाबुआ पर अकबर के शासनकाल में जमींदारों का शासन था । अकबर के शासनकाल में केशवदास झाबुआ का शासक था । सन 1607 ई0 तक उसने झाबुआ पर शासन किया । उसके पश्चात करण सिंह ने 1607 ई0 से 1610 ई0 तक शासन किया और करणसिंह के पश्चात महासिंह ने 1610 ई0 से 1677 ई0 तक शासन किया ।[1] गुजरात का 29वाँ सूबेदार मुराद बख्श जब अहमदाबाद जाते समय झाबुआ पहुँचा तो झाबुआ के राजा ने उसे 15000 रूपये और सात घोड़े कर के रूप में प्रदान किये ।[2] उससे प्रकट होता है कि झाबुआ के राजा का मुगलों से अच्छा सम्बन्ध था व वह मुगलों की अधीनता मानता था ।

राजकोट

राजकोट के राजा जड़ेजा राजपूत कहलाते थे । नावानगर के राजवंश से इनकी उत्पत्ति हुई थी । नावानगर के इतिहास को देखने से ज्ञात होता है कि सम्राट अकबर के शासनकाल में यहाँ जाम सत्ता जी का शासन था । सन 1591 में उसने सुल्तान मुजफ्फर तृतीय के विद्रोह में मुगलों के विरुद्ध उसका साथ दिया । अत: सम्राट ने मिर्जा अजीज कोका के नेतृत्व में एक सेना उसके विरुद्ध भेजी । दोनों पक्षों में धोल शहर के समीप भुछर मोरी नामक स्थान पर युद्ध हुआ और अन्तत: शाही सेना की विजय हुयी । इस युद्ध में जाम सत्ता जी का ज्येष्ठ पुत्र अजो जी मारा

---

1. सुख सम्पत्ति राय भण्डारी, भारत के देशी राज्य, पृ0 17.

2. जेम्स मैकनब कैम्पबेल, गजेटियर आफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 1, खण्ड 1, पृ0 281,

   अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, पृ0 206.

गया । जाम सत्ता जी को अधीनता स्वीकार करने के लिये बाध्य किया गया और उसकी रियासत में मुगलों ने एक शाही अधिकारी की नियुक्ति कर दी । जाम सत्ता जी ने 40 वर्ष शासन किया । 1608 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[1]

जाम सत्ता जी के तीन पुत्र थे - अजोजी, जसाजी और विभाजी । जाम सत्ता की मृत्यु के पश्चात उसका द्वितीय पुत्र जसा जी उसका उत्तराधिकारी बना। उसने 1608 ई0 से 1624 ई0 तक शासन किया ।[2] सन 1618 ई0 में जब जहाँगीर गुजरात भ्रमण के लिये गया तब जसा जी ने जहाँगीर से मुलाकात की थी । उसने सम्राट को 50 घोड़े उपहार में प्रदान किये । वह 6000 शाही सेवा के लिये तैयार रखता था । वह कुछ समय तक शाही पड़ाव में रुका था और जब वह वहाँ से वापस अपने वतन जाने लगा तो सम्राट ने उसे एक जड़ाऊ तलवार, एक माला तथा एक तुर्की और एक अरबी घोड़ा उपहार में प्रदान किया ।[3]

इस समय सरधार के बघेला बड़े शक्तिशाली थे । उन्होंने चूड़ासभा राजदूतों से गोंडल के दक्षिण तक का क्षेत्र जीत लिया था । कर्नल वाकर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि उस समय बघेला लोग आस-पास के प्रदेश में लूट खसोट मचाते थे । इससे लोग बड़े त्रस्त हो गये थे अतएव विभा जी (जाम सत्ता जी का पुत्र) ने इनका दमन करने का निश्चय किया व तत्कालीन मुगल सूबेदार से सहयोग की माँग की । उसने विभा जी को पूरा सहयोग देने का वचन दिया और हर सम्भव प्रयास कर बघेलों का दमन करने का निश्चय किया । एक समय विभा जी ने

---

1. सुख सम्पत्ति राय भण्डारी, भारत के देशी राज्य, पृ0 73,
   एम0एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, भाग 2, पृ0 55.

2. एम0एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, भाग 2, पृ0 55.

3. एम0एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, भाग 2, पृ0 72.

सब बघेला सरदारों को अपने यहाँ निमंत्रित किया और जब वे भोजन करने आये तो उन्हें भोजन में विष देकर मार डाला। इस प्रकार सरधार प्रान्त पर विभा जी का अधिकार हो गया। कुछ दिनों के पश्चात् काठी लोगों ने पूर्व के प्रान्तों पर आक्रमण किया। विभा जी ने बड़ी बहादुरी से उनका दमन कर दिया। इस कार्य के लिये मुगल सम्राट की ओर से उसे कई गाँव इनाम में मिले।[1] 1634 ई0 में विभा जी का देहान्त हो गया। विभा जी का पुत्र महेरामण जी गद्दी पर बैठा। उसने 1640 ई0 में मुगल सूबेदार आजिम खाँ को काठी लोगों के विरुद्ध अत्यधिक सहायता दी। इस सहायता के बदले उसको कई गाँव जागीर में प्राप्त हुये।[2] महेरामण जी के पश्चात उसका पुत्र साहब जी गद्दी पर बैठा।

बगलाना

सूबा गुजरात में राठौरों के दो प्रदेश थे। उनमें से एक बगलाना और दूसरा ईडर था। बगलाना बहुत विस्तृत तथा समृद्ध प्रदेश था। लाहौरी के बादशाहनामा के अनुसार इस प्रदेश में 9 किले 34 परगने और 100 गाँव थे। यहाँ की जमींदारी 1400 से अधिक वर्षों से प्राचीन थी। इसकी लम्बाई 100 कोस और चौड़ाई 300 कोस थी।[3] इसके पूर्व में कालना और नन्दनवार, पश्चिम में सोरठ, उत्तर में त्रिपली (राजपीपला) तथा विन्ध्य के प्रदेश थे, दक्षिण में खम्भा का क्षेत्र था जिसके ऊपरी भाग में नासिक का क्षेत्र और अन्य स्थान थे।

---

1. सुख सम्पत्ति राय भण्डारी, भारत के देशी राज्य, पृ0 74.
2. सुख सम्पत्ति राय भण्डारी, भारत के देशी राज्य, पृ0 74.
3. लाहौरी के बादशाहनामा में इसकी चौड़ाई 70 कोस बतायी गयी है। अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, में इसकी चौड़ाई 30 कुरोह बतायी गयी है।

यहाँ पर 3000 घोड़े और 1000 सैनिक थे। इस प्रदेश में दो बड़े नगर थे अन्तःपुर और चिन्तापुर। यहाँ पर नौ महत्त्वपूर्ण किले थे और सभी पहाड़ी किले थे। इसमें से दो मुख्यरूप से प्रसिद्ध थे। एक मुल्हेर का दुर्ग जिसे औरनगढ़ के नाम से जाना जाता था और दूसरा साल्हेर का दुर्ग। यहाँ के प्रमुख दुर्ग हयगढ, जुल्हेर, बेसुल, ननिया, सलूटा, बानवा व पीपोल थे।[1] यहाँ से साढ़े छः करोड़ दाम राजस्व प्राप्त होता था। यहाँ पर भेर जी का शासन था।[2]

बगलाना परभेर जी के पूर्वज 1400 वर्षों से शासन कर रहे थे। वह अपने को कन्नौज के राजा जयचन्द्र राठौर के वंशज बताते थे। बगलाना गुजरात तथा दक्षिण मध्य स्थित था और बगलाना के शासक उनमें से जिसको भी शक्तिशाली देखते थे उसी की अधीनता स्वीकार कर लेते थे।[3] सन 1530 ई0 में बगलाना के राजा ने बहादुरशाह गुजराती से भेंट की और उससे अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।[4] मुगलों की गुजरात विजय के पश्चात सर्वप्रथम बगलाना के राजा ने मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार की। 1572-73 ई0 सम्राट अकबर ने सूरत में अपनी सैनिक छावनी स्थापित कर दी। भेर जी इस समय सम्राट से मिलने गया। उसने सम्राट के बहनोई मिर्जा सफुद्दीन हुसैन के विद्रोह का दमन कर दिया और उसे बन्दी बना लिया था। सर्फुद्दीन हुसैन भेर जी के प्रदेश में प्रवेश कर गया और दक्षिण की ओर

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 151.
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 2, पृ0 279.
2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, (अनु0), भाग 1, पृ0 352.
   अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 120.
   अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 30,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 151-152.
3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 352,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 101.
4. सिकन्दर बिन मुहम्मद, मीरात-ए सिकन्दरी, पृ0 272.

बढ़ना चाहता था । इससे सम्राट उसके इस कार्य से बहुत प्रसन्न हुआ । उस समय से बगलाना के शासक ने निरन्तर मुगलों की अधीनता स्वीकार की व मुगलों को कर प्रदान किया और जब कभी दक्षिण का महाप्रान्तपति उसे बुलाता था तब वह उसकी सेवा में उपस्थित होता था ।[1] सन 1601-1602 ई0 में बगलाना के शासक ने मुगलों को दक्षिण अभियान में सैनिक सहायता प्रदान की ।[2] सन् 1601-1602 में बगलाना के शासक को सम्राट ने 3000/3000 का मनसब तथा अलम और नक्कारा प्रदान किया ।[3] बगलाना के राजा भेर का अपने भाइयों के साथ गृहयुद्ध होने पर सम्राट ने बगलाना के स्वामिभक्त राजा को सैनिक सहायता भी प्रदान की थी ।[4] सन 1627 ई0 में शाहजहाँ दिल्ली जाते समय अहमदाबाद घूमने गया । उसने शहर के बाहर कांकरिया-झील के समीप अपना पड़ाव डाला । सन 1628 ई0 में सम्राट ने ख्वाजा अबुल हसन को नासिक तथा संगमनेर की विजय करने के लिये भेजा । उसने उसे पराजित किया और चन्दोल के दुर्ग पर अधिकार कर लिया । उस समय बगलाना के शासक ने उसे कर प्रदान किया ।[5]

सन 1630 में मुगल सेनाओं के निजामुल्मुल्क तथा खानेजहाँ लोदी पर आक्रमण के समय भेर जी ने 400 सवारों के साथ मुगलों की सेवा की ।[6] 10 मार्च 1632 ई0

---

1. शाहनवाज खां, मासिर-उल उमरा (अनु0) भाग 1, पृ0 352.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 770-771.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 770-771,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद ने उमराये हुनूद, पृ0 365 पर भेर जी का मनसब 4000/4000 दिया है ।
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 530.
5. जेम्स मैकनब कैम्पबेल, गजेटियर आफ बाम्बे प्रेसीडेंसी, भाग 1, खण्ड 1, पृ0 275.
6. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 6,
   इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 38-42.

को बगलाना का राजा भेर जी अपने पुत्र और भाइयों सहित मुगल दरबार में उपस्थित हुआ और उसने तीन हाथी नौ घोड़े और कुछ जड़ाऊ गहनें सम्राट को उपहार में प्रदान किये ।[1]

सन 1636 में भेर जी पुन: मुगल के दरबार में उपस्थित हुआ । सम्राट ने उसे एक खिलअत प्रदान की और उसे धोड़प आदि के किले को विजित करने के लिए अल्लाह वर्दी खाँ के साथ भेजा ।[2]

बगलाना की सीमा एक ओर दक्षिण में खानदेश से मिलती थी और दूसरी ओर सूरत और गुजरात से मिली हुयी थी और मुगलों के दक्षिणी मार्ग में पड़ती थी । इसलिये जब औरंगजेब पहली बार दक्षिण का सूबेदार बना तब उसने मुहम्मद ताहिर को जो वजीर खाँ के नाम से प्रसिद्ध था मालो जी दक्खिनी, जाहिद खाँ कोका और सैय्यद अब्दुल बहाब खानदेशी के साथ बगलाना पर अधिकार करने भेजा। माल्हेर दुर्ग पर मुगलों का अधिकार भी हो गया । 24 फरवरी 1638 ई0 में भेर जी ने अपनी माता को समझौता करने के लिए भेजा । सन्धि हो जाने के पश्चात शाहजहाँ के शासनकाल के 12वें वर्ष उसने दुर्ग का अधिकार शाहजादे को दे दिया । शाहजहाँ ने उसको तीन हजारी मनसबदार बना दिया तथा उसी की प्रार्थनानुसार सुल्तानपुर का परगना जो दक्षिण में प्रसिद्ध अकाल के समय से उजड़ा पड़ा था जागीर में दिया ।[3]

---

1. मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 71, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 80.
2. मुंशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 106-107.
3. एम0 अतहर अली, द आपरेटस आफ इम्पायर, पृ0 170,
   मुल्ला मुहम्मद सईद, अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 102,
   लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 362,
   इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 7, पृ0 24,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 352.

4 जून 1638 ई0 को भेर जी शहजादा औरंगजेब से मिलने गया । उसने उसे एक खिलअत, जड़ाऊ जमधर, हाथी और घोड़ा प्रदान किये और मुहम्मद ताहिर को अपनी ओर से उस मुल्क का हाकिम नियुक्त किया । बगलाना की जमा-भेर जी के समय बीस लाख टंका थी । टंका वहाँ का सिक्का था । सम्राट की देखरेख में उसकी जमाबन्दी चार लाख रूपया की गयी ।[1]

बगलाना पर मुगल आधिपत्य स्थापित हो गया । बगलाना खानदेश में मिला लिया गया । रामगिरि जो बगलाना के पास है भेर जी के दामाद सोमदेव से ले लिया गया, पर उसका व्यय आय से अधिक था, इससे वह भेर जी को पुन: लौटा दिया गया और उस पर 10,000 वार्षिक कर लगा दिया गया ।[2] भेर जी की 1639 ई0 में मृत्यु हो जाने पर उसके पुत्र बैरामशाह को शाहजहाँ ने मुसलमान बनाकर उसका नाम दौलतमन्द खाँ रखा और 1500/1000 का मनसब देकर सुल्तानपुर के बदले में खानदेश का परगना चुनार उसे जागीर में दिया ।[3] औरंगजेब के शासन-काल में भी वहीं रहता था । उसने वहाँ अनेक भवनों का निर्माण करवाया था ।

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 103.
   इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 246.

2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, (अनु0) भाग 1, पृ0 352,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 156.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 156,
   अब्दुल हमीद लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 723.

कच्छ-ए खुर्द

कच्छ-ए बुजुर्ग के दक्षिण में जड़ेजा राजाओं की एक अन्य शाखा का शासन था। यहाँ के राजा को जाम नाम से जाना जाता था। कच्छ-ए खुर्द या छोटी कच्छ की राजधानी नावानगर थी। अबुल फजल ने छोटी कच्छ के विषय में निम्न लिखित विवरण दिया है - कच्छ-ए बुजुर्ग के दक्षिण में गुजरात की ओर जाम नामक जमींदार का शासन था। 60 वर्ष पूर्व जाम रावल से दो माह लड़ने के पश्चात उसे कच्छ-ए बुजुर्ग से निकाल दिया गया और सोरथ में जैतवा, बघेल, चरन और तामबेल के मध्य वह बस गया। उसने अन्य प्रदेशों पर भी अधिकार किया। उसने नावा-नगर के प्रदेश की स्थापना की। इस प्रदेश को कच्छ-ए खुर्द के नाम से जाना जाता था। अकबर के शासनकाल में वहाँ सतरसाल का शासन था। इस प्रदेश में बहुत सारे शहर और खेती के लिये उपयुक्त प्रदेश थे। इस प्रदेश की राजधानी नावानगर थी। यहाँ की सेना में 7,000 सवार और 8,000 प्यादे थे।[1]

अबुल फजल के अनुसार यद्यपि नावानगर के जाम के पास असीमित साधन थे फिर भी वह बड़े कच्छ की प्रभुता को मानता था तथा नावानगर के उत्तराधिकार के प्रश्न तथा अन्य विषयों में भी वह बड़े कच्छ के राजा के निर्णयों को स्वीकार करता था।[2]

मीरात-ए अहमदी में वर्णित है कि सुल्तान मुजफ्फर तृतीय के समय में नावा-नगर के जाम के अधिकार में 4,000 गाँव दारोबस्त और अन्य 4,000 गाँवों की एक चौथाई हिस्सेदारी थी। यह सुल्तान मुजफ्फर तृतीय को 5,000 सवार और

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ० 119, नैन्सी की ख्यात, भाग 2, पृ० 224-225.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ० 472.

4000 प्यादे की सहायता प्रदान करते थे ।[1] सुल्तान ने जाम को अपने सिक्के निकालने का भी आदेश दिया था ।[2]

अकबर की गुजरात विजय के पश्चात गुजरात के प्रबन्ध का कार्य टोडरमल को सौंपा गया । राजा टोडरमल ने सम्राट से नावानगर के जाम को 5000/4000 का मनसब देने तथा उसे नावानगर की जमींदारी में सुनिश्चित करने की सिफारिश की । इसके बदले में नावानगर के जाम ने टोडरमल को 3 लाख महमूदी तथा 100 घोड़े पेशकश के रूप में दिये ।[3]

यद्यपि मीरात-ए अहमदी के अनुसार टोडरमल की अधीनता स्वीकार कर लेने के पश्चात नावानगर का जाम नियमित रूप से सूबा गुजरात के नाजिम से मिलने लगा और 1593-94 ई0 में शहजादा मुराद की सूबेदारी के समय तक वह उसकी सेवा करता रहा किन्तु अकबरनामा में नावानगर के जाम के विवरण से ज्ञात होता है कि नावानगर का जाम सुल्तान मुजफ्फर गुजराती के प्रति स्वामिभक्त बना रहा और समय समय पर वह मुगलों के विरुद्ध उसकी सहायता करता रहा । 1584 1585 ई0 में जब सुल्तान मुजफ्फर ने सोरथ में संघर्ष प्रारम्भ किया तब जाम ने भी उसका साथ दिया ।[4] किन्तु जब मुगल सूबेदार खानखाना उसे दण्डित करने के लिये उसके प्रदेश में पहुँचा तो जाम ने मुगल सैनिक दबाव के कारण और राज्य दुर्गा

---

1. अली मुहम्मद खाँ, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, पृ0 285.
2. एम0एस0एस0 कामीसेरियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, भाग 1, पृ0 499-500.
3. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, पृ0 285,
   अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 80.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 453,
   अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 80.

और कल्याण राय की मध्यस्थता के कारण मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली और अपने पुत्र को हाँथी घोड़े और अन्य उपहारों के साथ उसने खानखाना के पास भेजा।[1] उसने सम्राट से क्षमा माँगी और सम्राट के प्रति स्वामिभक्त बने रहने का वचन दिया[2] किन्तु उसी वर्ष खानखाना के गुजरात से अनुपस्थित रहने पर जब सुल्तान मुजफ्फर ने पुनः मुगलों के विरुद्ध अभियान छेड़ दिया तब जाम ने पुनः सुल्तान मुजफ्फर का साथ दिया[3] किन्तु सुल्तान मुजफ्फर के भाग जाने पर जाम ने मुगलों की अधीनता मान ली। वह मुगल सेनानायक से मिला और 1585-1586 ई0 में अपना पुत्र बन्धक के रूप में उसके पास भेजा।[4] जाम ने पूर्णरूप से मुगलों की अधीनता तब स्वीकार की जब जाम जूनागढ़ के शासक, बड़ी कच्छ और सुल्तान मुजफ्फर की सम्मिलित सेना 1591-1592 ई0 में मिर्जा अजीज कोका से पराजित हो गयी।[5] इसके बाद से जाम निरन्तर मुगलों के प्रति स्वामीभक्त बना रहा और उसके पुत्र ने कोकलताश की जूनागढ़ के विरुद्ध युद्ध में सहायता प्रदान की।[6].

सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में ।1027 हि0,सन् 1619 ई0। में जहाँगीर गुजरात भ्रमण के लिये गया, वह अकबराबाद जाते समय दोहद पहुँचा। तब नावानगर को जाम शहजादे की मध्यस्थता से महिन्द्री नदी पर सम्राट से मिला और उसने

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 454.
2. निजामुद्दीन अहमद, तबकात-ए अकबरी, भाग 2, पृ0 381.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 471.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 472.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, पृ0 593, 597, 629.
6. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 80, अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 620.

अपनी स्वामिभक्ति प्रकट की । उसने 50 कच्छी घोड़े सम्राट को पेशकश के रूप में प्रदान किये ।[1] सम्राट ने इस अवसर पर उसे एक हीरा, एक बहुमूल्य लाल और दो कीले उपहार में प्रदान की । जब जाम सम्राट से मिलकर जाने लगा तो सम्राट ने उसे एक जड़ाऊ तलवार, एक जड़ाउ लाल और दो घोड़े जिनमें से एक ईराक का था तथा दूसरा तुर्की का, उसे उपहार में प्रदान किये ।[2]

जाम और भारा के पूर्वज 10 पुश्तों तक एक ही थे । सेना और उत्तर-दायित्व के सम्बन्ध में भारा जाम से श्रेष्ठ थे । इनमें से कोई भी गुजरात के सुल्तान को सम्मान नहीं प्रदान करता था । गुजरात के सुल्तान ने अपनी सेना उन्हें पराजित करने के लिए भेजी थी, किन्तु सुल्तान की सेना को बुरी तरह से पराजित होना पड़ा था ।[3]

आजम खान की सूबेदारी के काल में नावानगर के जाम ने उसकी अधीनता नहीं मानी आजमखान ने उसे अधीनस्थ बनाने का प्रयत्न किया और उसने उसके विरुद्ध सेना भेजी और जब आजम खान की सेना जाम के पड़ाव से दो कुरोह तक रह गयी तब आजमखान ने अपने एक चचेरे भाई को उसके पास सन्देश लेकर भेजा कि जब तक वह उसे पेशकश नहीं भेजता, अपनी टकसाल, जिससे कि वह महमूदी नामक सिक्का निकलवाता है, बन्द नहीं रखता है, तब तक उसका बचना मुश्किल है । जाम शासक के पास अधीनता स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं था । जाम ने आजम खान को 100 कच्छी घोड़े और 3 लाख महमूदी सिक्के पेशकश के रूप में देने को वायदा किया ।[4]

---

1. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, (अनु0), पृ0 168, बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 262, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 25.
2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0) भाग 2, पृ0 1-2.
3. अली मुहम्मद खाँ, मीरात-ए-अहमदी, भाग 1, (अनु0), पृ0 169.
4. अली मुहम्मद खाँ, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, (अनु0), पृ0 188, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 276/277.

उसने अहमदाबाद राज्य में स्थित समीपवर्ती विद्रोहियों को निकालने तथा उन्हें उनके अपने स्थान पर भेजने का दायित्व भी सँभाला । इस प्रकार समझौता हो जाने पर आजमखान शाहपुर लौट गया । यह ध्यान देने की बात है कि जाम का टकसाल कुछ समय तक तो बन्द पड़ा रहा किन्तु उसके बाद महमूदी सुल्तान मुजफ्फर के नाम से निकलने लगी । इस सिक्के के एक ओर जाम का नाम हिन्दी में लिखा था । इस सिक्के को जामी भी कहा जाता था । बड़ौदा में इसे चंगेजी नाम से जाना जाता था ।[1] जूनागढ़ में एक शाही टकसाल बनाने का शाही आदेश दिया गया । इसमें महमूदी को गलाने की बात रखी गयी । किन्तु इसका इस तरह से प्रयोग नहीं किया गया जैसा कि मुगल चाहते थे । व्यापारी अपनी सुविधा व आर्थिक दृष्टि से सोने चाँदी के सिक्के ढालते थे ।

---

1. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, पृ0 188.
×

टिप्पणी : गुजरात में एक राजा राय बिहारी का उल्लेख मिलता है । इसकी रियासत समुद्र के निकट थी । बिहारी और जाम एक ही वंश के थे । सेना तथा प्रसाधन के सम्बन्ध में राय बिहारी जाम से किसी भी मामले में कम नहीं था । राय बिहारीनेकिसी भी गुजरात के सुल्तान की अधीनता नहीं स्वीकार की थी ।

कनकरेज

गुजरात के उत्तर में स्थित बनास नदी के दोनों किनारों पर 35 मील तक विस्तृत प्रदेश कनकरेज के नाम से जाना जाता था ।[1] 1400 ई0 में अहमदाबाद के संस्थापक अहमदशाह के नेतृत्व में कल्लरीगाद के सोलंकी राजाओं के विरुद्ध सेना भेजी गयी थी । बेद्धाराजी से दो तीन मील उत्तर पूर्व में युद्ध हुआ, किन्तु अन्त में सोलंकी राजा तेजमल जी, सरन जी, बजरोजी भाग गये और किला नष्ट हो गया । कलरीगाद के वंशज भिन्न-भिन्न स्थानों में जो पालनपुर के अन्तर्गत हैं, धरमपुर, वीरपुर और सगवर में बस गये, जबकि उनके एक वंशज रूपवती नगरी में बसा ।

17वीं शदी के प्रारम्भ में यहाँ पर 26 राजा या जमींदार थे, वहा कोली थाथरदास शासन करता था ।[2] सन 1609 ई0 में गुजरात की पूर्वी सीमा पर कुछ हिन्दू राजाओं की विद्रोहात्मक गतिविधियों को देखकर जहाँगीर ने टोडरमल के पुत्र गोपीनाथ को उनका दमन करने के लिए भेजा । उसके साथ जोधपुर के सूरसिंह तथा अन्य लोगों को भी भेजा गया । वह मालवा से होता हुआ सूरत पहुँचा । वहाँ के स्थानीय जमींदारों से उसने कर वसूल किया । रींवा कन्था में बेलापुर के राजा को पराजित किया गया और बन्दी बना लिया गया किन्तु हिन्दू राजाओं ने कोलीयों कील्बड़ी सेना एकत्रित की और दोनों में युद्ध हुआ । सूरसिंह की सेना तितर-बितर हो गयी । राय गोपीनाथ ने और सेना एकत्रित की और मण्डवा के राजा के विरुद्ध अभियान भेजा और उसे बन्दी बनाया । एक अन्य अभियान कनकरेज के कोली के विरुद्ध भेजा गया । उन्हें पराजित किया गया व बन्दी बना लिया गया किन्तु कुछ समय पश्चात उन्हें बन्दीगृह से इस शर्त पर मुक्त कर दिया गया कि

---

1. एम0एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, भाग 2, पृ0 48.
2. बाम्बे गजेटियर, भाग 5, पृ0 331.

किसी प्रकार की अड़चन उत्पन्न नहीं करेंगे और मुगलों की अधीनता स्वीकार करेंगे ।[1]

ईडर

ईडर राजपूतों का प्रदेश था । यहाँ पर राय नारायन दास राठोर का शासन था ।[2] उसके पास 500 घोड़े और 10,000 सवार थे । वह राठौर राजा था । प्रारम्भ में ईडर के राजाओं ने गुजरात के राजा की प्रभुसत्ता को स्वीकार किया । वह समय समय पर मेवाड़ के राणा की प्रभुसत्ता को भी मानते रहे ।

सन् 1573 ई0 में राय नारायन दास के विरुद्ध एक अभियान सूबेदार खान-ए आजम मिर्जा अजीज कोका के नेतृत्व में भेजा गया क्योंकि राय नारायन दास गुजराती अमीरों इखितयार उल मुल्क और खाने आजम की मुगलों के विरुद्ध सहायता कर रहा था किन्तु खाने आजम उसको पराजित करने में सफल नहीं हुआ । इस विद्रोह के प्रत्युत्तर में सम्राट अकबर ने 1575 ई0 में तथा पुन: 1576 ई0 में ईडर के विरुद्ध अपनी सेना भेजी । राय नारायन दास पराजित होकर भाग गया तथा ईडर पर मुगलों का आधिपत्य स्थापित हो गया । अकबर ने राय नारायन दास को केवल मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेने की बात कही और उसे 2000/500 का मनसबदार बना दिया ।[3] यद्यपि राय नारायन दास पराजित हो गया और

---

1. कानकरेज तथा अन्य स्वायत्त जमींदारों के विस्तृत विवरण के लिये देखिये एम0 एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, भाग 2, पृ0 48, तथा बाम्बे गजेटियर, भाग 1, खण्ड 1, पृ0 273.

2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 2, पृ0 64.

3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 2, पृ0 64,
गजेटियर आफ द बाम्बे प्रेसीडेन्सी, कच्छ, पालनपुर एण्ड माही कन्था, पृ0 404.

1579-80 ई0 तक गुजरात के मुगल अधिकारी शहाबुद्दीन अहमद खान ने उसे पूरी तरह से परास्त कर दिया किन्तु सम्राट के आदेश से वह अपने प्रदेश में ही बना रहा ।[1]

वीरम देव

राय नारायन दास के पश्चात वीरमदेव ईडर की गद्दी पर बैठा । वह अत्यधिक वीर, कठोर तथा निर्दयी था । उसने अपने सौतेले भाई रामसिंह को मार डाला और अन्य छोटे बड़े राजाओं के साथ युद्ध करता रहा । जब वह काशी यात्रा पर गया और वहाँ से वापस आंबेर लौटा तो उसके सौतेले भाई रायसिंह की बहन ने जो आंबेर के राजा को व्याही थी, अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने के लिये वीरमदेव को मरवा डाला ।[2]

कल्याणमल

वीरमदेव के कोई पुत्र नहीं था । अत: उसके बड़े भाई गोपालदास को पराजित कर उसका छोटा भाई कल्याणमल ईडर का राजा बना ।[3] गोपालदास इस आशा से मुगल सेवा में चला गया कि सम्राट उसे ईडर का राज्य पुन: प्राप्त करने में सहायता देंगे । वह सेना के साथ मण्डवा की ओर बढ़ा । उसने मण्डवा पर अधिकार भी कर लिया । वह मण्डवा से ईडर की ओर बढ़ना चाहता था किन्तु इसी समय मण्डवा में वहाँ के मुसलमान जमींदार लाल मियां[4] ने उस पर

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 267-268, अहसान रजा खां, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 87.
2. कविवर श्यामलदास, वीरविनोद भाग 2, खण्ड 2, पृ0 996.
3. गजेटियर आफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, कच्छ-पालनपुर, माही कन्था, पृ0 404, कविवर श्यामल दास, वीरविनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 996.
4. यह लाल मियां संभवत: मण्डवा के मियां का वंशज था ।

आक्रमण कर दिया और गोपालदास 52 राजपूतों के साथ भाग गया ।[1]

ईडर के राजा कल्याण मल ने मेवाड़ से पण्डवा, पहाड़ी, जावा, टोरा, पथिया, बलेचा और अन्य स्थान विजित कर लिये । यह स्थान वीरदेव के शासन काल में मेवाड़ के अन्तर्गत थे ।

जब जहाँगीर अहमदाबाद में रुका हुआ था, उस समय ईडर का राजा कल्याणमल सम्राट से मिलने आया और उसने पेशकश के रूप में सम्राट को नौ घोड़े और एक हाथी दिया । राजा कल्याण के वंशज पिछले 200 वर्षों से अपनी बहादुरी के लिये प्रसिद्ध थे । यह समय समय पर मुगलों की अधीनता मान लेते थे । किन्तु उन्होंने कभी भी पूर्णरूप से मुगलों की अधीनता नहीं मानी और न कभी वह व्यक्तिगत रूप से सम्राट से मिले । सम्राट अकबर की गुजरात की विजय के पश्चात उनके व्यवहार में कुछ परिवर्तन आया । वह अपने को शाही जमींदार मानते थे और आवश्यकता पड़ने पर सम्राट को सैनिक सहायता प्रदान करते थे ।[2]

राव जगन्नाथ

कल्याणमल के पश्चात राव जगन्नाथ ईडर का शासक बना । कल्याणमल के शासनकाल में ईडर में दो गुट बन गये थे । प्रथम गुट में दसई, मान्दोती और करियादास के जमींदार थे । उन्हें पसीना तथा देरोल के स्वायत्त शासकों का समर्थन प्राप्त था । दूसरे गुट में राना सान का रेहवार ठाकुर गरीबदास ईडर के मुस्लिम कसवटी और बदली के स्वामी मोतीचन्द थे । 1656 ई0 के लगभग गुजरात के सूबेदार ने ईडर से पहले की अपेक्षा अब अधिक नियमित रूप से कर वसूल

---

1. गजेटियर आफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, पृ0 404.

2. एम0एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, भाग 2, पृ0 64.

करना प्रारम्भ कर दिया । बड़ौदा का वेतलभारोत ईडर के राजाओं के लिए सम्राट शाहजहाँ का सुरक्षा अधिकारी था । वेतल भारोत धीरे धीरे इतना शक्तिशाली होने लगा कि राव जगन्नाथ उससे तंग आ गया व उससे पीछा छुड़ाने का प्रयास करने लगा । ऐसे में वेतल भारोत ने शाहजहाँ से सहायता माँगी और ईडर पर अधिकार कर लेने का वचन दिया । अतः सम्राट ने 1654-1657 ई0 के मध्य शाहजादा मुराद बख्श को 5000 घोड़े सहित वेतल भारोत की सहायता के लिये भेजा । राव जगन्नाथ के गुप्तचरों ने उसे सन्निकट खतरे के बारे में सावधान किया, परन्तु वेतल ने राव को विश्वास दिलाया कि ऐसी कोई बात नहीं है । अतः राव जगन्नाथ ने कोई तैयारी नहीं की । फलतः राव जगन्नाथ की सेना पराजित हुई और ईडर पर मुगलों का अधिकार हो गया ।[1] राव जगन्नाथ भागकर पौल गाँव की ओर पहाड़ों में चला गया और एक मुसलमान अधिकारी सैय्यद हातु को शहजादा ने ईडर में नियुक्त किया । राव जगन्नाथ का देहान्त पौल में हुआ ।

पुंजा तृतीय

राव जगन्नाथ की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र पुंजा तृतीय दिल्ली गया । वह अपने पिता के राज्य पर अधिकार करना चाहता था, परन्तु आमेर के राजा के विद्रोह के कारण ईडर का राज्य मिलने की कोई आशा न देखकर वह उदयपुर चला गया और महाराणा की सहायता से ईडर पर 1658 ई0 में अधिकार किया ।[2]

---

1. गजेटियर ऑफ बाम्बे,प्रेसीडेन्सी, भाग 5, पृ0 405.

2. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 996,

गजेटियर ऑफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, पृ0 405.

किन्तु छह महीनें के बाद उसे जहर खिलाकर मार डाला गया ।

<u>अर्जुनदास</u>

पुंजा तृतीय के स्थान पर उसका भाई अर्जुन दास ईडर का शासक बना । थोड़े ही समय पश्चात 'रहबरो की लड़ाई' में वह मृत्यु को प्राप्त हुआ । उस समय जगन्नाथ के भाई गोपीनाथ ने अहमदाबाद का प्रदेश लूट लिया और मुसलमानों को ईडर से बाहर निकाल दिया । अब गरीबदास को भय उत्पन्न हुआ कि गोपीनाथ अर्जुनदास का बदला लेगा । वह अहमदाबाद गया और वहाँ से सैन्य सहायता प्राप्त की और ईडर पर अधिकार कर लिया । गोपीनाथ पहाड़ों में भाग गया और अफीम न मिलने के कारण जंगल में मर गया ।[1]

राधनपुर

झाला के प्रदेश के उत्तर में पाटन की सरकार में राधनपुर के बलोच शासकों का प्रदेश था जिस पर अकबर के शासनकाल में राधन खान बलोच का शासन था ।[2] राधनपुर पर हुमायूँ के शासनकाल से बाबी परिवार का शासन था । गुजरात के इतिहास में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान था । राधन खान बलोच का राधनपुर पर ही आधिपत्य नहीं था बल्कि तरवर, तेहराद, मौजपुर, मुझर और काकरेज पर भी उसका आधिपत्य था ।[3] अबुल फजल के अनुसार इनमें से अधिकांश प्रदेशों पर कोली जमींदारों का शासन था ।[4] अकबर की गुजरात विजय के पश्चात राधन खान

---

1. कविवर श्यामल दास, वीर विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 996, गजेटियर ऑफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, पृ0 405.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 350.
3. निजामुद्दीन अहमद, तबकात-ए अकबरी, भाग 3, पृ0 245-246.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 121.

बलोच 1588-1589 ई0 में राधनपुर की सुल्तान मुजफ्फर, पंचानन और जासा खान-गार के भतीजे और जो नावानगर के जाम के चाचा पे~~महसवानसे~~ के आक्रमणों से सुरक्षा करता रहा ।[1] राधनपुर के राजाओं ने सुल्तान मुजफ्फर गुजराती या मुगलों दोनों की ही अधीनता स्वीकार कर ली थी क्योंकि बिना अधीनता स्वीकार किये हुये राधनपुर के बलोचों का स्वतंत्र रूप से वहाँ शासन करना अत्यधिक कठिन था, क्योंकि सुल्तान मुजफ्फर गुजराती तथा मुगल दोनों ही वहाँ अपनी अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करना चाहते थे । ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम राधनपुर के बलोच राजा ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की क्योंकि इसके बिना वह कच्छ-ए खुर्द और कच्छ-ए बुजुर्ग के राजाओं का विरोध नहीं कर सकते थे । इसके अतिरिक्त सुल्तान मुजफ्फर और उसके मित्रों से दूर रहने में भी उसे मुगल सहयोग की आवश्यकता थी ।[2] सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में किसी भी बलोच राजा का उल्लेख समकालीन ग्रन्थों में नहीं मिलता । सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में बहादुर खान बाबी का उल्लेख मिलता है। उसे सम्राट शाहजहाँ ने थरड का प्रशासक नियुक्त किया था । उसके पश्चात शेर खान बाकी राधनपुर का जमींदार (1654-1657 ई0 तक) बना । सम्राट ने उसे गुजरात में मुराद बख्श की सहायता का दायित्व सौंपा था ।[3]

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 89.

2. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 89.

3. गजेटियर ऑफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, कच्छ पालनपुर माहीकन्ता, पृ0 325.

पालनपुर

पालनपुर पर सम्राट अकबर के शासनकाल में मलिक खान जी का शासन था। उसकी मृत्यु 1576 ई0 में हुयी। उसके दो पुत्र गजनी खान, फिरोजखान और एक पुत्री ताराबाई थी। उसकी मृत्यु के पश्चात् गजनी खान पालनपुर का शासक बना। मीरात-ए अहमदी के अनुसार उसके पास 7000 सवार थे और उसे 1 लाख राजस्व प्राप्त होता था।[1] सुल्तान मुजफ्फर की ओर से उत्तरी गुजरात की उन्नति करने का प्रयास करने पर सम्राट अकबर ने उसे कैद कर लिया किन्तु कुछ समय पश्चात अधीनता स्वीकार कर लेने पर 1589-1590 ई0 में उसे जालौर में पुनर्स्थापित किया गया। पालनपुर के रिकार्ड के अनुसार गजनी खान ने अफगान विद्रोहियों को पीछे भगा देने के कारण उसे दीवान की उपाधि प्राप्त हुयी और लाहौर का प्रशासन प्राप्त हुआ। गजनीखान के शासनकाल में उसके भाई मलिक फिरोजखान ने पालनपुर और दीसा पर अधिकार कर लिया। गजनीखान की 1614 ई0 में मृत्यु हुयी। उसकी मृत्यु के पश्चात पहाड़खान उसका उत्तराधिकारी बना।[2] 1616 ई0 में पहाड़खान को मातृहत्या का दोषी पाया गया। दण्डस्वरूप उसे सम्राट के आदेशानुसार हाथी के नीचे कुचलवा दिया गया। पहाड़खान के पश्चात् उसका चाचा फिरोजखान पालनपुर का जमींदार बना। उसे कमालखान भी कहा जाता था। वह एक प्रसिद्ध सिपाही था।[3] फिरोजखान तथा उसके पुत्र मलिक मुजाहिद खान ने अपने वतन जमींदारी की बहुत वृद्धि की और उसे नवाब की उपाधि प्राप्त हुयी। मुराद बख्श की सूबेदारी काल में 1654 ई0 में मुजाहिद खान को पाटन का फौजदार बनाया गया।

---

1. बर्ड्स, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ0 125, ब्लोचमैन अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 493.
2. गजेटियर ऑफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 5, कच्छ पालनपुर एण्ड माहीकन्था, 1880, पृ0 320.
3. गजेटियर ऑफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी कच्छ पालनपुर माहीकन्ता, पृ0 320, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 169.

काथी

काथी प्रायद्वीप के केन्द्रीय पूर्वी भाग में शासन करते थे जो काठियावाड़ कहलाता था। काठियावाड़ का क्षेत्र कालान्तर में बहुत विस्तृत हो गया था। नैनसी के अनुसार उनके पास सोरथ में 2000 गाँव थे।[1] अबुल फजल के अनुसार काथी बहुसंख्यक थे और लड़ाकू प्रवृत्ति के थे।[2] उनकी सैनिक शक्ति 6000 सवार और 6000 प्यादा थी।[3] अबुल फजल ने खेरदा के लाम्बा कथी का वर्णन अकबरनामा में किया है। उसके पास 4000 सेना थी।[4]

काथी बराबर मुगलों का विरोध कर रहे थे। मुगलों के विरुद्ध सुल्तान मुजफ्फर शाह के विद्रोह में काथी लोगों ने मुजफ्फर शाह को 1591-92 ई० तक सैनिक सहायता प्रदान की।[5] किन्तु 1592-93 ई० में जब सुल्तान मुजफ्फर की जड़ेजा सेना तथा काथी सेना सम्मिलित रूप से मुगलों से परास्त हो गयी और अमीन खाँ गोरी के पोतों ने मुगलों की अधीनता मान ली। जूनागढ़ मुगलों के अधीन हो गया तब कथी राजा लाम्बा काथी ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली और मुगल सम्राट ने उसे एक खिलअत तथा समृद्धिशाली जागीर प्रदान की।[6]

---

1. मुहणोत नैन्सी की ख्यात, भाग 2, पृ० 225.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ० 118-119.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ० 119.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ० 594.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ० 539, 594, 597, 620.
6. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु०), पृ० 620.

उसके पश्चात काथी राजा का कुछ समय तक कोई विवरण प्राप्त नहीं होता । मीरात-ए अहमदी से ज्ञात होता है कि आजमखान ने 1632-45 ई0 के मध्य काठियावाड़ की ओर प्रस्थान किया और काथी राजा का दमन किया क्योंकि काथी राजा उस समय धन्धुका राज्य में लूटपाट मचा रहे थे ।[1] मीरात-ए अहमदी में ही काथी राजा का उल्लेख खलील खान के सूबेदारी के काल में प्राप्त होता है किन्तु कोई विशेष विवरण नहीं वर्णित किया गया है ।

रामनगर

रामनगर अकबर की गुजरात विजय के समय एक जमींदारी थी ।

अली मुहम्मद खान के अनुसार जब राजा टोडरमल गुजरात की राजस्व व्यवस्था की देखभाल के लिये वहाँ गया तब रामनगर के राजा ने राजा टोडरमल को बुलाया और उसे 12000 रूपये 4 घोड़े और दो तलवार पेशकश के रूप में सम्राट के लिए भिजवाये । राजा टोडरमल ने उसके बदले में उसे एक खिलअत, एक घोड़ा और 1500 जात का मनसब प्रदान किया । टोडरमल ने उसे एक जागीर 'मकान-ए जमींदारी' प्रदान की और यह निश्चित किया कि रामनगर के राजा सूबा गुजरात के नाजिम की सेवा में 1000 सैनिकों के साथ रहेगा । रामनगर ने सूरत के मुतसद्दी के लिये पेशकश देना स्वीकार किया ।[2]

सन 1609-10 ई0 में जहाँगीर के शासन-काल में मुगलों ने 25000 सैनिक रामनगर के पूर्वी प्रान्त में नियुक्त किये । ऐसा मुगलों ने इसलिये किया क्योंकि दक्कनी, नासिक के मार्ग से, गुजरात में प्रवेश कर रहे थे । वहाँ के राजा को भी

---

1. जेम्स एम0 कैम्पबेल, गजेटियर ऑफ बाम्बे प्रेसीडेन्सी, भाग 9, खण्ड 1, (बम्बई 1901), पृ0 259.
2. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, भाग 2, पृ0 228.

आवश्यकता पड़ने पर सैनिक सहायता सूबेदार को प्रदान करनी पड़ती थी । यहाँ जो 25000 की सेना रखी गयी वह भी गुजरात के हिन्दू राजाओं तथा उनके सम्बन्धियों द्वारा प्रदत्त थी । इसमें 4000 सैनिक अहमदाबाद के सूबेदार के थे, 5000 सैनिक उसके दरबार के मुगल अमीरों के थे, 3000 सैनिक साल्हेर ~~और~~ मल्हेर और बगलाना के थे, 2500 सैनिक कच्छ के शासक के थे, 2500 सैनिक नावानगर के जाम के थे, 2000 सैनिक ईडर के शासक थे, ~~2000 सैनिक ईडर के थे,~~ 2000 सैनिक डूँगरपुर के थे, 2000 सैनिक बाँसवाड़ा के थे, 1000 सैनिक रामनगर के शासक के थे, 1000 सैनिक राजपीपला के शासक के थे और 650 सैनिक अलीराजपुर और अलीमोहन (छोटा उदयपुर) के शासक के थे । इस प्रकार कुल 25650 सैनिक गुजरात में नियुक्त कियेगये थे ।[1]

ऐसा प्रतीत होता है कि शाहजहाँ के राज्यकाल तक रामनगर के जमींदार मुगलों के प्रति निरन्तर निष्ठावान बने रहे ।

बघेल

सोरथ के उत्तर पश्चिम में बघेल जाति के राजाओं का शासन था । उनके राज्य के अन्तर्गत जगत (द्वारका) और अरमरई के परगने थे ।[2] अबुल फजल के अनुसार अरमरई प्रायद्वीप का सबसे महत्त्वपूर्ण द्वीप था ।[3] सनखूदर (बेत) का द्वीप बघेल शासकों के प्रदेश में स्थित था ।[4] अरमरई के प्रदेश के निकट एक अन्य द्वीप जिसका क्षेत्रफल 70 वर्ग कोस था, वह भी बघेला शासकों के राज्य के अन्तर्गत स्थित

---

1. बाम्बे गजेटियर, भाग 1, खण्ड 1, पृ0 274.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 118.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 118.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 118.

था ।[1] नैन्सी के अनुसार बघेल शासकों के पास 1000 गाँव थे ।[2]

सम्राट अकबर के शासनकाल में बघेल राज्य पर दो राजा थे - शिवा बघेल और संग्राम बघेल । अबुल फजल के अनुसार शिवा बघेल लार का स्वायत्त शासक था और द्वारका उसके प्रदेश का एक भाग था ।[3] बेत उसके राज्य की राजधानी थी ।[4] दूसरा बघेल राजा अरमरई का राजा संग्राम था । मीरात-ए सिकन्दरी में उसे जगत का राजा कहा गया है ।[5] अबुल फजल के अनुसार बघेलों के पास 1000 सवार और 2000 प्यादे थे ।[6]

बघेल राजा 1592-93 ई0 तक मुगलों से स्वतन्त्र थे । 1592-93 ई0 में शिवा बघेल और संग्राम बघेल द्वारा सुल्तान मुजफ्फर गुजराती की सहायता का उल्लेख मिलता है । मुगलों ने शीघ्र ही द्वारका पर अधिकार कर लिया और शिवा बघेल मुगलों के विरुद्ध सुल्तान मुजफ्फर गुजराती की ओर से लड़ते हुये मारा गया ।[7]

जहाँगीर के शासनकाल में राजा दुर्जोधन नामक बघेला शासक का उल्लेख मिलता है । राजा दुर्जोधन के पश्चात अमर सिंह बघेला उसका उत्तराधिकारी बना ।[8] सम्राट जहाँगीर के शासनकाल के 21वें वर्ष में उसे शाही कृपा प्राप्त हुयी

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 118.
2. नैन्सी की ख्यात भाग 2, पृ0 425.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 628-629.
4. सिकन्दर इब्न मुहम्मद मीरात-ए सिकन्दराबाद एस0सी0 मिश्रा और एम0एल0 रहमान (बड़ौदा (1961), पृ0 472, अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0628-9.
5. सिकन्दर मंझूर गुजराती, मीरात-ए सिकन्दरी, पृ0 473, अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 628-629.
6. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 118.
7. सिकन्दर मंझूर, मीरात-ए सिकन्दरी, पृ0 472, अली मुहम्मद खाँ, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, पृ0 180.

और शाहजहाँ के शासनकाल के 8वें वर्ष अब्दुल्ला खाँ बहादुर फिरोज जंग के साथ उसे राजा रतनपुर के विरुद्ध चढ़ाई करने के लिये भेजा गया । उसे जुझार सिंह बुन्देला के दमन के लिये भी शाही सेना के साथ भेजा गया ।[1]

राजा अमरसिंह बघेला की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र अनूपसिंह बघेला उसका उत्तराधिकारी बना । शाहजहाँ के शासनकाल के 24वें वर्ष उसने चौरागढ़ के विद्रोही जमींदार को अपने यहाँ आश्रय प्रदान किया । राजा पहाड़सिंह ने उसके प्रमुख स्थान रीवां पर अधिकार कर लिया । अनूपसिंह उससे पराजित हुआ और पहाड़ों में जाकर बस गया और सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल के 30वें वर्ष में इलाहाबाद के सूबेदार सलावत खाँ के साथ सम्राट शाहजहाँ के दरबार में उपस्थित हुआ । सम्राट ने उसे राजा की उपाधि प्रदान की और 2000/2000 का मनसब प्रदान किया और बान्धो इत्यादि उसके प्राचीन महलों को उसे जागीर के रूप में प्रदान किया ।[2]

कोली

कोली जूनागढ़ के समीप गिर जंगल में प्रमुख रूप से शासन करते थे ।[3] कोली लोगों को सोरथ के बाहर बहुत से गाँवों पर अधिकार था । वाला, बघेला, वाजी, चरन, कोली तथा अहीर ने 1592 ई0 में मुगलों द्वारा जूनागढ़ की विजय के समय उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की थी ।[4]

---

1. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 209.
2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 209.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 117.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 119.

सईफ खान सूकी सूबेदारी-काल में कहान जी कोली ने चॅबल के व्यापारियों के सामान को नष्ट भ्रष्ट करना प्रारम्भ कर दिया । आजम खान जिसका मनसब 6000 जात, 6000 सवार, दो अस्पा, सेह अस्पा था, अहमदाबाद का सूबेदार बनाया गया । जब वह सैय्यदपुर पहुँचा जो पाटन की सरकार के अन्तर्गत था, जो अहमदाबाद से 40 कुरोह दूर था, तक व्यापारियों ने उसे कोली जमींदारों के दमन की बात बतायी । अत: उसने कहान जी कोली का दमन किया और उसे उसके निवासस्थान से निकाल दिया । कहान जी आजम खान की सेना से परेशान होकर खेरलू परगना के जावेर नामक स्थान में भाग गया । आजम खान की सेना ने उसका पीछा किया । जब कहान जी ने बचाव का कोई उपाय नहीं देखा तो वह रात्रि में स्वयं आजम खान से मिलने गया । उसने नष्ट किये गये धन का पता बताया, भविष्य में अव्यवस्था न उत्पन्न करने का वचन दिया और 10000 रूपये पेशकश के रूप में प्रदान किया ।[1]

कुछ समय पश्चात 1646-48 ई0 में चॅवल के कोली लोगों ने पुन: विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया और अहमदाबाद के हवेली परगना, धोलका परगना और कड़ी तथा झालावाड़ के परगनों को लूटना प्रारम्भ कर दिया । अत: शायस्ता खाँ उनका दमन करने के लिये गया । उसने कहान जी को जमींदारीसेबहिष्कृत कर दिया और उनके स्थान पर जगमल गिरासिया को जमींदारी प्रदान की ।[2] कुछ समय पश्चात चॅवल का जमींदार कहान जी सैय्यद शेखमन के माध्यम से मुगलों से मिलने आया । उसने भविष्य में विद्रोह न करने का वचन दिया और 10000 रूपये पेशकश के रूप में देने का वचन दिया ।[3]

---

1. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए-अहमदी, भाग 1, पृ0 184.
   एम0एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, भाग 2, पृ0 116.
2. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए-अहमदी, पृ0 204,
   एम0एस0एस0 कामीसैरियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, भाग 2, पृ0 128.
3. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, भाग 1, पृ0 206.

मुगलों द्वारा गुजरात की विजय से पूर्व वहाँ के जमींदारों की स्थिति स्वतन्त्र शासकों की भाँति थी। सल्तनत काल में उनके ऊपर समय समय पर दबाव पड़े तो वे झुक गए थे किन्तु समय पाते ही वे अपना पारम्परिक प्रभुत्व फिर बढ़ा लेते थे। अकबर द्वारा गुजरात की विजय के पश्चात उनकी स्थिति बदल गयी। मुगल प्रशासन ने उन्हें अपनी जमींदारियों में बने रहने तो दिया, परन्तु विवश कर दिया कि वह प्रशासन के अधीन रहे, नियमित रूप से उसे सैनिक सहायता प्रदान करते रहें तथा करों का भुगतान करते रहें। सूबा गुजरात में इस प्रकार से विभिन्न जमींदारियों के जमींदार सुरक्षित एवं अधीनस्थ रहे। इन जमींदारों के प्रति जहाँ-गीर व शाहजहाँ ने सम्राट अकबर की ही नीति अपनायी। परिणामस्वरूप मुगल प्रशासन का इन पर आधिपत्य बना रहा।

----------::0::----------

अध्याय सप्तम

सूबा काबुल के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा काबुल के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

मुगल साम्राज्य का उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश अपनी विशेष स्थिति के कारण अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहा है । 16वीं शदी के प्रारम्भ में इसके दो प्रमुख भाग थे - प्रथम भाग में कश्मीर की घाटी तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश तथा दूसरे में तिब्बत-ए-खुर्द एवं तिब्बत-ए-कलाँ । 16वीं शदी के अन्त में जिस समय मुगल सम्राट अकबर ने कश्मीर घाटी को विजित करने का दृढ़ संकल्प किया उस समय वहाँ चक शासकों का जिनकी राजधानी श्रीनगर थी, का शासन था । 1586 ई0 में मुगल सेनानायक कासिम खाँ ने चक शासक याकूब खाँ को श्रीनगर से खदेड़कर उस पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया । कश्मीर की घाटी को विजित करने के उपरान्त मुगल प्रशासन की प्रमुख समस्या यह थी कि किस प्रकार से कामराज, बारंग, नगम, बरनाल और खत्तार के प्रमुख जमींदारों को अधीनस्थ बनाया जाये । इसी प्रकार से निकटवर्ती प्रदेश में स्थित तिब्बत-ए-खुर्द, तिब्बत-ए कलाँ, किश्तवार, पकली, राजौरी के जमींदारों को अधीनस्थ बनाने की समस्या उनके सामने थी ।

प्रस्तुत सूबे में चक, तिब्बत-ए-खुर्द एवं तिब्बत ए कलाँ, किश्तवार, धन्तूर एवं पकली के राजाओं का विवरण प्रस्तुत है ।

चक

कामराज के चक जमींदार काबुल के सबसे शक्तिशाली राजा थे । सन 1561-1586 ई0 के मध्य वह बहुत शक्तिशाली हो गये थे । बहारिस्तान-ए-शाही के अनुसार मुगलों के कश्मीर अधिग्रहण के समय शम्सी चक और शम्सी दूनी कामराज के जमींदार थे ।[1] इन दोनों ने 1588 ई0 में मिर्जा युसूफ खान रिजवी के आक्रमण करने पर मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी । उन्होंने मिर्जा युसूफ खान को घोड़े

---

1. लेखक अज्ञात, बहारिस्तान-ए-शाही, पृ0 189ए.

व विशेष खिलअतप्रदान किया । उन्होंने मुगल दरबार में उपस्थित होकर सम्राट अकबर के प्रति निष्ठा प्रकट की । सम्राट ने उन्हें मनसब प्रदान किया ।[1] मुबारक खान हुसैन चक ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी और 1593 ई0 में सम्राट ने स्वयं चक राजा शम्स खान[2] की पुत्री से विवाह किया और शाहजादा सलीम का विवाहमुबारक खान हुसैन चक[3] की पुत्री से किया । किन्तु शम्स खान चक और मुबारक खान चक के अधीनता स्वीकार कर लेने पर भी चक पूरी तरह से मुगलों के अधीनस्थ नहीं हो पाये । सन 1604-05 ई0 में सम्राट ने उनके विरुद्ध सेना भेजी व उनका दमन कर दिया ।[4]

जहाँगीर के शासनकाल में भी चक राजा के विद्रोह का वर्णन मिलता है । चक राजा स्वतन्त्रता प्राप्त करने का विचार अपने मस्तिष्क से नहीं निकाल सके थे। यद्यपि युसूफ शाह चक एवं शम्स चक ने मुगलों की अधीनता मान ली थी । अकबर की मृत्यु खुसरो के विद्रोह और मुगल सूबेदार मुहम्मद कुली खान की शिया विरोधी नीति ने चक राजा को अपनी शक्ति दृढ़ करने का अवसर प्रदान किया व मुगलों की शक्ति कम हुई ।[5] सन 1605 ई0 में जहाँगीर ने कामराज के शासक अम्बा खान चक को 1000/300 का मनसब प्रदान किया ।[6] जहाँगीर के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में

---

1. लेखक अज्ञात, बहारिस्तान-ए-शाही, पृ0 189ए.
2. यह सम्भवत: बहारिस्तान-ए-शाही में वर्णित शम्सी चक है ।
3. अबुल फजल, अकबरनामा।अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 626.
4. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 18.
5. आर0के0 पर्मू, हिस्ट्री आफ कश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, शोध-प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, ।1947।, पृ0 246.

6. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 75.

अम्बा खान चक[1] के नेतृत्व में मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । अपने इस कार्य में उन्हें पश्चिमी तिब्बत के भट्टों[2] की भी सहानुभूति प्राप्त थी किन्तु मुगल प्रान्तपति मिर्जा अली अकबर खान ने इस विद्रोह का दृढ़तापूर्वक दमन कर दिया ।[3] सन 1616 ई0 में अम्बा खान चक के नेतृत्व में चकों ने पुन: विद्रोह किया । अत: सम्राट ने अहमद बेग खान को प्रान्तपति बनाकर उनका दमन करने के लिये भेजा । उसने चकों का स्थानीय रूप से दमन कर दिया ।[4] कालान्तर में एतिकाद खां की सूबेदारी के काल में 1636 ई0 में हबीब चक व अहमद चक के कामराज में विद्रोह का वर्णन मिलता है ।[5] इन विद्रोहियों का ऐतिकाद खां ने दमन कर दिया । किन्तु वह उन्हें बन्दी नहीं बना सका । हबीब चक और अहमद चक ने अब्दाल के यहाँ शरण ली थी । वह दोनों अब्दाल के साथ मिलकर कश्मीर की ओर गये जहाँ उन्हें बन्दी बना लिया गया । हबीब चक ने सम्राट अकबर के समय में मिर्जा अली की सूबेदारी के समय में विद्रोह कर दिया था और तिब्बत में छिप गया था परन्तु त्रस्त होकर 100 लोगों के साथ वह सम्राट से क्षमा माँगने गया । सम्राट ने उसे माफ कर दिया । सन 1637 ई0 में सम्राट ने उसे खिलअत, जड़ाऊ जमधर भेजा और उसके मनसब में वृद्धि करके उसका मनसब 3000/2500 कर दिया ।[6] इसके बाद से हबीब चक तथा

---

1. यह अब्दाल खान चक का पुत्र था । यह चक अमीरों में बहुत प्रभावशाली था । इसे चक के शाही परिवार से अपदस्थ किया गया था ।
2. लेखक अज्ञात, बहारिस्तान-ए-शाही, पृ0 205बी.
3. आर0के0 पर्मू, हिस्ट्री आफ कश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, (1947) पृ0 248.
4. आर0के0 पर्मू, हिस्ट्री आफ कश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1947), पृ0 253.
5. इनायत खाँ शाहजहाँनामा, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 217, बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ देहली, पृ0 114, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, उर्दू (अनु0), भाग 2, पृ0 212.
6. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, उर्दू (अनु0), भाग 2, पृ0 213.

अहमद चक मुगलों के प्रति निष्ठावान बने रहे और सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में उनके अन्य किसी विद्रोह का उल्लेख नहीं मिलता ।

तिब्बत-ए-खुर्द, तिब्बत-ए-कलाँ

तिब्बत-ए-खुर्द व तिब्बत-ए-कलाँ का क्षेत्र कश्मीर घाटी के बाहर स्थित था । उत्तर पूर्व में तिब्बत-ए-खुर्द और तिब्बत-ए-कलाँ के दो शक्तिशाली राजा थे । अब तिब्बत-ए-खुर्द को बालटिस्तान एवं तिब्बत-ए-कलाँ को लद्दाख नाम से जाना जाता है ।[1] इन दोनों जगहों के राजा प्रारम्भ में आपस में झगड़ा करते थे ।[2] धीरे धीरे यहाँ के राजाओं ने कश्मीर के राजा की अधीनता में रहना प्रारम्भ कर दिया और कश्मीर के राजा को यह चमड़ा व ऊन के रूप में कर प्रदान करने लगे ।[3]

अकबर के शासनकाल में 1589-90 ई० तक तिब्बत-ए-खुर्द व तिब्बत-ए-कलाँ के राजा ने मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली व अबुल फजल के अनुसार वह सम्राट के दरबार में नियमित रूप से पेशकश भी भेजने लगे ।[4] अकबर ने इन राजाओं के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया ।उन्होंने बाबा तालिब इसफहानी तथा मेहतार आरी को दूत बनाकर अली राय के पास भेजा । अत: सन 1591-92 ई० में तिब्बत-ए-खुर्द के राजा अली राय ने अपनी पुत्री का विवाह शाहजादा सलीम के साथ कर दिया।[5]

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 18.
2. मोहिब्बुल हसन, कश्मीर अण्डर द सुल्तान्स ।कलकत्ता 1950। पृ0 37.
3. पीर गुलाम हसन, तारी-ए-हसन ।श्रीनगर 1954। भाग 1, पृ0 212, 219, मोहिब्बुल हसन, कश्मीर अण्डर द सुल्तान्स, पृ0 49, 71, 136, 209, 217.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 552.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 603, आर0के0 परमू, हिस्ट्री आफ कश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, पृ0 259. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, शोध प्रबन्ध ।1947।.

किन्तु कुछ समय पश्चात मुगलों तथा यहाँ के राजाओं में पुन: द्वन्द्व शुरू हो गया । अत: सम्राट ने 1597 ई0 तथा 1603-04 ई0 में अपने सैनिक अलीजाद ॥अली राय॥ के पुत्र कोकलताश कालिशु तिब्बत-ए-खुर्द व तिब्बत-ए-कलाँ के दमन के लिये भेजे । अली राय ने तिब्बते ए कलाँ के प्रदेश पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया । और कश्मीर की सीमा पर विद्रोह कर दिया । अत: सम्राट ने 1603-04 ई0 में उसके विरुद्ध सेना भेजी और वह भाग जाने के लिए विवश हो गया ।[1] वस्तुत: तिब्बत-ए-खुर्द व तिब्बत-ए-कलाँ के राजाओं ने मुगलों की अधीनता केवल नाममात्र के लिए ही स्वीकार की थी ।[2]

जहाँगीर के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में अली राय के ज्येष्ठ पुत्र अब्दाल ने चक विद्रोहियों को आश्रय देना प्रारम्भ कर दिया और अव्यवस्था फैलाने लगा । अत: सम्राट ने हाशिम खान॥कश्मीर के गवर्नर॥ को उस प्रदेश को विजित करने के लिये भेजा किन्तु हासिम खान अपने कार्य में असफल रहा । मुगलों की असफलता से अब्बास का उत्साह और बढ़ गया । उसने हबीब चक और अहमद चक को कश्मीर के मुगलों के विरुद्ध हथियार के रूप में प्रयोग किया । इन लोगों ने इतिकाद खाँ की सूबेदारी के काल में मुगलों को अत्यधिक क्षति पहुँचायी यद्यपि इतिकाद खाँ ने अन्ततोगत्वा विद्रोही चकों का दमन तो कर दिया परन्तु इनके राजाओं को वह बन्दी नहीं बना सका ।[3]

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ॥अनु0॥, भाग 3, पृ0 731, 823.

2. अहसान रजा खाँ, चीफटैन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 20.

3. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी ॥अनु0॥ भाग 2, पृ0 288. आर0के0 परमू हिस्ट्री आफ कश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ॥1947॥ पृ0 259-260.

शाहजहाँ के शासनकाल में जफरखान को कश्मीर का प्रान्तपति नियुक्त किया गया । 7 मार्च, 1634 ई0 को अब्दाल खान तिब्बत के जमींदार ने सम्राट के सम्मुख उपस्थित होकर कर भेंट दी और साथ में 9 सोने की मुहरें भी भेंट में दीं ।[1] सम्राट ने 1637 ई0 में इसे जफर खान को आदेश दिया कि तिब्बत की विजय करे व अब्दाल को दण्डित करे । जफर खान 12000 पैदल व घुड़सवार सेना के साथ अभियान पर गया एक महीने में वह स्कर्दू पहुँचा । वहाँ उसने कृषकों को अब्दाल के कार्यों से असंतुष्ट देखा । अतः उसने कृषकों के साथ उदारता का व्यवहार करके उन्हें अब्दाल के विरुद्ध अपने पक्ष में करने की योजना बनायी । उसके पश्चात उसने एक सैन्यदल सिगार के किले पर अधिकार करने के लिये भेजा । इस किले पर अब्दाल के पुत्र[2] (जो 15 वर्ष का था) का अधिकार था । अब्दाल का पुत्र पराजित हुआ व वहाँ से भाग गया व अब्दाल का परिवार शाही अधिकारियों के हाथ लग गया । अतः परिस्थितियों से विवश होकर अब्दाल ने शान्ति का प्रयास किया । उसने सम्राट के नाम का खुत्बा पढ़ा, और दस लाख रूपये हर्जाना के तौर पर सम्राट को देने का वायदा किया । इस प्रकार छोटी तिब्बत पर मुगलों का अधिकार हो गया । वहाँ के राजा ने मुगलों की अधीनता मान ली और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि हबीब चक और अहमद चक के परिवार को बन्दी बना लिया गया ।[3] सन् 1638 ई0 में अब्दाल नौरोज के अवसर पर सम्राट के दरबार में उपस्थित हुआ ।[4]

---

1. इनायतखाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 122.
2. इनायतखाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 216.
3. (आर0 के0 परमू, हिस्ट्री आफ कश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, शोधप्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1947), पृ0 260-261.
4. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 243.

सन् 1650-51 ई0 में सम्राट शाहजहाँ ने आदम खाँ मुन्शी और उसके भतीजे मुहम्मद मुराद को तिब्बत विजय के लिये भेजा । उनके साथ सलीम बेग काशगरी को भी भेजा गया । इन लोगों को आदेश दिया गया था कि विद्रोही मिर्जा जान का दमन कर दें, शकरदू के दुर्ग को अपने अधीन कर लें और तिब्बत के प्रदेश को जीत लें । इस अभियान में मिर्जा जान पराजित हुआ शकरदू का दुर्ग उससे खाली करवा लिया गया और मुगलों की सत्ता वहाँ स्थापित हो गयी । सम्राट ने मिर्जा जान को क्षमा कर दिया व उसके मनसब में वृद्धि कर दी । मुहम्मद मुराद को तिब्बत जागीर के रूप में प्रदान किया गया ।[1]

किश्तवार

किश्तवार एक छोटा पहाड़ी क्षेत्र है जिसके उत्तर में कश्मीर और मारवर्धवान घाटी है, दक्षिण में भदरवा है, पूर्व में चेनाब, और पश्चिम में रामबन तथा बनीहाल है । यह चेनाब द्वारा दो भागों में विभक्त है । इसे रस्सी के पुल (जिसे जम्पा नाम से जाना जाता है) के द्वारा पार किया जाता था ।[2]

अकबर के समय में किश्तवार में जो शासक राज्य कर रहा था, उसका वंश 900 ई0 में सत्ता में आया था ।[3] कश्मीर के सुल्तानों के समय में किश्तवार वहाँ के विद्रोहियों का आश्रय था । कुछ समय बाद किश्तवार ने कश्मीर के सुल्तान की अधीनता मान ली और उसे सैनिक सहायता प्रदान करने लगा ।[4] चक शासन काल

---

1. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास (हिन्दी) सप्तम खण्ड, पृ0 70.
2. आर0के0 परमू, हिस्ट्री आफ कश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, शोधप्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1947), पृ0 251.
3. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स (लाहौर 1933) भाग 2, पृ0 640.
4. मोहिबुल हसन, कश्मीर अण्डर द सुल्तान्स (कलकत्ता 1950), पृ0 35, 38, 48, 151 और 170-71., हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स, (लाहौर 1933) भाग 2, पृ0 640.

में किश्तवार के राजा बहादुर सिंह (1570-88) ने कश्मीर के चक राजाओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किया था । उसने अपनी एक पुत्री की शादी सुल्तान अली शाह के साथ और दूसरी की सुल्तान अली शाह चक के भतीजे के साथ की थी।[1]

अकबर के शासनकाल में जब मुगलों ने कश्मीर पर आक्रमण किया तब किश्तवार का राजा बहादुर सिंह चक सुल्तान याकूब शाह की ओर से लड़ा किन्तु दो वर्ष बाद 1591 ई0 में जब याकूब शाह ने मुगलों की अधीनता मान ली तब बहादुर सिंह ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली तथा अपने वतन की बहुमूल्य वस्तुयें सम्राट अकबर को उपहार में भेजी ।[2] लेकिन इसके बाद भी वह चक राजाओं का साथ देते रहे । चक कश्मीर में पुन: अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे । 1604-1605 ई0 में ऐबा चक और हुसैन चक के विद्रोह में किश्तवार का राजा भी उनके साथ था और चकों के पराजित होने के बाद उसे भी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी । किश्तवार के राजा ने भविष्य में मुगल सम्राट के प्रति राजभक्त रहने का एवं विद्रोही चकों को अपने यहाँ आश्रय न देने का वचन दिया । और भविष्य में विद्रोही चकों के विरुद्ध मुगलों को सहायता देने का वचन दिया ।[3]

जहाँगीर के शासन काल में किश्तवार के राजा[4] कुँअर सिंह ने विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया अत: जहाँगीर के शासन के 15वें वर्ष 1620 ई0 में सम्राट के आदेशानुसार दिलावर खाँ उसे बन्दी बनाकर सम्राट के सम्मुख ले आया । सम्राट ने उसके

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफ्टेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 21.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 604.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 835.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 238 पर जहाँगीर के शासनकाल में किश्तवार के राजा का नाम कुँअर सिंह लिखा हुआ है ।

विद्रोह को भुलाकर उससे कहा कि यदि वह अपने पुत्रों को दरबार में ले आये तो सम्राट उसे क्षमा कर देगा व उसे उसके अपने देश में शान्तिपूर्वक रहने देगा । किश्तवार का राजा अपने परिवार व पुत्रों को लेकर दरबार में उपस्थित होने को तैयार हो गया । सम्राट ने उदारतापूर्वक उसे क्षमा कर दिया ।[1]

जहाँगीर के शासन के 17वें वर्ष 1622 ई0 में किश्तवार के राजा कुँअर सिंह ने पुन: विद्रोह कर दिया । सम्राट ने उसके दमन के लिए इरादत खाँ को भेजा । कुँअर सिंह को बन्दी बनाकर ग्वालियर के किले में ले जाया गया । कुछ समय पश्चात जहाँगीर ने उसे बन्दीगृह से मुक्त कर दिया । किश्तवार उसे वापस दे दिया गया और साथ में उसे एक घोड़ा, एक खिलअत तथा राजा की उपाधि भी प्रदान की गई ।[2]

सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में किश्तवार का राजा कुँअर सेन किश्तवारी था । सम्राट शाहजहाँ ने उसे 1000/400 का मनसब प्रदान किया था ।[3] और जब सम्राट कश्मीर गया था तो वहाँ से लौटते समय उसने कुंअर सेन को एक विशेष खिलअत देकर तथा साथ ही एक घोड़ा देकर विदा किया ।[4] कुंअर सेन ने अपनी पुत्री का विवाह शाहजादा शुजा के साथ कर दिया ।[5] 1648 ई0 में कुँअर सेन किश्तवारी की मृत्यु हो गयी । उसके पश्चात उसके पुत्र महासेन को किश्तवारी की जमींदारी प्राप्त हुई । सम्राट ने उसे 800/400 का मनसब तथा राजा की उपाधि प्रदान की और किश्तवार का इलाका जागीर में दिया ।[6]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 2, पृ0 139-40.
2. जहाँगिर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 2, पृ0 234, 238.
3. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 370, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह उर्दू [अनु0], भाग 3, पृ0 887.
4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 162.
5. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 370.
6. मुहम्मद सालेह अकम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 529.

धन्तूर

धन्तूर जिला कश्मीर की सीमा पर स्थित था । कार्लुग तुर्कों की पक्ली के अलावा एक अन्य रियासत भी थी, जिसका नाम दमतूर था । कहीं-कहीं इसके लिये धमतूर या धन्तूर भी लिखा हुआ मिलता है । अकबर के समय में यहाँ का जमींदार शाहरुख मिर्जा था ।[1] जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा में पक्ली व धन्तूर के कार्लुग तुर्कों का विवरण देते हुए लिखा है कि पक्ली के राजा अपने को कार्लुग तुर्क कहते हैं । वास्तव में वह विशुद्ध लाहौरी हैं और वहीं की भाषा भी बोलते हैं । यही बात धन्तूर के राजा पर भी लागू होती है । जहाँगीर ने आगे लिखा है कि मेरे पिता के समय में धन्तूर का राजा शाहरुख था और अब उसका पुत्र बहादुर धन्तूर का राजा है ।[2]

धन्तूर के राजा मुगलों के प्रति निरन्तर स्वामिभक्त रहे । सन 1589 ई० में जब पक्ली का राजा सुल्तान हुसैन पक्लीवाल सम्राट अकबर के सम्मुख उसका अभिवादन करने के लिये उपस्थित हुआ तो धन्तूर का राजा शाहरुख भी सम्राट का अभिवादन करने के लिये गया ।[3] शाहरुख का पुत्र बहादुर जहाँगीर के शासनकाल में उसके प्रति स्वामिभक्त रहा । जहाँगीर के समय में उसका मनसब 200 जात व 100 सवार का था ।[4] उसने मुगलों को सैनिक सहायता भी प्रदान की । उसने बंगश में महावत खाँ की अधीनता में मुगलों का साथ दिया ।[5]

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु०), भाग 3, पृ० 560.
2. अबुल फजल, ~~अकबरनामा~~, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु०), भाग 1, पृ० 591.

2. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु०) भाग 2, पृ० 126, 127. मुहम्मद अकबर, पंजाब, अण्डर द मुगल्स, पृ० 127.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु०), भाग 3, पृ० 560.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु०), भाग 2, पृ० 127, अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु०), भाग 1, पृ० 591, मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ० 128.
5. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु०), भाग 1, पृ० 591.

टिप्पणी : सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में श्रीनगर के राजा पृथ्वी सिंह का उल्लेख मिलता है ।

पकली

राजौरी के उत्तर पश्चिम तथा कश्मीर घाटी के पश्चिम में पकली का क्षेत्र था । पकली के शासक कार्लुग तुर्कों के वंशज थे, जिन्हें तैमूर ने मध्य एशिया से वापस लौटते समय राजा बनाया था ।[1] मुगलों के पूर्व पकली के राजा कश्मीर के सुल्तानों की प्रभुता को मानते थे[2] और उनके साथ उनके वैवाहिक सम्बन्ध भी थे ।[3] अकबर के समय में पकली का राजा सुल्तान हुसैन था ।[4]

तुजुक-ए-जहाँगीरी में पकली की सीमा व विस्तार का वर्णन इस प्रकार है- सरकार पकली की लम्बाई 35 कोस तथा चौड़ाई 25 कोस थी । उसके एक ओर पूर्व में कश्मीर की पहाड़ियाँ थीं दूसरी ओर अटक व बनारस, उसके उत्तर में कटोर और दक्षिण में गक्कर प्रदेश था ।[5]

अकबर के समय में कश्मीर में शक्ति चक राजाओं के हाथ से मुगलों के हाथ में चली गयी । 1589 ई0 में सम्राट अकबर कश्मीर से लौटते समय जब पकली होकर जा रहा था तब सुल्तान हुसैन पकलीवाल सम्राट से मिला व उसने सम्राट को पेशकश

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु0। भाग 2, पृ0 126.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 2, पृ0 186, मोहीब्बुल हसन, कश्मीर अण्डर द सुल्तान्स ।कलकत्ता। पृ0 136,209 और 275.49.
3. मोहीब्बुल हसन, कश्मीर अण्डर द सुल्तान्स ।कलकत्ता। 1950, पृ0 81, 220
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 559, 565, 577, जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु0।भाग 2, पृ0 125-26.
5. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु0। भाग 2, पृ0 126, मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 127.

दी ।[1] वह सम्राट के प्रति स्वामिभक्त रहा । उसे सम्राट ने 300 का मनसब दिया था जो बाद में बढ़कर 400/300 हो गया ।[2] जहाँगीर के समय में सुल्तान हुसैन पकलीवाल पकली का राजा था । सुल्तान हुसैन सुल्तान महमूद का पुत्र था ।[3] वह जहाँगीर के समय भी मुगल सम्राट के प्रति स्वामिभक्त रहा । जब जहाँगीर अपने शासन के 14वें वर्ष [1619 ई0] में पकली गया उस समय वह 70 वर्ष का था । उस समय वह 400/300 का मनसबदार था । जहाँगीर ने उसी समय उसका मनसब बढ़ाकर 600/350 कर दिया था ।[4] साथ ही उसे एक विशेष खिलअत जड़ाऊ कटार और एक हाथी भेंट में दिया । 1623 ई0 में सुल्तान हुसैन पकलीवाल की मृत्यु हो गयी।[5] व उसका पुत्र शादमान गद्दी पर बैठा ।[6] सन 1637 ई0 में मुगल सूबेदार जफरखान के निम्न तिब्बत पर आक्रमण के समय शादमान अब्दाल के पक्ष में मुगलों के विरुद्ध लड़ा था किन्तु मुगल सेना ने तिब्बत के राजा को पराजित किया व अधीनता स्वीकार करने के लिये बाध्य किया । उसी समय शादमान पकलीवाल भी मुगलों के प्रति राजभक्त बन गया ।[7] 1638 ई0 में शादमान पकलीवाल को किलाब्धत की ओर सेना सहित भेजा गया ।[8] इसने मुगलों की सैनिक अभियानों में सहायता की । उसने

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी [अनु0], भाग 3, पृ0 559, मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 127.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 1, पृ0 164, जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 126-127.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 1, पृ0 568.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0] भाग 1, पृ0 126-127, सुल्तान हुसैन, पकलीवाल के मनसब में वृद्धि का वर्णन केवल जहाँगीर की आत्मकथा में ही मिलता है ।
5. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 2, पृ0 367, अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 1, पृ0 563.
6. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी [अनु0] भाग 1, पृ0 563, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी [अनु0], पृ0 214.
7. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी [अनु0], पृ0 217, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह उर्दू [अनु0], भाग 2, पृ0 212.
8. मुहम्मद सालेह कम्बो अमले सालेह [illegible]

1642 ई0 के दारा के कन्धार अभियान में मुगलों के पक्ष में युद्ध किया ।[1] सन 1647 ई0 में शाहजादा औरंगजेब के साथ उजबेकों के विरुद्ध युद्ध में शादमन पकलीवाल भी गया ।[2] शाहजहाँ के शासन के 20वें वर्ष (1648 ई0) में वह 1000/900 का मनसबदार था ।[3] सन 1653 ई0 में उसे शाजादा औरंगजेब के साथ कन्धार अभियान पर भेजा गया ।[4] सन 1656 ई0 में शादमान पकलीवाल की मृत्यु हो गयी । सम्राट ने उसके बड़े पुत्र इनायत को 600/600 का मनसब प्रदान किया और पकली का जिला जागीर के रूप में प्रदान किया ।[5]

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि सम्राट अकबर के शासन-काल में जिन राजाओं अथवा जमींदारों ने अधीनता स्वीकार कर ली थी वे जहाँगीर और शाहजहाँ के राज्यकालों में स्वामिभक्त ही नहीं बने रहे वरन विभिन्न अभियानों में भाग लेकर अपनी स्वामिभक्ति का परिचय भी देते रहे । यदा-कदा वे नियमित अथवा अनियमित रूप से मुगल सम्राट को पेशकश भी देते रहे ।

---------::0::---------

---

1. अबुल फजल, आइने-अकबरी, भाग 1, पृ0 563.
2. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, उर्दू (अनु0), भाग 2, पृ0 458,
3. बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 293, 733. मु0सालेह कम्बो, अमले सालेह, उर्दू (अनु0) भाग 3, पृ0 584.
4. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, उर्दू (अनु0), भाग 2, पृ0 610-611.
5. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, उर्दू (अनु0), भाग 3, पृ0 670.

टिप्पणी : कश्मीर में दो और राजाओं का वर्णन मिलता है । बारंग के मेंहदी नायक और हुसैन नायक । मेंहदी नायक बहराम नायक का पुत्र था । जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 180.

अध्याय - अष्टम्

सूबा लाहौर के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा लाहौर के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा लाहौर के अधिकांश (करद) राजाओं की रियासतें इसकी उत्तरी पहाड़ियों पर स्थित थीं।[1] इस सूबे की लम्बाई सतलज नदी से सिन्धु नदी तक एक सौ अस्सी कोस थी। इसकी चौड़ाई भिम्बर से चौखण्डी तक छियासी कोस थी। इसकी सीमा पूर्व में सरहिन्द, उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में अजमेर और पश्चिम में मुल्तान थी। इस प्रदेश में पाँच प्रमुख नदियाँ बहती हैं।[2]

सूबा लाहौर में दो सौ चौंतीस परगने थे। इस प्रदेश का क्षेत्रफल एक करोड़ इकसठ लाख पचपन करोड़ छह सौ तिरालीस बीघा और तीन बिस्वा था। यहाँ से प्राप्त कुल राजस्व पचपन करोड़ चौरानबे लाख अठ्ठावन हज़ार चार सौ तेईस दाम (1,39,96,460.92 रूपये) था। जिसमें से अठ्ठानबे लाख पैंसठ हजार पाँच सौ चौरानबे दाम (2,46,639.13 रूपये) सयूरगल था।[3]

सूबा लाहौर में गक्खर, जम्मू, चम्बा, नगरकोट, मउ, मण्डी, सुकेत, कहलूर या बिलासपुर, फरीदकोट, कुलू व संघार के राजाओं का वर्णन मिलता है। इन राजाओं का सूबा लाहौर में महत्त्वपूर्ण स्थान था।

गक्खर

सिन्ध सागर दोआब में गक्खर राजाओं का शासन था। 16वीं शदी के प्रारम्भ में गक्खरों ने इस प्रदेश के जाट और गूजर जाति पर अपना प्रभुत्व स्थापित

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 28.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 315.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 319.

कर लिया था ।[1] आईने-अकबरी में अबुल फजल ने गक्खरों को इस सरकार में 10 महलों का जमींदार बताया है ।[2]

गक्खर सर्वप्रथम मुगलों के सम्पर्क में 1519 ई0 में आये जब हाथी खान नामक गक्खर राजा ने बाबर की अधीनता स्वीकार कर ली ।[3] बाद में हाथी खान के उत्तराधिकारी सारंग खान तथा आदम खान ने मुगल सम्राट हुमायूँ की अधीनता स्वीकार की व मुगलों को सैनिक सेवा प्रदान की ।[4] शेरशाह एवं अकबर के समय में गक्खरों ने विद्रोही रूख अपनाया किन्तु 1557 ई0 में आदम खान गक्खर ने मुगलों की अधीनता मान ली ।[5] सन 1563 ई0 में कमाल खान ने अपने को अपने पिता सारंग खान गक्खर का वास्तविक उत्तराधिकारी बताते हुये आदम खान से अपना अधिकार दिलाने की सम्राट से माँग की ।[6] अकबर आदम खान की ईमानदारी से पूर्णत: संतुष्ट न था क्योंकि 1557 ई0 में अधीनता स्वीकार कर लेने के बाद से वह सम्राट से मिलने नहीं गया था । अकबर ने खान-ए कलाँ को आदेश दिया कि गक्खरों का प्रदेश दो भागों में बाँट दिया जाये और एक भाग कमाल खान को तथा दूसरा आदम खान को प्रदान किया जाये ।[7] आदम खान ने सम्राट का आदेश नहीं माना अत: सम्राट ने अपने सेनानायक को सेना सहित उसका दमन करने के लिये भेजा । वह अपने कार्य में सफल हुआ और अन्तत: गक्खरों का सम्पूर्ण प्रदेश कमालखान को प्रदान

---

1. बाबर, बाबरनामा, भाग 1, पृ0 387.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी [अनु0], भाग 2, पृ0 159-160.
3. बाबर, बाबरनामा, भाग 1, पृ0 391-392.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी [अनु0] भाग 1, पृ0 195-196.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी [अनु0] भाग 1, पृ0 63.
6. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी [अनु0] भाग 1, पृ0 103.
7. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी [अनु0] भाग 1, पृ0 192-193,
   अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 507.

किया गया, साथ में आदम खान एवं उसके पुत्र लश्करी को भी कमाल खान को सौंप दिया गया ।[1] कमाल खान ने लश्करी को मार डाला व आदम खान को कैद में डाल दिया जहाँ कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गयी ।[2] कमाल खान जब तक जीवित रहा मुगलों के प्रति स्वामिभक्त बना रहा । सन 1564-65 ई0 में कमाल खान इस सेना में नियुक्त किया गया जिसमें उसे काबुल के मिर्जा सुलेमान को वहाँ से निकालने तथा मिर्जा हकीम को उसकी जगह नियुक्त करवाने के लिये भेजा गया।[3] कमाल खान को उसकी सेवाओं के बदले में इलाहाबाद सूबे में जागीर प्रदान की गयी ।[4] कमाल खान 5000 अश्वारोहियों का सेनानायक था और 972 हिजरी में उसकी मृत्यु हुयी थी ।[5] मुबारक खान और जलाल खान ने अकबर के शासनकाल के 30वें वर्ष शाहरुख, भगवानदास और शाह कुली महराम की अधीनता में मुगलों की सहायता की ।[6] मुबारक खान, जलाल खान तथा सईद खान तीनों ही 1500 सवारों के सेनानायक थे । सईद खान की पुत्री का विवाह शहजादे सलीम के साथ किया गया ।[7] सईद खान कमाल खान के समय से ही शाही सेवा में था । उसने मुगलों को सैनिक सहायता प्रदान की थी । उसे 1500 सवारों का मनसब प्राप्त था ।[8] उसने 1580-81 ई0 में मिर्जा हकीम के विरुद्ध, 1586-87 ई0 में युसुफजई,

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 1, पृ0 193-194.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 240.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 239-240.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 78.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 1, पृ0 302.
6. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 485.
7. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 508.
8. अहसान रजा खां, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 30.

उर्कज़ई तथा 1592 ई० में अफ़रीदी अफ़ग़ानों के विरुद्ध अभियान में मुगलों की सहायता की ।[1] सईद खान का पुत्र नज़र बेग था जिसे नज़र खान कहा जाता था । उसे 1001 हिज़री में 1000 सवार का मनसब प्राप्त हुआ ।[2]

मुगल इतिहासकारों ने गक्खर राजाओं का वंशवृक्ष प्रस्तुत किया है[3] :-

जलाल खान की जहाँगीर के शासनकाल के 15वें वर्ष (1620 ई०) में बंगश में मृत्यु हो गयी[4] और उसका पुत्र अकबर कुली जो उस समय कांगड़ा में था उसे सम्राट ने 1000/1000 का मनसब प्रदान और पैतृक प्रदेश (गक्खर देश) जागीर में प्रदान किया । उसे एक विशेष खिलअत व घोड़ा प्रदान किया और शाही सेना की सहायता करने के लिए बंगश भेज दिया ।[5] सन 1662 ई० में जहाँगीर ने अकबर
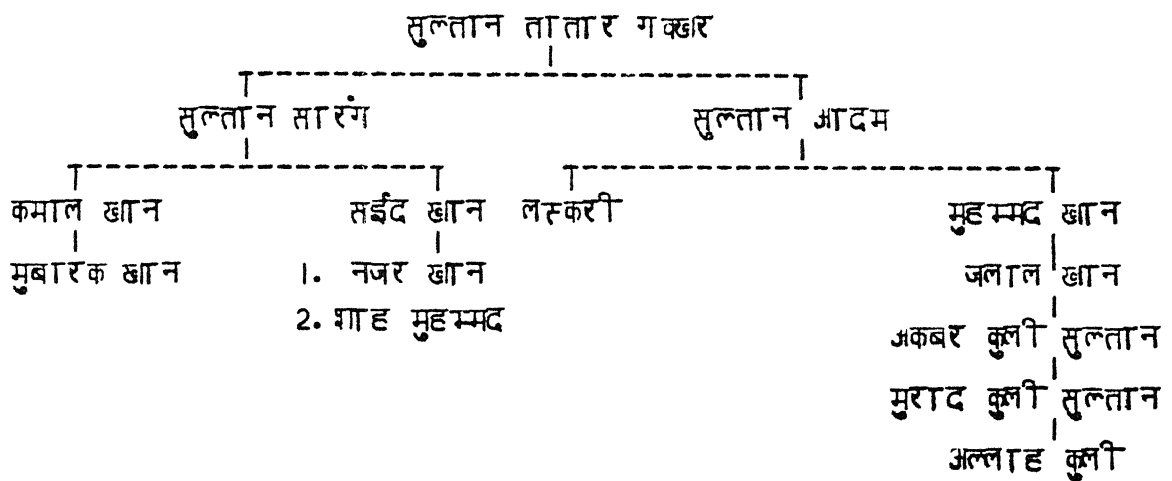
---

1. अबुल फ़ज़ल, अकबरनामा, भाग 3, पृ० 336, 492, 607.
2. अबुल फ़ज़ल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ० 544.
3. अबुल फज़ल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ० 544.
4. जहाँगीर, तुज़ुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु०) भाग 1, पृ० 130.
5. जहाँगीर, तुज़ुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ० 160-61, बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ० 188.

कुली गक्खर को एक हाथी उपहार में प्रदान किया ।[1] जहाँगीर शाहजादा खुसरो के विद्रोह का दमन करने के पश्चात काबुल जाते समय गक्खरों के प्रदेश से होकर गया था ।

लाहौरी के बादशाहनामा में भी विभिन्न गक्खर राजाओं का वर्णन मिलता है ।[2] अकबर कुली सुल्तान को 1500/1500 का मनसब प्राप्त था । शाहजहाँ के शासनकाल के 18वें वर्ष उसकी मृत्यु हुयी । उसका पुत्र मुराद कुली सुल्तान था । उसे भी 1500/1500 का मनसब प्राप्त था ।[3] जबर कुली जो जलाल खान का भाई था, उसे 1000/800 का मनसब प्राप्त था । खिज्र सुल्तान जो नज़र खान का भाई था उसे 800/500 का मनसब प्राप्त था । शाहजहाँ के शासनकाल के 12वें वर्ष उसकी मृत्यु हो गयी ।[4]

जम्मू

जामवल[5] राजाओं में सबसे प्राचीन और शक्तिशाली जम्मू के शासक थे । यह बताना अत्यन्त कठिन है कि 16वीं शदी में जम्मू के राजाओं द्वारा नियंत्रित क्षेत्र कितना था । वास्तव में जम्मू के शासक तावी और चेनाब के मध्य के छोटे से भाग पर अपना नियन्त्रण रखते थे, जबकि 18वीं शदी में अपनी शक्ति के विस्तार के समय उनका समस्त पहाड़ी क्षेत्र पर अधिकार था, इसके अन्तर्गत रायसी, मोटी,

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 230.
2. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 240, 264, 266, 722, 733, 740.
3. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 410, 485, 512, 523, 595, 655, 730. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 91.
4. अबुल फज़ल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 545.
5. जम्मू शाही परिवार के वंशज जामवल कहलाते थे ।

सम्भा और संभवत: अखनोर का प्रदेश सम्मिलित था ।[1] 18वीं शदी में उनके आधिपत्य में पहाड़ियों का क्षेत्र, रावी और किश्तवार तक का क्षेत्र और चेनाब घाटी में महावा तक का क्षेत्र सम्मिलित था ।[2] 16वीं शदी में जम्मू की स्थिति 18वीं शदी के जम्मू की स्थिति से भिन्न नहीं थी । 13वीं व 14वीं शदी में जम्मू के शासकों ने या तो कश्मीर के सुल्तान की या दिल्ली के सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली थी । वह उन्हें अक्सर सैनिक सहायता भी प्रदान करते थे ।[3] कालान्तर में सूरों के काल में जम्मू को शेरशाह तथा इस्लामशाह ने अधीनस्थ बना लिया ।

अकबर के सिंहासनारोहण के समय कपूर चन्द्र जम्मू का शासक था । सन 1558-59 ई0 में सम्राट ने उसके विरुद्ध एक अभियान ख्वाजा अब्दुल्ला तथा तलवन्डी के जमींदार के नेतृत्व में भेजा । राजा कपूर चन्द्र पराजित हुआ किन्तु उसने मुगलों की उस समय अधीनता स्वीकार की या नहीं यह निश्चित ज्ञात नहीं है । अकबर के शासनकाल के 8वें वर्ष के एक विवरण में ख्वाजा अब्दुल्ला ने कपूर चन्द्र को अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया, सम्राट ने कपूर चन्द्र को आदम खान धक्कर के विरुद्ध भेजे गये अभियान में सहायता करने का भी आदेश दिया । अबुल फजल उसका उल्लेख करता है कि उस समय पंजाब की एक जागीर पर भी उसका अधिकार था ।[4] सन 1590-91 ई0 में जम्मू के शासक पारसराम ने पहाड़ी राजाओं के मुगलों के विरुद्ध विद्रोह में साथ दिया किन्तु मुगलों ने इस विद्रोह का दमन कर दिया । राजा

---

1. हचिन्सन, हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिल स्टेट्स, पृ0 514.
2. हचिन्सन, हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिल स्टेट्स, पृ0 514.
3. याहिया बिन अब्दुल्ला सरहिन्दी, तारीख-ए मुबारक शाही, पृ0 199, मोहिब्बुल हसन, पृ0 69, 210.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 75, 193, अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 35.

पारसराम ने अधीनता स्वीकार कर ली । उसने सम्राट को पेशकश प्रदान की और 1590-91 में वह सम्राट से मिलने भी गया ।[1] कुछ समय पश्चात जम्मू के शासक लालदेव ने भी मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया किन्तु शीघ्र ही उसने मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली और वह स्वयं सम्राट से मिलने भी गया ।[2]

अगले 10 वर्षों में जम्मू के प्रदेश में कोई भी समस्या उत्पन्न नहीं हुयी किन्तु 1602-03 ई0 में जब मउ के राजा बासु ने पैठान में विद्रोह कर दिया तब जम्मू के राजा ने भी मुजफ्फराबाद और भलोईपुर के परगनों में विद्रोह कर दिया। यह प्रदेश हुसैन बेग शेख उमरी को तियूल में प्राप्त हुये थे । हुसैन बेग को सम्राट ने जम्मू के शासक के विरुद्ध भेजा । इस अवसर पर अनेक पड़ोसी राजा जम्मू के राजा को मदद के लिये आये किन्तु मुगल सेना के आगे वह पराजित हुये और उस समय से जम्मू का किला मुगलों के अधिकार में रहा ।[3] कुछ समय के बाद जहाँगीर ने उसे जम्मू के राजा संग्रामदेव को सुपुर्द कर दिया ।[4] सन 1618 ई0 में जहाँगीर ने राजा संग्राम को 3000 रूपये उपहार में दिये ।[5]संग्राम देव सामिल देव का पुत्र था एवं सामिल देव कपूर चन्द्र का पुत्र था ।[6] सन 1619 ई0 में सम्राट ने उसे एक हाथी उपहार में दिया ।[7] इसी वर्ष सम्राट ने उसे राजा की उपाधि 1000/500 का मनसब और उपहार में एक हाथी तथा एक विशेष खिलअत प्रदान की ।[8] सन

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 583.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 631.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 583,631,803,808.
4. जहाँगीर तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 154.
5. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स, भाग 2, पृ0 535-36.
6. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 5, प्रो0 राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटल्स अण्डर द ग्रेट मुगल्स, पृ0 38.
7. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 88.
8. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 120.

1620 ई0 में सम्राट ने उसके मनसब में वृद्धि करके उसे 1500 जात व 1000 सवारों का मनसबदार बना दिया ।[1] इसी वर्ष सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत, एक घोड़ा व एक हाथी उपहार में दिया और उसे कासिम खाँ के साथ कांगड़ा में शान्ति व्यवस्था स्थापित करने के लिये भेजा ।[2]

राजा संग्राम के बाद उसका पुत्र राजा भूपत जम्मू का शासक बना । वह भी शाही सेवा में नियुक्त था । उसने सन 1635-36 ई0 तक जम्मू पर शासन किया ।[3] इसी काल में जम्मू के राजा हरीदेव का वर्णन मिलता है । वह शाहजहाँ का समकालीन था ।[4]

चम्बा

16वीं शदी के फारसी इतिहास तथा आईन में चम्बा की जमींदारी का विवरण मिलता है उसमें इसका नाम चारी चम्पा लिखा हुआ है ।[5] हचिन्सन ने लिखा है कि राजतरंगिणी में चम्बा से तात्पर्य चम्पा से है और इसी नाम से उस समय उसे जाना जाता था । चारी चम्बा के अन्तर्गत ही एक भूखण्ड का नाम था ।[6]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 175.
2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी भाग 2, पृ0 193.
   प्रो0 राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटल्स अण्डर द ग्रेट मुगल्स, पृ0 34.
3. एम0 अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 134,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 119.
4. सर लैपेल एच0 ग्रीफिन, द राजास आफ पंजाब, पृ0 635.
5. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 157.
6. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेटस, पृ0 274, 298.

अबुल फजल ने जिसका नाम चारी चम्पा दिया है वह वास्तव में चम्बा ही है ।[1]

अकबर के शासनकाल में चम्बा के राजा

चम्बा के शासक सूर्यवंशी राजपूत थे ।[2] सल्तनत काल में चम्बा के शासक पूर्णरूपेण स्वतन्त्र थे ।[3] अकबर के शासनकाल में चम्बा का शासक प्रतापसिंह वर्मन मुगलों को कर प्रदान करने वाला राजा था ।[4] प्रतापसिंह वर्मन की 1586 ई0 में मृत्यु हो गयी । उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र वीरभानु गद्दी पर बैठा । किन्तु वह चार वर्ष ही सिंहासन पर रहा । उसके बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र बलभद्र 1589 ई0 में चम्बा की गद्दी पर बैठा ।[5] वह ब्राह्मणों को बहुत दान दिया करता था । उसकी अत्यधिक दान देने की प्रवृत्ति से उसके अधिकारीगण उससे दु:खी हो गये थे अत: जब राजा का बड़ा पुत्र जनार्दन बड़ा हुआ तो वह अपने पिता को अपदस्थ करके स्वयं चम्बा की गद्दी पर बैठा और अपने पिता को रावी के किनारे बरिया गाँव में एक घर व खेत आदि देकर भेज दिया । किन्तु बलभद्र की दान देने की आदत फिर भी नहीं गयी । उसने अपना महल गाँव वगैरह सब कुछ धीरे-धीरे करके दान कर दिया । उसके पुत्र जनार्दन ने पुन: अपने पिता को कुछ और भूमि दी । 1641 ई0 में बलभद्र की मृत्यु हो गयी ।[6]

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 157.
2. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स, भाग 1, पृ0 268, 278.
3. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स, पृ0 296.
4. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स, भाग 1, पृ0 298.
5. सैमुल टी0 वेसल्स, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ0 86.
6. सैमुल टी0 वेसल्स, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ0 87.

जनार्दन

जनार्दन के गद्दी पर बैठते ही नूरपुर के राजा के साथ उसका युद्ध शुरू हो गया । यह युद्ध 12 वर्ष तक चलता रहा । किन्तु उसका कोई लाभ किसी पक्ष को नहीं हुआ । अन्ततः 1618 ई0 में शान्ति स्थापित हो गयी । 1618 ई0 में नूरपुर के राजा सूरजमल ने शाही सेना के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । दोनों पक्षों में संघर्ष हुआ और अन्ततः उसे भागकर चम्बा के किले में कुछ समय तक शरण लेनी पड़ी । कुछ दिनों बाद वह अपने देश लौट गया और अपने भाई माधो सिंह से मिल गया । शाही सेना चम्बा के विरुद्ध अभियान की तैयारी कर रही थी कि तभी समाचार मिला कि सूरजमल की मृत्यु हो गयी ।[1] अतः मुगल सेनानायक ने चम्बा के राजा के पास सन्देश भेजा कि मृत राजा की समस्त बहुमूल्य वस्तुयें मुगलों को सौंप दे । चम्बा के राजा ने उस समय समस्त बहुमूल्य वस्तुयें मुगलों के पास भेज दी ।[2]

सन 1622 ई0 में जहाँगीर कांगड़ा भ्रमण पर जाते समय बानगंगा नदी के किनारे रुका था । इस अवसर पर चम्बा के राजा जनार्दन ने सम्राट से भेंट की । वह एक बहुत स्वाभिमानी राजा था । उसने मुगल सम्राट की अधीनता नहीं स्वीकार की थी और न ही उसे कर प्रदान किया था । सम्राट ने उसका तथा उसके भाई का बड़ा सम्मान किया ।[3]

---

1. सैमुल टी0 वेस्सन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ0 88.
2. सैमुल टी0 वेस्सन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ0 88, बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 269.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 223, मुहम्मद अकबर पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 157.

किन्तु मुगलों के सम्बन्ध चम्बा के शासक के साथ निरन्तर मैत्रीवत नहीं रहे । नूरपुर के राजा जगत सिंह ने चम्बा पर आक्रमण कर दिया और मुगलों ने इस युद्ध में जगतसिंह का साथ दिया । धालोग नामक स्थान पर युद्ध हुआ । इस युद्ध में चम्बा की सेना पराजित हुयी और जनार्दन का छोटा भाई विश्वम्भर इस युद्ध में मारा गया । जगतसिंह आगे बढ़ता गया उसने राजधानी व किले पर अधिकार कर लिया । जनार्दन बचने का कोई उपाय न देखकर भाग गया । जगतसिंह ने उसके पास सन्धि का प्रस्ताव भेजा । शर्त यह रखी कि यदि जनार्दन स्वयं दरबार में उपस्थित हो तो वह सन्धि करने को तैयार है । जनार्दन को उस पर तनिक भी सन्देह नहीं हुआ। वह जगतसिंह के दरबार में उपस्थित हुआ । जब दोनों वार्तालाप कर रहे थे तभी जगतसिंह ने अचानक कटार निकालकर जनार्दन के सीने में भोंक दी । जनार्दन अपना कुछ बचाव नहीं कर सका व वहीं तत्काल मर गया । जनार्दन की मृत्यु 1623 ई० में हुई ।[1]

जगतसिंह

जनार्दन की मृत्यु के पश्चात चम्बा पर लगभग 20 वर्ष तक नूरपुर के राजा जगतसिंह का आधिपत्य रहा । 1641 ई० तक जगतसिंह ने शासन किया । जहाँगीर के शासनकाल में जगतसिंह का मनसब 3000/2000 था ।[2] शाहजहाँ के समय में भी उसे वह सम्मान प्राप्त था । शाहजहाँ ने उसे बंगश में नियुक्त किया । दो वर्ष बाद सम्राट ने उसे काबुल में नियुक्त किया । जहाँ उसने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की । शाहजहाँ के शासनकाल के 11वें वर्ष जगतसिंह शाही सेना के साथ काबुल से कन्धार भेजा गया । 12वें वर्ष वह लाहौर वापस लौटा । सम्राट ने उसे उपहार दिये और उसे पुनः बंगश का फौजदार बनाया । पिता की अनुपस्थिति में

---

1. सैमुल टी० वेटसन, चम्बा, स्टेट गजेटियर, पृ० 89.

2. सैमुल टी० वेटसन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ० 90.

उसका पुत्र राजरूप सिंह राज्य का स्वामी बना । सम्राट ने उसे कांगड़ा के फौजदार के पद पर नियुक्त किया । वह पहाड़ी राजाओं से कर वसूल करता था । 1641 ई0 में राजरूपसिंह ने विद्रोह कर दिया अतः जगतसिंह को राजरूपसिंह की जगह चम्बा का फौजदार बनाया गया और उसके विद्रोह का दमन करने का आदेश दिया गया किन्तु जगतसिंह अपने पुत्र के पास पहुँचकर उसी के साथ मिल गया और विद्रोह करने लगा अतः सम्राट ने शाहजादा मुराद बख्श को उसके विद्रोह का दमन करने के लिये भेजा ।

पृथ्वीसिंह

पृथ्वीसिंह जनार्दन का पुत्र था । वह जब से युवा हुआ था मण्डी में था । वह इस अवसर की तलाश में था कि कैसे अपने खोये हुये राज्य को पुनः प्राप्त करें । उसका जन्म जनार्दन की मृत्यु के बाद हुआ था । जगतसिंह ने यह आदेश दे रखा था कि जनार्दन की रानी को पुत्र पैदा हो तो उसे तुरन्त मार दिया जाये और यदि पुत्री जन्म ले तो उसका विवाह नूरपुर राज्य में हो जिससे उसका अधिकार और स्थायी हो जाये । जनार्दन की रानी के पुत्र पैदा होने पर उसकी एक दायी ने जिसका नाम बतनू था उसको महल से गायब करवा दिया । अंगरक्षकों को उसका पता नहीं चला और उसे मण्डी भेज दिया गया । वहीं उसका पालन-पोषण हुआ व वह बड़ा हुआ । आधुनिक इतिहासकार इस घटना को सत्य नहीं मानते । सन 1619 ई0 में जनार्दन द्वारा जारी किये गये एक ताम्रपत्र में लिखा है कि पृथ्वीसिंह के जन्म लेने पर उसने एक ब्राह्मण को एक ससन उपहार दिया । इससे ज्ञात होता है कि पिता की मृत्यु के पूर्व ही उसका जन्म हो गया था ।[1] 17 जनवरी 1635 ई0 को सम्राट ने राजा पृथ्वीसिंह को एक घोड़ा और एक खिलअत प्रदान किया।[2]

---

1. सैमुल टी0 वेटसन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ0 22-ए.

2. सैमुल टी0 वेटसन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृष्ठ 90.

और उसे कांगड़ा के पहाड़ की फौजदारी पर भेजा ।[1]

सन 1641 ई0 में पृथ्वीसिंह पठानकोट के शाही शिविर में उपस्थित हुआ। उसके पश्चात वह शाही दरबार में भेजा गया । वहाँ उसने सम्राट से भेंट की । वह मुगल सेवा में सम्मिलित हो गया । उसे सम्राट ने एक खिलअत, जड़ाऊ कटार, 1000/400 का मनसब और राजा की उपाधि प्रदान की ।[2]

जगतसिंह मुगलों का सामना करने के लिये प्राणप्रण से स- था । उसके मऊकोट, नुरपुर और तारागढ़ में सुदृढ़ किले थे जो उसकी शक्ति के केन्द्र थे । 16 दिसम्बर 1641 ई0 को शाहजादा मुराद बख्श ने चम्बा के जमींदार पृथ्वीसिंह को अल्लाहवर्दी खान और मीर बुजुर्ग के साथ जगतसिंह के विरुद्ध भेजा । मार्च 1642 ई0 तक दोनों पक्षों में युद्ध चलता रहा । मुगल सेना ने मऊकोट, नूरपुर, तारागढ़ तीनों ही किलों पर अधिकार कर लिया । जगतसिंह ने बचाव का कोई रास्ता न देखकर अपने पुत्रों के साथ समर्पण कर दिया । उन्हें बन्दी बनाया गया व सम्राट के सम्मुख दरबार ले आया गया । सम्राट ने न केवल उन्हें माफ कर दिया बल्कि उनके पूर्व के समस्त सम्मान भी उनके पास रहने दिये । युद्ध के अन्त में तारागढ़ पर मुगलों का अधिकार हो गया व वहाँ मुगल सेना तैनात कर दी गयी।[3]

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 688,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 93,
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 2, पृ0 121,
   शाहनवाज खाँ, मासिर उल उमरा, भाग 1, पृ0 332,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 120.
2. मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 2, पृ0 294,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 172,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 120.
3. सैमुल टी0 वेटसन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ0 99.

पृथ्वीसिंह चम्बा का स्वतन्त्र राजा बन गया । पृथ्वीसिंह को जब उसका खोया हुआ राज्य मिल गया तो उसने जगतसिंह से अपने पिता की हत्या का बदला लेने का निश्चय किया । इसके लिये उसने बशोली के संग्रामपाल से एक समझौता किया । उसने उसे भलई का परगना दे दिया, उसने कलानौर के मुगल सूबेदार से भी सहायता माँगी । मुगल सूबेदार ने एक शर्त पर सहायता करने का वचन दिया कि पृथ्वीसिंह जगतसिंह को जीवित अवस्था में मुगल सूबेदार को लाकर देगा । पृथ्वीसिंह तैयार हो गया उसने नूरपुर पर आक्रमण किया व उस पर अधिकार कर लिया । रात के अँधेरे में जगतसिंह को तारागढ़ के किले में लाया गया वहाँ उसे एक महीना रखा गया और फिर उसे भैंसे के ऊपर बिठाकर मुगल सूबेदार के पास भेज दिया गया ।

पृथ्वीसिंह शाहजहाँ के शासनकाल में नौ बार दिल्ली गया । सम्राट ने उसे 26000 रूपये मूल्य की जासवन में एक जागीर दी जो अगले 90 वर्षों तक उसके राज्य में सम्मिलित रही । सम्राट ने उसे दिल्ली यात्रा के दौरान अन्य बहुमूल्य वस्तुयें, जड़ाऊ कटार, जड़ाऊ सरपेच आदि प्रदान किये ।[1] और कांगड़ा के पहाड़ की फौजदारी भी उसे प्रदान की । चम्बा के राजा की पारिवारिक मूर्ति भी शाहजहाँ ने उसे एक अवसर पर प्रदान की थी ।

पृथ्वीसिंह का विवाह बशोली के संग्रामपाल की पुत्री से हुआ था । उसके आठ पुत्र थे, शत्रुसिंह, जयसिंह, इन्द्रसिंह, महीपतसिंह, रामसिंह, शकतसिंह और राजसिंह ।

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 94,
   सैमुल टी0 वेटसन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ0 93.

नगरकोट

अकबर के सिंहासनारोहण के समय नगरकोट का प्रमुख राजा धर्मचन्द्र था ।[1] निजामुद्दीन अहमद के अनुसार वह शिवालिक की पहाड़ियों का प्रमुख राजा था । फरिश्ता के अनुसार नगरकोट में जमींदारों का शासन पिछले 1300 वर्षों से चल रहा था । नगरकोट का राजा दो कारणों से हिन्दुओं में बहुत लोकप्रिय था, प्रथम उसका कांगड़ा के दुर्ग पर अधिकार था और द्वितीय उसके पास मां दुर्गा का मन्दिर था जहाँ से बहुत सा धन चढ़ावे में मिलता था ।[2]

14वीं शदी से 18वीं शदी तक के सभी स्रोत नगर-कोट या कांगड़ा के दुर्ग की विशालता व सुदृढ़ता का वर्णन करते हैं । जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि यह दुर्ग इतना अगम्य था कि उसके पूर्व किसी भी शासक को उस पर विजय नहीं प्राप्त हुयी ।[3] मुस्लिम शासनकाल में इस दुर्ग पर 52 बार घेरा डाला गया था । यद्यपि जहाँगीर के इस मत का समर्थन फतेह-ए कांगड़ा तथा मासिर-उल उमरा से भी होता है किन्तु कसैदे बद्रे चच से यह ज्ञात होता है कि इस दुर्ग पर जहाँगीर से पूर्व मुहम्मद बिन तुगलक ने विजय प्राप्त की थी ।[4]

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 20,
   अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 40.
2. फरिश्ता, तारीख-ए फरिश्ता (अनु0), भाग 2, पृ0 420.
3. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 6, पृ0 526,
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 150.
4. बद्रे चच, कसैदे बद्रे चच, पृ0 25-29.

धर्मचन्द्र एवं विधीचन्द्र

नगरकोट का धर्मचन्द्र प्रथम ऐसा राजा था जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की थी । अकबर ने अपने शासन के प्रारम्भिक वर्षों में जब सिकन्दर खान सूर के विरुद्ध अभियान किया तब वह धमेरी नामक स्थान पर सम्राट से मिलने गया सम्राट ने भी उसका बड़ा सम्मान किया ।[1] फरिश्ता के अनुसार उस समय उसे उसका पैतृक वतन इक्ता के रूप में प्रदान किया गया ।[2] सन 1572-73 ई0 में सम्राट उसके पौत्र जयचन्द्र से रुष्ट हो गया । उसने उसे बन्दी बना लिया उसी समय उसका कनिष्ठ पुत्र विधीचन्द्र अपने पिता को मृतक जानकर जसवान के गोपी चन्द्र जसवल की सहायता से नगरकोट का राजा बन बैठा ।

सम्राट ने नगरकोट की जागीर राजा वीर वर को प्रदान की और खाने जहाँ हुसैन कुली खाँ को आदेश दिया कि वह नगरकोट की ओर जाये और उसे विजित करके राजा बीरवर को सौंप दे ।[3] किले का घेरा डाल दिया गया और नगरकोट के राजा को सन्धि करने के लिये बाध्य किया गया । सन्धि की शर्तें निम्न थीं - 1. राजा अपनी पुत्री को मुगल हरम में भेजेगा । 2. सम्राट को सुनिश्चित पेशकश देगा । 3. मुगल सूबेदार के पास वह अपना एक पुत्र बन्धक के रूप में भेजेगा । 4. राजा बीरवर को बहुत सारी धनराशि देगा । 5. राजा गोपीचन्द्र मुगल सूबेदार से भेंट करेगा ।[4]

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 20,
   मुल्ला अहमद थट्वी और आसफ खान, तारीख-ए अल्फी, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, पाण्डुलिपि, पृ0 120.

2. फरिश्ता, तारीख-ए फरिश्ता, भाग 2, पृ0 244.

3. कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 30, बेनीप्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0268.

4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 36.

इस सन्धि के परिणामस्वरूप हुसैन कुली खान को पेशकश में अन्य चीजों के अतिरिक्त पाँच मौण्ड सोना प्राप्त हुआ जो कांगड़ा की मन्दिर की एक वर्ष की आय थी । कुछ समय पश्चात नगरकोट का कुछ भाग खालसा के अन्तर्गत चला गया उसके पश्चात जयचन्द्र मुगलों के प्रति राजभक्त रहा । वह सम्राट अकबर के शासन के 26वें वर्ष मुगल दरबार में सम्राट से मिलने आया ।[1] लेकिन उसके पुत्र विधीचन्द्र ने पुनः मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और 1590-91 ई0 में वह पहाड़ी विद्रोहियों के साथ मिल गया । उसे सम्राट ने सेना भेजकर पराजित किया अन्ततः वह अपने पुत्र त्रिलोकचन्द्र के साथ मुगल सम्राट से मिलने आया और उसे अपने पुत्र त्रिलोकचन्द्र को मुगल दरबार में बन्धक के रूप में रखना पड़ा ।[2] त्रिलोक चन्द्र ने भी दो बार 1598-1599 तथा 1602-03 ई0 में पहाड़ी विद्रोहियों के साथ मिलकर विद्रोह किया किन्तु वह पराजित हुआ । वह स्वयं सम्राट से मिलने गया । सम्राट ने उसे क्षमा कर दिया और उस पर बड़ी कृपायें की । सम्राट ने अपने शासन के 47वें वर्ष उसे परम नरम उपहार में दिया ।[3] अकबर के शासनकाल में दामन-ए कोह कांगड़ा में मुगल सत्ता के उन्मूलन के लिये क्षेत्र के पर्वतीय राजाओं ने जो भी प्रयास किये उन्हें मुगल सेना ने विफल कर दिया फिर भी जहाँगीर इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जब तक दामन कोह कांगड़ा को अन्तिम एवं निर्णायक रूप से जीत कर इन पहाड़ी राज्यों का मुगल साम्राज्य में पूर्णतया विलय नहीं कर लिया जाता तब तक इस पर्वतीय अंचल पर मुगल आधिपत्य स्थायी नहीं रह सकता । सन् 1615 ई0 से 1620 ई0 तक मुगल सेनायें इस पर्वतीय अंचल की घाटियों एवं चोटियों में संघर्ष करती रही।

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 348.

2. हचिन्सन, हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेट्स, भाग 1, पृ0 151.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 815.

जहाँगीर के सिंहासनारोहण के समय त्रिलोक चन्द्र कांगड़ा का राजा था । उसे अपनी पहाड़ी सुदृढ़ व्यवस्था पर इतना गर्व था कि वह मुगल सम्राट का कोई आदर सम्मान नहीं करता था ।[1]

तुजुक-ए जहाँगीरी के अनुसार जहाँगीर ने सन 1614 ई0 में नगरकोट के किशनचन्द्र को राजा की उपाधि दी । यद्यपि किशनचन्द्र का नाम नगरकोट के राजाओं की सूची में नहीं मिलता ।[2]

सन 1615 ई0 में जहाँगीर ने पंजाब के सूबेदार मुर्तजा खान को सूरजमल के साथ कांगड़ा विजय के लिये भेजा । राजा सूरजमल अपने प्रदेश के सन्निकट मुगलों के विस्तार एवं संगठन को प्रसन्द नहीं करता था अतः वह मुगलों के शत्रु से मिल गया । मुर्तजा खान ने उसकी शिकायत जहाँगीर से की । राजा सूरजमल शाह-जादा खुर्रम से मिल गया । सन 1616 ई0 में सम्राट ने उसे दरबार में बुलाया किन्तु खुर्रम की सिफारिश से उसे माफ कर दिया गया । मुर्तजा खान की मृत्यु के पश्चात् उसे पुनः कांगड़ा अभियान पर भेजा गया किन्तु इस बार भी मुगलों के विरुद्ध वह कांगड़ा के राजा से मिल गया । सम्राट ने उसकी जगह राजा विक्रमा-जीत को भेजा । कांगड़ा के दुर्ग का घेरा चौदह माह तक चलता रहा अन्ततः 16 नवम्बर 1620 ई0 में कांगड़ा के दुर्ग पर मुगलों का अधिकार हो गया ।[3] 1620 ई0 में मुगल सेनाओं ने कांगड़ा के दुर्ग पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त कर ली ।[4] शाह

---

1. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 150.
2. कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 31.
3. बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 270.
4. प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, नैनीताल, 1988, पृ0 131,
   कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 31,
   आर0पी0 त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, पृ0 362.

फतेह-ए कांगड़ा एवं मासिर-उल उमरा के अनुसार कांगड़ा दुर्ग के साथ ही इस पर्वतीय अंचल में स्थित हारा, पहाड़ी, थट्टा, फकरोटा, सूर ज्वाली, कोकिला, चम्बा, मऊ, मदारी आदि दुर्ग भी जीत लिए गए ।[1] इस विजय अभियान के दो वर्ष पश्चात जहाँगीर ने इस पर्वतीय अंचल का भ्रमण किया । इस यात्रा की स्मृति में कांगड़ा दुर्ग के प्रवेश द्वार का नाम जहाँगीरी दरवाजा रखा गया । संभवतः इसी अवसर पर धमरी का नाम परिवर्तित करके नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर अथवा नूरजहाँ के नाम पर नूरपुर रखा गया ।[2]

इस नवविजित प्रदेश में मुगल आधिपत्य को स्थायी बनाए रखने एवं मुगल प्रशासन लागू करने के लिये जहाँगीर ने क्या व्यवस्थायें की इसका वर्णन शम्स फतेह-ए कांगड़ा के लेखक ने नहीं किया है । डॉ० वेनी प्रसाद की पुस्तक हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर भी इस विजय पर मौन है । हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ हिमालयन स्टेट्स के लेखक प्रो० सुखदेव सिंह चरक के अनुसार कांगड़ा का सर्वप्रथम मुगल किलेदार नवाब अली खाँ था ।[3] जबकि तुजुक-ए जहाँगीरी से ज्ञात होता है कि कियाम खानी अल्फ खाँ को कांगड़ा विजय के पश्चात कांगड़ा का किलेदार नियुक्त किया गया । तुजुक-ए जहाँगीरी के अनुसार जिस दिन कांगड़ा विजय का समाचार प्राप्त हुआ । उसी दिन अब्दुल अजीज खाँ नाकाबन्दी को कांगड़ा का फौजदार नियुक्त किया गया । उसका मनसब 2000/1500 कर दिया गया । अल्फ खाँ कियाम खानी को कांगड़ा का किलेदार नियुक्त किया गया और उसका मनसब 1500/1000 सवार कर दिया गया । इसके साथ ही इस पर्वतीय भाग की सुरक्षा के लिये शेख फैजुल्ला एवं शेख ईसाक को भी नियुक्त किया गया ।[4]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, हिन्दी (अनु०), पृ० 288,
   शम्स फतेह-ए कांगड़ा, हिन्दी, इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 6, पृ० 391.
2. हचिन्सन, हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ हिमालयन स्टेट्स, कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृ० 32.
3. हचिन्सन, हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ हिमालयन स्टेट्स, पृ० 187-88.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ० 288.

इस प्रकार यद्यपि जहाँगीर ने कांगड़ा को विजित करके उसे मुगल साम्राज्य में सम्मिलित करके वहाँ मुगल प्रशासन लागू कर दिया था फिर भी इस पर्वतीय प्रदेश में मुगल सत्ता के प्रतिरोध को रोका नहीं जा सका। सम्राट जहाँगीर के शासन-काल के उत्तरार्द्ध में मुगल दरबार की दलबन्दियों एवं शहजादा खुर्रम के विद्रोह से उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाने के उद्देश्य से मऊ के राजाओं ने दामन-ए कोह कांगड़ा से मुगल आधिपत्य को समाप्त करने के लिये पुन: प्रयास किया।[2]

सम्राट शाहजहाँ कांगड़ा की दुर्गमता एवं सामरिक महत्त्व को समझता था।[3] अत: उसने यहाँ शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित करने की ओर विशेष ध्यान दिया। यद्यपि शाहजहाँ के शासनकाल के प्रथम दशक में कांगड़ा में शान्ति रही लेकिन द्वितीय दशक में कांगड़ा में मुगल सत्ता का पुन: प्रतिरोध प्रारम्भ हो गया। सन 1636-37 ई0 में जम्मू के राजा भूपति ने एक विशाल सेना लेकर सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा के तत्कालीन फौजदार शाह कुली खाँ पर चढ़ाई कर दी। शाह कुली खाँ ने बड़ी वीरता एवं परिश्रम से राजा भूपति के इस आक्रमण को विफल कर दिया।[4] किन्तु कुछ ही समय पश्चात पुन: कांगड़ा में विद्रोहात्मक स्थिति उत्पन्न हो गयी अत: शाहजहाँ ने इस विद्रोह का दमन करने के लिये शहजादा मुराद के नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजी। मऊ, नूरगढ़ एवं तारागढ़ के दुर्गों के सम्मुख एक वर्ष तक संघर्ष होता रहा अन्तत: मुगल सेनायें सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा पर अधिकार करने में सफल हो गयी।[4] इसके पश्चात सम्राट शाहजहाँ के आदेश पर तारागढ़ एवं मऊ

---

1. प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1986, कुमायूँ, 1986, पृ0 131. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 288.
2. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, षष्ठ खण्ड, शम्म फतेह-ए कांगड़ा, पृ0 398.
3. प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, नैनीताल, 1986, पृ0 132.
4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 677, 704, 803, 1011, भाग 1, पृ0 685.

के दुर्ग तोड़ दिये गये । विद्रोहियों का दमन कर दिया गया और वहाँ शान्ति स्थापित कर दी गयी ।

कनिंघम ने जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में कांगड़ा में राजा त्रिलोक चन्द्रभान और विजयराम का वर्णन किया गया है ।[1]

कांगड़ा में मुगल सत्ता के प्रतिरोध का कारण

सन 1556 ई0 से सन 1658 ई0 तक लगभग एक शताब्दी तक कांगड़ा में मुगलों को निरन्तर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा । उसके कई कारण दृष्टिगोचर होते हैं प्रथम कांगड़ा दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में स्थित था जहाँ मैदानी मुगल सैनिक अपनी युद्ध कुशलता का पूर्ण प्रदर्शन पूर्ण तत्परता से नहीं कर सकते थे जबकि स्थानीय राजाओं के सैनिक इस पर्वतीय अंचल की घाटियों एवं ऊँची चोटियों पर युद्ध करने के अभ्यस्त थे । यही कारण है कि दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों के समय से शेरशाह के समय तक 51 बार आक्रमण किये जाने पर भी इस पर्वतीय अंचल पर निर्णायक रूप से विजय नहीं प्राप्त हो सकी ।[2] द्वितीय सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा अत्यधिक विस्तृत था । पूरब में चम्बा से पश्चिम में गढ़वाल तक तथा उत्तर में लाहौर से दक्षिण में पंजाब की पहाड़ियों तक लगभग 100000 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल में विस्तृत था । इस पर्वतीय अंचल को केवल एक फौजदार जिसका मनसब जहाँगीर के शासनकाल में 2000/1500 था[3] और शाहजहाँ के शासनकाल में 3000/2000 था[4] सरलता से नियंत्रित

---

1. पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 26.
2. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 6, पृ0 394.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 288.
4. मुन्शी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 96,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 685.

नहीं कर सकता था । तृतीय सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा को सूबा पंजाब के अन्तर्गत रखा गया था । संकट के समय फौजदार दामन-ए कोह कांगड़ा को तात्कालिक सहायता पंजाब के सूबेदार से ही मिल सकती थी जबकि सूबेदार पंजाब का मुख्यालय पर्वतीय अंचल से बाहर होने के कारण कांगड़ा तक सैनिक सहायता पहुँचने में पर्याप्त विलम्ब हो जाता होगा । फौजदार दामन-ए कोह कांगड़ा उस समय और भी अधिक असहाय हो जाता होगा जब विद्रोही सैनिक पंजाब से कांगड़ा की ओर आने वाले पहाड़ी मार्गों को अवरुद्ध कर देते होंगे ।

चतुर्थ एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य यह था कि अनेक अवसरों पर इस पर्वतीय अंचल में भू-स्वामियों ने संगठित एवं सामूहिक रूप से एक संघ बनाकर मुगल सत्ता का प्रतिरोध किया । ऐसी स्थिति में इन पर्वतीय भू-स्वामियों की सैनिक शक्ति निस्सन्देह फौजदार दामन-ए कोह कांड़ा की सैनिक शक्ति से अधिक हो जाती होगी । यही कारण है कि इस शताब्दी में हमें केवल एक उदाहरण ऐसा मिलता है जबकि फौजदार दामन-ए कांगड़ा ने इस क्षेत्र में होने वाले विद्रोह का दमन बिना अतिरिक्त सहायता के किया ।[1] अन्यथा प्रत्येक बार सूबा पंजाब अथवा केन्द्र से सैनिक सहायता पहुँचने पर ही इस पर्वतीय अंचल में होने वाले विद्रोहों का दमन किया जा सका था ।

इस पर्वतीय अंचल में अनवरत मुगल सत्ता के प्रतिरोध के लिये कुछ प्रशासनिक कारण भी उत्तरदायी थे ।

प्रथम आईने-अकबरी व अकबरनामा से उपलब्ध विवरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अकबर के शासनकाल में इस पर्वतीय अंचल के अधिकांश राजपूत

---

1. शाह नवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 685.

राज्य अर्द्धस्वतन्त्र रहे अतः अपने शासनकाल के उत्तरार्द्ध में जब अकबर ने यह पर्वतीय प्रदेश राजा बीरबल को सौंपा तब स्थानीय राजाओं ने जो पर्याप्त समय से स्वतन्त्र सत्ता का उपभोग कर रहे थे अपनी स्वतन्त्रता का अपहरण न होने देने के लिये एक संघ बनाकर तथा एक लाख से अधिक सैनिक एकत्रित कर अकबर के इस निर्णय का सशस्त्र विरोध किया । यदि अति प्रारम्भ में अकबर ने इस पर्वतीय अंचल को पूर्णतया विजय कर अपने साम्राज्य में मिला लिया होता तो संभवतः इस पर्वतीय अंचल के भू-स्वामी मुगल सत्ता के प्रतिरोध के लिये शक्ति एवं साहस न जुटा पाते और आगामी मुगल शासकों जहाँगीर तथा शाहजहाँ को इस पर्वतीय अंचल में मुगल सत्ता के स्थायित्व के लिये कठिन प्रयास न करने पड़ते ।

द्वितीय संभवतः अपने पिता की उसी भूल को सुधारने के लिये जहाँगीर ने इस पर्वतीय अंचल में स्थित राज्यों पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर इन राज्यों का विलय मुगल साम्राज्य में कर लिया । लेकिन इस पर्वतीय अंचल को सीधे प्रशासन में ले लेने मात्र से ही मूल समस्या का समाधान नहीं हो सकता था । इस पर्वतीय प्रदेश में मुगल शासन को तत्परता से लागू करने के लिये आवश्यक था कि या तो लगभग 10000 वर्ग किमी० में विस्तृत सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा को एक पृथक सूबे के रूप में संगठित किया जाता या फिर इस सरकार के फौजदार की सैनिक शक्ति में पर्याप्त वृद्धि की जाती । परन्तु जहाँगीर ने इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया अतः जैसे ही खुर्रम के विद्रोह से मुगल साम्राज्य में अव्यवस्था उत्पन्न हुयी । इस पर्वतीय अंचल में पुनः मुगल सत्ता के उन्मूलन के लिये विद्रोह भड़क उठे।

तृतीय यद्यपि शाहजहाँ के फौजदार दामन-ए कोह कांगड़ा की सैनिक शक्ति में वृद्धि के लिये उसके पूर्व मनसब 2000/1500 में वृद्धि कर उसका मनसब 3000/2000 कर दिया था तथा संकट के समय इस फौजदार को तदर्थ सैनिक दिये जाने की भी व्यवस्था थी लेकिन साथ ही शाहजहाँ ने इस फौजदार के दायित्वों में भी वृद्धि कर दी थी । इस बात के प्रबल प्रमाण मिलते हैं कि शाहजहाँ के शासनकाल में जम्मू

को सूबा कश्मीर से अलग करके सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा में सम्मिलित किया गया ।[1] ऐसी स्थिति में सैनिक शक्ति में वृद्धि हो जाने के पश्चात भी इस फौजदार के लिए असुविधा उत्पन्न हो सकती थी क्योंकि यह सरकार पहले से ही काफी विस्तृत थी ।

चतुर्थ शाहजहाँ ने इस पर्वतीय अंचल में मुगल सत्ता के स्थायित्व के लिये संतुष्टीकरण और दमनकारी दोनों नीतियाँ अपनायीं । शाहजहाँ की दमनकारी नीति की अपेक्षा संतुष्टीकरण की नीति पूर्णतया असफल रही । क्योंकि सन 1639 ई0 में उसने एक स्थानीय राजा राजरूप को सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा का फौजदार नियुक्त कर दिया । संभवतः शाहजहाँ के यह विश्वास होगा कि स्थानीय राजा को ही इस पर्वतीय अंचल का प्रशासक नियुक्त कर दिये जाने से इस पर्वतीय अंचल के भू-स्वामी संतुष्ट हो जायेंगे । लेकिन एक ऐसे राजा को सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा का फौजदार बनाना, जिसके पूर्वज इस पर्वतीय अंचल से मुगल सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिये स्थानीय विद्रोही जमींदारों का नेतृत्व करते आ रहे थे, शाहजहाँ की भूल थी । इससे भी बड़ी भूल शाहजहाँ ने सन 1641 ई0 में की, जब उसने राजा राजरूप के स्थान पर उसके पिता राजा जगतसिंह को सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा का फौजदार बना दिया । मऊ का यह राजा जगतसिंह एवं उसका पिता राजा बासू अकबर के शासनकाल से ही मुगल सत्ता के उन्मूलन के लिये प्रयत्नशील थे । सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा का फौजदार बनने से पूर्व ही राजा जगतसिंह दो बार इस पर्वतीय अंचल से मुगल सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिये विद्रोह कर चुका था ।

सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा का फौजदार बनने के तुरन्त पश्चात जगत सिंह ने इस पर्वतीय अंचल से मुगल सत्ता के उन्मूलन के लिये अभियान प्रारम्भ कर

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 726-727.

दिये । जगतसिंह के इन विद्रोहात्मक कार्यों को देखकर शाहजहाँ को अपनी भूल का अहसास हुआ । अतः उसने तुरन्त जगतसिंह को फौजदार के पद से अपदस्थ करने के लिये आदेश पारित किये लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी । शाहजहाँ ने जगतसिंह का दमन करने के लिये एक साथ तीन सेनायें भेजी परन्तु जगतसिंह ने इन सेनाओं का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया । अन्ततः जगतसिंह के दमन के लिये शाहजादा मुराद के सेनापतित्व में एक अन्य विशाल सेना भेजी गयी तत्पश्चात ही जगतसिंह एवं उसके सहयोगियों का दमन किया जा सका ।[1]

शाहजहाँ ने सामरिक महत्त्व के ऐसे दुर्गों को भी तुड़वा दिया जहाँ से विद्रोही सैनिक मुगल सेनाओं पर प्रहार करते थे और जो इन विद्रोहियों के छापामार युद्ध के केन्द्र बने हुये थे । शाहजहाँ ने राजा जगतसिंह के पश्चात अपने अति विश्वसनीय एवं योग्य सेनानायकों को ही सरकार दामन-ए कोह कांगड़ा के फौजदार के पद पर नियुक्त किया । शाहजहाँ द्वारा की गयी इस व्यापक व्यवस्था के पश्चात ही इस पर्वतीय अंचल में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित हो सकी ।

मउ

नगरकोट के उत्तर पश्चिम में मउ[2] का क्षेत्र था । मउ और पठानकोट गुरदासपुर जिले में रावी नदी के पास है । यह स्थान पंजाब प्रान्त के बारी दोआब में उत्तरी पहाड़ों के पास है ।[3] मउ का किला घने वनों से आच्छादित बीहड़ पहाड़ियों के मध्य स्थित था ।[4] अकबर के शासनकाल में बखतमल यहाँ का

---

1. उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस, कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1986, पृ0135.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 319.
3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 392.
4. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 91.

शासक था । शाहपुर भी इस सरकार के महाल के रूप में था ।[1]

बख्तमल एवं तख्तमल

बख्तमल ने अकबर के शासनकाल में सिकन्दर खान सूर की मुगलों के विरुद्ध सहायता की थी ।[2] अबुल फजल के अनुसार हिन्दुस्तान के जमींदारों की यह प्रवृत्ति रही है कि वह जिसे शक्तिशाली देखते थे उसी का पक्ष लेते थे । यही बात बख्तमल के साथ भी थी वह मुगलों की अधीनता स्वीकार करने में हिचकिचा रहा था । बख्तमल परेशानी उत्पन्न कर रहा था और विश्वस्त नहीं था, इसलिए बैराम खाँ ने उसे अपदस्थ करके उसके भाई तख्तमल को मउ की गद्दी पर 1557 ई0 में बिठाया ।[3] तख्तमल 1580 ई0 में अपनी मृत्यु तक मुगलों के प्रति राजभक्त बना रहा ।[4]

बासु

तख्तमल का उत्तराधिकारी राजा बासु (1580-1613 ई0) था । वह भी 1586 ई0 तक मुगलों के प्रति राजभक्त बना रहा । टोडरमल के द्वारा सैनिक दबाव डालने पर उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली ।[5] उसने मुगलों से समझौता करके सम्राट अकबर से भेंट की ।[6] किन्तु 1590-91 ई0 में राजा बासु इस सूबे के पहाड़ी राजाओं के विद्रोह में सम्मिलित हो गया किन्तु जैन खाँ कोका द्वारा विद्रोह का दमन किये जाने पर वह उसके साथ सम्राट के दरबार में आया व सम्राट से मिला ।[7]

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 155-156.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 63.
3. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 2, पृ0 63.
4. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 63.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 509-510.
6. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 509-510.
7. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 583.

अकबर के शासनकाल के 41वें वर्ष (1596-97 ई0) में राजा बासु ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया उसने अन्य जमींदारों को अपनी ओर मिला लिया। वह मुगल आदेशों की अवहेलना करने लगा।[1] अत: सम्राट ने मिर्जा रुस्तम को पैठान इक्ता के रूप में प्रदान किया और उसे सेनासहित राजा बासु के विरुद्ध भेजा।[2] शाही सेना के मउ पहुँचते ही अन्य जमींदारों ने राजा बासु का साथ छोड़ दिया व मुगलों से मिल गये।[3] मुगल सेना ने मऊ को घेर लिया। दो माह की निरन्तर लड़ाई के बाद मुगलों का मऊ पर 1597 ई0 में अधिकार हो गया।[4] इसके बाद कब राजा बासु ने पुन: मऊ पर अधिकार किया यह ज्ञात नहीं है किन्तु 1602-03 ई0 का यह विवरण प्राप्त होता है कि राजा बासु मुगलों का पुन: विरोध करता है। वह पैठान पर आक्रमण करता है तथा पड़ोसी राज्यों के किसानों पर अत्याचार करता है।[5] साथ में वह जम्मू के राजा की मुगलों के विरुद्ध सहायता भी करता है।[6] अत: एक बार पुन: 1602-03 ई0 में उसके विरुद्ध मुगलों ने सेना भेजी वह पराजित हुआ।[7] बन्दी बनाया गया व दरबार लाया गया। वहाँ शहजादा सलीम के अनुग्रह पर राजा बासु को क्षमा कर दिया गया।[8] किन्तु 1604-05 ई0 में राजा बासु ने पुन: विद्रोह कर दिया।[9] राजा बासु के

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 712, 724, 726.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 712,
   शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 393.
3. अबुल-फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 726.
4. अबुल-फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 726.
5. अबुल-फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 803.
6. अबुल-फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 808.
7. अबुल-फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 810.
8. अबुल-फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 822.
9. अबुल-फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 833.

निरन्तर मुगल विरोधी रूख अपनाने के बावजूद शहजादा सलीम को राजा बासु से सहानुभूति थी । वह उसे अपना वफादार सेवक समझता था ।

11-12 मार्च 1606 ई0 को जहाँगीर ने अपने पहले जुलूसी वर्ष में पदोन्नतियों का विवरण देते समय राजा बासु के विषय में लिखा है - कि पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र का राजा बासु मेरी शहजादगी के समय से ही मेरी सेवा करता रहा है, व मेरे प्रति वफादार रहा है । उसका पूर्व मनसब 1500 तक था जिसे मैंने बढ़ाकर 3500 तक कर दिया ।[1] मासिर-उल उमरा में भी यह वर्णित है कि जहाँगीर के समय में राजा बासु का मनसब 3500 था ।[2] जहाँगीर ने 1605 ई0 में खुसरो के विद्रोह के समय राजा बासु को उसके विरुद्ध भेजा था ।[3] सन् 1607 ई0 में राजा रामचन्द्र बुन्देला को जब बन्दी बनाकर मुगल दरबार लाया गया तब उसकी देखभाल का दायित्व सम्राट ने राजा बासु को सौंपा था ।[4] जहाँगीर के शासनकाल के छठें वर्ष राजा बासु को दक्षिण अभियान पर भेजा गया और इसी समय उसके मनसब में 500 की वृद्धि की गयी ।[5] जहाँगीर के शासनकाल के 8वें वर्ष (1022 हिज़री) सन् 1612 ई0 में राजा बासु की मृत्यु हो गयी ।[6]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, (अनु0) भाग 1, पृ0 49,
   कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, परिशिष्ट 1, पृ0 2, मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद,
   उमराये हुनूद, पृ0 96.
2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 394.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, (अनु0), भाग 1, पृ0 65.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, (अनु0), भाग 1, पृ0 87.
5. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, (अनु0), भाग 1, पृ0 200.
6. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 394,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 252,
   कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, परिशिष्ट 1, पृ0 2,
   मुल्ला मुहम्मद सईद, अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 96.

राजा बासु की जहाँगीर के प्रति कितनी भक्ति थी तथा जहाँगीर को राजा बासु से कितना लगाव था यह इस बात से प्रकट है कि जहाँगीर ने अपनी शहजादगी के समय कई बार अपने पिता से कहकर राजा बासु को क्षमा करवा दिया था । हचिन्सन के अनुसार राजा बासु के अकबर के विरुद्ध कई विद्रोह जहाँगीर के द्वारा ही करवाये गये थे ।[1] इसमें जहाँगीर का राजा बासु के प्रति व्यक्तिगत स्नेह प्रकट होता है । राजा बासु ने कांगड़ा के समीप एक शानदार किला बनवाया और कई इमारतें बनवाकर जहाँगीर के नाम नुरुद्दीन पर उसका नाम भी नूरपुरा रखा ।[2]

राजा बासु के दो पुत्र थे, राजा सूरजमल और राजा जगतसिंह ।[3]

सूरजमल

राजा बासु का ज्येष्ठ पुत्र राजा सूरजमल था । वह अपने विद्रोह एवं बुरे आचरण से अपने पिता को दुखी रखता था । इससे सशंकित होकर राजा बासु ने उसे कैद में डाल दिया किन्तु राजा बासु की मृत्यु हो जाने पर उसके अन्य पुत्रों में जमींदारी संभालने की योग्यता न देखकर जहाँगीर ने सूरजमल को राजा की उपाधि दी, उसे 2000 का मनसब प्रदान किया और उसके पिता की सम्पूर्ण जमींदारी व कोष ।जिसे उसके पिता ने वर्षों से संचित किया था। उसे प्रदान किया ।[4]

---

1. हचिन्सन, हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिल स्टेट्स, भाग 1, पृ0 227.
2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 96.
3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 394.
4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 912,
   बनारसी प्रसाद, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 88,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 54,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 151.

सम्राट ने उसके मनसब में 500 की वृद्धि करके उसे मुर्तजा खां शेख फरीद के साथ कांगड़ा के दुर्ग की विजय पर नियुक्त किया ।[1] जब शेख के प्रयत्न से दुर्ग वालों का कार्य कठिन हो गया और विजय मिलने वाली थी उस समय सूरजमल ने असहयोग का रूप अपना लिया व व्यवधान उत्पन्न करने लगा । अत: मुर्तजा खान ने सम्राट से सूरजमल के विद्रोही और बुरे इरादों के बारे में बताया । जहाँगीर ने उसके दमन का कार्य खुर्रम को सौंपा ।[2] खान की शाहजहाँ के शासन के 11वें वर्ष मृत्यु हो गयी और दुर्ग की विजय का कार्य कुछ दिन के लिए रुक गया । राजा सूरजमल शहजादों की प्रार्थनानुसार दरबार में उपस्थित हुआ व दक्षिण की चढ़ाई पर नियुक्त हुआ । सन 1616 ई0 में राजा सूरजमल जहाँगीर से मिला । उसने उसे पेशकश के रूप में बहुत से उपहार दिये ।[3] सन् 1617 ई0 में जहाँगीर ने राजा सूरजमल को एक खिलअत एक हाथी एक जड़ाऊ खपवा, एक ताकी साज सहित प्रदान की ।[4] और उसे कांगड़ा अभियान पर भी भेजा गया, यद्यपि कांगड़ा अभियान पर इसे पुन: भेजना युक्तिसंगत नहीं था, परन्तु यह चढ़ाई शहजादे के प्रबन्ध में हो रही थी । अत: उसे भेजा गया ।[5] कुछ समय उपरान्त उसने शाही सेना के विरुद्ध विद्रोह का झंडा कर दिया । अत: सम्राट ने अपने शासनकाल के 13वें वर्ष राजा विक्रमाजीत को उसके विरुद्ध भेजा दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ । इस युद्ध

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 283,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 151.
2. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, षष्ठ खण्ड, हिन्दी (अनु0), पृ0395.
   बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 289.
3. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 119.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 393.
5. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, (अनु0), पृ0 25.

में सूरजमल की पराजय हुई । दुर्ग मउ और मुहरी पर शाही सेना का अधिकार हो गया और कुछ समय पश्चात 1619 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[1] अब मउ पर मुगलों का आधिपत्य स्थापित हो गया ।

जगतसिंह

राजा सूरजमल के पश्चात उसका भाई राजा जगत सिंह उसका उत्तराधिकारी बना ।[2] उसे सम्राट ने 1000/500 का मनसब प्रदान किया साथ में 20000 रूपये, एक तलवार और एक घोड़ा हाथी, भी उपहार में प्रदान किया । अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से उसने अपना प्रभाव इतना बढ़ा लिया कि उसका मनसब जहाँगीर के शासनकाल में 3000/2000 हो गया ।[3] शाहजहाँ के शासनकाल में भी उसका मनसब यथावत रहा । वह शाहजहाँ के अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह में शाहजहाँ के साथ था । शाहजहाँ के शासनकाल में सन् 1636 ई0 में उसे बंगश का फौजदार

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, हिन्दी (अनु0) भाग 1, पृ0 240,
   इनायत उल्ला खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 8,
   जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, (अनु0) भाग 2, पृ0 74, 75, 183.
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 121.

2. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 121,
   बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 269.

3. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा (अनु0) भाग 1, पृ0 145,
   बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 270,
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 172,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 151,
   बनारसी प्रसाद, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 88,
   अब्दुल हमीद लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 182.

नियुक्त किया गया और खौज के शत्रुओं के दमन का कार्य उसे सौंपा गया । 1638 ई0 में उसे सम्राट ने काबुल भेजा जहाँ उसने अहदाद के पुत्र करीम दाद को पकड़ने में मदद की ।[1] 1640 ई0 में वह शाहजहाँ से मिलने लाहौर गया और सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत, मोतियों की माला और जड़ाऊ आभूषण प्रदान किये तथा पुन: उसे बंगश का फौजदार बना दिया ।[2] उसने जलाला के पुत्र करीम दाद को गिरफ्तार करने का कार्य किया । 1639 ई0 में वह शाही सेना के साथ कन्धार अभियान पर गया । इस अभियान में उसने पहले किला सार बाँध और फिर किला विष्ट को विजित किया । सम्राट ने उसे उपहार के रूप में कीमती मोतियों की माला प्रदान की और उसे बंगश की फौजदारी पर नियुक्त किया ।[3] सन् 1642 ई0 में उसने कांगड़ा की निचली पहाड़ियों की फौजदारी का दायित्व अपने पुत्र राजरूप सिंह के लिए सम्राट से मांगा और उस स्थान से कर की वसूली का अधिकार भी मांगा । सम्राट ने उसकी यह माँग मान ली और उसे उस पद पर नियुक्त कर दिया गया । वहाँ से 4 लाख रूपया राजस्व एकत्रित होता था । जाते समय सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत व घोड़ा प्रदान किया[4] किन्तु अपने पैतृक

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 88,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 93, 140.

2. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 172,
   कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, परिशिष्ट 1, पृ0 3,
   मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 151,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 156.

3. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 151,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 198.

4. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 146,
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्ड द मुगल्स, पृ0 172,
   मुल्ला मुहम्मद सईद, अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 151.

वतन वापस लौटने पर उसने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, अतः सम्राट ने बारहा के मुराद खान को जफर जंग को तथा असलम खान को सेना सहित उसके विरुद्ध भेजा । मुराद खान ने नगरकोट नूरपुर तथा तारागढ़ के तीन किलों पर शक्तिशाली आक्रमण किये । जगतसिंह ने बड़ी बहादुरी से इस आक्रमण का सामना किया, किन्तु अन्ततः पराजित हुआ । उसे सम्राट के सम्मुख ले जाया गया । सम्राट ने उसे क्षमा कर दिया और उसे उसकी पूर्वस्थिति में ही रहने दिया । साथ में एक शर्त अवश्य लगा दी कि मऊ और तारागढ़ के किले नष्ट कर दिये जायें ।[1] इसी वर्ष उसे दारा के साथ कन्धार अभियान पर भेजा गया । 1646 ई0 में उसे एक विशेष खिलअत, तलवार, मुरस्सा, घोड़ा आदि देकर बल्ख व बदख्शां अभियान पर भेजा गया, किन्तु इस अभियान के मध्य में ही वह वहाँ से लौट आया और । फरवरी 1646 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[2]

राजा जगतसिंह की मृत्यु के पश्चात उसके ज्येष्ठ पुत्र राजरूप को सम्राट ने खिलअत भेजा, साथ ही उसे 1000/1000 का मनसब और राजा की उपाधि प्रदान की तथा उसे उसके पिता का उत्तराधिकारी नियुक्त किया ।[3] लकड़ी का जो किला उसके पिता ने सराब और इंदराब में बनवाया था उसकी देखभाल का कार्य उसे सौंपा गया और उसके पिता को जो अतिरिक्त 1500 सवार और 2000

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 147,
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 172,
   मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 168-174.

2. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 152.

3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 198.

पैदल सैनिक दिये गये थे उनका वेतन काबुल के खजाने से दिये जाने का आदेश दिया गया ।[1]

सम्राट ने सन 1638 ई0 में राजरूप को कांगड़ा की फौजदारी का दायित्व सौंपा । इस समय उसे मनसब भी प्राप्त था । 27 जुलाई 1646 ई0 में सम्राट ने राजरूप को जड़ाऊजमधर तथा मोतियों के कुण्डल प्रदान किये और उसके मनसब में 500/500 की वृद्धि करके उसका मनसब 2000/1500 का कर दिया ।[2] 17 अगस्त 1646 ई0 में राजा राजरूप के मनसब में 500 सवारों की वृद्धि हुयी अब उसका मनसब 2000/2000 का हो गया ।[3] सन 1653 ई0 में उसे कंधार अभियान पर भेजा गया था । कुछ समय पश्चात उसका मनसब बढ़ाकर 3000/2500 का कर दिया गया ।[4]

गुलेर

कांगड़ा के दक्षिण पश्चिम में गुलेर की छोटी सी जमींदारी थी । अबुल फज़ल ने इसे बारी दोआब के महाल के रूप में वर्णित किया था और इसके लिए ग्वालियर नाम बताया था । तारीख-ए दाउदी के लेखक अब्दुल्ला के अनुसार कांगड़ा और नगरकोट जाते समय गुलेर दाहिनी ओर पड़ता था । यह अनेक पहाड़ियों के मध्य स्थित था ।[5] अपनी समृद्धिकाल में गुलेर पूर्व में गनेश धन्ती से पश्चिम में रेह, दक्षिण में बीच से उत्तर में गन्गोत और जावली तक विस्तृत था ।[6]

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 198.
2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 205.
3. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 207.
4. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 256-258, 306.
5. अब्दुल्ला, तारीख-ए दाउदी (अनु0) शेख अब्दुल रशीद (अलीगढ़) 1954, पृ0 177.
6. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 223.

गुलेर के राजा कांगड़ा की कटोह शाखा के अंग थे । एक कटोह राजकुमार हरीसिंह ने 15वीं शदी में कांगड़ा से स्वतन्त्र, इस जमींदारी का निर्माण किया था ।[1] 16वीं शदी के मध्य में गुलेर के राजा ने इस्लाम शाह से भेंट की और उसकी प्रभुसत्ता स्वीकार कर ली । इस्लाम शाह ने भी शिवालिक की पहाड़ियों के अन्य राजाओं से अधिक उसका आतिथ्य सत्कार किया ।[2] उसने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी, 1563-64 ई0 में सम्राट ने उसे आदम खान गक्खर के विद्रोह का दमन करने के लिये नियुक्त किया । उसने नगरकोट के राजा जयचन्द्र को बन्दी बना लिया और उसे मुगल दरबार भेज दिया । अतः मुगल सम्राट ने भी कोटला के दुर्ग को जिस पर जयचन्द्र ने अपना अधिकार कर लिया था विजित करके उसे सौंप दिया ।[3] राजा रामचन्द्र के पश्चात् राजा जगदीश गुलेर का राजा बना । 1590-91 ई0 में से उसने मुगलों के विरुद्ध अन्य पहाड़ी राजाओं के साथ मिलकर विद्रोह कर दिया । मुगल सूबेदार जैन खां ने उस विद्रोह का दमन किया और उसे सम्राट के पास ले आया । सन् 1602-03 ई0 में गुलेर के शासक ने पुनः मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । यह विद्रोह उसने नगरकोट तथा मउ के शासकों से मिलकर किया था और इस समय मुगलों ने गुलेर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया तथा उसे रामदास कछवाहा को प्रदान कर दिया ।[4]

---

1. हचिन्सन, हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिल स्टेट्स, भाग 1, पृ0 111, 134, 135, 199, 200.

2. अब्दुल्ला, तारीख-ए दाउदी, (अनु0), शेख अब्दुल रशीद (अलीगढ़), 1954, पृ0 177.

3. निजामुद्दीन, अहमद, तबकात-ए अकबरी, भाग 2, पृ0 257-259.

4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 810.

जहाँगीर के समय गुलेर के शासक रूपचन्द्र का विवरण मिलता है । जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि गुलेर के शासक रूपचन्द्र ने कांगड़ा के दुर्ग की विजय में उल्लेखनीय सहायता की थी अतः सम्राट ने उसको आधा राज्य उसे स्वतंत्र रूप से प्रदान कर दिया तथा आधा राज्य उसकी जागीर के रूप में रहा ।[1]

शाहजहाँ के काल में गुलेर का राजा मानसिंह था, उसने मण्डी सुकेत कुलू राज्यों पर विजय प्राप्त की थी ।[2]

मण्डी

मण्डी राज्य के उत्तर में कुलू और कांगड़ा था, पूर्व में कुलू था, दक्षिण में सुकेत और पश्चिम में कांगड़ा था । अन्य राज्यों की भाँति इस राज्य का नाम भी इसकी राजधानी के नाम पर मण्डी पड़ा । मण्डी के राज्य का सबसे पहले वर्णन 1520 ई० के त्रिलोकनाथ मन्दिर के अभिलेख में मिलता है ।[3]

मण्डी में शासन करने वाले राजा चन्द्रवंशी राजपूत जाति के थे और उन्हें मण्डियाल कहा जाता था ।[4]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ० 187,
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ० 157.
2. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ० 223.
3. हचिन्सन हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिलस्टेट्स, भाग 2, पृ० 373,
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ० 229.
4. लैपेल एच ग्रीफिन, द राजास ऑफ द पंजाब, पृ० 629.

अजबर सेन को मण्डी का प्रथम राजा माना जाता था । उसने मण्डी शहर की स्थापना की और पुराने महल में 4 बुर्जों की जो जीर्ण शीर्ण स्थिति में थे, मरम्मत करवायी । 1527 ई0 में अपने पिता के पश्चात वह सिंहासन पर बैठा । उसने 1534 ई0 तक शासन किया । उसके पश्चात उसका पुत्र छतरसेन गद्दी पर बैठा । छतरसेन का बहुत कम विवरण मिलता है । उसका पौत्र साहिब सेन था । उसने कुल्लू के राजा जगतसिंह के साथ एक समझौता किया और दोनों ने मिलकर वजीरी लस्करी के राजा जयचन्द्र के ऊपर आक्रमण कर दिया और उसके राज्य पर अधिकार कर लिया । अधिकृत प्रदेशों में सराज मण्डी के क्षेत्र पर मण्डी के राजा का अधिकार हो गया और सराज कुल्लू जिसके अन्तर्गत बोक्ला, पलहम तालोकपुर और फतेहपुर सम्मिलित थे, कुल्लू के राजा को मिल गये । कुछ समय पश्चात इन दोनों ने पुन: उसी राजा के विरुद्ध सम्मिलित अभियान किया और उस पर विजय प्राप्त करने के पश्चात मण्डी के अधिकार में सानोर और वदई के प्रदेश आये जबकि कुल्लू के राजा जगतसिंह के अधिकार में बीरकोट मदनपुर और उसके समीपवर्ती 12 गाँव आये ।

साहिब सेन के पश्चात राजा नारायन सिंह मण्डी का राजा बना । उसने नेर, बन्धो और चुहार के राजाओं पर विजय प्राप्त की ।[1] उसके पश्चात केशव सेन और हरिसेन राजा बने । इनके विषय में समकालीन स्रोतों से कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती ।

राजा सूरजसेन 1637 ई0 में मण्डी का शासक बना ।[2] उसने अपने राज्य की सीमा विस्तृत की । प्रारम्भ में उसने नगबल के राजा मान के प्रदेश पर आक्रमण

---

1. सर लेपल एच0 ग्रीफिन, द राजास आफ द पंजाब, पृ0 633.

2. अकबर मुहम्मद, द पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 229.

किया किन्तु पराजित हुआ और उसके बहुत से प्रदेश उसके अधिकार से चले गये किन्तु जल्द ही उसने अपनी प्रतिष्ठा पुन: प्राप्त कर ली । उसने कुलू प्रदेश को विजित किया और मदनपुर सपरी और तारापुरन्द गाँवों पर अधिकार कर लिया, किन्तु इस विजय से भी उसे हानि ही हुयी । कुलू की सेना पूरे मण्डी क्षेत्र में पहुँच गयी और गुमा तथा दीरंग की नमक की खानें उसके अधिकार में आ गयी । मण्डी के राजस्व का अधिकांश भाग इन्हीं खानों से प्राप्त होता था, अत: राजा सूरजसेन ने उस स्थिति में समझौता कर लेना ही उचित समझा । दोनों पक्षों में शान्ति स्थापित हो गयी, राजा सूरजसेन ने युद्ध का सारा खर्च स्वयं वहन किया और दोनों राज्यों के मध्य की सीमा पूर्ववत हो गयी ।[1]

सन् 1653 ई0 में राजा सूरजसेन ने सुकेत में पतरी और सुलानी पर अधिकार कर लिया । इसके साथ-साथ कमलगढ़ और चौथा में राजाओं के साथ भी उसने संघर्ष किया और उनके प्रदेश पर अधिकार कर लिया ।[2] राजा सूरजसेन ने मण्डी में एक अन्य महल का निर्माण करवाया जो दमदम कहलाता था । उसके 18 पुत्र थे जो उसके जीवनकाल में ही चल बसे । उसका कोई उत्तराधिकारी जीवित न बचा अत: हताशा की स्थिति में उसने चाँदी की एक मूर्ति बनवायी उसका नाम माधो राय[3] रखा और उसे उसने अपना राज्य समर्पित कर दिया । यह विष्णु की मूर्ति उसने 1648 ई0 में बनवायी थी ।[4]

---

1. सर लैपल एच0 ग्रीफिन, द राजास आफ द पंजाब, पृ0 634.
2. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 229,
   सर लैपल एच0 ग्रीफिन, द राजास आफ पंजबा, पृ0 634.
3. माधो विष्णु का नाम है और राय संभवत: उत्तराधिकारी का सूचक है या टीका साहिब का ।
4. सर लैपल एच0 ग्रीफिन, द राजास ऑफ पंजाब, पृ0 635.

राजा सूरजसेन की एक ही पुत्री थी । उसने उसका विवाह जम्मू के राजा हरीदेव से किया ।[1] राजा सूरजसेन के पश्चात 1658 ई0 में उसका भाई श्यामसेन मण्डी का शासक बना । उसने 15 वर्ष तक शासन किया ।[2]

संघार

सन् 1526 ई0 में पानीपत की लड़ाई में संघार जमींदारों ने बाबर की बहुत सहायता की थी । अत: जब बाबर ने भारत पर विजय प्राप्त की तो वह उनके अहसान को भूला नहीं और उसने संघारों के प्रधान के बेटे वरियम को दिल्ली के दक्षिण पश्चिम में स्थित प्रदेश का चौधरीयात[3] प्रदान किया । वरियम का अर्थ होता है बहादुर । यह नाम सम्राट ने उसे उसकी वफादारी व बहादुरी के लिये प्रदान किया था । वरियम ने अपने जीवन का अधिकतम समय नेली में बिताया जो कि उसकी मां का गांव था । उसने मींदोबल को फिर से बसाया । सन् 1560 ई0 में वह मार डाला गया । जब वह भट्टी से लड़ रहा था उसी समय उसका पौत्र सुतोह भी मारा गया । उसके दो पुत्र थे प्रथम मेहराज जिसे वरियम के बाद चौधरीयात मिली दूसरा गरज जो कि फिरोजपुर जिले के पांच गांव का मालिक था । मेहराज का इकलौता पुत्र अपने बाबा के समय में ही

---

1. सर लैपल, एच0 ग्रीफिन, द राजास ऑफ पंजाब, पृ0 635.
2. सर लैपल, एच0ग्रीफिन, द राजास ऑफ पंजाब, पृ0 635.
3. बाबर के समय में चौधरी किसी जिला का प्रधान होता था और जितना कर होता था उसको इकट्ठा करने का उत्तरदायित्व उसी का थी और इस कर का कुछ हिस्सा उसे अपने लिये भी मिलता था । चौधरी के कार्यालय को चौधरीयात कहते थे ।

मार डाला गया था अत: उसके पौत्र पुक्को को चौधरीयात मिली । पर शीघ्र ही वह मिदोबाल में भट्टी के साथ लड़ाई में मारा गया । पुक्को के दो भाई थे लुक्को और चाहो ।[1] लुक्को के वंशज जेकपाल में और चाहो के वंशज चाहो गाँव में जो कि लुधियाना जिले में बदौर से आठ मील की दूरी पर है रहते थे । चाहो के दो पुत्र थे - हव्वल और मोहन । बाद में मोहन को चौधरीयात प्रदान की गयी, परन्तु वह सरकार का बहुत कर्जदार हो गया और अपना कर्ज न चुका पाने के कारण वह हंसी और हिसार भाग गया जहाँ उसके अनेक रिश्तेदार रहते थे । वहाँ उसने एक बड़ी सेना बनायी और हिसार लौटकर भिंदोबाल के पास भट्टी को हराया । गुरु हरगोविन्द की सलाह पर उसने महाराज नाम का एक गाँव बनाया जो कि उसके परबाबा के नाम पर था । उसके बाद 22 और गाँव बसाये गये जो कि 22 महाराजकियान कहलाये । सन् 1618 ई० में मोहन और उसका पुत्र रूपचन्द्र लड़ने लगे और मारे गये अत: उसके दूसरे पुत्र काला को चौधरी यात मिली । साथ ही उसे अपने मृत भाई के पुत्रों फूल और जन्दाली की देख भाल का भी कार्य मिला । मोहन के शेष तीन पुत्रों ने मेहराज को बसाने में बड़ी मदद की । रूपचन्द्र के पुत्र फूल के विषय में गुरु हरगोविन्द ने कहा था यह नाम बड़ा पवित्र है यह बहुत अच्छे काम करेगा । सन् 1627 ई० में फूल ने अपने नाम पर एक गाँव बसाया । सम्राट शाहजहाँ से उसने उसी गाँव का फरमान प्राप्त किया जिससे यह गाँव उसी का हो गया ।[2] सन् 1652 ई० में फूल की मृत्यु हो गयी । फूल के सात बच्चे हुये जो आगे चलकर बहुत सारे शाही परिवार के सदस्य बने ।

---

1. सर लैपल एच० ग्रीफिन, द राजास ऑफ पंजाब, पृ० 5.

2. सर लैपल एच० ग्रीफिन, द राजास आफ पंजाब, पृ० 7.

फरीदकोट

फरीदकोट के बरार जाट परिवार का विकास फुलकियन और कैथल राजाओं से ही हुआ था। बरार जाट प्रमुखतः भट्टी राजपूत थे। फिरोजपुर जिले में बरार सबसे महत्त्वपूर्ण जाट जाति थी।[1]

फरीदकोट का राजा बरार जाट जाति का प्रधान था और 643 वर्ग मील के प्रदेश तक उसका शासन विस्तृत था। वहाँ से 30000 दाम राजस्व प्राप्त होता था। जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में वहाँ भल्लन कपूर नामक राजा का उल्लेख मिलता है।[2] फरीद कोट के शासक मुगलों के प्रति हमेशा राजभक्त बने रहे।

कुलू

मुगलकाल में कुलू कांगड़ा जिले का ही एक उपखण्ड था। इसके उत्तर में लद्दाख, पूर्व में तिब्बत, दक्षिण में सतलज और बुशाहर और पश्चिम में सुकेत मण्डी और चम्बा थे।[3]

कुलू पर अकबर के शासनकाल में पर्वतसिंह का शासन था। उसने 1575 ई0 से 1608 ई0 तक वहाँ शासन किया। उसके पश्चात पृथीसिंह ने 1608 ई0 से 1635 ई0 तक और कल्याणसिंह ने 1635 ई0 से 1637 ई0 तक शासन किया।

---

1. सर लैपल एच0 ग्रीफिन, द राजास आॅफ पंजाब, पृ0 599-600.
2. सर लैपल एच0 ग्रीफिन, द राजास आॅफ पंजाब, पृ0 602.
3. मुहम्मद अकबर, द पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 227,
   हचिन्सन, हिस्ट्री आॅफ पंजाब हिल स्टेटस, भाग 2, पृ0 413.

पृथीसिंह और कल्याणसिंह भाई-भाई थे ।[1] समकालीन इतिहासकारों ने इन राजाओं का कोई वर्णन नहीं किया है । यद्यपि अन्य पहाड़ी राजाओं की भाँति यह सम्राट अकबर के समय में ही मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत थे । कुलू का सबसे प्रभावशाली व प्रतिभाशाली राजा जगत सिंह था । उसने 1637 ई० से 1672 ई० तक शासन किया ।[2] उसके समय में कुलू की सीमाओं का विस्तार व संगठन हुआ। सन् 1655 ई० में उसने मण्डी के राजा के सहयोग से लाग राज्य पर अधिकार कर लिया । सन् 1657 ई० में दाराशिकोह ने एक फरमान भेजकर जगतसिंह को विजित प्रदेशों को वापस लौटाने की बात कही किन्तु जगतसिंह ने शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का संघर्ष छिड़ते देखकर मुगलों की बात नहीं मानी । उसने 1660 ई० में अपनी राजधानी नागर के स्थान पर सुल्तानपुर बनायी । उसने अपना एक महल बनवाया और रघुनाथ जी का एक मन्दिर बनवाया ।[3] जगतसिंह की 1672 ई० में मृत्यु हो गयी ।

सुकेत

सुकेत की सीमा उत्तर में मण्डी, पूर्व में सराज कुलू, दक्षिण में सतलज और संधरी भागल एवं मंगल के छोटे छोटे राज्य थे और पश्चिम में विलासपुर था ।

---

1. कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 27.
2. कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 27,
   बख्शी सिंह निज्जर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ० 227.
3. कांगड़ा, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 28,
   मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ० 227.

वास्तविक रूप में इस राज्य में आजकल के मण्डी के अन्तर्गत आने वाले समस्त प्रदेश थे और कुल्लू का एक विशाल प्रदेश था किन्तु पूर्व समय की अपेक्षा वर्तमान में यह प्रदेश सीमित है ।[1]

सन् 1650 ई0 में सुकेत की गद्दी पर राजा रामसेन बैठा । उसका मण्डी के राजा के साथ बहुत संघर्ष होता था । मण्डी के राजा से अपने प्रदेश को बचाने के लिये उसने एक दुर्ग का निर्माण करवाया जो कुछ समय पश्चात उसी के नाम पर रामगढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ । सर लैपेल ग्रीफिन के अनुसार मण्डी और सुकेत के राजा बराबर एक दूसरे से संघर्ष करते थे व एक दूसरे के शत्रु थे जब भी इनमें से कोई शक्तिशाली हो जाता था तो वह दूसरे पर आक्रमण करता था ।[2] सन् 1663 ई0 में राजा रामसेन की मृत्यु हो गयी व उसका पुत्र जितसेन गद्दी पर बैठा।

कहलूर ।बिलासपुर।

बिलासपुर के उत्तर में कांगड़ा और मण्डी था, पूर्व में होशियारपुर था, दक्षिण में हिन्दूर था और पश्चिम में सुकेत था ।[3]

सन् 1650 ई0 में राजा दीपचन्द बिलासपुर की गद्दी पर बैठा । उसने बिलासपुर के पुराने गौरव को अपने साहस एवं पराक्रम से अर्जित किया और बहुत से पुराने प्रदेश पुनः विजित किये । शाहजहाँ ने उसे उत्तर पश्चिम अभियान पर भी भेजा था जहाँ उसने बड़ी वीरता का परिचय दिया अतः उसके लौटने पर उसे 5 लाख रूपये का उपहार दिया गया ।[4] 1667 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।

---

1. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 226.
2. सर लैपेल एच0 ग्रीफिन, द राजास आफ पंजाब, पृ0 578.
3. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 228.
4. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 228.

पूँछ राज्य

यह राज्य प्राचीन काल में पूँछ तोही की घाटी में स्थित था और उसका करद राज्य था । इसके उत्तर में पीर पंजल पर्वत श्रृंखला थी, पश्चिम में झेलम एवं दक्षिण में पहाड़ियाँ थीं तथा पूर्व में राजौरी था ।[1]

इस प्रदेश का वास्तविक नाम परनोत्सा था जो बाद में परिवर्तित होकर पूँछ बन गया । यह राज्य 1586-1752 ई0 तक मुगलों का अधीनस्थ राज्य था ।

वर्णित राज्यों के अतिरिक्त अन्य भी छोटे छोटे तथा कम महत्त्वपूर्ण राज्य थे, जिनका समकालीन स्रोतों में बहुत थोड़ा विवरण मिलता है । उनके बारे में बहुत कम ज्ञात है और जो ज्ञात भी है वह बहुत संशयपूर्ण तथा अविश्वसनीय है । इसमें से कुछ राज्य जैसे जासवान, सीबा, छतरपुर, लाहुल, स्पीती, हन्दूर, कठलहर, बंगहाल, मानकोट, जसरोटा, लखनपुर, सम्बा, बाहु, भोटी, चनेहनी, लाग, ब्रह्मगढ और कमालगढ आदि थे । यह सभी राज्य मुगलकाल में होशियारपुर, कांगड़ा और शिमला राज्य के अन्तर्गत स्थित थे । इन राज्यों के राजाओं ने मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली थी । कुछ दृष्टि से उनकी यह अधीनता नाम मात्र की थी क्योंकि मुगल सम्राट उनके आन्तरिक मामलों में अधिक हस्तक्षेप नहीं करता था और उन्हें अधीनस्थ बनाकर ही संतुष्ट था । जब भी मुगल सम्राट किसी राजा को पराजित करता था तो वह राजा अपनी प्राचीन प्रथा, रीतिरिवाज का परित्याग कर देते थे । इस प्रकार हम देखते हैं कि मुगल सम्राट विजित राज्यों की शासन-व्यवस्था में परिवर्तन नहीं करते थे, केवल विचारों में ही परिवर्तन करते थे ।

---

1. मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 23।

सूबा लाहौर में दो प्रकार के राजा अथवा जमींदार देखने को मिलते हैं। प्रथम वह राजा जिनका राज्य अथवा जमींदारी मैदानी क्षेत्र में थी तथा द्वितीयत: जिनके राज्य एवं जमींदारियाँ दुर्गम पहाड़ी श्रृंखलाओं में थे। दोनों ही के प्रति मुगल सम्राटों की नीति समान थी। वे किसी न किसी भाँति इन सभी राज्यों अथवा जमींदारियों को उनकी आर्थिक महत्ता के कारण अपने नियंत्रण में लाना चाहते थे। इस कृत्य में वह सफल हुये और उन्होंने अपनी सैनिक शक्ति के द्वारा उन पर विजय प्राप्त की। उन्होंने अन्य राज्यों अथवा जमींदारियों की भाँति उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करके उनके प्रति सौहार्द की नीति का पालन किया।

---------::0::---------

अध्याय नवम

सूबा मुल्तान के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा मुल्तान के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

मुल्तान एवं थट्टा एक ही सूबे के अन्तर्गत थे । अबुल फजल के अनुसार थट्टा के मुल्तान में सम्मिलित होने से पूर्व मुल्तान की लम्बाई फिरोजपुर से सीविस्तान तक 403 कोस और चौड़ाई खतपुर से जैसलमेर तक 108 कोस थी । थट्टा के इसमें सम्मिलित हो जाने के पश्चात् इसका क्षेत्र कच्छ (गण्डवा) और मकरान तक 660 कोस विस्तृत हो गया । इस सूबे के पूर्व में सरहिन्द की सरकार थी उत्तर में शोर का प्रदेश था दक्षिण में सूबा अजमेर था और पश्चिम में कच्छ और मकरान का प्रदेश था ।[1]

इस सूबे के अन्तर्गत तीन सरकारें थीं । यहाँ का क्षेत्रफल बत्तीस लाख तिहत्तर हजार नौ सौ बत्तीस (32,73,932 बीघा) चार बिस्वा था । यहाँ प्राप्त कुल राजस्व पन्द्रह करोड़ चौदह लाख तीन हजार छः सौ उन्नीस (15,14,03,619) दाम (37,85,090.80 रूपये) था जिसमें से तीस लाख उन्सठ हजार नौ सौ अड़तालीस (30,59,948) दाम (76,498.12 रूपये) सयूरगल था ।[2] सूबा मुल्तान में भट्टी, जाट, बलोच, होत, नोहानी, हजारा, नहमर्दी, जुखिया, ककराला तथा तरखान राजाओं या जमींदारों का वर्णन मिलता है । ये जातियाँ बहुत शक्तिशाली थीं । अपने-अपने क्षेत्र में इनकी शक्ति बड़ी सुदृढ़ थी । इन्हें आसानी से जीता या दबाया नहीं जा सकता था क्योंकि ये आक्रामक प्रवृत्ति वाली जातियाँ थीं । अत: मुगल सम्राट के लिये इन जातियों का दमन करना बहुत मुश्किल था । यहाँ स्थित भट्टी तथा जाट जातियों ने मुगलों के लिये समस्यायें उत्पन्न नहीं की किन्तु सिन्ध में स्थित जातियाँ मुगलों

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु०), एच०एस० जैरेट, पृ० 329.

2. अबुल-फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु०) एच०एस० जैरेट, पृ० 329.

के लिए निरन्तर समस्यायें उत्पन्न करती रहती थीं । भट्टी तथा जाट जातियों के अकबर के शासनकाल में ही मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी । अकबर के शासनकाल में भक्कर तथा बलोच जातियां मुगलों के लिये समस्यायें उत्पन्न करती रहीं । अकबर ने उनका दमन करने के लिये सेना भेजी । इसमें से भक्करों का दमन तो मुगलों ने कर दिया किन्तु बलोचों का दमन करना आसान नहीं था। बलोच बहुत शक्तिशाली थे अकबर ने 1557 ई0 से उनके विरुद्ध अभियान भेजना प्रारम्भ किया । 1586 ई0 में बलोचों को अधीनस्थ बना लेने में अकबर सफल हुआ यद्यपि यह सफलता स्थायी नहीं हुई ।[1] एक बलोच सरदार पहाड़ खान को मनसब प्रदान किया गया । उसे खिलअत व घोड़े भी प्रदान किये गए ।[2] किन्तु सभी बलोच सरदारों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली हो, यह कहना कठिन है ।

सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में किसी बलोच राजा के विद्रोह का उल्लेख नहीं मिलता । जबकि शाहजहाँ के शासनकाल में बलोचों के अनेक विद्रोहों का वर्णन मिलता है ।

तरखान

18 वर्ष शासन करने के बाद मिर्जा ईसा की 1572 ई0 में मृत्यु हो गई । उसके पुत्र आपस में लड़ते रहते थे । उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र मुहम्मद बाकी बना । मिर्जा ईसा उसे अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाना चाहता था

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 73.

2. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 74.

क्योंकि उसमें योग्यता के कोई लक्षण नहीं थे । 1584 ई0 में मुहम्मद बाकी ने आत्म-हत्या कर ली और उसका पुत्र जानी बेग गद्दी पर बैठा ।

मिर्जा जानी बेग

मिर्जा जानी बेग के गद्दी पर बैठने के उपरान्त थट्टा के लोगों ने चैन की साँस ली । उसके शासनकाल में सिन्ध पुनः मुगल साम्राज्य का अंग बन गया । भक्कर के सुल्तान महमूद ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली । उसकी एक पुत्री मुगल हरम में थी । सम्राट ने उसे एक खिलअत, एक जड़ाऊ तलवार, एक जीन सहित घोड़ा और चार हाथी प्रदान किये ।[1] उसकी मृत्यु के पश्चात अकबर ने भक्कर का शासन सीधे मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया और एक सूबेदार की नियुक्ति कर दी ।

मिर्जा गाजी बेग

मिर्जा जानी बेग का उत्तराधिकारी उसका पुत्र मिर्जा गाजी बेग हुआ ।[2] वह कुछ समय के बाद शीवान जो मुल्तान तथा कन्धार का ही एक भाग था, का भी शासक बना । बहुत से तरखान सरदार वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा समेजा राजपूतों से सम्बद्ध थे । जहाँगीर के सिंहासनारोहण के बाद भी मिर्जा गाजी बेग मुगलों की अधीनता में रहा । सम्राट ने उसे 5000/5000 का मनसब प्रदान किया । उसे एक नगाड़ा भी प्रदान किया ।[3] सम्राट ने उसे तीस लाख दाम

---

1. ई0एच0 एतकिन, गजेटियर आफ द प्राविन्स आफ सिन्ध कराँची (1907), पृ0 105.
2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 20.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 71.

उपहार में प्रदान किया ।[1] मिर्जा गाजी बेग ने कई अभियानों में महत्त्वपूर्ण सेवा की । सन 1607 ई0 में सम्राट ने उसे कन्धार अभियान पर भेजा । कन्धार अभियान से लौटने पर वह जहाँगीर से मिलने गया ।[2] सम्राट ने उसे कन्धार के प्रशासन व सुरक्षा का दायित्व सौंपा और उसे एक खिलअत और जड़ाऊ तलवार देकर अपने वतन भेज दिया ।[3] मिर्जा गाजी बेग की 1612 ई0 में मृत्यु हो गयी।[4] और उसे अपने पिता के ही कब्रिस्तान में मकली पहाड़ी पर दफनाया गया ।

मिर्जा गाजी बेग का कोई पुत्र नहीं था । उसकी मृत्यु के पश्चात उसके कोषाधिकारी खुसरो खान ने सत्ता हड़प ली । उसने थट्टा में 360 मस्जिदें, कुएँ, बाग और अन्य सार्वजनिक स्थल बनवाये किन्तु जहाँगीर ने तरखानों के हाथ से प्रशासन का अधिकार छीन लिया और वहाँ अपने सूबेदारों की नियुक्ति की । जहाँगीर ने मिर्जा रुस्तम को वहाँ का सूबेदार बनाया ।[5] खुसरो खान चिरगिस ने कुछ समय उपरान्त अब्दुल अली तरखान को वहाँ का प्रशासक बनाने का प्रयास किया । अब्दुल अली तरखान की वंशावली ज्ञात नहीं है । जहाँगीर ने मिर्जा ईसा तरखान[6] का पक्ष लिया और उसे तरखानों का शासक बनाया । सन 1622ई0 में जहाँगीर ने उसे घोड़े व विशेष खिलअत प्रदान की और उसे खानेजहाँ के साथ

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 75.
2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 75, 133.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 138.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 223-24, ई0एच0 एतकिन, गजेटियर आफ द प्राविन्स आफ सिन्ध, पृ0 106.
5. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 396.
6. मिर्जा ईसा तरखान एम0 जानबाबा का पुत्र तथा एम0 जानी बेग का चाचा था ।

कन्धार अभियान पर भेजा ।[1] सन 1623 ई0 में मिर्जा ईसा तरखान सम्राट से मिलने उसके दरबार में उपस्थित हुआ ।[2] सन 1642-43 ई0 में मिर्जा ईसा तरखान का मनसब 5000/5000, 2000 दो अस्पा सेहअस्पा था । उसे सोरथ के नाजिम तथा गुजरात के सूबेदार के पद पर नियुक्त किया गया ।[3] शाहजहाँ के शासनकाल में उसे उच्च पद प्राप्त था । 26 दिसम्बर 1651 ई0 में साम्भर में उसकी मृत्यु हो गयी ।[4]

मिर्जा ईसा तरखान के चार पुत्र थे - 1. मिर्जा इनायत उल्लाह 2. मिर्जा मुहम्मद सालेह 3. फतह उल्लाह 4. एम0 सकील मिर्जा बेहरोज । इनायत उल्लाह को 2000/1500 का मनसब प्राप्त था । मुहम्मद सालेह को 1000/1000 का मनसब प्राप्त था ।[5] मिर्जा ईसा तरखान की मृत्यु के पश्चात सम्राट ने उसके बड़े पुत्र मुहम्मद सालेह के मनसब में वृद्धि करके उसे 2000/500 का मनसब प्रदान किया और शेष दोनों पुत्रों को भी उपयुक्त मनसब प्रदान किये ।[6]

सूबा मुल्तान में अनेक ऐसी कबाइली जातियाँ रहती थीं, जो कि निरन्तर पारस्परिक वैमनस्य में उलझी हुई थीं । कालान्तर में सूबा मुल्तान में जब सिन्ध का प्रदेश भी सम्मिलित कर दिया गया तो मुगल प्रशासन बलोचों तथा

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 245.
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 3, पृ0 590.
2. मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 3, पृ0 590.
3. एम0 अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 184, 255;
   मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 2, पृ0 339.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 396, ई0एच0 एतकिन, द गजेटियर आफ द प्राविन्स आफ सिन्ध, पृ0 107.
5. मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 2, पृ0 301.
6. मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह, भाग 2, पृ0 339.

अनेक अफगान कबाइली जातियों के सम्पर्क में आया । अनेक वर्षों तक मुगल प्रशासन का प्रभुत्व इस विशाल भू-भाग पर नहीं रहा । परिणामस्वरूप यहाँ के सरदार स्वेच्छापूर्वक अपने अपने राज्यों में शासन करते रहे । सर जदुनाथ सरकार के अनुसार 1650 ई0 से पूर्व यहाँ की कबाइली जातियाँ किसी की भी सत्ता स्वीकार करने के लिए तत्पर न थीं । इसी वर्ष शाहजहाँ के राज्यकाल में शाहजादा औरंगजेब की नियुक्ति सूबा मुल्तान में प्रान्तपति के पद पर [1648-1652 ई0] हुई।[1]

होत

यहाँ उस समय होत कबीले की जमींदारी थी ।[2] इस कबीले के लोग मीर काकर रिन्द के नेतृत्व में सीवी से पंजाब व सिन्ध क्षेत्र में आकर बस गए थे। उनमें से कुछ ऊपरी भाग में बस गये । वहाँ लगभग दो सौ वर्षों तक राजधानी डेरा इस्माइल खाँ रही । यहाँ के जमींदारों की उपाधि 'इस्माइल खाँ' पीढ़ी दर पीढ़ी रही । उनका प्रभुत्व सिन्धु नदी के पूर्व में दरया खाँ तथा भक्कर के क्षेत्र पर रहा ।[3] सिन्ध सागर दोआब में मनकेरा नामक स्थान पर जमींदारों का शक्तिशाली गढ़ था । यहाँ के जमींदारों का प्रभाव 17वीं शदी के प्रारम्भ में सिन्धु नदी पर स्थित भक्कर सेलेकर सियाह तक था । जहाँ तक होत जमींदार

---

1. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ0 104.

2. आर0सी0 वर्मा, प्राब्लम्स आफ नार्थ वेस्टर्न फ्रन्टियर ड्यूरिंग सिक्सटींथ एण्ड सेवेन्टींथ सेन्चुरी, शोध प्रबन्ध [1951], पृ0 40, जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ0 105.

3. आर0सी0 वर्मा, प्राब्लम्स आफ नार्थ वेस्टर्न फ्रन्टियर ड्यूरिंग सिक्सटींथ एण्ड सेवेन्टींथ सेन्चुरी, शोध प्रबन्ध [1951], इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ0 41. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ0 105.

इस्माइल खाँ का प्रश्न है उसने शाहजहाँ को पेशकश भेजकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी । उसने दाराशिकोह का आश्रय प्राप्त किया । जून 1641 ई0 में इस्माइल होत ने सम्राट के लिये 14 घोड़े, 18 ऊँट उपहार के रूप में भेजे ।[1] लाहौर मुल्तान सूबों के मध्य उसकी जमींदारी स्थित होने के कारण इस्माइल होत ने मुल्तान के सूबेदार का आधिपत्य स्वीकार न करते हुये लाहौर के सूबेदार की अधीनता स्वीकार की । यह बात शाहजादा औरंगजेब के गौरव के विरुद्ध थी । अतएव उसने सम्राट से उसकी शिकायत की व उसके विरुद्ध कार्यवाही करने की अनुमति माँगी । इस्माइल होत की जमींदारी सूबा मुल्तान के अन्तर्गत आती थी। परन्तु दारा का संरक्षण प्राप्त करने के कारण होत जमींदार ने अपनी स्थिति सुदृढ देखकर निकटवर्ती प्रदेशों पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया था । उसने बलोच जमींदार मुबारक से तीन गढ़ियाँ छीन लीं । यह सूचना प्राप्त होते ही शाहजादा औरंगजेब ने इस्माइल होत की बढ़ती हुयी शक्ति को दबाने के लिये तथा उसे दण्ड देने के लिये विशाल सेना भेजी । शाही सेनाओं ने उन गढ़ियों को अधिकृत कर जमींदार मुबारक को वह गढ़ियाँ सौंप दीं । परन्तु उसकी अनुपस्थिति में इस्माइल खाँ ने वह गढ़ियाँ पुन: अधिकृत कर लीं । इस पर शाहजादा औरंगजेब ने उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ जारी रखी और उसे अधीनता स्वीकार करने के लिये अन्त में बाध्य कर दिया । वास्तव में इस्माइल होत इस क्षेत्र का प्रभावशाली एवं सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली जमींदार था । औरंगजेब को उस समय नोहानी किले के विद्रोहों को दबाने में उसकी सहायता की परम आवश्यकता थी । यही नहीं वह इस्माइल होत से कन्धार अभियानों में खाद्यान्नों की आपूर्ति किये जाने की भी अपेक्षा रखता था ।[2]

---

1. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 277.

2. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 233, वारिस, बादशाहनामा, पृ0 85, अदब-ए आलमगीरी, पृ0 26-39.

नोहानी

सूबा मुल्तान में आलम खां नोहानी एक शक्तिशाली सरदार था । उसकी जमींदारी 17वीं शदी के पूर्वार्द्ध में अत्यधिक प्रभावशाली एवं शक्तिशाली थी ।[1] उसने मुगलों के प्रति विद्रोहात्मक दृष्टिकोण अपना लिया था । शाहजादा औरंगजेब ने उसे अपने अधीन लाना चाहा परन्तु उसने औरंगजेब की अधीनता की बात को अस्वीकार कर दिया । औरंगजेब रुष्ट हो गया । उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने के लिये औरंगजेब ने सम्राट से अनुमति प्राप्त की ।[2] अनुमति मिल जाने के पश्चात सैनिक अभियान करके आलम खां नोहानी का दमन औरंगजेब ने कर दिया ।

नहमर्दी तथा जुखिया

किरथर तथा लाखी पहाड़ियों के मध्य अनेक कबाइली जातियां निवास करती थीं । इन कबाइली जातियों में नहमर्दी तथा जुखिया कबाइली जातियां प्रमुख थीं । इनके जमींदार अत्यधिक शक्तिशाली थे । अकबर के समय नहमर्दी जमींदार किसी भी समय 7000 सैनिकों को युद्धस्थल में उतार सकते थे । उनके मुख्य गढ़ बेला तथा कहरा थे । सिन्ध के प्रधान शासक भी इस क्षेत्र के जमींदारों को अपने अधीन करने में असमर्थ रहे थे । यह सम्पूर्ण क्षेत्र सूबा मुल्तान के अधीन

---

1. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ0 107,
   आर0सी0वर्मा, प्राब्लम्स आफ नार्थ वेस्टर्न फ्रन्टियर ड्यूरिंग द सिक्सटींथ एण्ड सेवेन्टींथ सेन्चुरी, पृ0 41.

2. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ0 41.

था । शाहजादा औरंगजेब ने यहाँ के जमींदारों की उद्दंडता को देखते हुये अब्दाली कबीले के नेता मलिक हुसैन को उनके विरुद्ध भेजा । मलिक हुसैन ने शाही सेना के साथ इस क्षेत्र में प्रवेश किया और उसने हरून तथा खतरताल नामक नहमर्दी जमींदारों तथा जुकियाओं के मुखिया मुरीद को न केवल अधीनता स्वीकार करने पर विवश किया वरन उनके द्वारा सम्राट का नाम खुत्बा में पढ़वाया । इसके अतिरिक्त उसने उनसे कर भी वसूल किया ।[1]

औरंगजेब द्वारा की गयी सैनिक कार्यवाही के परिणाम अच्छे निकले । इसी समय पंजगुर और केच मकरान के जमींदार के सम्बन्धी जाफर नहमर्दी तथा अन्य जमींदारों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । लगभग इसी समय माघ नामक नहमर्दी जमींदार ने जब बेला तथा कहरा पर आक्रमण किया तो मलिक हुसैन ने न केवल उसे पराजित किया वरन उसकी कन्या तथा अत्यधिक धन-सम्पदा छीन ली ।[2]

ककराला

ककराला के जमींदार सत हला ने औरंगजेब के पास आकर अपनी निष्ठा प्रकट की । उसकी अनुपस्थिति में जब कच्छ से उसके विरोधी ने उसकी जमींदारी अधिकृत कर ली तो मलिक हुसैन ने उसकी सहायता की और शत्रु को वहाँ से खदेड़

---

1. जे०एन० सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ० 41, आर०सी० वर्मा, प्राब्लम्स आफ नार्थ वेस्टर्न फ्रन्टियर ड्यूरिंग द सिक्सटींथ एण्ड सेवेन्टींथ सेन्चुरी, पृ० 41.

2. जे०एन० सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ० 108.

दिया ।[1] इस प्रकार से शाहजहाँ के शासनकाल में शाहजादा औरंगजेब ने मुल्तान व सिन्ध के जमींदारों पर सम्राट की प्रभुता स्थापित करने में सफलता प्राप्त की ।

हजारा

उत्तर पश्चिम सीमान्त पर हजारा जाति का उल्लेख मिलता है । यह लोग हमेशा मुगलों के प्रति मित्रवत बने रहे । सन 1587 ई0 में शादमानहजारा ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । हजारा जाति के एक सरदार की पुत्री से शहजादा सलीम का विवाह भी सम्पन्न हुआ ।[2]

शाहजहाँ के शासनकाल में दौलत बेग हजारा का उल्लेख मिलता है । उसकी रियासत अलंग, चगरक और जमींदावर तक थी । सन 1645 ई0 में सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत, एक जड़ाऊ कटार, तलवार, सोने के आभूषणों सहित चाँदी की जीन सहित घोड़ा और 1000 रूपया इनाम के रूप में प्रदान किया ।[3] सन 1645 ई0 में ही चन्द्रसम्भा के जमींदार मुहम्मद अली सुल्तान हजारा शहजादा ने का।फरेज के किले की घेराबन्दी करने वाले कजिलवाशी और लाखी लोगों में से कुछ को मार डाला तथा कुछ को बन्दी बना लिया । इसके पश्चात वह शहजादा बुलन्द इकबाल से मिलने गया । उसने अपनी जमींदारी चन्द्रसम्भा का देहरावत

---

1. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगजेब, भाग 1-2, पृ0 108.

2. अबुल फजल, आईन-ए अकबरी, भाग 3, पृ0 801,
आर0सी0 वर्मा, प्राब्लम्स आफ द नार्थ वेस्टर्न फ्रन्टियर ड्यूरिंग द सिक्सटींथ एण्ड सेवेन्टींथ सेन्चुरीज, 1951, पृ0 31.

3. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, पृ0 487.

का राजस्व शहजादा बुलन्द इकबाल को प्रदान किया । बदले में शहजादे ने उसे एक खिलअत, तलवार और जड़ाऊ कटार उपहार में प्रदान किया ।[1]

मुल्तान सूबे में दरेजा राजा तथा ककराला के जाम राजा का उल्लेख मिलता है । यद्यपि यह एक सूबे के महत्त्वपूर्ण शासक थे किन्तु इनका बहुत कम वर्णन मिलता है ।

सूबा मुल्तान में बहुई नामक जमींदार का उल्लेख सम्राट जहाँगीर के शासन काल में प्राप्त होता है । इसे सम्राट ने अपने शासनकाल के 13वें वर्ष खिलअत हाथी आदि देकर सम्मानित किया था ।[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि सूबा मुल्तान जो कबायली प्रभुत्व वाला क्षेत्र था उस पर मुगलों ने अपनी सम्प्रभुता आरोपित करने की भरसक कोशिश की । जहाँगीर व शाहजहाँ के समय इस क्षेत्र पर मुगलों का आधिपत्य आमतौर पर सुदृढ़ रूप से स्थापित हो गया ।

---------::0::---------

---

1. इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 487.

2. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी (अंग्रेजी अनु0), राजर्स बेवरिज, भाग 2, पृ0 4, प्रो0 राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटल्स, पृ0 36.

अध्याय दशम

सूबा बिहार के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा बिहार के अन्तर्गत(करद)राजा या जमींदार

आईने-अकबरी के अनुसार सूबा बिहार की लम्बाई गढ़ी से रोहतास तक 120 कोस थी और इसकी चौड़ाई तिरहुत से उत्तरी पहाड़ियों तक 110 कोस थी ।[1] इस सूबे में 7 सरकारें थीं, जो 199 परगनों में विभक्त थीं । यहाँ से प्राप्त राजस्व बाइस करोड़ उन्नीस लाख उन्नीस हजार चार सौ चार 22, 19, 19, 404 दाम था ।[2]

सूबा बिहार में उज्जैनिया, चेरो, गिधौर, खैरा, खड़गपुर, कोकरा, रतनपुर, पनचेत के करद राजाओं या जमींदारों का वर्णन मिलता है । यहाँ पर सम्राट अकबर के समय से ही (करद) राजाओं या जमींदारों का शासन था, इन राजाओं के मुगलों के साथ सम्बन्ध अच्छे रहे । इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

उज्जैनिया

बिहार के(करद)राजाओं में एक शक्तिशाली व प्रभावशाली राजा उज्जैनिया के थे । उज्जैनिया राजा गंगा के दक्षिण में रोहतास के एक बड़े भाग पर तथा बिहार के पश्चिमी भाग पर शासन करते थे ।[3] उज्जैनिया राजा प्रभावशाली शक्ति के रूप में 16वीं शदी के मध्य से दिखायी देते हैं ।[4] समकालीन कुछ स्रोतों में उनका विवरण उचना (Uchna) के राजा के रूप में भी मिलता है । बिहिया और भोजपुर के राजा या हाजीपुर और पटना के राजा के रूप में भी उनका विवरण मिलता है ।[5] धूमरा राज्य के राजाओं[6] के पारिवारिक विवरण से ज्ञात होता है कि राजा गजपति

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी अनु0, एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 162.
2. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी अनु0, एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृ0 165.
3. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 168.
4. ब्रह्मदेव प्रसाद अम्बष्ठ, ट्रेडिशन एण्ड जीनियोलाजी आफ द उज्जैनियाज इन बिहार, भारतीय इतिहास कांग्रेस, कलकत्ता 1963, पृ0 127.
5. निजामुद्दीन अहमद, तबकात-ए-अकबरी, भाग 2, पृ0 324, बायजीद, तजकिरा हुमायूँ व अकबर, पृ0 319.
6. धूमरा के राजा उज्जैना राजा के वंशज थे ।

उज्जैनिया बिहिया परगने के दावा गाँव का राजा था ।[1] शेरगढ़ तथा जगदीशपुर के दुर्ग पर उज्जैनिया राजा का अधिकार था ।[2] अतएव यह कह सकते हैं कि उज्जैनिया राजा के अन्तर्गत उचना, बिहिया, भोजपुर या हाजीपुर, शेरगढ़ तथा जगदीशपुर के क्षेत्र आते थे ।

राजा गजपति उज्जैनिया

सम्राट अकबर के शासनकाल में गजपति उज्जैनिया का राजा था । उसने 1572-73 ई0 में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी और मुगल सेवा में उसके कई कार्यों का विवरण मिलता है । उसने बंगाल के दाउद खाँ कर्रानी के विरुद्ध मुनीम खाँ खानखाना की सहायता की ।[3] दो वर्ष पश्चात वह हाजीपुर के अफगानों के विरुद्ध खाने-आजम यलमा बेग की सहायता के लिये नियुक्त हुआ ।[4] किन्तु अकबर के शासनकाल के 21वें वर्ष में राजा गजपति ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और दाउद खाँ कर्रानी के साथ सहयोग करके बिहार में विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया। इन लोगों ने बिहार के अनेक शाही शहरों व गाँवों पर भी अधिकार कर लिया । सम्राट ने शाहबाज खाँ को उसे दण्डित करने के लिये भेजा । राजा गजपति, जगदीशपुर से जो उसकी शक्ति का प्रमुख केन्द्र था, भाग गया ।

राजा गजपति के पश्चात उसके भाई बैरीसाल तथा उसके पुत्र श्रीराम ने मुगलों का विरोध किया, किन्तु बैरीसाल भी अन्ततः भाग गया और श्रीराम को मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेनी पड़ी ।[5] उसके बाद कुछ समय तक मुगलों को

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 329.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 186, 189.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 22.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 96-99, बदायूँनी मुन्तखब उल तवारीख, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 180.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 188-189.

उज्जैनिया राजा के साथ किसी भी तरह का संघर्ष नहीं करना पड़ा और उज्जैनिया राजा स्वामिभक्त बना रहा ।

अकबर के शासनकाल के 25वें वर्ष ‌।1580-81 ई0। में बिहार-बंगाल में पुन: विद्रोह होना प्रारम्भ हो गया । उज्जैनिया राजा ने विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया ।

राजा दलपत उज्जैनिया

राजा गजपति उज्जैनिया का द्वितीय पुत्र राजा दलपत उज्जैनिया था ।[1] जिसके उज्जैनिया की गद्दी पर आने से मुगल उज्जैनिया सम्बन्धों का एक नया अध्याय शुरू हुआ । पहले उसने मुगल-विरोधी नीति अपनाते हुए टकराव का रास्ता अपनाया किन्तु असफल होने के बाद अधीनता स्वीकार कर ली । वह अकबर तथा जहाँगीर का समकालीन था । उसने जगदीशपुर पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तत्पश्चात उसने खाने आजम, मिर्जा अजीज कोका के पूर्वी अभियान में रुकावटें उत्पन्न कीं ।[2] दलपत उज्जैनिया ने अरब बहादुर के साथ मिलकर कान्त के मुगल थाना पर अधिकार कर लिया ।[3] किन्तु अन्तत: पराजित होकर वह अपने निवास स्थान लौट गया ।

सन् 1599-1600 ई0 के मध्य उज्जैनिया राजा दलपत ने पूर्णरूप से मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । जब शाहजादा दानियाल हाजीपुर पहुँचा तो उसने वहाँ

---

1. हसन असकरी बिहार इन द टाइम आफ अकबर में दलपत को राजा गजपति का पुत्र कहा गया है । तारीख-ए-उज्जैनिया में भी दलपत को गजपति का पुत्र कहा गया है । देखिये बंगाल पास्ट एण्ड प्रेजेन्ट भाग LXIV ।कलकत्ता, 1944।, पृष्ठ 39 एन.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 323.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 324.

उपस्थित होकर उसका अभिवादन किया व उपहार में हाथी भेंट किया । शीघ्र ही दलपत उज्जैनिया सम्राट से मिलने गया ।[1] उसके समय से मुगलों तथा उज्जैनिया राजाओं के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों में मधुरता बनी रही । मुगलों ने उज्जैनिया राजा के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये । शाहजादा दानियाल का विवाह दलपत उज्जैनिया की पुत्री के साथ सम्पन्न हुआ था ।[2]

राजा प्रताप उज्जैनिया

दलपत उज्जैनिया के पश्चात उसका पुत्र प्रताप उज्जैनिया राजा बना । 26 जुलाई 1628 ई० में प्रताप उज्जैनिया को शाहजहाँ ने राजा की उपाधि प्रदान किया तथा एक हाथी उपहार में दिया । और उसे 1500/1000 का मनसब प्रदान किया ।[3] कुछ समय पश्चात उसकी सेवाओं से प्रभावित होकर सम्राट द्वारा उसका मनसब 3000/2000 का कर दिया गया । हसन असकरी ने तारी-ए-उज्जैनिया (उर्दू) भाग 2 के आधार पर लिखा है कि राजा ने अपनी अयोग्यता एवं आक्रामक व्यवहार से अपने निकट सम्बन्धियों एवं अपने भाई राजा नारायनमल के अधिकारियों को तथा भआरा के शक्तिशाली कानूनगो परिवार के व्यक्तियों को अपने से विमुख कर दिया था । उसने कायस्थों को भी जो पटना के दरबार में बड़े प्रभावशाली थे अथवा शत्रु बना लिया था । यह भी कहा जाता है कि सम्राट शाहजहाँ ने उसे दरबार में बुलाया था, लेकिन वह अयोध्या के आगे नहीं गया क्योंकि ~~उसे इस बात का भय था कि उसे~~

---

1. अबुलफजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु०), भाग 3, पृ० 750.
2. अबुलफजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु०), भाग 3, पृ० 826.
3. हसन असकरी, बिहार इन द टाइम आफ शाहजहाँ, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1944, पृ० 349, केवलराम, तजकिरात उल उमरा, पृ० 251, तजकिरात उल उमरा में प्रताप सिंह उज्जैनिया को नारायन्दर हरोका का पुत्र कहा गया है । लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, पृ० 226, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँ-नामा, पृ० 52, मिर्जा नाथन बहारिस्तान-ए-गैबी अंग्रेजी (अनु०), एम०आई०बोहरा, पृ० 722.

उसे इस बात का भय था कि उसे दरबार जाने पर सम्राट के सम्मुख शाही सैनिकों के साथ किये गये युद्ध का विवरण देना पड़ेगा और सम्राट उसे न जाने कैसा दण्ड देंगे ? उसने बिहार के सूबेदार के परवाने पर भी कोई ध्यान नहीं दिया ।[1] शाहजहाँ से उसके सम्बन्ध बिगड़ने का एक धार्मिक कारण भी था । राजा प्रताप उज्जैनिया बड़ा ही कट्टरपंथी हिन्दू राजा था । उसने अपने राज्य में कुछ नए मन्दिरों का निर्माण करवाया था ।[2] शाहजहाँ मन्दिरों के निर्माण को बर्दाश्त नहीं कर सका । सन् 1634 ई0 में शाहजहाँ ने आदेश दिया[3] कि नवनिर्मित सभी मन्दिरों को गिरा दिया जाय विशेषकर बनारस के मन्दिर गिरा दिये जाय । यह क्षेत्र प्रताप के राज्य के समीप था । वह इस आदेश से उत्तेजित हो गया और शाही आदेशों की अवहेलना करने लगा । उसके कार्य, शाही अधिकारियों को उसके विरुद्ध कार्यवाही करने के लिये बाध्य कर रहे थे । शाहजहाँ ने उसके विद्रोह का सैन्य बल से दमन कर देना चाहा। अतः सम्राट ने बिहार के सूबेदार के अतिरिक्त इलाहाबाद के सूबेदार बाकर खाँ नज्म सानी, गोरखपुर के जागीरदार फिदाई खान तथा मुंगेर के मुख्तार खान को प्रताप उज्जैनिया के विद्रोह का दमन करने के लिये भेजा । प्रताप ने शाही सेना का बड़ी वीरता से सामना किया । भोजपुर उसकी शक्ति का प्रमुख केन्द्र था । वहाँ के लोगों ने मुगल विरोधी अभियान में उसे दृढ़तापूर्वक सहयोग दिया था । यह संघर्ष छह माह तक चलता रहा । अन्ततः प्रताप उज्जैनिया को पराजित करके उसकी पत्नी सहित उसे बन्दी बना लिया गया । शाही आदेश द्वारा उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गई । उसकी पत्नी को बलात् धर्मपरिवर्तन करके उसे मुसलमान बना दिया गया और उसका विवाह भूतपूर्व सूबेदार के पौत्र के साथ कर दिया गया ।[4] राजा

---

1. हसन असकरी, बिहार इन द टाइम आफ शाहजहाँ, भारतीय इतिहास कांग्रेस, कलकत्ता, 1944 ई0 , पृ0 352.

2. केवलराम तजकिरात उल उमरा भाग 2, पृ0 251.

3. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 117.

4. हसन असकरी, बिहार इन द टाइम आफ शाहजहाँ, भारतीय इतिहास कांग्रेस, पृ0 354. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 117.

प्रताप उज्जैनिया को पटना ले जाया गया जहाँ उसे शहर के पश्चमी द्वार पर फाँसी पर चढ़ा दिया गया ।[1] यह घटना शाहजहाँ के शासनकाल के दसवें वर्ष की है ।[2]

राजा पृथ्वी चन्द्र उज्जैनिया

शाहजहाँ के शासनकाल में राजा पृथी चन्द्र उज्जैनिया का भी उल्लेख मिलता है । शाहजहाँ के शासनकाल के उत्तरार्द्ध में उसे 1000/1000 का मनसब तथा राजा की उपाधि प्राप्त हुयी थी । औरंगजेब के शासनकाल के प्रथम वर्ष उसके मनसब में 500 की वृद्धि की गयी थी ।[3]

इन राजाओं के अतिरिक्त शाहजहाँ के शासनकाल में दक्षिण बिहार में अमर सिंह उज्जैनिया भी एक प्रभावशाली राजा था । भोजपुर में गोकुल चन्द नामक राजा का भी उल्लेख मिलता है । इन राजाओं ने शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य हुये उत्तराधिकार के युद्ध में विभिन्न शाहजादों की ओर से भाग लिया था । कुछ लोग दारा-शिकोह व कुछ लोग शुजा की ओर से लड़े थे । अमरसिंह को मनसब विशेष खिलअत और जागीर की प्राप्त हुई । ऐसा डॉ० मुहम्मद इफ्तिखार आलम ने भी विचार व्यक्त किया है ।[4]

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 121, एम० अतहर अली, द आपरेटस आफ इम्पायर, पृ० 141, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ० 111, हसन असकरी, बिहार इन द टाइम आफ शाहजहाँ, भारतीय इतिहास कांग्रेस, पृ० 354.

2. केवलराम, तजकिरातुल उमरा, पृ० 251, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ० 209, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 2, पृ० 193.

3. केवलराम, तजकिरात उल उमरा, पृ० 251, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ० 209.

4. डॉ० मुहम्मद इफ्तिखार आलम, ए रिफ्लेक्शन आन द रोल आफ अमर सिंह उज्जैना इन द फ्रैट्रिसिडल स्ट्रगल एमन्गस्ट द फोर सन्स आफ शाहजहाँ 1657-58, भारतीय इतिहास कांग्रेस, पृ० 335.

चेरो

चेरो[1] मूलत: हिमालय की तराई जिसे मोरंग कहते हैं, के निवासी थे। वे कुमायूँ क्षेत्र में भी जाकर बस गये और कालान्तर में भोजपुर के दक्षिण में जिसे शाहाबाद कहते हैं, में भी रहने लगे।[2] चेरो लोग सरकार रोहतास के दक्षिणी भाग तथा सरकार बिहार केपश्चिमी भाग के जमींदार थे। यह क्षेत्र अब शाहाबाद तथा पालामऊ जिले के अन्तर्गत आता है।[3] यहाँ चेरों ने सात पीढ़ियों तक शासन किया। शेरशाह के समय में महावत राय की जमींदारी में चेरों ने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली थी।[4] अकबर के शासनकाल में भी वे प्रभावशाली शक्ति के रूप में थे। अकबर ने अपने शासनकाल के 35वें वर्ष (1590-91 ई0) में राजा मानसिंह के सेनापतित्व में एक अभियान उस समय के चेरो राजा अनन्त राय के विरुद्ध भेजा था। राजा मानसिंह ने वहाँ इस अभियान में लूट का बहुत सा माल प्राप्त किया[5] किन्तु वह चेरों राजा को अधीनस्थ नहीं बना पाया। 1590 ई0 से 1605 ई0 तक चेरों राजा के बारे में विशेष विवरण प्राप्त नहीं होता है। पालामऊ पर चेरों राजा भगवतराय का शासन था यद्यपि मुगल सेना पालामऊ में रह रही थी किन्तु चेरों शक्ति को अभी तक क्षीण नहीं किया जा सका था।

---

1. चेरो पालामऊ की जमींदार तथा खेतिहर जाति थी। पुस्तक - एस0एच0 रिसले द ट्राइब्स एण्ड कास्ट आफ बंगाल, भाग 1, पृ0 199-203.
2. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पालामऊ, पृ0 19.
3. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 170.
4. अब्बास खाँ, शेरवानी, तारीख-ए-शेरशाही, पृ0 666, 686, 700.
5. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 576.

<u>सम्राट जहाँगीर के शासन-काल में चेरो राजा</u>

सन् 1605 ई0 में सम्राट अकबर की मृत्यु हो गयी और जहाँगीर सिंहासन पर बैठा। उस अवसर पर साम्राज्य में जो अव्यवस्था का वातावरण फैला, उसका लाभ कोकरा के नागवंशी राजा तथा पालामऊ के चेरो राजा दोनों ने उठाया। उन्होंने अपनी स्वतंत्रता पुन: स्थापित कर ली व मुगल सेना को पालामऊ से हटा दिया।[1] इसी समय भगवत राय की मृत्यु हो गयी।[2] उसके पश्चात अनंत राय गद्दी पर बैठा। मिर्जा नाथन के अनुसार जहाँगीर के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में अनंत राय पालामऊ का चेरो शासक था।[3] सन् 1607 ई0 में जहाँगीर ने अफजल खाँ तथा इरादत खाँ को अनंत राय के विरुद्ध एक सैनिक अभियान करने के लिए भेजा यह अभियान असफल रहा।[4] चेरो परम्परा से यह ज्ञात होता है कि अनंत राय ने 1630 से 1661 ई0 तक पालामऊ पर शासन किया।[5] किन्तु समकालीन इतिहास-कारों के विवरण से इस मत की पुष्टि नहीं होती। एक चेरो परम्परा से विदित होता है कि सहबल राय जहाँगीर के समय में पालामऊ का शासक था।[6] सहबल राय का उल्लेख समकालीन इतिहासकार नहीं करते। उपलब्ध संकेतों से ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तविक स्थिति यह रही होगी कि अनंतराय की 1612 में मृत्यु हो गयी

---

1. शिताब राय का विवरण अनुच्छेद 3.
2. चेरो परम्परा के अनुसार उसने 17 वर्ष शासन किया। टी0डब्ल्यू0 ब्रिज-फाइनल रिपोर्ट आन द सर्वे एण्ड सेटेलमेन्ट आपरेशन्स इन द डिस्ट्रिक्ट आफ पालामऊ, 1913-1920, अनुच्छेद 31, उसने 1605 ई0 तक पालामऊ पर शासन किया था।
3. मिर्जानाथन, बहारिस्तान-ए-गैबी, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 1, पृ0 11-12.
4. मिर्जानाथन, बहारिस्तान-ए-गैबी, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 1, पृ0 263.
5. डी0डब्ल्यू0 ब्रिज, फाइनल रिपोर्ट आन द सर्वे एण्ड सेटेलमेन्ट आपरेशन्स इन द डिस्ट्रिक्ट आफ पालामऊ, 1913-1920, अनुच्छेद 31.
6. डी0डब्ल्यू0 ब्रिज, फाइनल रिपोर्ट आन द सर्वे एण्ड सेटेलमेन्ट आपरेशन्स इन द डिस्ट्रिक्ट आफ पालामऊ, 1913-1920, अनुच्छेद 31.

और सहबल राय पालामऊ का नया शासक बना । सहबल राय बड़ा शक्तिशाली शासक था । उसने अपना अधिकार क्षेत्र चम्पारन तक बढ़ा लिया था । वह शाही कारवां भी लूटता था और बंगाल में मुगलों के व्यापार वाणिज्य में भी बाधाएं पैदा करता था ।[1] सम्राट जहाँगीर उसकी गतिविधियों से बहुत रूष्ट हुआ । शाही सेना ने शीघ्र ही सहबल राय को पराजित करके बन्दी बना लिया । सहबल राय को दिल्ली लाया गया । यह घटना 1613 ई0 की है ।[2] यह किंवदन्ती है कि दिल्ली में सम्राट को तमाशा दिखाने के लिये चीते से एक हाँथ से लड़ते हुये वह मारा गया ।[3] उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके पुत्र भगवत राय ने लूटमार करना प्रारम्भ कर दिया । जब शाही सेना उसके विरूद्ध लड़ने गयी तो उसने राजपूत राजा देवशाही जो सासाराम के निकट धूँधार के किले में रहता था, के यहाँ शरण ली । उसके पश्चात वह देवशाही के पुत्र पूरनमल के साथ पालामऊ गया और राक्सेल राजा मान सिंह की सेवा में रहने लगा । 1613 ई0 में जब राजा मानसिंह सरगुजा गया हुआ था तब भगवत राय ने बड़ी निर्दयता से उसके परिवार वालों को मार डाला और स्वयं राजा बन बैठा और पूरन मल को अपना प्रधानमन्त्री बना दिया ।[4] चेरो शासन का सबसे प्रभावशाली राजा मेदिनी राय था जिसने अपना अधिकार पालामऊ के क्षेत्र के बाहर तक स्थापित किया । वह गया के दक्षिण में हजारी बाग के विस्तृत

---

1. बालमुकुन्द वीरोत्तम, नागवंशी और चेरो, पृ0 27, एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर पालामऊ, पृ0 19.

2, पी0 डब्ल्यू0 क्रिप, फाइनल रिपोर्ट आन द सर्वे एण्ड सेटेलमेन्ट आपरेशन इन दि डिस्ट्रिक्ट आफ पालामऊ, 1913-1920, अनुच्छेद 31.

3. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर पालामऊ, पृ0 20. बालमुकुन्द वीरोत्तम नागवंशी एवं चेरो, पृ0 28.

4. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर पालामऊ, पृ0 20.

क्षेत्र और सरगुजा का राजा था । उसने छोटा नागपुर के राजा के विरुद्ध भी अभियान भेजा । उसके शासनकाल की अवधि के सम्बन्ध में तनिक भी जानकारी प्राप्त नहीं होती है । चेरो परम्परा से ज्ञात होता है कि सहबल राय की मृत्यु से जहाँगीर के शासन के अन्त तक प्रताप राय पालामऊ का राजा था किन्तु समकालीन इतिहास से इस मत की पुष्टि नहीं होती । समकालीन इतिहासकारों के अनुसार प्रतापराय शाहजहाँ के शासनकाल में पालामऊ का राजा था । अब्दुल हमीद लाहौरी के अनुसार प्रताप राय बलभद्र चेरो का पुत्र था ।[1]

<u>प्रताप राय</u>

प्रतापराय शक्तिशाली चेरो राजा था । यद्यपि उसके शासनकाल में मुगलों ने उस पर अनेक बार आक्रमण किये किन्तु वह उसकी शक्ति का दमन न कर सके । उसका अधिकार क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत था । बादशाहनामा के अनुसार पालामऊ की उत्तरी सीमा पटना से इकहत्तर मील दूर थी ।[2] कन्हार नदी चेरो राज्य के दक्षिण पश्चिम में स्थित थी । कोठी, कुण्डा और देवगाँव के परगने चेरो जमींदारी के सीमान्त केन्द्र थे और उसे बिहार के मुगल अधिकृत क्षेत्र से पृथक करते थे ।[3]

प्रताप राय के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में मुगलों और चेरो के आपसी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण थे किन्तु बाद में सम्बन्ध इस प्रकार बिगड़ गये कि प्रताप राय विद्रोही हो गया और उस पर आक्रमण करने की आवश्यकता पड़ी । यह स्थिति प्रतापराय से पटना के सूबेदार के द्वारा अधिकाधिक धन वसूली के कारण उत्पन्न हुई।

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, फारसी, भाग 2, पृ0 248, चेरो, पौराणिक आख्यानों के अनुसार प्रतापराय मेदिनीराय का पुत्र था । एल0एस0एस0 मैली बंगाल गजेटियर पालामऊ, पृ020 पर भी वर्णित है कि प्रताप राय मेदिनी राय का पुत्र था ।

2, लाहौरी बादशानामा फारसी भाग 2, पृ0 248, मुहम्मद काजिम, शिराजी, आलमगीरनामा फारसी, पृ0 650.

3. मुहम्मद काजिम शिराजी, आलमगीरनामा फारसी, पृ0 650.

प्रताप राय मुगल सूबेदार की निरन्तर बढ़ती माँग से तंग आ गया और उसने निश्चित पेशकश देना बन्द कर दिया । बिहार का सूबेदार अब्दुल्ला खाँ था । वह विद्रोही प्रताप उज्जैनिया के विद्रोह का दमन करने में व्यस्त था । अतः उसने प्रताप राय की ओर ध्यान न दिया । इससे प्रताप राय की उद्दंडता बढ़ती गयी । बिहार के नये सूबेदार शायस्ता खाँ के आने से भी उसकी नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । शायस्ता खाँ ने उसकी शिकायत सम्राट से की । सम्राट ने उसके विरुद्ध आक्रमण करके उसे वहाँ से निकाल देने की आज्ञा दी ।[1] अक्टूबर 1641 ई0 में शायस्ता खाँ पाँच हजार घुड़सवार तथा पन्द्रह हजार पैदल सेना लेकर पटना से रवाना हुआ और चेरो के क्षेत्र में जा पहुँचा । जनवरी 1642 ई0 के अन्त तक मुगल सेना आरा में रही । उसके पश्चात पालामऊ के किले में प्रवेश करने का आदेश हुआ । यहाँ दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ । अन्त में प्रताप राय ने अधीनता स्वीकार कर ली और भविष्य में विद्रोह न करने का वचन दिया । साथ ही पेशकश के रूप में उसने अस्सी हजार रूपये देने का वायदा किया । जब शायस्ता खाँ को यह धन मिल गया तो उसने 12 फरवरी 1642 ई0 को पालामऊ छोड़ दिया।[2] इस प्रकार प्रताप राय मुगलों का अधीनस्थ बन गया । शाहजहाँ के शासनकाल के 16वें वर्ष शायस्ता खाँ को बिहार से स्थानान्तरित कर इलाहाबाद भेज दिया गया । इतिकाद खाँ उसकी जगह बिहार का सूबेदार नियुक्त हुआ ।[3] इस बीच प्रताप राय

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ डेलही, पृ0 118, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 167.

2. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पालामऊ, पृ0 21, लाहौरी, बादशाहनामा, फारसी भाग 2, पृ0 250, गुलाम हुसैन सलीम, रियाजुस्सलातीन, अंग्रेजी ।अनु0। पृ0 227, बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ डेलही, पृ0 118, मुंशी देवी प्रसाद शाहजहाँनामा, पृ0 168.

3. बालमुकुन्द वीरोत्तम, नागवंशी एवं चेरो, पृ0 33.

पुन: विद्रोही हो गया । उसने मुगलों को निश्चित कर देना बन्द कर दिया । वह पालामऊ के विद्रोही तात्त्वों का नेता बन गया । इतिकाद खाँ उसे दण्डित करना चाहता था । इसी बीच प्रताप राय के परिवार में आन्तरिक मतभेद उत्पन्न हो गया । प्रताप राय के चाचा दरिया राय और तेज राय इतिकाद खान से मिले। उन्होंने प्रताप राय को बन्दी बनाकर सूबेदार दे देने की बात कही । तदनुसार प्रताप राय को बन्दी बना लिया गया । तेज राय अब पालामऊ का राजा बन गया । जब इतिकाद खाँ ने बन्दी प्रताप राय को अपने सुपुर्द किए जाने की माँग की तब तेज राय टालमटोल करने लगा । कुछ समय तक प्रताप राय जेल में रहा, इस बीच तेज राय का बड़ा भाई दरिया राय अपने भाई के कृत्यों से नाराज हो गया । दरिया राय की इतिकाद खाँ के साथ मिलकर एक षड्यन्त्र की संरचना की कि यदि तेज राय के विरुद्ध मुगल सेना हमारी सेना की सहायता करे तो मैं देवगाँव का किला मुगलों को दे दूँगा । वायदे के अनुसार इतिकाद खाँ ने जबरदस्त खाँ को सेना सहित दरिया राय की सहायता के लिये भेजा । साथ में शाहाबाद का जमींदार[1] भी गया । इन सब की सम्मिलित सेना ने देवगाँव के किले को घेर लिया और देवगाँव के किले को अधिकृत कर मुगल सेनानायक जबरदस्त खाँ को दे दिया । इसके पश्चात जबरदस्त खाँ सेना सहित जंगलों को काटता हुआ पालामऊ की ओर बढ़ा । तेजराय ने भी छ: सौ घुड़सवार तथा सात हजार पैदल सैनिक उसे रोकने के लिये भेजे किन्तु यह सेना देवगाँव से कुछ मील दूर पराजित हो गयी । प्रतापराय को उसके सहयोगियों[2] ने स्वतंत्र करा दिया और वह पालामऊ के किले में आ गया ।

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 357-359, शाहाबाद के जमींदार का नाम बादशाहनामा में नहीं दिया गया है दूसरे स्रोतों में भी नहीं उल्लिखित है ऐसा लगता है वह धरनीधर उज्जैनिया था ।

2. सूरतसेन ।सूरतसिंह। सबल सेन ।सबलसिंह। मदन सिंह के पुत्रों के सहयोग से प्रतापराय बन्दीगृह से छूटा ।

तेज राय भाग गया । जबरदस्त खाँ पालामऊ के किले की ओर बढ़ा । जब वह पालामऊ के किले से 6 मील दूर रह गया तब प्रताप राय ने विरोध करना व्यर्थ समझकर समझौता कर लेना उचित समझा । 19 नवम्बर 1643 ई० को वह जबरदस्त खाँ के साथ पटना गया और उसने । हाथी भेंट में दिया तथा साथ ही एक लाख रूपया वार्षिक कर देना स्वीकार कर लिया ।[1] मार्च 1644 ई० में इतिकाद खाँ की संस्तुति से सम्राट शाहजहाँ ने उसे 1000/1000 का मनसबदार बना दिया और उसे पालामऊ की जागीर प्रदान कर दिया और उसकी जमा ढाई लाख रूपया निश्चित किया ।[2]

प्रताप राय कम से कम 1647 ई० तक मुगलों के प्रति स्वामिभक्त बना रहा। उसे 1000/1000 का मनसब प्राप्त था ।[3] 1647 ई० के बाद प्रताप राय के कृत्यों के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं होता है । चेरो परम्परा से ज्ञात होता है कि मेदिनी राय का पूर्ववर्ती राजा भूपाल राय था । मेदिनी राय की उपलब्धियों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उसने शाहजहाँ के शासन के अन्त में उत्तराधिकार के युद्ध से उत्पन्न संशय की स्थिति का पूरा पूरा लाभ उठाया । इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि प्रताप राय उत्तराधिकार के युद्ध के कुछ समय पूर्व मर गया था ।1657-58 ई० के मध्य। । उसके पश्चात भूपाल राय गद्दी पर बैठा तत्पश्चात संभवत: मेदिनी राय 1657-58 ई० में गद्दी पर बैठा ।[4]

---

1. लाहौरी, बादशाहनामा, फारसी, भाग 2, पृ० 360, बदायूँनी, मुन्तखब उल तवारीख, भाग 1, पृ० 715, मुन्तखब उल तवारीख के अनुसार प्रताप राय ने इतना धन पटना में ही दे दिया था ।
2. लाहौरी, पादशाहनामा फारसी, भाग 2, पृ० 361, अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ० 31, बंगाल गजेटियर पालामऊ, पृ० 22.
3. लाहौरी, पादशाहनामाफारसी, भाग 2, पृ० 732, प्रताप चेरो हजारी हजार सवार/मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 184.
4. बालमुकुन्द वीरोत्तम, नागवंशी एवं चेरो, पृ० 58.

गिधौर एवं हेरा

खैआोर के पूर्व में गिधौर की जमींदारी थी जो मुंगेर जिले में जम्मू नामक उपमण्डल में है । अबुल फजल ने गिधौर को बिहार के महाल के रूप में वर्णित किया है । इसमें जंगल के मध्य पहाड़ पर एक शक्तिशाली दुर्ग था ।[1] बिहार सूबा के अन्तर्गत गिधौर की जमींदारी सबसे प्राचीन मानी जाती थी ।[2]

प्रारम्भ में गिधौर मुगलों के अधिकार-क्षेत्र के बाहर था, किन्तु अकबर के शासन के 19वें वर्ष [1574-75 ई0] में गिधौर के आठवें राजा पूरनमल ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । पूरनमल ने बंगाल के अफगानों के विरुद्ध छेड़े गये मुगल अभियान में मुगलों का साथ दिया । 30वें वर्ष [1585-86 ई0] में वह मुगल फौजदार शाहबाज खाँ की सेवा में रहा ।[3] अकबर के राज्यकाल के 35वें वर्ष [1590-91] ई0 में पूरनमल ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया किन्तु राजा मानसिंह के आक्रमण कर देने पर उसने पुन: मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । अकबर के शासनकाल के 37वें वर्ष [1592-93 ई0] में उसने युसूफ खान कश्मीरी की अधीनता में मानसिंह के उड़ीसा अभियान में मुगलों की सहायता की ।[4] पूरनमल के दो पुत्र थे।

---

1. अबुल फजल, आइने अकबरी, भाग 2, पृ0 68.

2. इम्पीरियल गजेटियर, भाग 12, पृ0 239.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 107, 460, 461, मिर्जा नाथन बहारिस्तान ए गैबी, अंग्रेजी [अनु0], डॉ0 एम0आई0 बोहरा, पृ0 139.

4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी [अनु0], भाग 3, पृ0 461, 611, एल0एस0एस0 ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, मुंगेर, पृ0 202.

हरिसिंह और विशम्भर सिंह । विशम्भर सिंह[1] अपने पिता की गद्दी का उत्तराधिकारी बना । उसके बड़े भाई हरिसिंह ने सम्राट को अपनी तीरन्दाजी से प्रसन्न कर लिया । सम्राट ने उसे बिजारी का परगना दिया । और सम्राट ने हरिसिंह को दरबार में शाही सेवा में रखा ।[2]

गिधौर के चौदहवें राजा दलन सिंह को मुगल सम्राट ने उच्च सम्मान व राजा की उपाधि दी थी ।[3] दलनसिंह ने शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य छिड़े उत्तराधिकार के युद्ध में दारा का साथ दिया था ।[4]

---

1. विशम्भर सिंह के बड़े भाई हरि सिंह को गद्दी मिलनी चाहिए थी । एक किम्वदन्ती है कि सम्राट ने हरि सिंह से नाराज होकर गद्दी उसे न देकर उसके छोटे भाई को दे दी । नाराजगी का कारण यह था कि सम्राट ने सुन रखा था कि हरि सिंह के पास एक ऐसा दार्शनिक पत्थर है जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है । सम्राट ने हरि सिंह से वह दार्शनिक पत्थर माँगा जिसे न दे पाने के कारण सम्राट नाराज हो गया और हरि सिंह को कैद में डाल दिया । कालान्तर में उसकी तीरन्दाजी से प्रसन्न होकर उसे सम्राट ने बिजारी का परगना दिया । एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, मुंगेर, पृ0 202.

2. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 203.

3 एल0एस0एस0 ओ0मैली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 203,
सम्राट शाहजहाँ का 21 रजब 1068 हिजरी (1651 ई0) का फरमान ।

4. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 203.

<u>खैरा रियासत</u>

जामुल उपखण्ड के 5 मील दक्षिण पूर्व में खैरा स्थित था । इस प्रदेश का निर्माता हरि सिंह था, जो गिधौर के राजा पूरनमल का ज्येष्ठ पुत्र था, । हरि सिंह के शाही हिरासत में रहने की अवधि में उसका कनिष्ठ भाई विशम्भर सिंह खैरा पर भी शासन कर रहा था । जब वह वापस आया तो उसने अपनी रियासत का कार्यभार स्वयं संभाला । हरि सिंह और विशम्भर सिंह दोनों ही परिवारों का मुख्य स्थान खैरा था ।[1]

खरार या खड्गपुर

राजा पूरनमल की रियासत के समीप ही खड्गपुर के राजा संग्राम की रियासत थी ।[2] अकबरनामा में खड्गपुर का वर्णन एक कस्बे के रूप में किया गया है ।[3] खड्गपुर के राजा संग्राम ने गिधौर के राजा की ही भाँति मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी । जब 1574-75 ई0 में शाही सेना मुंगेर के विद्रोही अफगानों के विरुद्ध गयी तो राजा संग्राम ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की और उनकी सेवा में वह भर्ती हो गया । उसने विद्रोहियों के विरुद्ध मुगलों की ईमानदारी से सहायता की ।[4] सन् 1591-92 ई0 में अकबर के शासन के 35वें वर्ष में राजा संग्राम

---

1. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 214.

2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 3, पृ0 107.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 3, पृ0 315.

4. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी।अनु0।, भाग 3, पृ0 107, 315, 460.
शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी।अनु0।, एच0बेवरिज, भाग 2, पृ0609.

राजा मानसिंह से मिला और उसने उसे हाथी तथा अन्य उपहार भेंट स्वरूप दिये ।[1] अकबर के राज्यराव के 35वें वर्ष ।1592-93। ई0 में उड़ीसा के अभियान में संग्राम ने राजा मानसिंह का साथ दिया ।[2]

अकबर की मृत्यु के बाद राजा संग्राम शाह ने विद्रोहात्मक दृष्टिकोण अपनाया । उसने सम्राट जहाँगीर के बुलाने पर भी दरबार में जाकर हाजिरी नहीं दी। अतः सम्राट ने उसके विरुद्ध सेना भेजी । दोनों पक्षों में युद्ध हुआ और सन् 1606 ई0 में संग्राम शाह लड़ते लड़ते मारा गया ।[3] संग्राम शाह की विधवा रानी चन्द्रजोत को बाजबहादुर समझा बुझाकर दरबार में ले आया और सम्राट से उसके लिये सिफारिश की । उस समय उसका पुत्र टोडरमल सम्राट की कैद में था । बाजबहादुर के कहने पर सम्राट ने टोडरमल को बन्दीगृह से मुक्त कर दिया । टोडरमल का धर्म परिवर्तित करा दिया गया । उसे मुसलमान बना दिया गया और उसे रोज अफजूं नाम दिया गया ।[4] सम्राट ने अपनी चचेरी बहन का विवाह उसके साथ कर दिया ।[5] उसे 3000/3000 का मनसब दिया गया जबकि उसके दोनों पुत्रों बेहरोज शाह और अब्दाल शाह को 2000/2000 का मनसब प्राप्त था ।[6] रोज अफजूं अपने प्रारम्भिक

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0। भाग 3 / पृ0 107, 315, 460, 576.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 576.
3. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पृ0 34.
4. एल0एस0एस0 ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पृ0 215, शाहनवाज खाँ मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 610, जहाँगीर, तुजुके जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु0। पृ0 295-296.
5. रास बिहारी बोस, जनरल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, भाग 1, पृ0 22, 23. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पृ0 215.
6. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पृ0 215.

वर्षों से ही सम्राट की सेवा में था । जहाँगीर के शासनकाल के आठवें वर्ष वह अपने वतन का जमींदार बना ।[1] और उसे उपहार में हाथी प्रदान किया गया । जहाँगीर के शासनकाल के अन्त में उसका मनसब 1500/700 था ।[2] शाहजहाँ के शासनकाल के प्रथम वर्ष उसे महावत खाँ खानखाना के साथ बल्ख के शासक नज्र मुहम्मद खाँ के विरुद्ध काबुल भेजा गया । उसे जुझार सिंह बुन्देला के विद्रोह का दमन करने के लिये भी भेजा गया ।[3] शाहजहाँ के शासनकाल के तीसरे वर्ष में उसे आजम खाँ के साथ शायस्ता खाँ के विरुद्ध भेजा गया और इस समय उसके मनसब में 100 सवार की वृद्धि की गयी ।[4] चौथे वर्ष में वह नसीरी खान के साथ नान्देर भेजा गया । छठें वर्ष में उसे मुहम्मद शुजा की अध्यक्षता में दक्षिण भेजा गया । 8वें वर्ष में उसके मनसब में वृद्धि की गयी । उसका मनसब अब 2000/1000 का कर दिया गया ।[5] सन 1634-35 ई० में ही उसकी मृत्यु हो गयी ।[6] राजा रोज अफजूँ अपने पुत्र अब-दाल को खड्गपुर जाते समय दिल्ली में ही बन्धक के रूप में छोड़ गया था ।[7]

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु०), भाग 1, पृ० 296-297.

2. एल०एस०एस०ओ० मैली, बंगाल गजेटियर, पृ० 35, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, अंग्रेजी (अनु०), भाग 2, पृ० 610, यह सही नहीं लगता है क्योंकि लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1 पृ० 182 पर शाहजहाँ के शासन के प्रथम वर्ष उसका मनसब 1500/600 दिया गया है ।

3. लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड 2, पृ० 213, 241. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ० 610.

4. लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड 2, पृ० 316.

5. मुहम्मद सालेह कम्बो, अम्ले सालेह भाग 3, पृ० 879. लाहौरी बादशाहनामा भाग 1, खण्ड 2, पृ० 67, मुंशीदेवी प्रसाद शाहजहाँनामा, पृ० 86. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, पृ० 610.

6. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, पृ० 610, एल०एस०एस०ओ० मैली, बंगाल गजेटियर, पृ० 215.

7. एल०एस०एस०ओ० मैली, बंगाल गजेटियर, पृ० 215.

रोज अफजूं के पश्चात उसका पुत्र बेहरोज शाह गद्दी पर बैठा । उसने काबुल अभियान में मुगलों की सहायता की । अत: सम्राट ने उसे चकला मिदनापुर की रियासत उपहार में दी जहाँ उसने छत्रपुर नामक शहर बसाया ।[1] सम्राट शाहजहाँ ने उसे 700/700 का मनसब भी प्रदान किया था । औरंगजेब के समय भी बेहरोज शाह मुगलों की सेवा करता रहा । सन् 1665 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[2]

कोकरा

बिहार के दक्षिण में कोकरा का क्षेत्र था । अबुल फजल के अनुसार कोकरा उड़ीसा और दक्षिण के मध्य स्थित था ।[3] स्थानीय विवरण से ज्ञात होता है कि कोकरा छोटा नागपुर में स्थित था जो उस समय झारखण्ड कहलाता था ।[4] अबुल

---

1. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पृ0 215.
2. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 611, एल0एस0एस0 ओ0 मैली, मंगाल गजेटियर, पृ0 35, एम0अतहर अली, द आपरेटस आफ इम्पायर पृ0 150.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 576.
4. रांची डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (पटना 1917), पृ0 26-27, हजारीबाग डिस्ट्रिक्ट गजेटियर(पटना 1917)पृ0 61, इम्पीरियल गजेटियर, बंगाल, भाग 2, (कलकत्ता 1909) पृ0 349.

टिप्पणी : बी0पी0 सक्सेना ने झारखण्ड के सम्बन्ध में जो विवरण दिया है उसमें किसी जमींदार का नाम तो नहीं किन्तु जमींदारों की धृष्टता एवं मुगल विरोधी नीति का संकेत मिलता है । विवरण इस प्रकार है,

"मध्य भारत में स्थित वीर भूमि और पाहेल से रत्नपुर तक तथा दक्षिण बिहार में स्थित रोहतासगढ़ से उड़ीसा की सीमा तक विस्तृत क्षेत्र मध्ययुग में सामान्यरूप से झारखण्ड कहलाता था । इसमें अनेक स्वाधीन राज्य थे जो यदा कदा मुगलों को तंग करते रहते थे । इस क्षेत्र को अधिकृत करना एक दीर्घकालीन कार्य था तथा कठिन भी, कारण यह था कि यहाँ घने वनों से आच्छादित दुर्गम पहाड़ियाँ और घाटियाँ थी, जिनमें प्रवेश करना बहुत कष्टदायी था । इसके अलावा साम्राज्य के अन्य जमींदारों के समान ही यहाँ के जमींदार भी तत्काल तो तूफान के सामने नतमस्तक हो जाते थे, पर उसकी समाप्ति पर शीघ्र ही अपना सर पुन: उठा लेते थे ।"-बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 111.

फजल सूबा बिहार की सीमाओं का विवरण देते समय लिखता है कि इसकी पूर्वी सीमा पर बंगाल, पश्चिम में इलाहाबाद और अवध तथा उत्तर-दक्षिण में ऊँचे ऊँचे पहाड़ थे।[1]

कोकरा के राजा ने अकबर के शासनकाल के 30वें वर्ष।1585-86 ई0। में मुगलों द्वारा भेजे गये शाहबाज खान के अभियान के बाद मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । उसने शाहबाज खान को मालगुजारी भी प्रदान की । कोकरा के राजा ने 1592-93 ई0 में मुगलों के राजा मानसिंह की अध्यक्षता में उड़ीसा भेजे गये अभियान में मुगलों की सहायता की थी ।[2] अकबर के समय में प्रमुख कोकरा राजा मधुसिंह था जिसको बैरीसाल भी कहा जाता था । यह नागवंशी राजाओं में पैंतालीसवां राजा था ।[3]

दुर्जनसाल

दुर्जनसाल सम्राट जहाँगीर का समकालीन नागवंशी राजा था । दुर्जनसाल ने गद्दी पर बैठते ही मुगलों के प्रति अपनी निष्ठा छोड़ दी और निश्चित कर देना भी बन्द कर दिया । अत: बिहार के सूबेदारों इस्लाम खान, कुतुबुद्दीन खान जहाँगीर कुली खान, लालबेग, अफजल खान आदि ने उसके विरुद्ध सेना भेजी व स्वयं भी गये और अन्तत: दो तीन हीरे लेकर संतुष्ट हो गये व नागवंशी राजा को पूर्ववत स्थिति में रहने दिया ।[4]

---

1. अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0। भाग 2, पृ0 66.

2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 479.

3. लाल प्रद्युम्न सिंह नागवंशी, ।हिन्दी। भाग 2, पृ0 74.

4. जहाँगीर, तुजुके जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु0।, पृ0 315,

कोकरा प्रदेश की नदी में बहुमूल्य हीरे मिलते थे ।[1] हीरों की प्राप्ति की आकांक्षा तथा दुर्जनसाल के स्वतंत्र रुख अपनाने के कारण सम्राट जहाँगीर ने 1612 ई0 में बिहार के सूबेदार जफर खान को कोकरा देश पर आक्रमण करने तथा वहाँ की हीरे की खान पर अधिकार करने का आदेश दिया । वह सम्राट के आदेशानुसार कोकरा देश को विजित करने निकल पड़ा । उसने कोकरा के जमींदार पर दबाव डालकर उससे बत्तीस मिसकल हीरे पेशकश के रूप में वसूल किये । किन्तु बंगाल के गवर्नर इस्लाम खान की मृत्यु के पश्चात वह बिना आज्ञा के बंगाल चला गया इससे सम्राट उससे रुष्ट हो गया । उसने उसे बिहार वापस भेजा जहाँ उसे लकवा की बीमारी हो गयी जिससे उसका यह अभियान असफल रहा ।[2]

जहाँगीर के शासनकाल के दसवें वर्ष 1615 ई0 में बिहार के सूबेदार जफर खान के स्थान पर इब्राहीम खान की नियुक्ति हुई ।[3] सम्राट ने उसे बिहार जाते समय ही कोकरा देश को विजित करने का आदेश दिया था । अतः इब्राहीम खान सेना सहित कोकरा के जमींदार के विरुद्ध चल पड़ा । दुर्जनसाल ने कुछ आदमी इब्राहीम खान के पास भेजे । उनसे यह कहलाया कि वह अपना अभियान वापस ले ले । बदले में वह हीरे तथा हाथी भेंट में देने को तत्पर था किन्तु इब्राहीम खान नहीं माना । उसकी सेना आगे बढ़ती गयी । दुर्जनसाल भयभीत हो गया और अपने परिवार वालों के साथ एक गुफा में छिप गया । किन्तु इब्राहीम खान के सैनिकों ने

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 1, पृ0 315. यह शंख नदी का वर्णन किया गया है जो वर्तमान राँची जिले के पश्चिम भाग से होकर बहती है । अवर्नियर्स ट्रैवल्स इन इण्डिया ।अनु0। वी0 वाली, भाग 2, पृ0 85.
2. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान ए गैबी अंग्रेजी ।अनु0। भाग 1, पृ0 257-262. इस्लाम खान की मृत्यु 1613 ई0 में हुई थी ।
3. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 1, पृ0 315-16, इब्राहीम खान मिर्जा गियास बेग का सबसे छोटा पुत्र तथा नूरजहाँ का भाई था । अबुल फजल, आईने अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 1, पृ0 575-76.

उसे ढूँढ निकाला । उसने दुर्जनसाल के पास जितने हीरे थे वह ले लिये । 23 नर व मादा हाथी भी इब्राहीम खान को मिले ।[1] अब कोकरा मुगल अधिकार में था आ गया और और हीरे जो शंख नदी से प्राप्त हुये थे शाही दरबार में भेज दिये गये । जो हीरे कोकरा देश से उस समय मुगलों को मिले थे उनकी कीमत पच्चास हजार रूपये थी । जहाँगीर का यह अनुमान था कि यदि खोजा जाये तो कोकरा क्षेत्र से और भी हीरे मिलेंगे । सन 1617 ई० में बिहार के सूबेदार इब्राहीम खान फतह जंग ने मुहम्मद बेग के माध्यम से हाथी व हीरे सम्राट के पास भिजवाये। यह हीरे उसे खान से तथा कोकरा के जमींदार से प्राप्त हुये थे । इसमें से एक हीरा 14½ टंक वजन का था जिसका मूल्य एक लाख रूपया था ।[2]

दुर्जनसाल ने अपनी पराजय व कैद से मुक्ति के लिये सोने चाँदी के आभूषण जिनकी कीमत चौरासी करोड़ थी, सम्राट को दिये ।[3] किन्तु इब्राहीम खान ने उसे कैद से मुक्त नहीं किया और उसे बन्दी के रूप में पटना ले गया । पटना से दुर्जनसाल शाही दरबार में गया और वहाँ से ग्वालियर के किले में कैदी के रूप में भेजा गया । जहाँगीर अपनी आत्मकथा में तीन वर्ष बाद के वर्णन में कोकरा के विजय के समय वहाँ से प्राप्त हीरों के गुणों का वर्णन करते समय लिखता है कि वहाँ

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु०) भाग 1, पृ० 316. इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 3, पृ० 345, एम०जी० हैलेट, बिहार एण्ड उड़ीसा गजेटियर, राँची, पृ० 26.

2. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु०) भाग 1, पृ० 379, एक टंक = 4 माशा और एक सुर्ख या रत्ती । अबुल फजल, आईने अकबरी, भाग 1, पृ० 16. इस प्रकार 14½ टंक = 58 मासा और 14½ सुर्ख या मोटे तौर पर 60 माशा या 5 तोला । अकबर के काल में एक हीरा जिसका वजन 5¼ टंक और 4 सुर्ख है उसका मूल्य एक लाख रूपया था । अतः यह स्पष्ट नहीं होता कि एक हीरा जिसका वजन 14½ टंक है उसका मूल्य केवल एक लाख रूपया हो ।

3. जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग 11, खण्ड 1, पृ० 115 । चौरासी करोड़ रूपये की भेंट बढ़ाचढ़ाकर कही गयी बात लगती है ।

का जमींदार दुर्जनसाल अभी तक उसके कैद में था ।[1] नागवंशी प्रथा के अनुसार दुर्जनसाल बारह वर्ष तक कैद में रहा ।[2] एक बार सम्राट के पास कहीं से दो हीरे लाए गये । सम्राट को उसमें से एक के खरेपन पर सन्देह होने लगा । दुर्जनसाल हीरे का बहुत बड़ा पारखी था । उसे कैद से बुलाया गया । उसने उस नकली हीरे को पहचान लिया । उसने नकली हीरे को असली हीरे से पीटा नकली हीरा टूट गया जबकि असली हीरा ज्यों का त्यों बना रहा । सम्राट दुर्जनसाल से बहुत प्रसन्न हुआ उसने उसे कैद से मुक्त कर दिया उसे उसके राज्य के साथ साथ उससे ली गयी समस्त सम्पत्ति भी लौटा दी । सम्राट ने उससे यह भी कहा कि कुछ माँगना हो तो माँग लो । उसने सम्राट से दो माँग की - प्रथम उसने अपने साथ ग्वालियर के किले में कैद किये गये सभी राजाओं की रिहाई की माँग की, दूसरे उसने सम्राट के सम्मुख कुर्सी पर बैठने की माँग की । जहाँगीर ने उसकी दोनों ही माँगे पूरी की ।[3] सम्राट जहाँगीर उसके साहसिक आचरण से बहुत प्रसन्न हुआ । वेब्सटर के अनुसार उसने दुर्जनसाल को शाह की उपाधि दी । दुर्जनसाल ने छः हजार रूपया वार्षिक कर या लालबूंदी देने का वायदा किया और सम्राट से उसे पट्टा प्राप्त हुआ ।[4]

दुर्जनसाल जिस समय कैद में था उस समय कोकरा पर पूर्ण अधिकार मुगलों का था । वहाँ का राजा उस समय दुर्जनसाल का एक सम्बन्धी था । वह मुगलों के प्रति

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी ।अनु०। भाग 2, पृ० 22.
2. बालमुकुन्द वीरोत्तम नागवंशी एवं चेरो, भाग 2, पृ० 77.
3. बालमुकुन्द वीरोत्तम नागवंशी एवं चेरो, भाग 2, पृ० ~~xx5xxxx~~ 77-78. जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग 11, खण्ड 1, पृ० 115-16.
4. पट्टा एक तरह का लीज होता था एच०एच० विलसन, ए ग्लासरी आफ ज्यूडिशियल एण्ड रेवेन्यू टर्म्स आफ ब्रिटिश इण्डिया, पृ० 650, एम०जी० हैलेट, बिहार एण्ड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, राँची, पृ० 26.

निष्ठावान नहीं था वह शाही आदेशों की अवहेलना करता था । अतः सम्राट जहाँगीर ने अपने शासन के 19वें वर्ष (1624 ई0) में अहमद बेग खान को जो इब्राहीम खान फतहजंग का भतीजा था कोकरा के राजा पर आक्रमण केलिये भेजा ।[1] यह युद्ध बहुत थोड़े समय तक चला । नागवंशी परम्परा में इस युद्ध का कोई उल्लेख नहीं मिलता । 1627 ई0 में दुर्जनसाल अपने वतन लौटा । उसे अपना राजत्व प्राप्त करने के लिये युद्ध करना पड़ा । उस युद्ध में ग्वालियर की कैद में उसके साथ बन्दी राजा लोगों ने उसका साथ दिया । उस युद्ध में दुर्जनसाल की विजय हुयी ।[2] दुर्जनसाल ने 1627 ई0 से 1639-40 ई0 तक और शासन किया ।[3] 1639-40 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।

रूपनाथ शाह देव द्वारा प्रस्तुत सन 1787 ई0 के कुर्सीनामा के अनुसार दुर्जनसाल का उत्तराधिकारी मधुकरन शाह तथा देव शाह था ।[4] मधुकरन शाह वास्तव में कोकरा का मधुसिंह था । देव शाह लाल प्रद्युम्न सिंह की सूची के अनुसार सैतालीसवाँ नागवंशी राजा था । वह दुर्जनसाल का पूर्ववर्ती राजा था परवर्ती नहीं लाल प्रद्युम्न सिंह की सूची में 1645 ई0 से 1670 ई0 के मध्य राम शाह को कोकरा

---

1. इकबालनामा,-ए-जहाँगीरी, फारसी, पृ0 217, अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0 576, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 1, पृ0
2. बालमुकुन्द वीरोत्तम, नागवंशी और चेरो, पृ0 12.
3. लाल प्रद्युम्न सिंह के अनुसार दुर्जनसाल ने 41 वर्ष शासन किया । लाल प्रद्युम्न सिंह नागवंशी, भाग 2, पृ0 74. दुर्जनसाल (1599 ई0) में गद्दी पर बैठा । 1627 ई0 में वह शाही दरबार से कोकरा लौटा और उसके बाद 12-13 वर्ष उसने और शासन किया ।
4. बालमुकुन्द वीरोत्तम, नागवंशी एवं चेरो, पृ0 14.

के शासक के रूप में वर्णित किया गया है । यदि नागवंशी शासकों का कालक्रमानुसार वर्णन देखा जाय तो रामशाह दुर्जनसाल का उत्तराधिकारी ज्ञात होता है किन्तु एक शिला पर उत्कीर्ण लेख से ज्ञात होता है कि 1665 ई0 में रघुनाथ शाह कोकरा का राजा था रामशाह नहीं ।[1] वास्तव में रामशाह रघुनाथ शाह का उत्तराधिकारी था पूर्वाधिकारी नहीं । रघुनाथ शाह ने 50 वर्ष शासन किया । इस प्रकार रघुनाथ शाह ने लगभग 1640 ई0 से 1690 ई0 तक शासन किया ।[2] दुर्भाग्यवश रघुनाथ शाह के शासन के पूर्वार्द्ध का कोई स्पष्ट विवरण नहीं प्राप्त होता । लाल प्रद्युम्न सिंह के अनुसार कुछ मुगलअधिकारियों ने रघुनाथ शाह के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में कोकरा पर आक्रमण किया था । इस आक्रमण का शक्तिपूर्वक रघुनाथ शाह ने दमन कर दिया व मुगल पराजित हुये । किन्तु इस आक्रमण का कोई उल्लेख समकालीन इतिहास में नहीं मिलता है ।

रतनपुर

जहाँगीर के शासनकाल में रतनपुर के राजा कल्याण का उल्लेख मिलता है । सन 1619 ई0 में उसकी मुगलविरोधी गतिविधियों एवं अपने वतन में स्वतंत्र शासन की इच्छा देखकर सम्राट ने शाहजादा परवेज को उस पर आक्रमण करने के लिये भेजा। शाहजादा परवेज ने उसे पराजित किया व अपने साथ मुगल दरबार में ले आया । उसने सम्राट को भेंट के रूप में अस्सी हाथी और एक लाख रूपये प्रदान किये ।[3] इसके बाद से वह मुगलों के प्रति निरन्तर निष्ठावान बना रहा ।

---

1. जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग 1, खण्ड 2, पृ0 109. छोटा नागपुर में पत्थर पर खुदे हुये तीन अभिलेखों पर राखाल दास हलदर की टिप्पणी: राँची से पाँच मील दूर बोरिया नामक छोटे से गाँव में एक मन्दिर है जिस पर खुदा हुआ है कि यह मन्दिर 1665 ई0 में रघुनाथ शाह के काल में बनायी गयी।
2. बालमुकुन्द वीरोत्तम, नागवंशी एवं चेरो, पृ0 15.
3. जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी, अंग्रेजी [अनु0] भाग 2, पृ0 93.

सम्राट शाहजहाँ के काल में रत्नपुर का जमींदार बाबू लक्ष्मण था । बाबू लक्ष्मण 1634-35 ई0 में अमरसिंह से मिलकर मुगलों का विरोध करने लगा । अत: सम्राट ने अब्दुल्ला खाँ को उसका दमन करने के लिये भेजा । अन्त में बाबू लक्ष्मण ने मुगलों से समझौता कर लिया । उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली और सम्राट से स्वयं भेंट करने गया ।[1] 26 जनवरी 1635 ई0 में बाबू लक्ष्मण ने सम्राट शाहजहाँ को एक लाख रूपये नगद तथा नौ हाथी पेशकश के रूप में दिये ।[2] इसके बाद से शाहजहाँ के शासनपर्यन्त रत्नपुर के राजा एवं मुगल सम्राट के मध्य सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बने रहे ।

पनचेत

बहारिस्तान ए-गैबी के लेखक मिर्जा नाथन के अनुसार पनचेत की पहाड़ी जमींदारी वीरभूम के शमसखान की रियासत के समीप थी ।[3] ब्लोचमैन पनचेत को अकबरकालीन बंगाल की पश्चिमी सीमा के बाहर स्थित रियासत बताते हैं ।[4] अहसान रजा खाँ के अनुसार, यह गढ़ी के दक्षिण में स्थित बिहार और बंगाल के सीमावर्ती प्रदेश के मध्य स्थित एक रियासत थी ।[5]

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ डेलही, पृ0 117, लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड 2, पृ0 74-76.
2. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह (अनु0) भाग 2, पृ0 651.
3. अलाउद्दीन इस्फहानी जो मिर्जा नाथन के नाम से प्रसिद्ध है बहारिस्तान ए गैबी अंग्रेजी (अनु0), एम0आई0 बोहरा (गोहाटी 1936) भाग 1, पृ0 18.
4. एच0 ब्लोचमैन कन्ट्रीब्यूशन टू द ज्योग्राफी एण्ड हिस्ट्री आफ बंगाल, कलकत्ता, 1968, पृ0 15.
5. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 173.

अकबर के शासनकाल में मुगलों का ध्यान इस रियासत की ओर नहीं गया । उसका कारण उसकी भौगोलिक स्थिति थी । वहाँ के जमींदार उस समय तक स्वतंत्र थे । यद्यपि समकालीन स्रोतों में पनचेत तथा वहाँ के राजा का विवरण नहीं मिलता किन्तु बहारिस्तान ए गैबी से ज्ञात होता है कि जहाँगीर के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में वीर हमीर नामक राजा पनचेत पर शासन कर रहा था ।[1] लाहौरी के बादशाहनामा में 1632-33 ई0 के विवरण में हमें पनचेत के बारे में प्रथमस्पष्ट विवरण प्राप्त होता है । पनचेत सूबा बिहार के अन्तर्गत है । वहाँ का राजा वीर नारायन था जो शाहजहाँ के शासनकाल के छठें वर्ष मृत्यु को प्राप्त हुआ ।[2] राजा वीरनारायन को 700/300 का मनसब प्राप्त था ।[3] इसके बाद पच्चीस वर्ष तक पनचेत के किसी राजा का कोई विवरण प्राप्त नहीं होता किन्तु 1658 ई0 में सुल्तान सिंह की विकसित जामा तुमरी में पनचेत को मुगलों के अधीन पेशकश देने वाली व भेंट देने वाली रियासत के रूप में वर्णित किया गया है ।[4]

सूबा बिहार के राजाओं/जमींदारों के प्रति मुगल सम्राट जहाँगीर व शाहजहाँ की नीतियाँ अकबर की नीतियों के समान ही थी । जहाँगीर कोकरा राज्य में स्थित हीरो की खानों में विशेष रुचि रखता था और इसीलिये वह इस राज्य पर अपना आधिपत्य बनाये रखने के लिये इच्छुक था । शाहजहाँ का मन्तव्य जमींदारों

---

1. मिर्जा नाथन बहारिस्तान ए गैबी अंग्रेजी ।अनु0। डा0 एम0आई0 बोहरा, पृ0 15, 18-20, 327.

2. एच0 कूपलैण्ड, बंगाल गजेटियर, मानभूम, पृ0 53.

3. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 367

4. एच0 कूपलैण्ड, बंगाल गजेटियर, मानभूम, पृ0 54.

से अधिकाधिक सहयोग प्राप्त करना और उनकी सैनिक शक्ति का प्रयोग अपने अभियानों में करना था । इस काल में दोनों ही मुगल शासक सूबा बिहार के जमींदारों के ऊपर अपना नियन्त्रण बनाये रखने में सफल रहे किन्तु इस हेतु समय समय पर उन्हें राजाओं या जमींदारों से संघर्ष करने पड़े । यह स्पष्ट है कि स्वेच्छा से इन राजाओं या जमींदारों ने मुगलों की अधीनता शायद ही कभी स्वीकार की हो । वे हमेशा विद्रोहात्मक दृष्टिकोण अपनाते रहे थे किन्तु मुगल सत्ता के आगे संघर्ष में उन्हें झुकना ही पड़ता था । अस्तु बाध्य होकर उन्हें मुगलों की सम्प्रभुता स्वीकार करनी ही पड़ती थी और पुन: जब भी उन्हें अवसर प्राप्त होता वे विद्रोह कर देते थे । मुगल साम्राज्यवाद की विशाल ताकत के सामने इन राजाओं का प्रतिरोधात्मक दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि साम्राज्यवाद वास्तव में सैनिकवाद पर ही आधारित था । अधीनस्थ राजाओं के साथ क्रूरता का व्यवहार आमतौर पर मुगल शासकों जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने कभी नहीं किया । यह मुगल साम्राज्यवादी नीति की एक विशेषता थी ।

---------::0::---------

अध्याय - एकादश

क. सूबा बंगाल के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

ख. उड़ीसा के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा बंगाल के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

सूबा बंगाल सम्राट अकबर के समय के सूबों में सबसे विशाल था । अहसान रजा खॉ ने इस सूबे के राजाओं को चार भागों में विभाजित किया है । 1. उत्तरी सीमा के राजा जिनके अन्तर्गत कूच-बिहार और हिजदा के प्रदेश सम्मिलित थे । 2. भाटी राजाओं का प्रदेश 3, पूर्वी सीमा के राजा जिसमें माघ राजा शासन करते थे और जहाँ त्रिपूरा, कछारी, जैन्तिया, खासी और अहोम का शासन था 4. पश्चिमी सरकार के राजा ।

सूबा बंगाल की लम्बाई चिटगाँव में गढ़ी तक चार सौ कोस थी और इसकी चौड़ाई पहाड़ों के उत्तरी भाग में मन्दारन की सरकार की दक्षिणी सीमा तक दो सौ कोस थी और इसके अन्तर्गत उड़ीसा का प्रदेश भी सम्मिलित कर देने पर उसकी अतिरिक्त लम्बाई तिरालिस कोस और चौड़ाई तेईस कोस थी इसके पूर्व में समुद्र था, उत्तर तथा दक्षिण में पहाड़ थे और पश्चिम में बिहार का सूबा था। इस प्रदेश के पूर्व में भाटी राजाओं का प्रदेश था । इससे लगा हुआ त्रिपुरा राजाओं का प्रदेश था । उत्तर में कच्छ का प्रदेश था । इस प्रदेश की सीमा पर आसाम का प्रदेश था । उसके पड़ोस में छोटी तिब्बत का प्रदेश था । बंगाल के दक्षिण पूर्व में अरकाना का प्रदेश था ।[1]

सूबा बंगाल में कूच बिहार, सुसंग, अहोम, जैन्तिया, खासी, माघ, जैसोर, भाटी, त्रिपुरा, कछारी, दक्खिन कोल कामरूप में राजाओं का वर्णन सम्राट अकबर जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में मिलता है । इसके अतिरिक्त और भी बहुत से राजाओं का यत्र-तत्र वर्णन मिलता है । बंगाल की तरह उड़ीसा में भी क्षेत्रीय स्तर पर कई छोटे-छोटे राजा एवं जमींदार थे । अकबर

---

1. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), एच0एस0 जैरेट, भाग 2, पृष्ठ 129-131.

ने उडीसा पर अपनी सत्ता स्थापित करके वहाँ के राजाओं व जमींदारों
~~ने उड़ीसा~~ को अपनी सेवा में लिया तथा अवज्ञाकारी तत्वों का दमन किया । उड़ीसा एक ऐसा प्रान्त था, जो मुसलमानों की सत्ता को नकारता रहा था । अकबर ने जब इस पर विजय हेतु राजा मानसिंह को भेजा ।1592 ई0। तो यह कुतलू खाँ के पुत्र निसार खाँ के अधिकार में था । उसे पराजित करके इसका मुगल साम्राज्य में अधिग्रहण कर लिया गया और बंगाल सूबे के साथ संयुक्त कर दिया गया ।[1] जहाँगीर एवं शाहजहाँ के शासनकाल में उड़ीसा के जिन राजाओं एवं जमींदारों का विवरण मिलता है, उन सबका वर्णन इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है ।

कूच बिहार

बंगाल का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रदेश कूच बिहार था । इसकी स्थापना 16वीं शदी के पूर्वार्द्ध में विश्व सिंह ने की थी ।[2] कूच लोगों ने कूच बिहार की सीमा को बढ़ाते हुये उसका अत्यधिक विस्तार कर लिया था । अबुल फजल के अनुसार - कूच बिहार बहुत ही घना बसा हुआ प्रदेश था । इसकी लम्बाई 200 करोड़ और चौड़ाई 40 से 100 करोड़ तक थी । इसके पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी थी, उत्तर में तिब्बत और आसाम की सीमा लगी हुयी थी, दक्षिण में घोरघाट था और पश्चिम में तिरहुत था ।[3]

मल गोसाई

अकबर के शासनकाल में कूच बिहार का राजा मल गोसाई ।1540-84 ई0। था । कामता और कामरूप उसके शासन के अन्तर्गत थे ।[4] अकबर ने कूच बिहार

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 177.
2. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ0 163, श्री राम शर्मा, भारत में मुगल सम्राज्य, पृ0 170.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 716.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 2, पृ0 48.

और येमरूप के शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बना लिये थे, लेकिन जहाँगीर के काल में इस दिशा में मुगल नीति आक्रामक हो गयी ।[1] सर एडवर्ड गेट ने अहोम बुरंजी के आधार पर लिखा है कि मल गोसाईं के समय में अहोम, कछारी, जैन्तिया, त्रिपुरा, सिलहट, खैराम, डीमारुआ व मनीपुर के राजा अधीनस्थ हो गये थे । वे सब कूच बिहार के राजा को कर देते थे तथा उसकी प्रभुसत्ता को मानते थे ।[2]

लक्ष्मीनारायन

मल गोसाईं के पश्चात् उसका पुत्र लक्ष्मी नारायन 1584 ई0 में कूच बिहार का शासक बना ।[3] मल गोसाईं ने 1576 ई0 में या उसके पूर्व मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी ।[4] मल गोसाईं के उत्तराधिकारी लक्ष्मी नारायन ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । लक्ष्मी नारायन ने अपनी बहन का विवाह राजा मानसिंह[5] के साथ किया था ।[6] लक्ष्मी नारायन ने कूच बिहार के पश्चिमी राज्य पर 1584 ई0 से 1622 ई0 तक राज्य किया ।

---

1. एस0आर0 शर्मा, मुगल इम्पायर इन इण्डिया, पृ0 262, एस0एन0 भट्टाचार्या, ए हिस्ट्री आफ मुगल नार्थ इस्ट फ्रान्टियर पालिसी, पृ0 288-290.

2. सर एडवर्ड गेट-हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 53-55, ज्योतिर्मय राय, हिस्ट्री ऑफ मनीपुर (कलकत्ता) 1938, पृ0 30.

3. एस0एन0 भट्टाचार्या ने अपनी पुस्तक मुगल नार्थ ईस्टर्न फ्रान्टियर पालिसी में लिखा है कि लक्ष्मी नारायन 1587 ई0 में कूचबिहार का राजा बना ।

4. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री आफ आसाम, पृ0 56.

5. राजा मानसिंह उस समय बंगाल का सूबेदार था ।

6. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0), भाग 3, पृ0 717, अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 179, एडवर्ड ग्रेट, ए-हिस्ट्री आफ आसाम, पृ0 66.

उसके राज्य के अन्तर्गत कूच बिहार, दीनाजपुर का कुछ भाग जलपाई गुड़ी तथा रंगपुर सम्मिलित थे।[1] लक्ष्मी नारायन के पास 4000 घोड़े, 20000 पैदल सैनिक और 700 हाथी थे। उसका देश 200 कोस लम्बा और 100 से 40 कोस ई० तक विस्तृत था, जो पूर्व में ब्रह्मपुत्र, उत्तर में तिब्बत, दक्षिण में गोरघाट और पश्चिम में तिरहुत तक विस्तृत था।[2] लक्ष्मी नारायन 1596 ई० में मुगलों का अधीनस्थ बन गया।[3] 25 फरवरी 1618 ई० में कूच बिहार के राजा लक्ष्मी नारायन जहाँगीर से मिलने गया और उसने 500 मुहर नजर में प्रदान की। सम्राट ने उसे एक विशेष खिलअत और एक जड़ाऊ जमधर तलवार एवं एक हाथी भेंट में दिया।[4] 18 मार्च 1618 ई० में सम्राट जहाँगीर ने राजा लक्ष्मी नारायन को एक विशेष तलवार, एक जड़ाऊ माला और चार मोती कान की बाली के लिए, एक विशेष खिलअत, एक जड़ाऊ आभूषण उपहार में दिये।[5] कूच बिहार का राजा । लाख रूपया वार्षिक कर के रूप में मुगलों को दिया करता था।[6] कूच बिहार के राजा ने उत्तरा कोल व दक्षिण कोल में शाही सत्ता को सुदृढ़ बनाने में सहायता

---

1. एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ० 64.
2. एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ० 66.
3. एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ० 65.
4. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु०), भाग 1, पृ० 443-444.
   एस०एन० भट्टाचार्या, मुगल नार्थ ईस्टर्न फ्रान्टियर पालिसी, पृ० 159.
   मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, पृ० 521,
   प्रो० राधेश्याम, आनर्स रैन्क्स एण्ड टाइटल्स अण्डर द ग्रेट मुगल्स, पृ० 32.
5. एस०एन० भट्टाचार्या, मुगल नार्थ ईस्ट फ्रान्टियर पालिसी, पृ० 159.
6. एस०एन० भट्टाचार्या, मुगल नार्थ ईस्ट फ्रान्टियर पालिसी, पृ० 160.

पहुँचायीं । कूच लोग पूरी तरह से मुगलों के अधीनस्थ नहीं रहे । वह समय समय पर किसी न किसी नेता की अध्यक्षता में विद्रोह करते रहते थे ।

वीर नारायन/प्रान नारायन

लक्ष्मी नारायन के पश्चात् वीर नारायन 1622 ई0 से 1633 ई0, कूच बिहार का राजा रहा । वीर नारायन के समय में कूचबिहार पर मुगल अधिकारी का नाममात्र का शासन था । लगभग 10 वर्षों तक यहाँ कोई अव्यवस्था नहीं उत्पन्न हुई ।[1] तथा वीर नारायन के पश्चात् प्रान नारायन ने 1633 ई0 से 1666 ई0 तक कूच बिहार पर शासन किया । औरंगजेब ने मीर जुमला को बंगाल का राज्यपाल नियुक्त किया और मुगल इलाकों को पुन: विजित करने का आदेश दिया । कुछ ही दिनों के पश्चात् मीर जुमला ने कूचबिहार की राजधानी विजित कर ली और उसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया ।[2]

सुसंग

राजा रघुनाथ तथा मुगलों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध : मिर्जा नाथन

बहारिस्तान ए गैबी में जहाँगीर के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में जैन्तिया व खासी की पहाड़ियों के समीप एक राजा का भी वर्णन करते हैं, जिसका नाम राजा रघुनाथ था । मिर्जा नाथन इसे सुसंग का राजा कहता था ।[3] सुसंग पूर्वी

---

1. बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ, पृ0 115.
2. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ0 342.
3. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान ए गैबी, भाग 1, पृ0 40.
   अहसान रजा खाँ, चीफ्टेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 190.
   जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 237.

बंगाल में भीम सिंह जिले की उत्तर पूर्वी सीमा पर स्थित नेत्रकोणा उपखण्ड के अन्तर्गत था ।[1] राजा रघुनाथ का कामता या कूचबिहार के राजा लक्ष्मीनारायन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे । राजा रघुनाथ का मोमीन सिंह जिले के उत्तर पूर्वी सीमा पर अधिकार था । इसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी व इसके बदले में मुगलों ने उसके परिवार वालों को जिन्हें कामरूप के राजा ने कैद कर रखा था बचाया ।[2] मुगलों ने रघुनाथ का साथ दिया था, इसलिए रघुनाथ भी हृदय से मुगलों का भक्त बन गया तथा उसने मूसा खान, सिलहट के बायजीद, करनी, कामरूप के परीक्षित नारायन के विरुद्ध मुगलों के अभियान में मुगलों की सहायता की तथा कामरूप के प्रशासन में भी मुगलों का साथ दिया[3] वह मुगलों को वार्षिक कर भी प्रदान करता था ।[4]

अहोम

आसाम के उत्तरी भाग में अहोम लोगों का शासन था । आसाम के शासक वर्तमान वंशज अहोम जाति के थे । जिन्होंने 13वीं शदी में आसाम के पूर्वी और मध्य भाग पर अपना आधिपत्य कर लिया था ।[5] यद्यपि 16वीं शदी में

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 142.
2. जे0एम0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 237.
3. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 237.
4. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, अंग्रेजी (अनु0), पृ0 146.
   एस0एन0 भट्टाचार्या, मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 126.
5. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0 342.

   13 मार्च 1662 ई0 को औरंगजेब के द्वारा भेजे गये मीर जुमला नें अहेमों को जल युद्ध में परास्त किया और वहाँ की राजधानी गर्भगांव पर अधिकार कर लिया ।

आसाम मुगलों के अधिकार क्षेत्र के बाहर था, फिर भी अबुल फजल ने बंगाल के विवरण में इस काल में यहाँ के राजाओं का मुगलों के साथ संघर्ष होने का विवरण दिया है। अबुल फजल के अनुसार आसाम के राजा का क्षेत्र कूचबिहार की सीमा पर स्थित था।[1] यहाँ के अहोम राजा उस समय के प्रभावशाली राजा थे। यह राजा बंगाल की उत्तर पूर्वी सीमा पर स्थित शक्तियों का समय समय पर दमन करते रहते थे।[2] यह लोग कामता और कामरूप के कूच लोगों से भी बराबर संघर्ष करते रहते थे।[4] और बंगाल के सुल्तानों से भी इनका संघर्ष चलता रहता था।[4]

17वीं शदी के पूर्वार्द्ध में अहोम राजाओं के राज्यकाल के सन्दर्भ में बुरंजी और काशीनाथ, राबिन्सन और गुणाभिराम के मतों में मतभेद है।[5] काशीनाथ राबिन्सन और गुणाभिराम के अनुसार अहोम राजा सुखाम्फा 59 वर्ष तक राज्य किया। 1611 ई0 में उसकी मृत्यु हो गई, उसके पश्चात् ससेंगफा (प्रतापसिंह) गद्दी पर बैठा। तदुपरान्त 1649 ई0 में राजा भागा व 1652 ई0 में राजा नरिया व 1654 ई0 में राजा जय ध्वज सिंह गद्दी पर बैठा। बुरंजी ने इससे भिन्न मत प्रकट किया है। बुरंजी के अनुसार सुखाम्फा ने 51 वर्ष, राज्य किया और 1603 ई0 में उसकी मृत्यु हुई, तत्पश्चात् 1603 ई0 में प्रतापसिंह गद्दी पर बैठा।

---

1. अबुल फजल, आइने-अकबरी, भाग 2, पृ0 48.
2. अहोम राजा द्वारा 16वीं शदी में धुरिया, कछारी, नागा आदि के दमन के लिए देखिये, सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 87, 91, 97.
3. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 99, 101, 104,
   एस0एन0 भट्टाचार्या, ए हिस्ट्री ऑफ मुगल नार्थ-ईस्टर्न फ्रान्टियर पालिसी (1929), पृ0 102.
4. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 93-96.
5. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 106.

बुरंजी के अनुसार राजा भागा 1641 ई0 में, नारिया राजा 1644 ई0 में व जय-ध्वजसिंह 1648 ई0 में गद्दी पर बैठा ।[1] इन दोनों मतों में बुरंजी का मत अधिक मान्य है ।

सुसेंगफा के कई उपनाम मिलते हैं । उसे बरहा राजा, बुद्धस्वर्ग नारायण व प्रतापसिंह के नाम से भी जाना जाता था । सर एडवर्ड गेट ने लिखा है कि सुसें-गफा की बुद्धिमत्ता और सुकृत्यों के कारण उसे प्रताप सिंह के नाम से भी जाना जाता था । उनका विचार है कि वह इसी नाम से अधिक प्रसिद्ध था ।[2] सुसेंगफा ने 1603 ई0 से 1641 ई0 तक शासन किया, प्रतापसिंह ने सामरिक उपयोगिता की दृष्टि से अनेक किले बनवाये, सड़कें बनवायीं । उसने आसपास के राजाओं को अपनी ओर मिला लिया । इस हेतु उसने विवाह की नीति अपनाई । उनसे मित्रता करके उन्हें अपने अधीनस्थ बना लिया । अहोमों की बढ़ती हुई शक्ति के कारण आसपास के लोग उन्हें अपना स्वामी मानने लगे । अहोमो की बढ़ती हुई शक्ति और पश्चिम की ओर बढ़ते हुए क्षेत्र विस्तार से मुगलों को कामरूप में अहोमों से खतरा उत्पन्न हो गया । अहोमों ने भी 1615 ई0 में आबा वक्र की विजय की । इसके बाद मुगलों को बार नदी पर अपना नियन्त्रण बनाए रखने के लिए बराबर इनसे लड़ना पड़ता था । अहेमों ने हाजो शहर और कुछ और किलों पर अधिकार कर लिया और बाकी जिलों में अव्यवस्था रही । शाहजहाँ के शासनकाल में अहेमों से मुगलों के संघर्ष और भी बढ़ गये थे । शाहजहाँ के समय अहोम लोगों ने स्वतन्त्र होने का प्रयास किया । सन् 1657 ई0 में कूचबिहार के शासक प्रेमनारायन ने मुगल इलाकों की ओर अपनी सेना भेज दी, जिसका प्रत्यक्ष उद्देश्य एक विरोधी

---

1. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 106.

2. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 108.

जमींदार का पीछा करना था । दूसरे वर्ष कामरूप की राजधानी को लूटकर आसमियों ने वहाँ अपना अधिकार कर लिया । घरेलू युद्ध सन् 1660 ई0 में समाप्त हुये । तब तक मुगल लोग इस इलाके में अपनी स्थिति पुन: ठीक करने के लिए कोई प्रयत्न नहीं कर सके । उस वर्ष मीर जुमला जो औरंगजेब का विश्वस्त बहादुर साथी था, इस प्रान्त के जमींदारों को दण्ड देने के लिए विशेषकर आसामियों और माघ (अराकान) के जमींदारों का दमन करने के लिए नियुक्त किया गया ।[1] बंगाल के उत्तर-पूर्व सीमा क्षेत्र के सभी मुगल विद्रोही अहोम राजा के यहाँ शरण लेने लगे । अहोम जोगी गोपा तक बढ़ गये थे और वहाँ बाड़ा बनाना शुरू कर दिया था । मुगल भी छुबरी तक बढ़ गये । मुगलों तथा अहोमों में कई युद्ध हुए । इसमें अहोम पराजित हुए उनके बाड़े वगैरह तोड़ दिये गये । इस तरह पूरे कच्छ हाजों से अहोमों को भगाने में मुगल सफल हुए ।[2]

जैन्तिया और खासी

कछार के उत्तर पश्चिम और सिलहट के उत्तर पूर्व भाग में जैन्तिया जाति का शासन था । जैन्तिया लोग जिन पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों पर राज्य करते थे उसका नाम जैन्तिया था ।[3] अबुल फजल ने सिलहट सरकार के नौ महालों में जैन्तिया का वर्णन किया है ।[4] जैन्तिया के समीप खैराम का क्षेत्र था । खैराम के शासकों को खासी कहा जाता था । वे जैन्तिया के ही सम्बन्धी थे ।[5]

---

1. एस0आर0 शर्मा, भारत में मुगल साम्राज्य, पृ0 322.
2. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ बंगाल, पृ0 329, 331.
3. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री आफ आसाम, पृ0 311.
4. अबुल फजल, आईने-अकबरी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 60.
5. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री आफ आसाम, पृ0 311-312.

धनमानिक्य

17वीं शदी के प्रारम्भ में जैन्तिया का राजा धनमानिक्य था । उसने धीमरूआ के राजा प्रभाकर के राज्य को जीत लिया । प्रभाकर कछारी राजा का अधीनस्थ था । अत: उसने कछारी राजा से सहायता मांगी । कछारी राजा ने धनमानिक्य के राज्य को जीत लिया और उसे सन्धि करने के लिए विवश कर दिया । धन मानिक्य ने भी कछार राजा की अधीनता स्वीकार कर ली । उसने अपनी दो पुत्रियों का विवाह कछारी राजा के साथ कर दिया । कछार राजा ने उसके भतीजे जासा मानिक्य को जो कि उसका उत्तराधिकारी बना था बन्दी के रूप में अपने यहाँ रखा ।[1]

जासा मानिक्य

धन मानिक्य के पश्चात् कछारी राजा ने जासा मानिक्य को कैद से मुक्त कर दिया व उसे जैन्तिया की गद्दी प्रदान की । यह घटना 1605 ई0 की है । वह कछारी राजा का अधीनस्थ तो था, किन्तु उसने कछारियों को अहोमों से आपस में लड़ाने के लिए अहोम राजा प्रताप सिंह के पास अपनी कन्या के विवाह का प्रस्ताव भेजा, साथ में यह शर्त रखी कि यह कन्या कछारी राज्य से होकर जायेगी । कछारी राजा ने इस बात की अनुमति नहीं दी, फलत: 1618 ई0 में कछारी राजा व अहोम राजा में युद्ध छिड़ गया ।[2]

---

1. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 314.

2. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 315.

जासा मानिक्य के वंशज

जासा मानिक्य ने 1625 ई0 तक शासन किया । उसके पश्चात् सुन्दर राय गद्दी पर बैठा, जिसने 1636 ई0 तक शासन किया । सुन्दर राय के पश्चात् कनिष्ठ प्रताप राय ने 1636-1647 ई0 तक शासन किया । 1647 ई0 में जसवन्त राय गद्दी पर बैठा तथा 1660 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी ।[1]

माघ

माघ[2] राजा का क्षेत्र बंगाल के सुदूर दक्षिण-पूर्व में था । अबुल फजल के अनुसार माघ राजा का क्षेत्र पेगू के निकट था ।[3] वास्तव में उनका अराकान पर अधिकार था जो दक्षिण में पेगू तथा उत्तर में चिटगाँव तक विस्तृत था ।[4]

---

1. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 315.

2. यह अराकानी थे जो स्थानीय तौर पर माघ नाम से जाने जाते थे । देखिये, इम्पीरियल गजेटियर, नया प्रकाशन (आक्सफोर्ड - 1908) भाग 6, पृ0 167, भाग 10, पृ0 320.

3. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी (अनु0) भाग 3, पृ0 479.

4. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 188.

अकबरनामा में अबुल फजल ने माध राजा का वर्णन मर्जबान जमींदार या माध के राजा के रूप में किया है ।[1] बहारिस्तान तथा फतह-ए इब्रिया में उन्हें राख्रंग कहा गया है ।[2] अकबर के समय में माध का राजा मेंग फलौंग या सिकन्दर शाह [1571-1593 ई0] था । उसने समस्त चिटगाँव पर अधिकार कर लिया था तथा नोखाली और त्रिपुरा के एक बड़े भाग पर भी अधिकार कर लिया था । उसका पुत्र मेंग रदजुगई या सलीमशाह [1593-1612 ई0] भी उसी के समान योग्य और महत्त्वाकांक्षी था किन्तु मेंग रदजुगई का पुत्र मेंग खागौंग या हुसैनशाह [1612-1622 ई0] एक महान विजेता था । पिता पुत्र ने बंगाल के विरुद्ध अनेक अभियान किये । माध शासकों और कुछ जमींदारों ने बंगाल के मुगल विद्रोहियों को मदद प्रदान की जिससे राजा मानसिंह को बंगाल में बड़ी कठिनाई हुई । माध राजाओं की खुली युद्धनीति तथा विद्रोही शक्तियों की गुप्त सहायता से मुगलों को इस क्षेत्र में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा ।[3] सन् 1613 ई0 तक बंगाल का सूबेदार इस्लाम खाँ था । उसकी मृत्यु के पश्चात् कासिम खाँ बंगाल का सूबेदार बना । उसकी सूबेदारी के काल के प्रारम्भ में अराकानी राजा ने दो बार मुगलों के विरुद्ध युद्ध किया और अंततः उसे पराजित होना पड़ा । वह अपने सब अधिकारियों और समस्त सामग्री को मुगलों के हाथों में सौंपकर 1616 ई0 में अराकान वापस लौट गया । कुछ समय पश्चात् कासिम खाँ ने अराकान के राजा के विरुद्ध

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 479, 821, 824.
2. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 189.
3. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 243,
   आर0पी0 त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल ऑफ द मुगल इम्पायर, पृ0 309, 367.
   मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 1, पृ0 385-386.

आक्रमण कर दिया । मुगलों का यह अभियान असफल रहा । मुगल तोपखाना नष्ट हो गया और आक्रामकों को लज्जित होकर वापस लौट जाना पड़ा । सम्राट ने कासिम खाँ से रुष्ट होकर उसे वापस बुला लिया और 1617 ई0 में उसके स्थान पर इब्राहीम खाँ को बंगाल का सूबेदार बना दिया ।[1]

अराकान के राजा सुधर्मराज की मृत्यु के बाद सीरी थुद्दामन 1622-1638 ई0 तक अराकान का राजा रहा । उसकी रानी से प्रणय करने वाले एक नौकर ने उसके पुत्र व उत्तराधिकारी को मार डाला और स्वयं गद्दी पर बैठ गया ।[2] शाहजहाँ के शासनकाल में माध राजाओं के विद्रोह का उल्लेख मिलता है ।[3] अराकानी लोगों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी क्योंकि वे जानते थे कि मुगलों के विरुद्ध लम्बे समय तक वे संघर्ष करने की क्षमता नहीं रखते थे । जब शाहजहाँ जहाँगीर नगर गया तो माध राजा जिसके पास 10000 लड़ाकू नौकायें, 15000 हाथी और 100 करोड़ पैदल सैनिक थे, ने अपना दूत शाहजहाँ के पास भेजा । उसने शाहजहाँ के लिये 10000 रूपये मूल्य के उपहार पेशकश के रूप में भेजे । उसने बड़ी ही नम्रतापूर्वक शाहजहाँ की अधीनता में रहने का वचन दिया और यह वायदा किया कि जब कभी उसे किसी भी कार्य के लिये बुलाया जायेगा, वह पूरी निष्ठा के साथ उस कार्य को करेगा । शाहजहाँ इससे बहुत प्रसन्न हुआ और उसने माध राजा के लिये एक कीमती खिलअत और बहुमूल्य उपहार भेजे और एक फरमान भी भेजा जिसके द्वारा उसके प्रदेश को स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया ।[4]

---

1. आर0पी0 त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, पृ0 361.
2. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 331-332.
3. बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 178.
4. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 710-711.

भाटी

बंगाल के दक्षिण में सोनार गाँव का राज्य था । यहाँ भाटी राजा शासन करते थे । अकबर के समय में यहाँ का महत्त्वपूर्ण राजा ईसा खान था । अबुल फजल के अनुसार उसने बंगाल के बारह नइया पर अपना प्रभुत्त्व स्थापित किया था ।[1] अबुल फजल के अनुसार भाटी एक छोटा सा देश है । यह पूर्व से पश्चिम तक 400 कुरोह लम्बा है तथा उत्तर से दक्षिण तक 300 कुरोह लम्बा है । इसके पूर्व में दरिया-ए शोर एवं विलायत-ए हब्शा है और इसके पश्चिम में पहाड़ी प्रदेश हैं, दक्षिण में टाण्डा है और उत्तर में तिब्बत के पहाड़ हैं ।[2]

ईसा खान का पुत्र मूसा खान था । मूसा खान मसनदे आला जहाँगीर के शासनकाल में बंगाल का सबसे शक्तिशाली राजा था । वह 1599 ई0 में भाटी का राजा बना ।[3] ईसा खान और मूसा खान में प्रमुख अन्तर यह था कि ईसा खान दिखावटी रूप से मुगलों का सहयोग करता था । मूसा खान खुले आम मुगलों की बगावत करता था । मूसा खान के अधिकार का प्रमुख क्षेत्र वर्तमान में ढाका के दक्षिण पूर्व में था जहाँ पर गंगा, पद्मा, लेखिया और ब्रह्मपुत्र ।मेघना। मिलती है ।[4] बहारिस्तान-ए गैबी के अनुसार खिज्रपुर का किला जो कि दुलई नदी और लखिया नदी के संगम पर था मूसा खान का किला था और इस दिशा में जाने के

---

1. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 843.
   अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 431.
   आर0पी0 त्रिपाठी, राईज एण्ड फाल ऑफ मुगल इम्पायर, पृ0 310, 367.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ।अनु0।, भाग 3, पृ0 645-646.
3. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 238.
4. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 238.

लिये वही एकमात्र जलमार्ग था । लखिया नदी पर खिज्रपुर की विपरीत दिशा में छत्राभु था जो कि मूसा खान का पारिवारिक निवास-स्थान था । कदम रसूल व जतरापुर मूसा खान का किलाई थाना था । मूसा खान का मुगलों से संघर्ष चलता रहता था । मूसा खान को उसके चचेरे भाई अलौर खान, दाउद खान, अब्दुल्ला खाँ और महमूद खाँ से मुगलों के विरुद्ध सहायता मिलती रही । मूसा खान को मुगलों के विरुद्ध बारह भुइया का भी सहयोग प्राप्त था ।[1] मूसा खान को चौरा के गाजी परिवार से मुगलों के विरुद्ध सहयोग प्राप्त होता रहा । अन्य भी अनेक जमींदारों से मूसा खान को सहयोग मिलता रहा ।[2]

सन् 1609 ई० में बंगाल के सूबेदार इस्लाम खाँ के सम्राट के आदेश से ढाका की किलाबन्दी की । उसे अपना मुख्यालय बनाया और मूसा खाँ के विरुद्ध अपनी सेना भेजी । मुगलों ने कई घमासान लड़ाइयाँ लड़ीं और जातारपुर तथा डाकचारा जीत लिये जो प्रतिरक्षा के प्रमुख आधार थे । इस प्रकार सोनार गाँव की विजय का मार्ग प्रशस्त हो गया । अपनी क्षतियाँ पूरी करके और अपनी सेना का पुनर्गठन करके सन 1610 ई० में उसने पुन: अभियान चलाया । मूसा खाँ ने दृढ़तापूर्वक प्रति-रोध किया, परन्तु मुगल सैनिक निरन्तर आगे बढ़ते रहे । इससे उसने सोनार गाँव को खाली कर देना ही उचित समझा । सन 1611 में आक्रामकों ने उस पर अधि-कार कर लिया । मूसा खाँ ने अपना अधिकार बनाये रखने के लिये कुछ अनियमित

---

1. बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ० 177.

   डॉ० बेनी प्रसाद ने लिखा है कि बारह भुइया बंगाल के 12 बड़े सरदार (Chief) थे और ये राजा प्रतापादित्य के अन्तर्गत थे । डॉ० बेनी प्रसाद ने बंगाली परम्परा का उल्लेख करते हुये लिखा है कि वे मुगलों के विरुद्ध संघर्ष की रीढ़ थे और बंगाल में अराजकता फैलाने में उनका बड़ा हाथ था ।

2. आर०पी० त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, पृ० 359.

प्रयत्न और किये किन्तु उसकी सब चेष्टायें निष्फल हो गयीं। इससे उसकी हिम्मत टूट गयी और सन 1611 ई0 में उसने आत्म-समर्पण कर लिया।[1]

सन 1617 ई0 में बंगाल का सूबेदार इब्राहीम खां को बनाया गया तथा कासिम खां को आसाम के आक्रमण में मिली विफलता के कारण बंगाल से वापस बुला लिया गया। इब्राहीम खां नूरजहां का मामा था और उसे सम्राट का विश्वास प्राप्त था। उसने बंगाल में सुव्यवस्था लागू की और उसी के परामर्श पर सम्राट ने बंगाल के कई राजाओं और जमींदारों को जो बन्दी बनाये गये थे मुक्त कर दिया। मूसा खान भी इन्हीं में से एक था। उसे उसका राज्य भी लौटा दिया गया।[2]

मूसा खान की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र मासूम खान भाटी का राजा बना। जिस समय वह गद्दी पर बैठा उस समय 18-19 वर्ष का था। शाहजहां ने उसे खिलअत आदि देकर सम्मानित किया।[3] सम्राट ने उसे इलाहाबाद की विजय के लिये शाही सेना के साथ भेजा था।[4] मासूम खान मीर साफी के साथ शाहजहां के विरुद्ध षड्यन्त्र में शामिल हो गया किन्तु कुछ ही समय पश्चात उसने क्षमा माँग ली व मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली।[5]

---

1. आर0पी0 त्रिपाठी, राईज एण्ड फाल ऑफ द मुगल इम्पायर, पृ0 385.

2. आर0पी0 त्रिपाठी, राईज एण्ड फाल आफ द मुगल इम्पायर, पृ0 385.

3. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 680.

4. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 728,736.

5. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए-गैबी, भाग 2, पृ0 748,751.

जैसोर

ताजपुर, सिलहट और जैसोर के राजा बंगाल के क्षेत्र में थे। इसमें से जैसोर में जहाँगीर के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में प्रतापादित्य का शासन था।[1] जहाँगीर के शासन के समकालीन विवरण में प्रतापादित्य का वर्णन बहुत मिलता है। लेकिन कुछ इतिहासकार उसे अकबर का समकालीन भी मानते हैं। वेस्टलैण्ड ने अपने जैसोर के विवरण में लिखा है कि अकबर के समय में राजा मानसिंह ने प्रतापादित्य को अधीनस्थ बना लिया था।[2]

जे0एन0 सरकार ने हिस्ट्री आफ बंगाल में लिखा है कि प्रतापादित्य ने जहाँगीर के शासनकाल में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। उसने अधीनता स्वीकार करते समय अपने दूत शेख बदी को प्रभूत उपहारों के साथ तथा अपने पुत्र संग्रामादित्य को बन्धक के रूप में सूबेदार के पास भेजा। इस अवसर पर प्रतापादित्य अपने पुत्र संग्रामादित्य को बन्धक रूप में पीछे छोड़कर स्वयं सूबेदार से अलाईपुर में मिला व मूसा खान के विरुद्ध मुगलों का साथ देने का वचन दिया।[3] प्रतापादित्य के पश्चात उसका पुत्र संग्रमादित्य जैसोर का राजा बना। वह भी मुगलों के प्रति राजभक्त था। उसने इस्लाम खान को मुगलों के पास मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के लिए भेजा।[4]

---

1. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 185, आर0पी0 त्रिपाठी, राईज एण्ड फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, पृ0 367.
2. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, अंग्रेजी (अनु0), भाग 2, पृ0 799, आर0पी0 त्रिपाठी, राईज एण्ड फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, पृ0 383.
3. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 238.
4. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 1, पृ0 121.

सिलहट

सिलहट या श्रीहट्ट आसाम की सुरमा नदी की निचली घाटी में स्थित था । उसकी उत्तरी सीमा पर खासी और जैन्तिया की पहाड़ियाँ थीं, पूर्व में कछार था, दक्षिण में त्रिपुरा की पहाड़ियाँ थीं और पश्चिम में त्रिपुरा और मैमनसिंह था । अकबर के समय में यह सरकार सिलहट के नाम से जाना जाता था । इसके अन्तर्गत आठ महाल और अनेक उपखण्ड थे ।[1]

सिलहट पर जहाँगीर के शासनकाल में अफगानों का शासन था । उनका प्रमुख राजा बायजीद करानी था ।[2] बायजीद अपने भाई याकूब के साथ सिलहट के मध्य भाग पर शासन कर रहा था । अफगानों के पास भारी संख्या में हाथी थे जो पहाड़ी और जंगली क्षेत्रों में लड़ने के लिये बहुत लाभदायक थे ।[3] बायजीद ख्वाजा उस्मान का निकट सहयोगी था और उसी की भाँति अपनी स्वतन्त्रता के लिये निरन्तर मुगलों से संघर्ष कर रहा था । मुगलों ने शेख कमाल के नेतृत्व में उसके विरुद्ध अभियान भेजा । वह पराजित हुआ । उसे बन्दी बना लिया गया व इस्लाम खान के संरक्षण में रखा गया । कुछ समय पश्चात उसे मुगल दरबार ले जाया गया जहाँ उसके बाद से वह निरन्तर मुगलों के प्रति राजभक्त बना रहा ।[4] शाहजहाँ के शासनकाल में मिर्जा सालेह सिलहट का राजा था ।[5]

---

1. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 819.
2. आर0पी0 त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, पृ0 344.
3. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ बंगाल, पृ0 240.
4. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 1, पृ0 196, 198, 209, 219.
5. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 766.

त्रिपुरा

माघ राजा के क्षेत्र के उत्तर में तथा बंगाल की पूर्वी सीमा के मध्य में त्रिपुरा का क्षेत्र था, जिसकी राजधानी उदयपुर थी। त्रिपुरा का पश्चिमी व दक्षिणी भाग अकबरी सरकार के सोनारगाँव के अन्तर्गत था।[1] सीमावर्ती राज्यों में त्रिपुरा का राजा निस्सन्देह सबसे शक्तिशाली था। उसका एक विस्तृत क्षेत्र पर अधिकार था, जो पहाड़ी व जंगलों से घिरा हुआ था व बंगाल के दक्षिण पूर्व में था। अकबरनामा तथा बहारिस्तान दोनों से इस बात की पुष्टि होती है कि त्रिपुरा के राजा का एक बड़े क्षेत्र पर आधिपत्य था। उसके पास सैनिकों व युद्ध सामग्रियों की विपुलता थी विशेषकर हाँथियों की अधिकता थी।[2]

त्रिपुरा पर विजय मानिक्य[3] ‖1540-1571 ई0‖ उदयमानिक्य ‖1572-1576 ई0‖, अमरमानिक्य ‖1577-86 ई0‖ राजाधर ‖1586-1600‖ व यशोमानिक्य ‖1600-1618 ई0‖ का शासन था। विजय मानिक्य एक शक्तिशाली राजा था उसने मुगलों से चिटगाँव जीता और पूर्वी बंगाल पर आक्रमण किया। उसने अपनी राजधानी का नाम रंगमती से बदलकर उदयपुर कर दिया।[4] अमर मानिक्य बंगाल के दक्षिण पूर्वी भाग के एक बड़े क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफल हुआ। उसने भुलुआ, बकला, सरईल और सिलहट पर विजय प्राप्त की। त्रिपुरा का पतन राजा धर के शासनकाल ‖1586-1600‖ ई0‖ से प्रारम्भ होता है। यशोमानिक्य के शासनकाल ‖1600-1618 ई0‖ में इब्राहीम खान फतह जंग की सूबेदारी के काल में मुगलों ने त्रिपुरा पर आक्रमण किया। राजधानी उदयपुर पर मुगलों का

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अंग्रेजी ‖अनु0‖ ब्लोचमैन भाग 3, पृ0 30.
2. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 241.
3. अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 189.
4. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 243.

अधिकार हो गया । वहाँ मुगल थाना बना दिया गया ।[1] त्रिपुरा का राजा पराजित होकर भाग गया । शाही सेना ने उसे तथा उसके परिवार को खोज निकाला व उन्हें जहाँगीर नगर भेज दिया ।[2]

कछारी

16वीं शदी के मध्य में उत्तरी कछार पहाड़ी पर कछारियों का शासन था । उनकी राजधानी मैबांग थी ।[3] कछारियों का मैदानी क्षेत्र सिलहट के बहुत निकट था । संभवत: वह सिलहट के अन्तर्गत ही रहा होगा । सम्राट अकबर के समय में कछारियों के मुगलों से सम्बन्ध का कोई विवरण प्राप्त नहीं होता ।[4] 1603 ई0 तक कछारियों का नौगाँव में अधिकांश भाग पर अधिकार हो गया था। उत्तरी कछार पहाड़ी तथा कछार के मैदानी भागों पर भी उनका आधिपत्य हो गया था । कछारी के बारे में एक कथा प्रचलित है कि प्रारम्भ में यह क्षेत्र त्रिपुरा राजा के अन्तर्गत था जिसे त्रिपुरा के राजा ने 300 वर्ष पूर्व, एक कछारी राजा को जिसने त्रिपुरा के राजा की पुत्री से विवाह किया था उपहार में प्रदान किया था ।[5]

---

1. मिर्जा नाथन बहारिस्तान-ए गैबी ।अनु0। भाग 2, पृ0 537,
   जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 243.
   आर0पी0 त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, पृ0 361.
2. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 628.
3. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 301, 304.
4. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 304.
   अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 189.

5. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 304.

शत्रुदमन

जहाँगीर के समय में कछारियों का महत्त्वपूर्ण राजा शत्रुदमन था। वह बहुत ही महत्त्वाकांक्षी और शक्तिशाली राजा था। उसने जैन्तिया पर विजय प्राप्त की। कुछ समय पश्चात उसने अहोम राजा को भी पराजित किया और अपनी सफलता के उपलक्ष्य में प्रताप नारायन की उपाधि धारण की और अपनी राजधानी का नाम मैबांग से परिवर्तित करके कीर्तिपुर रखा।[1]

कछारी राजा के विरुद्ध मुगलों ने दो सैनिक अभियान भेजे एक 1612 ई० के पूर्व इस्लाम खान की सूबेदारी के काल में और दूसरा उसके भाई कासिम खान की सूबेदारी के काल में 1612 ई० के बाद। इसमें से पहला सैनिक अभियान निष्फल रहा लेकिन दूसरे सैनिक अभियान के पश्चात मुगलों ने असुरातिकरी और प्रतापगढ़ के कछारी किलों पर अधिकार कर लिया। कछारी राजा ने शान्ति स्थापित करने के लिये सम्राट के लिये 40 हाथी और एक लाख रूपया भेजा। पाँच हाथी व 20000 रूपये सूबेदार के लिये भेजे। दो हाथी व 20000 रूपये मुबारिज खान के लिये भेजे। उसने उस समय मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली किन्तु कुछ समय पश्चात वह स्वतंत्र हो गया।[2]

शत्रुदमन के उत्तराधिकारी

शत्रुदमन के पश्चात उसका पुत्र नर नारायन गद्दी पर बैठा किन्तु नर नारायन की थोड़े ही समय में मृत्यु हो गयी। उसके पश्चात उसका चाचा भिम्बल या भीमदर्प गद्दी पर बैठा। 1637 ई० में भीमदर्प की मृत्यु हो गयी

---

1. जे०एन० सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ० 242,
   सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ० 304, 305.
2. जे०एन० सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ० 242.
   सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ० 305.

और उसके पश्चात उसका पुत्र इन्द्र बल्लभ गद्दी पर बैठा । सन 1644 ई0 में वीर दर्प नारायण गद्दी पर बैठा । सन 1681 ई0 में वीर दर्प नारायन की मृत्यु हो गयी ।[1]

दक्खिनकोल

बंगाल में अन्य राजाओं या जमींदारों का भी उल्लेख मिलता है । दक्खिन कोल में मुगलों के विरुद्ध विद्रोह करने वाले जमींदारों में मामू गोविन्दा, शमरूद कायथ और जदु नायक थे । किन्तु सबसे प्रमुख विद्रोही जमींदार दक्खिनकोल में दारंग का बाली नारायन था । मुगल प्रशासन का प्रमुख ध्येय पहाड़ी जमींदारों का दमन करके उन्हें अधीनस्थ बनाना था । मिर्जा नाथन ने इस प्रदेश के पहाड़ी प्रदेशों को उच्च और निम्न दो प्रकार के पहाड़ी प्रदेशों में विभाजित करके वर्णित किया है । निम्न पहाड़ियों का सबसे प्रमुख जमींदार दीमरुआ राजा था । वह परीक्षित नारायन का दामाद था । वह कामरूप के अभियान में मुगलों के विरुद्ध बड़ी वीरता से लड़ा था ।[2]

दूसरा प्रमुख पहाड़ी राजा बेलताला का मामू गोविन्दा था । यह परीक्षित नारायन का चाचा था । रानी राजा भी यहाँ का एक प्रमुख जमींदार था। रंगदान नामक स्थान पर कलताकारी और उसके पुत्र तहाना की जमींदारी थी । वहीं पर परशुराम की भी जमींदारी थी । परशुराम का भी मुगलों से बराबर संघर्ष चलता रहता था ।[3] कामरूप में अन्धा राजा और उसके भाई राबाबार जिसे

---

1. सर एडवर्ड गेट, हिस्ट्री ऑफ आसाम, पृ0 306.

2. एस0एन0 भट्टाचार्या, मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 185.

3. एस0एन0 भट्टाचार्या, मुगल नार्थ इस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 185.

चक्षा राजा के नाम से भी जाना जाता था, की जमींदारी थी । एक अन्य पहाड़ी राजा कनोल राजा था जिसे उसकी जमींदारी हल्दिया द्वार के नाम पर हल्दिया द्वार राजा कहा जाता था । उसकी जमींदारी के समीप में दक्खिनकोल का सबसे शक्तिशाली राजा बरद्वार राजा का प्रदेश था । मिर्जा नाथन के अनुसार इस पहाड़ी प्रदेश के अन्य छोटे राजा या जमींदार बामुन राजा हन्द्राबरिया राजा, संजय राजा, हस्त राजा और कोका राजा थे ।

ऊपरी पहाड़ी के जमींदारों में तीन जमींदार प्रमुख थे - उमेद राजा खामरंग के राजा और राजा नीली रंगीली ।[1]

कामरूप

मुंशी देवी प्रसाद ने शाहजहाँनामा में लिखा है कि बंगाल के उत्तर में दो प्रदेश हैं - एक कूच हाजो जो ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपर है और दूसरा कूचबिहार जो इस नदी से बहुत दूर है ।[2] कामरूप का नाम फारसी इतिहास ग्रन्थों में कूच हाजो लिखा गया है । इस राज्य का संस्थापक रघुदेव था । कामरूप की राजधानी बरनगर थी । सन 1588 ई० में रघुदेव ने कामरूप से अपनी स्वतन्त्र सत्ता घोषित कर दी और अपने नये सिक्के चलाये ।[3] रघुदेव की 1603 ई० में मृत्यु हो गयी ।

---

1. एस०एन० भट्टाचार्या, मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ० 185.

2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 142.

3. एस०एन० भट्टाचार्या, मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ० 117.

परीक्षित नारायन

रघुदेव की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र परीक्षित नारायन उसका उत्तराधिकारी बना ।[1] कामरूप के जमींदार का कूचबिहार के जमींदार के साथ सम्बन्ध अच्छा नहीं था । यह वैमनस्य उसे अपने पिता से विरासत में मिला था । परीक्षित नारायन ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिये अहोम राजा से अपनी मित्रता सुदृढ़ की । उस समय सुखम्फा का पुत्र प्रताप सिंह अहोम राज्य पर राज्य कर रहा था । राजा परीक्षित ने उससे अपनी पुत्री का विवाह किया । एस0 एन0 भट्टाचार्या के अनुसार यह घटना 1608 ई0 की है ।[2] किन्तु इससे उसकी स्थिति सुदृढ़ नहीं हुयी । कामरूप के राजा के उद्धत एवं घमण्डी स्वभाव के कारण उसका अहोम राजा के साथ मैत्रीपूर्ण व सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका ।

सन 1609 ई0 में घोराघाट के सीमान्त सरकार के इस्लाम खान ने परीक्षित नारायन से मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेने की बात कही किन्तु परीक्षित नारायन ने ऐसा करने से मना कर दिया ।

जहाँगीर ने शेख सलीम चिश्ती के पौत्र शेख अलाउद्दीन को 1606 ई0 में बंगाल का सूबेदार बनाया । उसे इस्लाम खाँ की उपाधि मिली थी और इसी नाम से वह अधिक जाना जाता था । इस्लाम खाँ ने 1613 ई0 में कामरूप के राजा परीक्षित पर आक्रमण कर दिया । कुछ समय तक प्रतिरोध करने के बाद राजा ने सन्धि की प्रार्थना की किन्तु इस्लाम खाँ ने बिना शर्त समर्पण की माँग की, अन्ततः इसी वर्ष 1613 ई0 कामरूप को मुगल साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया ।[3]

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 142.

2. एस0एन0 भट्टाचार्या, द नार्थ इस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 128.

3. आर0पी0 त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल ऑफ द मुगल इम्पायर, पृ0 384.

कूचबिहार का लक्ष्मी नारायन अपने भतीजे परीक्षित नारायन को पराजित करके कामरूप तथा कूचबिहार पर सम्मिलित रूप से शासन करना चाहता था । अपने इस कार्य में उसने मुगल सम्राट से सहायता माँगी । मुगल सम्राट 1609 ई0 के युद्ध से ही परीक्षित सनारायन से रूष्ट थे अत: उन्होंने लक्ष्मी नारायन को साथ देने का वचन दिया । सन 1612 ई0 में मुगल सूबेदार ने कूचबिहार के जमींदार के साथ कामरूप के जमींदार पर आक्रमण कर दिया । यह युद्ध नौ महीने तक चलता रहा और अन्तत: परीक्षित नारायन पराजित हुआ ।[1] मुगलों द्वारा प्रदत्त सहयोग के बदले में लक्ष्मी नारायन ने मुगलों के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की । लक्ष्मी नारायन ने परीक्षित नारायन की शक्ति के प्रमुख केन्द्र धुबरी पर अप्रैल 1613 ई0 में अधिकार कर लिया ।[2] धुबरी पर अधिकार करने के पश्चात शाही सेना ने गिलाह पर, जो परीक्षित नारायन का निवासस्थान था, आक्रमण किया । परीक्षित नारायन ने विरोध करने में अपने को असमर्थ जानकर शाही सत्ता की अधीनता स्वीकार कर ली और उसने अपने वकील रामदास के माध्यम से एक लाख रूपया, 100 तनगन घोड़े और 100 हाथी बंगाल के सूबेदार के लिये भेजे । उसने सम्राट के लिए तीन लाख रूपये 300 हाथी और 300 तनगन घोड़े भेजे ।[3] उसने 7 लाख रूपया मुगल सम्राट को पेशकश देना स्वीकार किया ।[4] उसने मुकर्रम खान तथा शेख कमाल को भी उपहार दिया जिससे उसका साम्राज्य सुरक्षित रहे और वह सम्राट की व्यक्तिगत सेवा से मुक्त रहे । इस प्रकार कामरूप की 25 वर्ष की क्षणिक स्वाधीनता मुगल साम्राज्य में विलीन हो गयी ।[5]

---

1. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी ।अनु0।, पृ0 152-बी, एस0एन0 भट्टाचार्या, द मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 127.
2. एस0एन0 भट्टाचार्या, द मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 141.
3. एस0एन0 भट्टाचार्या, द मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 141.
4. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 521.
5. एस0एन0 भट्टाचार्या, द मुगल नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 145, आर0पी0 त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, पृ0 360.

धर्म नारायन

इसके बाद भी समय समय पर कामरूप मुगल संघर्ष देखने को मिलता है। परीक्षित नारायन की मुगलों द्वारा पराजय तथा उसके बन्दी बना लिये जाने पर परीक्षित नारायन के छोटे भाई बाली नारायन ने अहोम राजा के साथ मिलकर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली। अहोम राजा ने उसे दारंग का एक करद राजा बना दिया तथा उसका नाम धर्मनारायन रखा गया। उस समय से 1638 ई0 में अपनी मृत्यु तक धर्मनारायन निरन्तर कामरूप में मुगलों के लिये कठिनाइयां उत्पन्न करता रहा। अहोम राजा के सहयोग से कामरूप स्थित मुगल ठिकानों पर वह अनेक साहसिक धावे किया करता था।

कामरूप का आसाम से सम्बन्ध

आसाम एक बड़ा प्रदेश है। उस समय उसकी एक सीमा खाता से मिली हुई थी और दूसरी कश्मीर तथा तिब्बत से। इसके एक ओर भेड़ायच, कुरहत, मोरंग, कूचबिहार और कूच हाजो था। शाहजहाँ के शासनकाल में यहाँ का शासक स्वर्गदेव था जिसके पास 1000 हाथी और 10000 पैदल सैनिक थे।[1]

जब शाहजहाँ गद्दी पर बैठा उस समय पूर्वोत्तर सीमा की राजनीतिक दशा बहुत उलझी हुयी थी। दस वर्ष तक तो इस क्षेत्र में शान्ति बनी रही। इसका कारण यह था कि आसाम का राजा कामरूप की राजनैतिक गुत्थियों के प्रति उदासीन था और उसमें हस्तक्षेप करके अकारण ही मुगलों से झगड़ा नहीं करना चाहता था।

---

1. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 143.

सूबा बंगाल के अन्तर्गत कतिपय महत्त्वपूर्ण जमींदारियों का विवरण मिलता है। इनका प्रशासन में महत्त्व था। इनको दबाने अथवा इन्हें अधीनस्थ बनाये रखने के लिये सभी सूबेदारों ने प्रयास किया। बंगाल एक सीमावर्त्ती प्रान्त होने के कारण विद्रोही इलाका रहा था। अकबर के समय सुलेमान करानी के विद्रोह का दमन करने के पश्चात यहाँ मुगलों की सत्ता सुदृढ रूप से जम गयी। उसके बाद कुछ घटनायें जहाँगीर के शासनकाल में हुयी जैसे बर्द्धवार में शेर अफगान की तथाकथित धृष्टतापूर्ण गतिविधियाँ। स्थानीय स्तर पर जमींदारों का अत्यधिक प्रभाव रहता था। वे विद्रोहों में अपनी सुविधानुसार भाग लेते थे और अत्यधिक दबाव बढ़ने पर अधीनता स्वीकार कर लेते थे। ऐसी जिन जमींदारियों का विवरण मिलता है उनके नाम हैं - मानिकगंज, शाहजादापुर, फतहाबाद, सुसंग, मल्ला, भुलुआ, खालसी, मतान, सरईल, बोकई, चन्द्रकोना, भूम और बनकुरा, जकरा तथा वरदा, पटिया, चिलजुआर, अलईपुर, पबना, छावड़ा, हिजली, बहतुआ और बनियाचंग। इन जमींदारियों का अत्यधिक महत्त्व था।

जहाँगीर के शासनकाल में बोकई नामक स्थान के जमींदार उस्मान के विरुद्ध बंगाल के सूबेदार इस्लाम खाँ ने आक्रमण कर दिया। उस्मान खाँ पराजित हुआ। उसने भागकर बायजीद करानी के यहाँ शरण ली। उससे मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के लिये कहा गया किन्तु वह तैयार नहीं हुआ। अत: उस पर पुन. आक्रमण कर दिया गया। चौबीस परगने में दौलम्बापुर में रक्तरंजित युद्ध हुआ। इस युद्ध में उस्मान की मृत्यु हो गयी। उस्मान की मृत्यु के पश्चात अफगानों में गम्भीर मतभेद उत्पन्न हो गया। उस्मान खाँ मन्त्री तथा अन्य नेता सन्धि करने के पक्ष में थे किन्तु शेष लोग यह चाहते थे कि युद्ध जारी रखा जाये अन्तत: अफगानों ने आत्मसमर्पण कर दिया। मुगलों ने उनके साथ उदारता का व्यवहार किया। उस्मान खाँ का राज्य मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया। इसके बाद से अफगानों की शक्ति क्षीण होने लगी।[1]

---

1. आर०पी० त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, पृ० 360.

बनियाचंग हाबीगंज उपखण्ड में स्थित था । यह सिलहट जिले के दक्षिण पश्चिम में था । इस पर अनवर खान का अधिकार था । अनवर खान और उसके भाई को पहले मुगलों को समर्पण करना पड़ा, किन्तु कुछ समय पश्चात वह मुगलों की अधीनता से मुक्त हो गये । उन्होंने मूसा खान और ख्वाजा उस्मान के साथ मिलकर मुगलों के विरुद्ध षड्यन्त्र किया, किन्तु यह षड्यन्त्र सफल न हुआ और ख्वाजा उस्मान की हार के पश्चात उसे भी मुगलों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी ।[1]

बहारिस्तान-ए गैबी से जहाँगीर के शासन के प्रारम्भ के बंगाल के समृद्ध और महत्त्वपूर्ण जमींदारों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है । तीन प्रमुख जमींदारों का नाम मिलता है जिनका क्षेत्र एक दूसरे के समीप था । इनमें से एक पीर हमीर था उसका क्षेत्र भूम और बनकुरा था । शम्स खान पचेत के दक्षिण - पश्चिम का राजा था और सलीम खान पचेत के दक्षिण पूर्व का जमींदार था ।[2] सलीम खान की मृत्यु के पश्चात उसका भतीजा बहादुर खान बहुत बड़ा विद्रोही निकला । उसने इब्राहीम खान फतह जंग के साथ मिलकर मुगलों का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया किन्तु लम्बी लड़ाई के पश्चात वह पराजित हो गया और उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली ।

कुछ छोटे छोटे जमींदारों का वर्णन मिलता है । जहाँगीर के समय में चन्द्रकोना में हरभान नामक जमींदार का शासन था । उसे 2000/1500 का मनसब प्राप्त था । शाहजहाँ के शासनकाल में चन्द्रकोना का जमींदार वीरभान था । उसे 500/300 का मनसब प्राप्त था ।[3]

---

1. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ बंगाल, पृ0 238.
2. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ बंगाल, पृ0 236.
3. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 367.

जकरा तथा वरदा के जमींदार दलपत थे ।

पीताम्बर पटिया राजपरिवार का था और उसका भतीजा अनंता चिला जुआर का शासक था ।

इलाहबख्श अलईपुर का शासक था । इन सबने मुगल सेना से मुठभेड की व पराजित हो जाने के पश्चात मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली ।

पबना जिले में तीन प्रमुख जमींदारों का नाम मिलता है - मिर्जा मुमीन (सुत मासूम खान काबुली), दरिया खॉ (सुत खान ए आलम बहबूदी) और मधूराय (खालसी का जमींदार) ।[1]

छावडा का जमींदार बहादुर गाजी था । यह मूसा खान का मित्र था। उसने इस्लाम खान की सेना के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया । कुछ समय पश्चात वह मुगलों के विरुद्ध षड्यन्त्र करने लगा अतः उसे बन्दी बना लिया गया ।[2]

बहादुर खान हिजलीवाल हिजली का जमींदार था ।[3]

बहतबा बड्दार का राजा था ।[4] मानिकगंज का जमींदार विनोद राय था । यह मुगलों का बहुत विरोधी था ।[5] शाहजादापुर (पबना जिले के उत्तर पूर्व में) के जमींदार राजा राय का वर्णन मिलता है । उसने सर्वप्रथम इस्लाम खॉ के सम्मुख आत्मसमर्पण किया था ।[6] फतहाबाद का महत्त्वपूर्ण जमींदार राजा

---

1. जे०एन० सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ० 236.
2. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 1, पृ० 77, 90, 106-107, 128, 223, 243, भाग 2, पृ० 646.
3. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 1, पृ० 127, 327-328.
4. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ० 617.
5. जे०एन० सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ० 236.
6. जे०एन० सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ० 236.

मुकुन्द का पुत्र राजा सत्यजीत था । इसकी रियासत की सीमा जैसोर और फरीदपुर तक पहुँचती थी । उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी । वह जहाँगीर तथा शाहजहाँ का समकालीन था । उसने मुगलों की कामरूप विजय में बड़ा योगदान दिया और वहाँ के प्रशासन के भी मुगलों का साथ दिया । सत्यजीत ने आसाम में मुगलों की विजय में भी बड़ा साथ दिया था ।[1]

मखला का राजा रामचन्द्र था उसका क्षेत्र बाकेरगंज के अन्तर्गत आता था।[2] वह राजा कंदर्पनारायन का पुत्र था और राजा प्रतापादित्य का दामाद था । उसने भुलुआ के राजा लक्ष्मण मानिक्य को जो बहुत प्रसिद्ध राजा था पराजित किया व बन्दी बनाया । लक्ष्मण मानिक्य का पुत्र अनन्त मानिक्य जहाँगीर के शासन के प्रारम्भ में भुलुआ का राजा था । उसने एक बहुत बड़े क्षेत्र पर शासन किया । युद्ध की रणनीति की दृष्टि से यह स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण था ।

जहाँगीर के शासनकाल में मिर्जा मुमीन मधू राय खालसी का जमींदार था। मतान का जमींदार हाजी शम्सुद्दीन बगदादी था । सूना गाजी सराईल का जमींदार था ।[3]

---

1. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 237.

2. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 237.

3. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ बंगाल, पृ0 237.

ख. उड़ीसा के अन्तर्गत (करद) राजा या जमींदार

समकालीन फारसी स्रोतों में उड़ीसा के राजाओं का बहुत कम विवरण मिलता है। इसका विस्तृत विवरण राजा मानसिंह की उड़ीसा की 999 अमली व्यवस्था में मिलता है, जिसका कुछ अंश तथा अनुवाद ऐन्ड्रू स्टर्लिंग की पुस्तक उड़ीसा इट्स ज्योग्राफी, स्टैथिस्टिक्स, हिस्ट्री, रिलीजन एण्ड एन्टीक्वीटीज में भी मिलता है।

1576 ई० में अकबर ने राजा टोडरमल और मुनीम खान की सहायता से उड़ीसा पर अधिकार कर लिया। राजा टोडरमल तथा मुनीम खान ने दाउद नामक अफगान जमींदार को जो सुलेमान कर्रानी का पुत्र था राजमहल के युद्ध में पराजित किया किन्तु इसके पश्चात भी अफगान समय समय पर मुगलों के विरुद्ध कठिनाइयां उत्पन्न करते रहे अतः 1592 ई० में अकबर ने राजा मानसिंह को भेजा कि वह अफगान शासन को हमेशा के लिए समाप्त कर दे। राजा मानसिंह को अपने कार्य में सफलता भी मिली।[1]

मुकुन्ददेव

16वीं शदी के मध्य में राजा मुकुन्ददेव उड़ीसा का प्रमुख राजा था। वह अकबर का समकालीन था। अबुल फजल उसे उड़ीसा राजा के नाम से सम्बोधित करता है।[2] मुकुन्ददेव की राजधानी ताजपुर थी।[3] मुकुन्ददेव के उड़ीसा के

---

1. जगन्नाथ पटनायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स ऑफ उड़ीसा, भाग 1, पृ० 44.

2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ० 254-255, 325-327.

3. एन०के० साहू, ए हिस्ट्री ऑफ उड़ीसा (कलकत्ता 1956) भाग 1, पृ० 202.

विस्तार के विषय में समकालीन स्रोतों में कोई विशेष वर्णन नहीं मिलता किन्तु जगन्नाथ के स्रोत के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि विद्याधर के शासन में 1531-1541 ई0 के मुकुन्ददेव के पूर्ववर्ती शासक के काल में दक्षिण में राजमहेन्द्री उड़ीसा की राजधानी थी ।[1] उत्तर में उड़ीसा की सीमा हुगली नदी तक थी ।[2] यदि हुगली तथा राजमहेन्द्री के मध्य का सम्पूर्ण क्षेत्र मुकुन्ददेव के अधिकार में था तो मुकुन्ददेव का राज्य बहुत विस्तृत था किन्तु यह तथ्य सत्य नहीं प्रतीत होता । राल्फ फिच जो अकबर की उड़ीसा विजय के अनन्तर उड़ीसा भ्रमण के लिये गया था ने लिखा है कि हिजली पर उस समय फतह खान का अधिकार था ।[3] बीम्स के विवरण से भी ज्ञात होता है कि बालासोर का क्षेत्र उड़ीसा के प्रभावक्षेत्र के बाहर था । अतः यह प्रतीत होता है कि हुगली मार्ग पर स्थित छोटे से भाग पर मुकुन्द देव का शासन था । इस प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि वह उड़ीसा का सबसे शक्तिशाली राजा था और उसका अधिकार अन्य राजाओं पर भी था । सुलेमान करानी के साथ संघर्ष में अकबर ने उसे सहायता प्रदान करने को कहा । सन 1565-1566 ई0 में जब अकबर जौनपुर में रुका हुआ था तब उसने हसन खान और महापात्र को दूत बनाकर उड़ीसा के राजा के पास भेजा था । मुकुन्ददेव ने उनका सम्मान किया और सम्राट की सुलेमान-करानी के विरुद्ध सहायता करने का वचन दिया । उसने सम्राट को पेशकश भी भेजा किन्तु सुलेमान करानी पर किसी प्रकार का दबाव पड़ने के पूर्व ही उसने मुकुन्ददेव को 1567-68 ई0 में मार डाला ।[4]

---

1. एन0के0 साहू, ए हिस्ट्री ऑफ उड़ीसा, भाग 1, पृ0 201.
2. एन0के0 साहू, ए हिस्ट्री ऑफ उड़ीसा, भाग 1, पृ0 202.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 616,
   अहसान रजा खां, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर, पृ0 194.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 2, पृ0 326-327.

<u>रामचन्द्र</u>

अबुल फजल के अनुसार अकबर की उड़ीसा विजय के पूर्व खुर्दा[1] का राजा रामचन्द्र उड़ीसा का सबसे महत्त्वपूर्ण जमींदार था ।[2] वह राजा मुकुन्ददेव के प्रधानमन्त्री का पुत्र था और मुकुन्ददेव की मृत्यु के पश्चात गद्दी पर बैठा ।[3] राजा रामचन्द्र के मुकुन्ददेव के बाद गद्दी पर बैठने के सन्दर्भ में बहुत संशय है । इतिहास का अध्ययन करने पर यह बात मालूम होती है कि मुकुन्ददेव की मृत्यु के 19 वर्ष पश्चात रामचन्द्र उड़ीसा की गद्दी पर बैठा । किन्तु घटनाओं का क्रमिक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि 1576 ई0 में मुगलों की दाउद खान पर विजय के सन्दर्भ में राजा टोडरमल के उड़ीसा पहुँचने के पूर्व ही रामचन्द्र गद्दी पर बैठ गया था । उड़ीसा की 999 अमली व्यवस्था से ज्ञात होता है कि राजा रामचन्द्र के वतन राज्य खुर्दा में 71 किले थे । उसके अधीनस्थ 30 जमींदार थे जिनके पास 129 किले थे ।[4] यह 30 जमींदारियाँ उसके अधिकार में 1567-68 ई0 के पूर्व थी । मुकुन्ददेव की मृत्यु के पूर्व रामचन्द्र मुकुन्ददेव के प्रदेश का ही एक जमींदार था । स्टर्लिंग ने अपने उड़िया विवरण में इसीलिये लिखा है कि रामचन्द्र देव द्वारा स्थापित राज्य भुई वंश के नाम से जाना जाता था । भुई शब्द प्राचीन जमींदारों के लिये प्रयुक्त किया जाता था ।[5]

---

1. उड़ीसा एवं गोलकुण्डा की सीमा पर खुर्दा का प्रदेश स्थित था । यह उड़ीसा के अन्तर्गत था । इसमें जंगल और पहाड़ अत्यधिक मात्रा में थे । मुगल साम्राज्य का विस्तार अकबर के शासनकाल में वहाँ तक हो गया था किन्तु मुगल उसे अधीनस्थ नहीं बना सके थे । - बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 260.
2. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 631.
3. एन0के0 साहू, हिस्ट्री ऑफ उड़ीसा, भाग 1, पृ0 302.
4. स्टर्लिंग, उड़ीसा, इट्स ज्योग्राफी स्टैटिस्टिक्स, हिस्ट्री रिलीजन एण्ड एण्टीक्वीटीज, पृ0 70.
5. एन0के0 साहू, हिस्ट्री आफ उड़ीसा, भाग 2, पृ0 254, स्टर्लिंग उड़ीसा इट्स ज्योग्राफी स्टैटिस्टिक्स हिस्ट्री रिलीजन एण्ड एण्टीक्वीटीज, पृ0 70.

राजा रामचन्द्र देव का सर्वप्रथम वर्णन 1592-93 ई0 में उड़ीसा में मानसिंह के अफगानों के विरुद्ध अभियान के सन्दर्भ में मिलता है । इस युद्ध में रामचन्द्र देव ने मुगलों के विरुद्ध अफगानों का साथ दिया था ।[1] किन्तु मुगलों का दबाव पड़ने पर उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली और अपने पुत्र बीरबल को पेशकश के साथ राजा मानसिंह के पास भेजा ।[2] किन्तु मानसिंह उससे सन्तुष्ट न था वह यह चाहता था कि रामचन्द्र देव स्वयं आकर उससे मिले और उसकी अधीनता माने । जबकि रामचन्द्र ऐसा नहीं करना चाहता था । अतः मानसिंह ने उसके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया । उसकी सेना रामचन्द्र के सबसे शक्तिशाली दुर्ग खुर्दा के समीप रुकी । उसने उसके प्रदेश को विजित करने का दृढ़ निश्चय कर लिया । मानसिंह ने सुझपाल, खरागढ़, कलोपोरह, कहान, लोनगढ और भोनमल आदि के किले पर विजय प्राप्त कर ली ।[3] अकबर ने इस अभियान का आदेश नहीं दिया था क्योंकि रामचन्द्र ने अधीनता पहले ही स्वीकार कर ली थी और अपने पुत्र के इस पेशकश भी भिजवाया था । अतः सम्राट ने इस अभियान को समाप्त कर देने का आदेश दिया । युद्ध समाप्त हो जाने पर राजा रामचन्द्रदेव राजा मानसिंह से स्वयं मिलने गया ।[4] राजा मानसिंह ने भी उसका स्वागत किया । अबुल फजल ने रामचन्द्र को 500 का मनसबदार बताया ।[5]

---

1. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 615.
2. जगन्नाथ पटनायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आफ उड़ीसा, भाग 1, पृ0 44,
   अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 615.
3. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 631.
4. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 615.
   जगन्नाथ पटनायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आफ उड़ीसा, भाग 2, पृ0 44.
5. अबुल फजल, आइने-अकबरी, भाग 1, पृष्ठ 163.

राजा मानसिंह ने मुकुन्ददेव के पुत्रों के उत्तराधिकार के प्रश्न को सुलझाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। रामचन्द्र देव के दो अन्य भाई भी गद्दी के लिये इच्छुक थे किन्तु राजा मानसिंह ने रामचन्द्रदेव को उत्तराधिकारी बनाया। सन 1592 ई० में राजा मानसिंह तथा खुर्दा राजा रामचन्द्रदेव के मध्य एक समझौता हुआ। इसमें तीन बातें प्रमुख रूप से थीं। प्रथम राजा रामचन्द्रदेव का खुर्दा का राजा बनाया गया, साथ में रहंग, लिम्बई और पुरूषोत्तम चत्वार को लेकर 7। महाल कर से मुक्त करके जमींदारी के तौर पर उसे प्रदान किये गये। दूसरे राजा को 30 जमींदारियों जिसके अन्तर्गत 129 किले थे, के ऊपर अधिकार प्रदान किया गया।[1] दूरस्थ जमींदारियां जैसे खिन्जौर, मयूरभंज और नीलगिरि पर राजा रामचन्द्रदेव का अधिकार नहीं रहा बल्कि उन जगहों पर वहां के स्थानीय राजा को ही प्रशासन का अधिकार प्राप्त हुआ। रामचन्द्र के अधिकार में जो जमींदारियाँ थीं, वहां से वह कर वसूल करता था और प्राप्त राजस्व में से कुछ धन शाही कोष में भी भेजता था।[2] तीसरे खुर्दा राजा को महाराजा की उपाधि प्रदान की गयी और उसे 3500 सवारों का मनसबदार बनाया गया।[3] मुगल दरबार में यह पद बहुत उच्च माना जाता था। खुर्दा राजा को मुगलों से उच्च पद व उपाधि प्राप्त थी। खुर्दा राजा उड़ीसा स्थित मुगल अधिकारी के अधीनस्थ होने के स्थान पर सीधे मुगल सम्राट के अधीनस्थ था व उसके आदेशों का पालन करता था।

---

1. अबुल फजल, आइने-अकबरी, भाग 2, पृ० 548,
   एशियाटिक रिसर्चेज, भाग 15, पृ० 292-293.
2. जगन्नाथ पटनायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आॅफ उड़ीसा, पृ० 46.
3. स्टर्लिंग, उड़ीसा इट्स ज्योग्राफी स्टेथिस्टिक्स हिस्ट्री रिलीजन एण्ड एण्टीक्वीटीज आॅफ उड़ीसा, पृ० 46.

<u>पुरुषोत्तम देव</u>

स्टर्लिंग के अनुसार रामचन्द्रदेव ने 1580-1609 ई0 तक शासन किया । राजा रामचन्द्र के पश्चात राजा पुरुषोत्तम देव खुर्दा का राजा बना । उसने लगभग 21 वर्षों तक शासन किया । उसके समय में उड़ीसा के खुर्दा के राजा खुर्दा के राजामात्र रह गये थे । हाशिम खान की सूबेदारी के काल में राजा पुरुषोत्तम पर विजय के लिये एक अभियान भेजा गया । इस्लाम खाँ के नेतृत्व में भी एक सेना भेजी गयी । अन्तत: पुरुषोत्तम देव ने सन्धि कर लेना ही उचित समझा । उसने अपनी पुत्री का विवाह सम्राट से तथा अपनी बहन का विवाह केशोदास मारू से करने का वायदा किया । उसने तीन लाख रूपया मुगलों को कर के रूप में तथा एक लाख रूपये का उपहार केशोदास मारू को देने का वायदा किया ।[1]

कुछ समय पश्चात पुरुषोत्तम ने पुन: स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली किन्तु 1611 ई0 में राजा टोडरमल के पुत्र राजा कल्याण ने जो उड़ीसा का नया सूबेदार था खुर्दा पर आक्रमण कर दिया और उसके प्रदेश को बर्बाद करना प्रारम्भ कर दिया। अत: राजा पुरुषोत्तम ने सन्धि कर ली । उसने अपनी पुत्री मुगल हरम में भेज दी व जो कर देने का वायदा किया था वह भी सम्राट के पास भेजा, साथ में एक प्रसिद्ध हाथी शेषनाग उपहार के रूप में भेजा ।[2] सन 1617 ई0 में पुरुषोत्तम देव ने पुन: विद्रोह किया व अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी किन्तु उसे पराजित होना पड़ा और उसका राज्य मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया ।[3]

---

1. बेनी प्रसाद हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 261. केशोदास मारू बंगाल के सूबेदार हाशिम खान का राजपूत लेफ्टिनेन्ट था । प्रतापसिंह, मुगलकालीन भारत, पृ0 623.
2. बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ0 262, प्रतापसिंह, मुगलकालीन भारत, पृ0 623.
3. प्रतापसिंह, मुगलकालीन भारत, पृ0 623.

नरसिंह देव

पुरुषोत्तम देव के पश्चात नरसिंह देव खुर्दा का राजा बना । उसने लगभग 25 वर्षों तक शासन किया । स्टर्लिंग के अनुसार उसने 1630-1655 ई0 तक शासन किया । उसने दक्षिण के सूबेदार शाहबाज खां के आक्रमण के समय उसका विरोध करने में अपने को असमर्थ जानकर उससे समझौता कर लिया और प्रभुत धनराशि कर के रूप में प्रदान की ।

गंगाधर देव एवं बलभद्र देव

नरसिंह देव के पश्चात सन 1655 ई0 से 1656 ई0 तक गंगाधर देव ने खुर्दा पर राज्य किया और 1656 ई0 से 1664 ई0 तक बलभद्रदेव ने खुर्दा पर राज्य किया ।[1]

जहाँगीर ने भी उड़ीसा के राजा के साथ अकबर की नीति का ही अनुकरण किया । उसने पुरानी जमींदारी को समाप्त करने का प्रयास नहीं किया । हाउस आफ कामन्स की पाँचवीं रिपोर्ट में लिखा है कि मुगल शासनकाल में जमींदार या राजा कर प्रदान करते थे तथा सैनिक सेवा भी प्रदान करते थे ।[2] जमींदार मुगल सम्राट को सामान्य कर प्रदान करने के साथ साथ नजर, राज्यारोहण कर और अहबाब आदि कर भी प्रदान करते थे, किन्तु समय बीतने के साथ-साथ इन जमीं-दारों का रूख बदलने लगा । वह अब मुगल सम्राट की अधीनता में नहीं रहना चाहते थे । वह मुगलों का विरोध करने का अवसर ढूढने लगे और शाहजहाँ के शासन के

---

1. डब्ल्यू डब्ल्यू हन्टर, एण्ड्रू स्टर्लिंग, जान बीम्स, एन0के0 साहू, हिस्ट्री आफ उड़ीसा, भाग 1, पृ0 202.
2. पाँचवीं रिपोर्ट से उद्धृत, पृ0 41.

उत्तरार्द्ध में उन्हें यह अवसर मिल गया। प्रथम उदाहरण में इन जमींदारों ने सम्राट को कर देने से मना कर दिया और आक्रामक रूख अपनाने लगे। शाहजहाँ तथा उसके उड़ीसा स्थित सूबेदार ने जमींदारों के इस व्यवहार के लिये उत्तरदायी थे। शाहजहाँ ने राजा नरसिंह देव (1621-1647 ई0) के समय में खुर्दा विजित किया।[1] वहाँ के राजा ने उसका अधिक विरोध नहीं किया और मुगल सम्राट की अधीनता में रहना स्वीकार कर लिया।[2]

उत्तराधिकार के युद्ध के समय शहजादा शुजा ने वहाँ से अपनी सेना हटा ली। अत: वहाँ के राजा या जमींदार पुन: विद्रोही होने लगे। उन्होंने मुगलों को कर भेजना बन्द कर दिया।[3] इस प्रकार उड़ीसा के जमींदार मुगलों को कर प्रदान करते रहे व उनके आदेशों का पालन करते रहे किन्तु जब भी उन्हें अवसर मिलता था वे विद्रोह कर देते थे तथा स्वतंत्र होने का प्रयास करते थे।

उड़ीसा में सम्भलपुर के जमींदार भी मुगलों के अधीनस्थ जमींदार थे। शाहजहाँ के शासन काल में सम्भलपुर के जमींदार ने मुगलों को कर नहीं प्रदान किया और मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अत: शाहजहाँ ने सम्भलपुर के जमींदार के विरुद्ध सेना भेजी और उस सेना को हीरे के पत्थर इकट्ठे करने का भी आदेश दिया किन्तु मुगलों का यह अभियान असफल रहा। अत: सम्राट ने बाकिर खान को मुगल सूबेदार बनाकर उड़ीसा भेजा। उसने उड़ीसा के राजाओं या जमींदारों

---

1. जगन्नाथ पटनायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आफ उड़ीसा, पृ0 49.
   स्टर्लिंग ने नरसिंहदेव का समय 1630 - 1655 ई0 दिया है।

2. जगन्नाथ पटनायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आफ उड़ीसा, पृ0 49.

3. जगन्नाथ पटनायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आफ उड़ीसा, पृ0 50.

के साथ बड़ी ही निर्दयता का तथा आक्रामकता का व्यवहार किया । उसने जमींदारों से कर वसूल करने के लिये उन्हें तथा उनके अधिकारियों को बुलवाया व उन्हें बन्दीगृह में डलवा दिया । उसके आदेश से 700 बन्दी मृत्यु को प्राप्त हुये उसमें से एक किसी तरह बच गया और शाहजहाँ के पास पहुँचा । उसने बाकिर खान के कृत्यों की सूचना सम्राट को दी । उसने सम्राट को यह भी सूचित किया कि इस प्रकार से बाकिर खान ने 40 लाख राजस्व उड़ीसा से एकत्रित किया था । सम्राट को यह सूचना मिलने पर सम्राट ने उसे 1632 ई0 में वापस बुला लिया और उसे उड़ीसा की सूबेदारी से हटा दिया । किन्तु सम्राट का यह व्यवहार जमींदारों को संतुष्ट न कर सका और वह मुगलों का विरोध करने का अवसर ढूढ़ने लगे । 1657-58 ई0 में शुजा व औरंगजेब के मध्य उत्तराधिकार के युद्ध के समय जमींदारों को विद्रोह करने का अवसर मिल गया । इस समय शुजा ने अपनी सेना वहाँ से हटा ली थी, अत: जमींदारों को सर उठाने का मौका मिल गया । उन्होंने मुगलों को कर भेजना बन्द कर दिया । विद्रोही जमींदारों में प्रमुख मयूरभंज, खुर्दा, खिन्जौर, नीलगिरि और कनिका के राजा थे ।

बंगाल तथा उड़ीसा के राजाओं या जमींदारों की स्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण थी । अकबर के शासनकाल में दीर्घकाल तक शाही सेनाओं को हिन्दू तथा अफगान जमींदारों का दमन करने के लिये संघर्ष करना पड़ा था । अकबर ने 1574-76 ई0 की अवधि में बंगाल की विजय सम्पन्न की थी । जुलाई 1576 ई0 में राजमहल के निकट एक लड़ाई में दाऊद को पराजित करके बंगाल को मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत मिला लिया गया । अभी भी कुछ स्थानीय सरदार उपद्रव मचाते रहे उनके नाम थे - विक्रमपुर के केदारराय, बकरगंज के कंदर्पनारायन, जैसोर के प्रतापादित्य तथा पूर्वी बंगाल के ईसा खाँ ।[1] उड़ीसा 1592 ई0 में राजा मानसिंह के द्वारा विजित

---

1. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ0 118.

कर लिया गया और उसे मुगल साम्राज्य में शामिल करके बंगाल के सूबे का एक भाग बना दिया गया । जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में बंगाल तथा उड़ीसा पर मुगल सत्ता का आरोपण अधिक सुदृढ़ हुआ । प्रस्तुत अध्याय के विवरण से बंगाल तथा उड़ीसा के राजाओं व जमींदारों की शाही सेवा के प्रति नीति व स्वयं उनकी अपनी स्थिति स्पष्ट है ।

----------::0::----------

अध्याय द्वादश

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में उत्तरी भारत के बारह सूबों के राजाओं या जमींदारों की स्थिति का विश्लेषण समकालीन फारसी के ऐतिहासिक ग्रन्थों, उर्दू, अंग्रेजी तथा हिन्दी के गौण ग्रन्थों, पत्रिकाओं, गजेटियर आदि के आधार पर किया गया है ।

पूर्वमध्यकाल से ही राजाओं और जमींदारों का जाल सम्पूर्ण साम्राज्य में बिछा हुआ था । यह राजा अपने अपने राज्यों में बहुत प्रभावशाली व शक्तिशाली हो गये थे । इन राजाओं को अधीनस्थ बनाने की प्रक्रिया सल्तनत काल से ही चली आ रही थी । मुगलकाल में सम्राट अकबर ने इनमें से अधिकांश राजाओं को अपने अधीनस्थ बना लिया था किन्तु वह पूर्णरूप से उन्हें अपने अधीन नहीं बना सका था । बहुत से राजा या जमींदार अभी भी बहुत शक्तिशाली थे उन्होंने सामरिक दबाव में आकर मुगलों की प्रभुसत्ता स्वीकार कर ली थी किन्तु मुगलों की कमजोरी व व्यस्तता का लाभ उठाकर वह स्वतन्त्र होने का कोई भी अवसर नहीं चूकते थे ।

सम्राट अकबर देश की राजनीतिक एकता, अखण्डता, साम्प्रदायिक सद्भाव, समन्वय व साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था । अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसे भारत में स्थित स्थानीय तथा पुश्तैनी राजाओं या जमींदारों का सहयोग प्राप्त करना बहुत आवश्यक था क्योंकि नवस्थापित मुगल साम्राज्य का प्रशासनिक ढाँचा अभी सुदृढ़ नहीं था । इसीलिये उसने सहृदयता व दमन की नीति अपनायी और अधिक से अधिक राजाओं व जमींदारों को अपना सहयोगी बनाने का प्रयास किया । जिन राजाओं ने स्वतः अधीनता स्वीकार कर ली उन्हें उसने शाही सेवा में स्थान प्रदान किया, उपहार, जागीरें आदि प्रदान की, जिन्होंने विद्रोहात्मक रुख अपनाया, उन्हें सैन्यबल से दबा दिया गया । जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने भी इसी नीति का अनुकरण किया ।

अकबर ने एक नयी नीति का प्रारम्भ किया था । जिन राजाओं ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी उनमें से कुछ को उसने शाही सेवा में मनसब प्रदान किया था । अकबर के समय में 61 राजाओं या जमींदारों को 200 या उसके ऊपर का मनसब प्राप्त था ।[1] जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने राजाओं को मनसब प्रदान किया । जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में 81 राजाओं या जमींदारों को मनसब प्राप्त थे । अकबर के समय में मनसब प्राप्त करने वाले 61 राजाओं में से 40 राजा सूबा अजमेर के थे, जबकि जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में मनसब प्राप्त करने वाले 81 राजाओं में 30 सूबा अजमेर के थे । शेष अन्य सूबे के राजाओं को प्राप्त थे । सूबा लाहौर के बारह राजाओं, आगरा के ग्यारह राजाओं, काबुल के सात राजाओं, बिहार के छः राजाओं, बंगाल के तीन राजाओं, उड़ीसा के एक राजा, मालवा के दो राजाओं, गुजरात के चार राजाओं और मुल्तान के एक राजा को जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में मनसब प्राप्त था । इन 81 मनसबदारों में से 16 मनसबदार मुसलमान थे और शेष हिन्दू । इससे यह प्रकट होता है कि जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने हिन्दू मुस्लिम दोनों ही राजाओं का सहयोग प्राप्त करने की चेष्टा की ।

जिन राजाओं को जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने मनसब प्रदान किया था वह समय समय पर उन्हें सैनिक व प्रशासनिक सेवा प्रदान करते थे । खड्गपुर के राजा रोज अफजूँ ने मुगलों की बल्ख, अभियान में जुझार सिंह बुन्देला तथा शायस्ता खाँ के विरुद्ध अभियान में सहायता की थी । मुस्लिम राजा मिर्जा गाजी बेग ने कन्धार अभियान में मुगलों की सहायता की थी । सम्राट ने उसे कन्धार के प्रशासन का दायित्व सौंपा था । ईसा तरखान भी कन्धार अभियान पर गया था उसे सम्राट ने सोरथ के नाजिम तथा गुजरात के सूबेदार के पद पर नियुक्त किया था ।

---

1. अहसान रज़ा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 287.

जहाँगीर ने सन् 1606 ई0 में खुसरो के विद्रोह के समय बीकानेर के राय रायसिंह को आगरा की देखभाल के लिये नियुक्त किया था । जैसलमेर के राजा कल्याणदास को जहाँगीर ने 1610 ई0 में उड़ीसा का सूबेदार नियुक्त किया था । शाहजहाँ ने चन्देरी के राजा देवी सिंह को ओरछा का प्रबन्धक बनाया था । सन् 1648-49 ई0 में शाहजहाँ ने बीकानेर के राव कर्णसिंह भूरतिया को दौलताबाद का किलेदार बनाया था । चम्बा के राजा जगतसिंह को शाहजहाँ ने बंगश का फौजदार बनाया था । इस प्रकार ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं जबकि राजाओं ने मुगलों को सैनिक व प्रशासनिक सेवा प्रदान की और सम्राट ने उन्हें उच्च पद व उपाधियाँ प्रदान कीं ।

जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने राजाओं या जमींदारों की सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें समय समय पर जागीरें भी प्रदान की । किन्तु ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जबकि सम्राट ने किसी राजा से रूष्ट होकर उसकी जागीर उससे छीन लीं और उसे अपने किसी अमीर या अधिकारी या किसी राजा को प्रदान कर दी । कभी कभी सम्राट इन राजाओं की जागीर का कुछ भाग लेकर उसे खालसा क्षेत्र भी घोषित कर दिया करते थे । इस प्रकार यद्यपि राजा या जमींदार अपने अपने प्रदेशों में स्वतन्त्र थे किन्तु उन पर मुगल सम्राट का प्रभुत्व बना रहता था । उदाहरणस्वरूप राजा इन्द्रमणि धंदेरा से रूष्ट होने पर सम्राट ने उसकी धंदेरा जागीर उससे ले ली और राजा शिवराम गौड़ को प्रदान कर दी थी ।

जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने अकबर की ही भाँति अधिक से अधिक राजपूतों को अपना सहयोगी बनाने का प्रयास किया । राजपूत राजा अपने अपने राज्यों में बहुत शक्तिशाली व समृद्ध थे । मुगल साम्राज्य के स्थायित्व के लिये उनका सहयोग आवश्यक था । इसलिये मुगलों ने उन पर विजय प्राप्त की उन्हें अधीनस्थ बनाया किन्तु उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में सम्मिलित नहीं किया । राजपूत राजा अपने अपने प्रदेशों में स्वतन्त्र रूप से शासन करते रहे और समय समय पर

आवश्यकतानुसार मुगलों को सैनिक व प्रशासनिक सेवा प्रदान करते रहे । इस काल में मेवाड़ के राणा को छोड़कर सभी राजाओं ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी । मेवाड़ के राणा अमरसिंह ने भी 1615 ई0 की सन्धि के बाद मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी । बाद में महाराणा जगतसिंह तथा राजसिंह ने भी मुगल विरोधी रुख अपनाना प्रारम्भ किया और 1615 ई0 की सन्धि का उल्लंघन करके चित्तौड़ के दुर्ग की मरम्मत करवाना प्रारम्भ कर दिया, परन्तु शाहजहाँ ने 1654 ई0 में सेना भेजकर मरम्मत किये गये समस्त बुर्जों को गिरवा दिया । इसके बाद मेवाड़ के किसी भी विरोध का उल्लेख नहीं मिलता । मुगलों ने राजपूतों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये । अपनी श्रेष्ठता बनाये रखने के लिये मुगल राजपूत कुल की कन्यायें तो अपने यहाँ ले आयें किन्तु अपनी कन्यायें किसी राजपूत राजा को नहीं दी। अकबर के समय चार राजपूत कन्याओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुये, जबकि जहाँगीर तथा शाहजहाँ के राज्यकाल में सम्राट तथा शाहजादों ने आठ राजपूत कन्याओं से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये ।

जहाँगीर तथा शाहजहाँ के राज्यकाल में मुगलों के केवल राजपूतों के साथ वैवाहिक सम्बन्धों का ही उल्लेख नहीं मिलता, बल्कि अन्य हिन्दू मुस्लिम शासकों के साथ भी वैवाहिक सम्बन्धों का विवरण मिलता है । जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल में राजपूतों के अतिरिक्त गक्खर, उज्जैनिया, ओरछा, किश्तवार, चक, खुर्दा व हज़ारा राजाओं की कन्याओं के साथ मुगलों के वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुये । इस काल में कुल 17 राजाओं की कन्याओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध हुए । इनमें 4 राजा मुसलमान थे और 13 हिन्दू । इससे यह प्रकट होता है कि मुगलों का सर्वथा यह प्रयास रहा कि हिन्दू मुसलमान दोनों के ही साथ उनका सम्बन्ध मित्रवत बना रहा ।

मुगल सम्राट ने मनसब प्राप्त राजाओं या जमींदारों की सेवाओं के साथ

साथ उन राजाओं या जमींदारों की भी सेवायें प्राप्त की जिन्हें मनसब नहीं प्रदान किया गया था। कुमायूँ के राजा बाजबहादुर चन्द्र ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी व गढ़वाल अधीनीकरण में मुगलों का साथ दिया था यद्यपि कुमायूँ का राजा मनसबदार नहीं था। इसी प्रकार हथकंत के राजा विक्रमाजीत जिसे कोई मनसब प्राप्त नहीं था, ने भी 1613-14 ई0 में अब्दुल्ला खाँ की अधीनता में राणा के विरुद्ध छेड़े गये अभियान में तथा दक्षिण अभियान में मुगलों का साथ दिया था।[1] जो राजा या जमींदार मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेते थे वह अपने किसी अधिकारी को अपना प्रतिनिधि बनाकर मुगल दरबार में भेजते थे। मुगल दरबार में इन प्रतिनिधियों की निश्चित संख्या कितनी थी, यह बताना तो बहुत मुश्किल है किन्तु अनेक उदाहरणों को देखने से ज्ञात होता है कि मुगल दरबार में इनकी संख्या बहुत रही होगी। जहाँगीर के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में सूबा लाहौर के पहाड़ी राजाओं के 23 प्रतिनिधि मुगल दरबार में उपस्थित थे। जहाँगीर के काल में गढ़कटँगा के शासक मधुकरशाह एवं प्रेमशाह ने अपने अपने पुत्रों को मुगल दरबार में बन्धक के रूप में रख रखा था।[2] जैसोर के राजा प्रतापादित्य ने अपने पुत्र संग्रामादित्य को मुगल सूबेदार के पास बन्धक के रूप में रख रखा था।[3] राजा रोज अफजूँ अपने पुत्र अब्दाल को दिल्ली में बन्धक के रूप में छोड़ गया था। जहाँगीर के काल में किश्तवार के शासक कुँअर सिंह का पुत्र मुगल दरबार में बन्धक

---

1. शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 335,
   लाहौरी बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 166.

2. डी0एस0 चौहान, ए स्टडी आफ द लेटर हिस्ट्री आफ राजगोण्ड किंगडम आफ गढ़मण्डल, 1564-1678, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1966, मैसूर, पृष्ठ 156.

3. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ बंगाल, पृ0 238.

के रूप में था ।[1] राजा विधीचन्द्र का पुत्र त्रिलोकचन्द्र मुगल दरबार में बन्धक के रूप में था ।

ह राजा या जमींदार अपने अपने राज्यों में स्वतन्त्र थे । अपना आन्तरिक प्रशासन स्वत: चलाते थे परन्तु उन पर मुगल सम्राट का नियन्त्रण बना रहता था । बाह्य प्रशासन में उन्हें मुगलों से परामर्श लेना पड़ता था उन्हें मुगलों को निश्चित कर, नज़र या उपहार भेंट में देना पड़ता था । कूच बिहार का राजा लक्ष्मी नारायन एक लाख रूपया वार्षिक कर के रूप में मुगलों को प्रदान करता था ।[2] यदि कोई राजा या जमींदार निश्चित कर का भुगतान नहीं करता था तो मुगल सम्राट उसके विरुद्ध सैनिक अभियान भेज देता था । कोकरा के राजा दुर्जनसाल ने जहाँगीर के समय निश्चित कर का भुगतान करना बन्द कर दिया था अत: सम्राट ने जफर खाँ एवं इब्राहीम खाँ के नेतृत्व में उसके विरुद्ध सेना भेज दी । कोकरा पर मुगलों द्वारा आक्रमण करने का एक कारण और था वह यह था कि वहाँ के अनेक हीरे की खानें थीं, मुगल सम्राट वहाँ स्थित हीरों की खानों पर अपना अधिकार करना चाहता था, । शाहजहाँ के शासनकाल में गढ़कटंगा के शासक हृदयशाह ने मुगलों को कर देना बन्द कर दिया था तथा शाही माँग की पूर्ति नहीं की थी अत: शाहजहाँ ने उसके विरुद्ध सेना भेजी ।

मुगल सम्राट राजाओं या जमींदारों के राज्य में कुमुगल सूबेदारों की नियुक्ति भी करते थे जो राजाओं के प्रशासन की देखभाल करते थे । इतना ही नहीं मुगल सम्राट राजाओं या जमींदारों के उत्तराधिकार के प्रश्न का निर्णय करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे । उदाहरणार्थ बीकानेर के राजा

---

1. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, अंग्रेजी (अनु0) भाग 2, पृ0 139-140.

2. एस0एन0 भट्टाचार्या, मुगल नार्थ इस्ट फ्रन्टियर पालिसी, पृ0 160.

रायसिंह की मृत्यु के उपरान्त उसके द्वारा मनोनीत उत्तराधिकारी सूरसिंह के अधिकार की अवहेलना करके जहाँगीर ने दलपतसिंह को वहाँ का राजा बनाया ।[1] इसी प्रकार शाहजहाँ के शासनकाल में जैसलमेर के राजा मनोहरदास की मृत्यु हो जाने पर उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था अतः शाहजहाँ ने राजा सबल सिंह जो आम्बेर के राजा जयसिंह कछवाहा का भानजा था, को जैसलमेर की गद्दी पर बिठाया ।[2] जहाँगीर ने मिर्जा गाजी बेग की मृत्यु के पश्चात तरखान शासन का अधिकार अपने हाथ में ले लिया वहाँ मुगल सूबेदार की नियुक्ति की और कुछ समय उपरान्त मिर्जा ईसा तरखान को वहाँ का शासक बनाया । इसी प्रकार 1638 ई0 में मारवाड़ के राजा गजसिंह की मृत्यु के पश्चात उसके ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह के स्थान पर उसके कनिष्ठ पुत्र जसवन्तसिंह को गद्दी पर बिठाया गया ।

मुगल काल में राजा व जमींदार समय समय पर दरबार में सम्राट से भेंट करने जाते थे वे शाहजादों से भी यथासम्भव भेंट करने जाते थे । जब कभी सम्राट या शाहजादे उनके राज्य से होकर गुजरते थे अथवा जाते थे तो वे उपस्थित होकर उनकी अगवानी करते थे । यदि वे मिलने नहीं जाते थे तो सम्राट अथवा शाहजादे उसे विद्रोह समझते थे और उनके विरुद्ध सैनिक अभियान भेजते थे । खड्गपुर के राजा संग्राम शाह को जहाँगीर ने मुगल दरबार में बुलवाया था परन्तु वह नहीं आया अतः सम्राट ने उसके विरुद्ध सेना भेज दी ।[3] इसी प्रकार जहाँगीर जब पहली

---

1. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 206, जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 217, 218. मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 194.
2. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 576, जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 675.
3. एल0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 215.

बार अहमदाबाद भ्रमण के लिये गया था तो वहाँ का राजा भारा या भारमल उससे मिलने नहीं आया । इससे सम्राट उससे असन्तुष्ट हो गया । उसने उसके विरुद्ध सेना भेजी व अधीनता स्वीकार करने के लिये बाध्य किया । चम्बा का राजा पृथ्वीसिंह शाहजहाँ के शासनकाल में नौ बार दिल्ली गया था । सम्राट ने उसे 26000 रूपये मूल्य की जासवन में एक जागीर प्रदान की थी ।[1] बगलाना का राजा भेर जी अपने पुत्र और भाइयों सहित 1632 ई० में शाहजहाँ के दरबार में उपस्थित हुआ था । उसने तीन हाथी, नौ घोड़े और कुछ गहने सम्राट को उपहार में प्रदान किये ।

जहाँ तक पेशकश व उपहार का सम्बन्ध है राजा या जमींदार पेशकश में अपने जगह की बहुमूल्य वस्तुयें, आभूषण, शिकार की सामग्री आदि प्रदान करते थे। सम्राट उन्हें वस्त्राभूषण, अस्त्र-शस्त्र, हाथी, घोड़े तथा जागीर आदि उपहार में प्रदान करते थे । सन् 1635 ई० में रतनपुर के राजा बाबू लक्ष्मण ने मुगलों को एक लाख रूपया नगद और नौ हाथी पेशकश के रूप में दिये थे ।[3]

कुछ राजा मुगलों को केवल पेशकश व उपहार प्रदान करते थे । वे मुगलों की अधीनता में थे यद्यपि सैनिक सेवा की अनिवार्यता नहीं थी । कामरूप का राजा परीक्षित नारायन ऐसा ही राजा था उसे मुगल सम्राट ने कूचबिहार के राजा के साथ मिलकर पराजित किया था । उसने मुगलों की अधीनता स्वीकार

---

1. सैमुल टी वेस्टन, चम्बा स्टेट गजेटियर, पृ० 99.
2. मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ० 71,
   इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ० 80.
3. मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 2, पृ० 651.

कर ली थी और मुगल सम्राट के लिये तीन लाख रूपये 300 हाथी और 300 तनगन घोड़े भेजे थे और सात लाख रूपया पेशकश देना स्वीकार किया था ।[1]

जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने अपनी सैन्य शक्ति से राजाओं या जमींदारों को अपने अधीनस्थ बनाया । कुछ राजाओं पर जमींदारों के विद्रोह का उल्लेख मिलता है । मुल्तान में हजारा, बलोच, होत, नहमर्दी, नोहानी, जुखिया, ककराला, तरखान आदि जातियाँ निरन्तर विद्रोह करती रहती थीं इसके कारण मुगलों को उत्तर पश्चिम सीमान्त पर निरन्तर संघर्ष करना पड़ता था । दिल्ली के कटेहर राजा रामसुख कटेहरिया, सीता सिंह कटेहरिया, आगरा में जुझारसिंह बुन्देला, मेवाड़ में राणा, जैतपुर के राजा, जम्मू में राजा भूपतिशाह ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया परन्तु उनके विद्रोह का मुगलों ने दमन कर दिया ।

अधिकांशतः ऐसा देखा गया कि यदि किसी राजा ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की तो उसके वंशजों ने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार की किन्तु यह आवश्यक नहीं था । अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि जहाँ राजाओं के उत्तराधिकारियों ने अपने पिता की नीति का परित्याग करके मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं कि राजाओं ने जब अपने को मुगलों से निर्बल समझा तो उनकी अधीनता स्वीकार कर ली किन्तु जब मुगलों को कमजोर समझा या किसी कारण से व्यस्त देखा तो स्वतन्त्र होने का प्रयास किया । वीर सिंह देव बुन्देला ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया था किन्तु उसने जहाँगीर की अधीनता स्वीकार की थी । जुझारसिंह बुन्देला ने निरन्तर मुगलों का विरोध किया जबकि उसके वंशज देवी सिंह, पहाड़ सिंह व सुजान सिंह मुगलों के प्रति निरन्तर राजभक्त बने रहे । गढ़कटंगा के शासक मधुकरशाह एवं प्रेमशाह मुगलों के

---

1. मिर्जा नाथन, बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 2, पृ0 521.

प्रति राजभक्त थे किन्तु हृदयशाह मुगलों के प्रति स्वामिभक्त नहीं था । इसी प्रकार धँदेरा राजा जगमणि, चतुर्भुज आदि मुगलों के प्रति राजभक्त थे किन्तु इन्द्रमणि धँदेरा ने मुगलों का विरोध किया अत: शाहजहाँ ने 1638 ई0 में राजा बिट्ठलदास गौड़ तथा मोतमिद खाँ को उसे दण्डित करने के लिये भेजा । राजा इन्द्रमणि ने उस समय मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । शाहजहाँ ने धँदेरा प्रान्त जागीर के रूप में शिवराम गौड़ को प्रदान कर दिया । जहाँगीर के समय में कच्छ-ए बुजुर्ग के जड़ेजा राजा भारमल तथा शाहजहाँ के समय में भोजराज नामक जड़ेजा राजा ने विद्रोह किया था । चक राजाओं ने अकबर के समय में मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी किन्तु जहाँगीर के समय में अम्बा खान चक तथा शाहजहाँ के समय में हबीब चक तथा अहमद चक ने विद्रोह कर दिया था । जहाँगीर के समय किश्तवार के राजा कुँअर ने दो बार 1620 ई0 तथा 1622 ई0 में विद्रोह किया । 1622 ई0 में सम्राट ने सेना भेजकर उसके विद्रोह का दमन करवा दिया । पकली का राजा सुल्तान हुसैन पकलीवाल मुगलों के प्रति राजभक्त था, उसे मनसब भी प्राप्त था किन्तु पुत्र शादमान पकलीवाल ने मुगलों का विरोध किया । उसने मुगलों के विरुद्ध तिब्बत के अब्दाल के पक्ष में युद्ध किया किन्तु अब्दाल के पराजित हो जाने के पश्चात उसने भी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली । नूरपुर के राजा जगतसिंह तथा राजसिंह ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया । नगरकोट के राजा विधिचन्द्र तथा त्रिलोकचन्द्र के साथ मुगलों को निरन्तर संघर्ष करना पड़ा । शाहजहाँ के काल में आलम खाँ नोहानी, हसन तथा खातरताल नामक नहमर्दी जमींदार, मुरीद नामक जुखिया जमींदार ककराला के सतहला जमींदार के विद्रोह का उल्लेख मिलता है । दलपत उज्जैनिया के मुगलों के साथ मधुर सम्बन्ध थे किन्तु प्रताप उज्जैनिया ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया । पालामऊ के चेर शासक भी निरन्तर मुगलों के विरुद्ध विद्रोही रुख अपनाते रहे । खड्गपुर के राजा अकबर के समय में मुगलों के प्रति राजभक्त थे किन्तु जहाँगीर के समय में वहाँ के राजा संग्राम शाह ने विद्रोह कर दिया अत: सम्राट ने उसके विरुद्ध सेना भेजी । इस युद्ध में

संग्रामशाह मारा गया । रतनपुर के राजा कल्याण तथा बाबू लक्ष्मण ने भी मुगलों के प्रति विद्रोही रुख अपनाया । अहोम लोगों ने भी मुगलों का विरोध किया । शाहजहाँ के काल में माघ राजा के विद्रोह का उल्लेख मिलता है ।

मुगल काल में राजनीतिक शक्ति अनेक भागों में विभक्त थी । इसी कारण राजाओं की स्वामिभक्ति भी अनेक भागों में विभाजित थी । राधनपुर के बलोच राजा सुल्तान मुजफ्फर गुजराती तथा मुगल दोनों की ही अधीनता स्वीकार करते थे क्योंकि सुल्तान मुजफ्फर गुजराती तथा मुगल दोनों ही वहाँ अपनी अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करना चाहते थे । दोनों ही शक्तिशाली थे अतः दोनों का सहयोग आवश्यक था । कच्छ-ए बुजुर्ग के राजा अहमदाबाद के शासक तथा मुगल शासक दोनों की ही अधीनता स्वीकार करते थे । कच्छ के राजा अहमदाबाद के राजा को कोई नियमित कर नहीं प्रदान करते थे किन्तु वह उसे 5000 सवारों की सेवा प्रदान करने के लिये बाध्य थे ।[1] इसी प्रकार नावानगर का जाम बड़ी कच्छ तथा मुगल दोनों की ही अधीनता स्वीकार करते थे । नावानगर के उत्तराधिकार के प्रश्न तथा अन्य विषयों में भी जाम बड़ी कच्छ के राजा के निर्णयों को स्वीकार करता था ।

राजाओं के पारस्परिक वैमनस्य के कारण भी अनेक विद्रोह उठ खड़े होते थे । जुझारसिंह बुन्देला ने अकारण गोंडवाना के राजा पर आक्रमण कर चौरागढ़ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया, इससे मुगल सम्राट उससे रुष्ट हो गया । गोंडवाना के शासक ने शाही सेना के साथ बुन्देला राजा जुझार सिंह के राज्य पर आक्रमण कर दिया । इसी प्रकार महाराजा जगतसिंह ने षड्यन्त्र रचकर देवलिया के जसवन्त सिंह एवं उसके पुत्र महासिंह को मार डाला । सिरोही के राजा सुरताण की मृत्यु

---

1. अली मुहम्मद खान, मीरात-ए अहमदी, पृ0 127.

के पश्चात रायसिंह जब गद्दी पर बैठा तो उसका भाई सूरसिंह विद्रोही हो गया। कुछ समय बाद रायसिंह के प्रधानमंत्री पृथ्वीराज ने स्वयं ही अपने राजा रायसिंह को मार डाला । कभी कभी मुगल सम्राट इन षड्यन्त्रों को न केवल प्रोत्साहन देते थे अपितु शाही सहायता भी प्रदान करते थे । जहाँगीर के काल में 1611 ई० में राजा लक्ष्मीचन्द्र के कहने पर जहाँगीर ने श्रीनगर के राजा श्यामशाह के विरुद्ध अभियान भेजा । इसी प्रकार शाहजहाँ के काल में पालामऊ के शासक तेजराय के भाई दरिया राय ने तेजराय के विरुद्ध विद्रोह किया । इस विद्रोह में मुगल सेना ने दरिया राय का साथ दिया ।

राजाओं या जमींदारों को अधिक समय तक अपने वतन राज्य क्षेxमें रहने नहीं दिया जाता था । उन्हें समय समय पर सुदूर क्षेत्रों में सैनिक अभियान पर भेजा जाता था ।

शाहजादों के विद्रोह में भी राजाओं या जमींदारों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी । कुछ राजाओं ने शाहजादों के विद्रोह में शाहजादों के पक्ष में तथा कुछ राजाओं ने सम्राट के पक्ष में युद्ध किया । शाहजादा सलीम के विद्रोह के समय ओरछा के राजा वीरसिंह देव बुन्देला तथा लाम्बी के शासक रायसाल शेखावाटी ने शाहजादा सलीम का साथ दिया अतः जब शाहजादा सलीम जहाँगीर नाम से सम्राट बना तो उसने उन दोनों राजाओं को उचित पद व सम्मान प्रदान किया । खुसरो के विद्रोह के समय जहाँगीर ने मऊ के राजा बासु को उसके विरुद्ध भेजा था। शाहजादा खुर्रम के विद्रोह के समय मेवाड़ के राणा भीम तथा मऊ के राजा जगत सिंह ने शाहजादे की सहायता की थी जबकि आम्बेर के मिर्जा राजा जयसिंह तथा नरवर के राजा रामदास नरवरी ने जहाँगीर की सहायता की थी । शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का संघर्ष छिड़ने पर उन राजाओं ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी । गिधौर के राजा दलनसिंह तथा बूंदी के राय शत्रुसाल ने उत्तराधिकार के युद्ध में दारा का साथ दिया था । कोटा का राजा मुकुन्दसिंह

उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब के विरुद्ध लड़ा था । इसके अतिरिक्त अन्य अनेक राजाओं ने भी उत्तराधिकार के युद्ध में शाहजादों का साथ दिया था ।

मुगल सम्राट राजाओं या जमींदारों को उनकी सेवाओं के बदले शाही सुरक्षा भी प्रदान करते थे । सुसंग के राजा रघुनाथ ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी अतः मुगल सम्राट ने उसके परिवार वालों को कामरूप के राजा की कैद से मुक्त करवाया था ।[1] जहाँगीर ने सन् 1612 ई0 में कूचबिहार के राजा की कामरूप के राजा के विरुद्ध सहायता की थी । इसी प्रकार जहाँगीर ने नूरपुर के राजा जगतसिंह की चम्बा के राजा के विरुद्ध आक्रमण में सहायता की थी । बगलाना के राजा भैर जी का अपने भाइयों के साथ गृहयुद्ध होने पर जहाँगीर ने बगलाना के स्वामिभक्त राजा भैर जी को सैनिक सहायता प्रदान की थी।

सम्राट अकबर ने धार्मिक क्षेत्र में उदारनीति का परिचय दिया था । उसका दीन-ए इलाही सर्वधर्मसमन्वय का प्रतीक था । किन्तु उसके उत्तराधिकारी जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने धार्मिक क्षेत्र में कुछ कट्टरता की नीति अपनायी । इस कट्टरता के कारण भी राजाओं या जमींदारों से संघर्ष हुआ । जुझारसिंह बुन्देला के मुगलों के विरुद्ध विद्रोह का एक कारण धार्मिक था । बगलाना के शासक भैरजी की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र को मुसलमान बना दिया गया और उसका नाम दौलतमन्द रखा गया । राव अमरसिंह की पुत्री का विवाह सुलेमान शिकोह के साथ होने से पूर्व अमरसिंह की पुत्री को कलमा उच्चारण करवा करके मुसलमान बना दिया गया । शाहजहाँ ने अपने शासनकाल में नवनिर्मित सभी मन्दिरों को गिरा देने का आदेश दिया था फलतः प्रताप उज्जैनिया ने जो कट्टर हिन्दू राजा था, मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । सम्राट ने सैन्य बल द्वारा उसके विद्रोह का दमन कर दिया । प्रताप उज्जैनिया को फाँसी पर चढ़ा दिया और उसकी पत्नी

---

1. जे0एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ बंगाल, पृ0 237.

का बलात धर्म परिवर्तन करके उसका विवाह भूतपूर्व सूबेदार के पौत्र के साथ कर दिया । जहाँगीर ने राजा टोडरमल ।बाज बहादुर का पुत्र। का धर्म परिवर्तित करके उसे मुसलमान बना दिया और उसे रोज अफ्जूँ नाम दिया ।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने समस्त उत्तरी भारत के राजाओं या जमींदारों को अधीनस्थ बना लिया था । कुछ राजाओं ने स्वतः अधीनता स्वीकार कर ली थी तो कुछ को मुगल सम्राट ने सैन्यबल से अपने अधीनस्थ बनाया था । अकबर द्वारा प्रारम्भ की गयी मनसबदारी व्यवस्था का पालन जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने भी किया । बहुत से राजाओं को मनसब प्रदान किया । कुछ राजाओं के साथ वैवाहिक संबंध भी स्थापित किये । इस नीति का पालन करने से मुगलों के राजाओं से सम्बन्ध और भी दृढ़ हुये और मुगलों का प्रशासनिक ढाँचा सभी वर्गों के सहयोग से और भी सुदृढ़ हुआ । मुगलों ने हिन्दू मुस्लिम सभी राजाओं के साथ मित्रवत व्यवहार किया । परिणामतः मुगल साम्राज्य में समन्वय व एकता का मार्ग प्रशस्त हुआ । इस काल में मुगल साम्राज्य का विस्तार हुआ । साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण हुआ और मुगल साम्राज्य समृद्धिशाली बना ।

---------::0::---------

मानचित्र नं० 1

सूबा अजमेर
स्केल 1 25 34400
40 0 40
मील
71°
72°
73°
74°
75°
76°
77°
29°
28°
27°
26°
25°
24°
बीकानेर
रा ठौ र
फतेहपुर
उदयपुर
खण्डेला
नागौर
जैसलमेर
साम्भर
आम्बेर
सांगानेर
देवसा
मेड़ता
अजमेर
जोधपुर
जैतारन
मालपुरा
टोंक
रणथम्भौर
सिवाना
पाली
सोजत
जहाजपुर
बागर
बूंदी
जालौर
नाडोल
कुम्भलमेर
मण्डलगढ़
कोटा
मऊ
सिरोही
चौहान
चित्तौड़
उदयपुर
रामपुरा
डूंगरपुर
बांसवाड़ा

मानचित्र नं० 2

सूबा मालवा
स्केल 1:2534400
40 0 40
मील
76°
77°
78°
80°
81°
24°
23°
22°
गागरौन
धंधेरा
मियाना
गढ़ कटंगा
(गोंडवाना)
सिरोज
रायसेन
सलवानी
उज्जैन
बैरागढ़
चौरागढ़
हरिया
अमोडा
मंडला
कयोला
लन्जी
करोला
देवहार
सोन नं०
नर्मदा नं०

मानचित्र नं० 3

71°
72°
73°
74°
75°
76°
77°
34°
33°
32°
31°
ग क्क ख र
भीम्बर
रामसी
करैली
जम्मू
मानकोट
बालौर
(बसौली)
चम्बा
जसरोटा
शाहपुर
चामेरी
पैठान
सम्बा
लखनपुर
खुशाब
भीरा
दो आब
चिनाब नं०
छेनहट
सिन्ध
सागर
सिन्ध
दो आब
सरकार
जेहलम नं०
सरकार
दो आब
रचना
सरकार
कांगड़ा
(नगरकोट)
सिबा
नडौन
दो आब
ददयाल
लाहौर
बारी
रावी नं०
सरकार
सरकार
जालन्धर
बेत
दोआब
जासवान
सुकेत
कहलूर
सरकार बेरून-ए
पंजनाद
सतलज नं०
सूबा लाहौर
स्केल 1:2534400
40
0
40
मील

मानचित्र नं० 6

मानचित्र नं. 7

सूबा बिहार
स्केल 1 2534400
40
0
40
मील
83°
84°
85°
86°
87°
27°
26°
25°
24°
23°
चम्पारन
गंडक नं०
सिपाह
कल्यानपुर
घाघरा नं०
तिरहुत
कोसी नं०
हाजीपुर
पटना
गंगा नं०
भोजपुर
बिहिया
उज्जैनिया
उछना
बिहार
मुंगेर
खड़गपुर
सिओर
गिद्धौर
रोहतास
रिहन्द नं०
कन्हर नं०
दामोदर नं०
पंचेत
कोकरा

मानचित्र नं० 8

सूबा बंगाल I
स्केल 1: 2534400
40
0
40
मील
कूच बिहार
(कामता)
घोरघाट
कामरूप
खासी
जैन्तिया
सुसंग
मनीपुर
गौर
शहजादपुर
सरैल
बनियाचंग
बीरभूमि
उदयपुर
सोनदीप
चिटगांव
हिजली
दामोदर न०
जैसर
(जैस्सोर)

मानचित्र नं० 1

सूबा बंगाल II
(उड़ीसा)
स्केल 1:2534400
40
0
40
मील
84°
85°
86°
87°
88°
23°
22°
21°
नारायनगढ़
हिजली
रिंजौर
नीलगीरी
धनी न.
महानदी न.
अलं
कटक
अथगढ़
सारंगगढ़
खुर्दा

मानचित्र नं. 10

परिशिष्ट

1. राजाओं अथवा जमींदारों के मुगलों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध

2. जहाँगीर एवं शाहजहाँ के अन्तर्गत राजाओं अथवा जमींदारों को प्राप्त मनसब

3. सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

परिशिष्ट-1

राजाओं अथवा जमींदारों के मुगलों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध

क्र0 सं0	विवाहिता का नाम	विवाहिता का परिचय	स्रोत
1	2	3	4
1.	शाहजादा सलीम	गक्खर के राजा सईद खाँ की पुत्री	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 508.
2.	शाहजादा दानियाल	उज्जैनिया के राजा दलपत उज्जैनिया की पुत्री	अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 826.
3.	शाहजादा सलीम	बीकानेर के रायसिंह की पुत्री	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 384, 385. बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26.
4.	शाहजादा सलीम	जैसलमेर के राजा भीम की पुत्री	जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 673, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 36.
5.	शाहजादा सलीम	तिब्बत-ए खुर्द के अली राय की पुत्री	अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 552, बेनी प्रसाद हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26.
6.	शाहजादा सलीम	आम्बेर के कछवाहा राजा भगवानदास की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 24,
7.	शाहजादा सलीम	अजमेर के मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 25.
8.	शाहजादा सलीम	जैसलमेर के राजा कल्याण की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26.

1	2	3	4
9.	शाहजादा सलीम	अजमेर के राजा केसूदास राठौर की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26.
10.	शाहजादा सलीम	काबुल के मुबारक चक की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26.
11.	शाहजादा सलीम	काबुल के हुसैन चक की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26.
12.	शाहजादा सलीम	मुल्तान के मिर्जा सरजर की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26, अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 3, पृ080.
13.	जहाँगीर	ओरछा के रामशाह की पुत्री	मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीर-नामा, पृ0 712.
14.	जहाँगीर	मारवाड़ के गजसिंह की पुत्री	श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 821.
15.	जहाँगीर	खुर्दा के पुरुषोत्तम देव की पुत्री	बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर, पृ0 26.
16.	शाहजादा शुजा	काबुल के कुँअरसेन किश्तवारी की पुत्री	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 370.
17.	सुलेमान शिकोह	मेवाड़ के राव अमरसिंह की पुत्री	बनारसी प्रसाद, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ, पृ0 319.

परिशिष्ट - 2

जहाँगीर एवं शाहजहाँ के अन्तर्गत राजाओं अथवा जमींदारों को प्राप्त मनसब

सूबा - आगरा

क्र0 सं0	शासक	राज्य	मनसब	स्रोत
1	2	3	4	5
1.	रामसिंह	ओरछा	500/500	अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 3, पृ0 813.
2.	वीरसिंह	ओरछा	3000/3000	मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा पृ0 35, जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 24.
			4000/4000	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 546.
3.	जुझार सिंह	ओरछा	4000/4000	रघुबीरसिंह मनोहरसिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 49, बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 78, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 256-260.
4.	पहाड़ सिंह	ओरछा	5000/5000 5000/2000	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँ-नामा, पृ0 118, ओरछा स्टेट गजेटियर, पृ0 31.
5.	सुजान सिंह	ओरछा	2000/2000 3000/2000	मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, पृ0 29.
6.	कृष्ण सिंह	भदौरिया	1000/600	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 309.

1	2	3	4	5
7.	बदन सिंह	भदौरिया	1000/1000	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 547, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा (अनु0) भाग 1, पृ0 336.
8.	महा सिंह	भदौरिया	1000/800	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 336.
			1000/1000	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 547.
9.	वीर नारायन	बड़गूजर	1000/600	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 3, परिशिष्ट बी.
10.	अनूप सिंह	बड़गूजर	3000/1500	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1 (अनु0), पृ0 263.
11.	जयराम	बड़गूजर	1000/800 2000/1500	

<u>सूबा - अवध, इलाहाबाद</u>

1.	हरवंश सिंह	आजमगढ़	1500/1500	आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 166.
2.	राजा नथमल	मझौली	2000/1200	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 366.
3.	अनूप सिंह	बान्धोगढ़	3000/2000	सुरेन्द्र नाथ सिन्हा, हिस्ट्री आफ इलाहाबाद, पृ0 179, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 332.

1	2	3	4	5
			सूबा अजमेर	
1.	कर्णसिंह	मेवाड़	5000/5000	जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 248 उदयपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 49.
2.	जगतसिंह	मेवाड़	5000/5000	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 63, जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0 5.
3.	राजसिंह	मेवाड़	5000/5000	मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 614, अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 271.
4.	सुजानसिंह	शाहपुरा	800/300	जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 556.
			1000/500 1500/700	वही, पृ0 556.
			2000/800	अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 306, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0830.
5.	रायसाल	शेखावाटी	3000/3000	जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 556.
6.	गिरधर	शेखावाटी	800/800 2000/1500	जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 556.

1	2	3	4	5
7.	रामदास	नरवर	1000/400	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 300, 301.
			1500/700	वही, पृ0 301, 335, 418.
8.	राजा अमरसिंह नरवरी	नरवर	1000/1000 1500/1000	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 57.
9.	भावसिंह	आम्बेर	4000/3000	जहाँगीर, तुजुक=ए जहाँगीरी, पृ0 130, कुँअर रिफाकत अली खाँ, कछवाहाज अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, पृ0 136.
10.	जयसिंह	आम्बेर	2000/2000	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, पृ0 337.
			4000/4000	वही, पृ0 1288.
			5000/5000	वही, पृ0 1289.
			7000/7000	वही, पृ0 1290.
11.	मनोहर	साम्भर	1500/600	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 64.
12.	पृथीचन्द्र	साम्भर	500/300	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 321, भाग 2, पृ0 26.
13.	रावरतन	बूँदी	3000/3000	गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, भाग 1, पृ0 415-16.
				रघुवीरसिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 101.
14.	राव शत्रुसाल	बूँदी	3000/2000	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 441, मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 1, पृ0 425, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग2, खण्ड 2, पृ0 1.
			4000/4000	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 306.

1	2	3	4	5
15.	माधो सिंह	कोटा	3000/1600	श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1408.
			3000/2500	वही, पृ0 1409.
			3000/3000	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 177, वारिस, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 198.
16.	मुकुन्द सिंह	कोटा	2000/ 500	श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 1410.
			3000/2000	वही, पृ0 1410, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा पृ0 306.
17.	महारावल पुंजराज	डूंगरपुर	1000/1500	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा पृ0 12.
			1500/1500	जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, पृ0 411.
18.	गिरधरदास	डूंगरपुर	600/600	गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, पृ0 112.
19.	महारावल समर सिंह	बाँसवाड़ा	1000/1000	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 11.
20.	सूर सिंह	मारवाड़	2000/2000	राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जोधपुर, पृ0 36.
			4000/2000	श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 817, विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, पृ0 187.

1	2	3	4	5
			4000/4000	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 166, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 182.
			5000/3300	जहाँगरी, तुजुक-ए जहाँगीरी, पृ0 149.
21.	गजसिंह	मारवाड़	3000/2000	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, पृ0 223. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जोधपुर, पृ0 37, गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 435, विश्वेश्वर नाथ रेउ मारवाड़ का इतिहास, पृ0 149, जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, पृ0 280.
			4000/3000	कविवर श्यामलदास, वीर-विनोद, खण्ड 2, भाग 2, पृ0 819, गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ0 435, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 158.
22.	जसवन्त सिंह	मारवाड़	5000/5000	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 144.
			6000/6000	विश्वेश्वर नाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृ0219.
			7000/7000	वही, पृ0 219.

1	2	3	4	5
23.	कल्याणमल	बीकानेर	2000/2000	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 160-161.
24.	रायसिंह	बीकानेर	4000/4000	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 160-161.
			5000/5000	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 386.
25.	दलपत सिंह	बीकानेर	2000/2000	मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 159.
26.	सूरसिंह	बीकानेर	3000/2000	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 456, मुंशी देवी प्रसाद, जहाँगीरनामा, पृ0 161.
27.	कर्णसिंह	बीकानेर	2000/1500	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, भाग 1, पृ0 61, ब्रजरत्न दास, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 85, मुल्ला मुहम्मद सईद, अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 298.
			2000/2000 2500/2000	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 298, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल-उमरा, पृ0 86, गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ0 241.
			3000/2000	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 298, ब्रज-रत्नदास, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 31.

1	2	3	4	5
28.	राजा भीम	जैसलमेर	500/500	जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग, पृ0 67 राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जैसलमेर, पृ0 36.
29.	कल्याण	जैसलमेर	2000/1000	गुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग : पृ0 346.
30.	सबल सिंह	जैसलमेर	1000/700	राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर जैसलमेर, पृ0 38, श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग 2, पृ0371, जगदीश सिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ0676.

<u>सूबा मालवा</u>

1	2	3	4	5
1.	राजा इन्द्रमणि धंदेरा	धंदेरा	3000/2000	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 682, इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, पृ0 195.
2.	राजा शिवराम गोर	धंदेरा	1500/1000 1700/1000 2000/1500 2500/2500	लाहोरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 304, शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0 875.

1	2	3	4	5
				सूबा गुजरात
1.	राजा भोजराज	कच्छ-ए बुजुर्ग	2000/1200	मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 2, पृ0 70-71.
2.	भेर जी	बगलाना	3000/2500	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 363, इलियट डाउसन, भारत का इतिहास, भाग 7, पृ0 24, शाहनवाज खाँ, मासिर उल उमरा, भाग 1, पृ0 352, एम0 अतहर अली, द आप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 370.
3.	दौलतमन्द खाँ	बगलाना	1500/1500	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 352.
4.	अनूपसिंह बघेला	बघेल	2000/2000	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 209.

सूबा काबुल

1	2	3	4	5
1.	अम्बरखान चक	कामराज	1000/300	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 95.
2.	बहादुर चक	धन्तूर	200/100	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 127.
3.	सुल्तान हुसैन पकलीवाल	पकली	600/350	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 367.

1	2	3	4	5
4.	शादमान	पकली	1000/900	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 293, 733.
5.	इनायत	पकली	600/600	मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 670.
6.	कुंअर सेन किश्तवारी	किश्तवारी	1000/400	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 370.
7.	महासेन किश्तवारी	किश्तवारी	800/400	मुहम्मद सालेह कम्बो, अमले सालेह, भाग 3, पृ0 529.

<u>सूबा लाहौर</u>

1.	जगतसिंह	नूरपुर	3000/2000	सैमुल टी वेस्टन, पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 90.
2.	पृथ्वीसिंह	नूरपुर	1000/400	सैमुल टी वेस्टन, पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0 90.
3.	राजा बासु	मऊ	3500/3500	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 49, शाहनवाज खाँ मासिर-उल उमरा, भाग 1, पृ0 394, कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, परिशिष्ट 1, पृ0 2.
4.	राजा सूरजमल	मऊ	2000/2000	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा, भाग 2, खण्ड 2, पृ0912. जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 54.

1	2	3	4	5
5.	जगतसिंह	मऊ	1000/500	शाहनवाज खाँ, मासिर-उल उमरा भाग 1, पृ0 145,
			3000/2000	मुहम्मद अकबर, पंजाब अण्डर द मुगल्स, पृ0 172.
6.	राजा राजरूप	मऊ	3000/2500	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहानामा, पृ0 306.
7.	संग्राम देव	जम्मू	1000/500 1500/1000	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 2, पृ0 120, 175.
8.	सईद खान	गक्खर	1500/1500	अहसान रजा खाँ, चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, पृ0 30.
9.	अकबर कुली	गक्खर	1000/1000	जहाँगीर, तुजुक-ए जहाँगीरी, भाग 1, पृ0 130.
			1500/1500	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 410.
10.	मुराद कुली सुल्तान	गक्खर	1500/1500	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 410.
11.	जबर कुली	गक्खर	1000/800	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 545.
12.	खिज्र सुल्तान	गक्खर	800/500	अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 545.

1	2	3	4	5
		सूबा मुल्तान		
1.	मिर्जा गाजी बेग	तरखान	5000/5000	मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, पृ0 71.
		सूबा बिहार		
1.	राजा प्रताप उज्जैनिया	उज्जैनिया	1500/1000	हसन असकरी, बिहार इन द टाइम आफ शाहजहाँ, पृ0 349, केवलराम, तजकिरातुल-उमरा, पृ0 25.
2.	राजा पृथ्वी चन्द्र	उज्जैना	1000/1000	केवल राम, तजकिरातुल उमरा, पृ0 251, इनायत खाँ, शाहजहाँ, नामा, पृ0 209.
3.	प्रतापराय चेरो	चेरो	1000/1000	लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 2, पृ0 361, अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, पृ0 31, एम0 एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पालामऊ, पृ0 22.
4.	रोजअफजूँ	खड्गपुर	2000/2000	एम0एस0एस0ओ0 मैली, बंगाल गजेटियर, पृ0 215, लाहौरी, बादशाहनामा, भाग 1, खण्ड 2, पृ0 67.

1	2	3	4	5
6.	वीर नारायन	पनचेत	700/300	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये-हुनूद, पृ0 367.
7.	राजा रामचन्द्रदेव	उड़ीसा (खुर्दा)	3500/3500	स्टर्लिंग उड़ीसा, पृ0 44, जगन्नाथ पत्नायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आफ उड़ीसा, पृ0 46.

<u>सूबा बंगाल एवं उड़ीसा</u>

1.	राजा हरमान	चन्द्रकोना	2000/1500	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 367.
2.	राजा वीरभान	चन्द्रकोना	500/300	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 367.
3.	राजा रघुनाथ	सुसंग	500/200	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद, उमराये हुनूद, पृ0 368.
4.	राजा रामचन्द्रदेव	खुर्दा	3500/3500	स्टर्लिंग, उड़ीसा, पृ0 44, जगन्नाथ पत्नायक, फ्यूडेटरी स्टेट्स आफ उड़ीसा, पृ0 46.

----------::0::----------

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

परिशिष्ट 3

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

समकालीन फारसी ग्रन्थ

क्र0 सं0	लेखक		कृति
1.	अबुल फजल	:	1. अकबरनामा, भाग 1, 2, 3, अनुवादक, एच0 बेवरिज, एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, 1909, 1912, 1939.
			2. आईने-अकबरी, भाग 1, 2, 3, अनुवादक, एच0एस0 जैरेट, रायल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, 1978.
2.	अब्दुल हमीद लाहौरी	:	बादशाहनामा, भाग 1, 2, अनुवादक, स्व0 प्रो0 बी0पी0 सक्सेना (अप्रकाशित) बिब्लोथिका इण्डिया, कलकत्ता, 1866-72.
3.	अली मुहम्मद खान	:	मीरात-ए अहमदी, भाग 1, 2, अनुवादक, एम0एफ0 लोखण्डवाला, बड़ौदा, 1927, 1928, 1930.
4.	आकिल खान राजी	:	तारीख-ए आलमगीरी.
5.	अब्दुल्ला	:	तारीख-ए दाऊदी, अनुवादक, शेख अब्दुर्रशीद, अलीगढ़, 1954.
6.	अब्बास खाँ शेरवानी	:	तारीख-ए शेरशाही.
7.	अब्दुल कादिर बदायूँनी	:	मुन्तखब उल तवारीख, कलकत्ता, 1864-69.
8.	फरिश्ता, मुहम्मद कासिम बिन हिन्दु शाह	:	तारीख-ए फरिश्ता, अंग्रेजी अनुवाद, हिस्ट्री आफ द राइज आफ द मुगल्स पावर इन इंडिया टिल द ईयर, 1912, भाग 2,

क्र0 स0	लेखक		कृति
9.	इनायत खान	:	शाहजहाँनामा, भाग 1, 2, दिल्ली, न्यूयार्क, 1990.
10.	जलालुद्दीन तबातबाई	:	बादशाहनामा
11.	जहाँगीर	:	तुजुक-ए जहाँगीरी, अनुवादक, एलेक्जेण्डर रोजर्स, लन्दन, 1909, 1914, नई दिल्ली, 1979.
12.	खाफी खान	:	मुन्तखब-उल लुबाब, बिब इण्डिया, कलकत्ता, 1860, 1874, 1907, 1925.
13.	केवल राम	:	तजकिरातुल उमरा, अनुवादक, एस0एम0 अजी-जुद्दीन हुसैन, नई दिल्ली, 1985.
14.	मुहम्मद सादिक खान	:	शाहजहाँनामा (1671)
15.	मिर्जा मुहम्मद काजिम सिराजी	:	आलमगीरनामा, बिब इण्डिया, कलकत्ता, 1865-1873.
16.	मिर्जा अमीनी कजवीनी	:	बादशाहनामा
17.	मुहम्मद सालेह कम्बो	:	अमल-ए सालेह, भाग 1, 2, 3, बिब इण्डिया, कलकत्ता, 1912-1946.
18.	सुजान राय खत्री	:	खुलासत-उत तवारीख, बी0एम0 (5589).
19.	शाहनवाज खान	:	मासिर-उल उमरा, भाग 1, 2, 3, बिब इण्डिया, कलकत्ता (1887-94), अनुवादक, एच0 बेवरिच, पटना, 1979.

क्र0 स0	लेखक		कृति
20.	सादिक खान	:	तबकात-ए शाहजहांनी, बी0एम0 116731,
21.	साकी मुस्तैद खान	:	मासीरे-आलमगिरी, बिब इण्डिया, कलकत्ता, 1870-1873.
22.	गुलाम हुसैन खान	:	रियाजुस सलातीन, अनुवादक, अब्दुस्सलीम, 1903.

उर्दू ग्रन्थ

1.	मिर्जा नाथन	:	बहारिस्तान-ए गैबी, भाग 1, 2, अनुवादक, डॉ0 एम0आई0 बोरा, प्रकाशन, आसाम राज्य सरकार द्वारा 1936.
2.	मुल्ला मुहम्मद सईद अहमद	:	उमराये-हुनूद, औरंगाबाद, 1932.
3.	लेखक अज्ञात	:	तारीख-ए आजमगढ़, इण्डिया आफिस लन्दन, हस्तलिपि संख्या 40381.

राजस्थानी

1.	बानकीदास	:	बानकीदास की ख्यात, सम्पादक, स्वामी नरोत्तमदास, जयपुर, 1956.
2.	दयालदास	:	दयालदास की ख्यात, बीकानेर,

क्र0 स0	लेखक		कृति
3.	जयतन	:	1. जयतन की ख्यात, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर ।
			2. महाराजा जसवन्त सिंह का इतिहास, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर.
4.	मुहणोत नैन्सी	:	नैन्सी की ख्यात [4 भागों में] राजस्थान ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, जोधपुर, 1960-1967.
5.	सूरीमल मिश्रा	:	वंश-भास्कर, नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

संस्कृत

1.	रणछोड़ भट्ट	:	राज्यप्रशस्ति महाकाव्य ।

समकालीन यात्रियों के विवरण

1.	बर्नियर, फ्रांसिस	:	ट्रेवेल्स इन द मुगल एम्पायर, लन्दन, 1891.
2.	पीटर मण्डी	:	ट्रेवेल्स इन इण्डिया, लन्दन, 1927.
3.	डब्ल्यू0 फोस्टर	:	अर्ली ट्रेवेल्स इन इण्डिया, लन्दन, 1914.
4.	ट्रेविनियर जीन वैपटिस्ट	:	ट्रेवेल्स इन इण्डिया, अनुवादक, वी0 बाल, लन्दन, 1925.

अंग्रेजी

क्र0 स0	लेखक		कृति
1.	ए0एल0 श्रीवास्तव	:	द मुगल इम्पायर, आगरा, 1952.
2.	अहसान रजा खाँ	:	चीफटेन्स ड्यूरिंग द रेन आफ अकबर, शिमला, 1977.
3.	अब्दुल लतीफ	:	हिस्ट्री आफ लाहौर,
4.	अनिल चन्द्र बनर्जी	:	आस्पेक्ट्स आफ राजपूत स्टेट एण्ड सोसाइटी।
5.	बेनी प्रसाद	:	हिस्ट्री आफ जहाँगीर, इलाहाबाद, 1940.
6.	बी0पी0 सक्सेना	:	हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ, आफ डेल्ही, इलाहाबाद, 1932.
7.	बाल मुकुन्द वीरोत्तम	:	नागवंशी एण्ड द चेरोज, नयी दिल्ली, 1972.
8.	बख्शी सिंह निज्जर	:	पंजाब अण्डर द ग्रेट मुगल्स, 1526-1707 ई0, बम्बई, 1968.
9.	बी0सी0 रे	:	उड़ीसा अण्डर द मुगल्स, कलकत्ता, 1981.
10.	चन्द्रा पन्त	:	नूरजहाँ एण्ड हर फैमिली ।
11.	सी0वी0 विल्स	:	राजगोण्ड महाराजास ऑफ द सतपुरा हिल्स.
12.	इलियट एवं डाउसन	:	भारत का इतिहास, छठां एवं सातवां खण्ड, लन्दन, 1867, हिन्दी अनुवादक, मथुरालाल शर्मा

क्र0 स0	लेखक		कृति
13.	एडवर्ड एण्ड जैरेट	:	मुगल रूल इन इण्डिया.
14.	फ्रेकबर्ग एल0ई0	:	लैण्ड कन्ट्रोल एण्ड सोशल स्ट्रक्चर इन इण्डियन हिस्ट्री ।
15.	मेजर जी0 करमिरवेल स्मिथ	:	ए हिस्ट्री ऑफ द रेनिंग फैमिली ऑफ लाहौर विथ सम एकाउण्ट्स ऑफ जम्मु राजास, दिल्ली 1979.
16.	जी0एम0डी0 सूरी	:	काश्मीर बीइंग-ए हिस्ट्री ऑफ काश्मीर, भाग 1, नई दिल्ली ।
17.	जी0एन0 शर्मा	:	मेवाड़ एण्ड द मुगल एम्परर्स (1526-1707ई0) आगरा, 1962.
18.	हरीकृष्ण मेहताब	:	हिस्ट्री ऑफ उड़ीसा ।
19.	हसन अस्करी	:	बिहार इन द टाइम ऑफ शाहजहाँ ।
20.	इक्तिदार हुसैन सिद्दीकी	:	मुगल रिलेशन विथ द इण्डियन रूलिंग, इलाइट, 1983.
21.	ईश्वरी प्रसाद	:	द मुगल इम्पायर, इलाहाबाद, 1924.
22.	आई0एच0 कुरैशी	:	द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द मुगल एम्पायर, पटना, 1983.
23.	इरफान हबीब	:	द एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, बम्बई, 1963.
			एन0 एटलस ऑफ द मुगल एम्पायर, आक्सफोर्ड, न्यूयार्क, 1982.

क्र0 सं0	लेखक	कृति
24.	जे0एन0 सरकार	: हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग 1-5, कलकत्ता, 1952.
		: मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, कलकत्ता, 1952.
		: हिस्ट्री ऑफ बंगाल ।1200-1757।, जानकी प्रकाशन, पटना, 1977.
		: हिस्ट्री ऑफ जैतपुर ।
25.	जॉन ब्रिग्स	: हिस्ट्री ऑफ राइज ऑफ द मुहम्मडन पावर इन इण्डिया, भाग 1-4, कलकत्ता, 1952.
26.	जगन्नाथ पटनायक	: फ्यूडेटरी स्टेट्स ऑफ उड़ीसा ।1803-1857। भाग 1, इलाहाबाद ।
27.	जलाल हुसैन शाह	: 1. एकाउण्ट आफ द बुन्देलास ।
		2. एकाउण्ट आफ द जगतसिंह(वी0एम0 16859.)
28.	केवल राम	: तजकिरातुल उमरा ।1556-1707। ।अनुवादक- एस0एम0 अजीजुद्दीन हुसैन, नयी दिल्ली, 1985।.
29.	के0एस0 लाल	: ग्रोथ ऑफ मुस्लिम पापुलेशन ।
30.	के0ए0 निजामी	: हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स ऑफ मुगल इण्डिया, दिल्ली, 1983.
31.	लैपेल एच0 ग्रीफेन	: द राजास आफ द पंजाब, लन्दन, 1873, नई दिल्ली, 1870.

क्र0 स0	लेखक		कृति
32.	एम0 अतहर अली	:	द आपरेटा आफ द मुगल एम्पायर, आक्सफोर्ड 1985.
33.	मुन्नीलाल	:	जहाँगीर .
34.	एम0एस0 कामीसेरियट	:	हिस्ट्री आँफ गुजरात, भाग 1, 2, कलकत्ता, 1957.
35.	मुहम्मद अकबर	:	पंजाब अण्डर द मुगल्स, लाहौर, 1948.
36.	एम0एल0 कपूर	:	द हिस्ट्री आँफ मेडिवल काश्मीर ।
37.	एन0के0 साहू	:	हिस्ट्री आँफ उड़ीसा ।
38.	निजामुद्दीन अहमद	:	तबकात-ए अकबरी ।
39.	नोमान अहमद सिद्दिकी	:	लैण्ड रैवेन्यू एडमिनिस्ट्रेशन अण्डर द मुगल्स, बम्बई, 1970.
40.	पी0 सरन	:	द प्राविनशियल गवर्नमेण्ट आँफ द मुगल्स, इलाहाबाद, 1941.
41.	राधेश्याम	:	आनर्स रैन्कस एण्ड टाइटल्स अण्डर द ग्रेट मुगल्स, भाग 9, इलाहाबाद, 1977, भाग 10, इलाहाबाद 1978.
42.	आर0पी0 खोसला	:	द मुगल किंगशिप एण्ड नोबिलिटी, इलाहाबाद, 1934.
43.	आर0डी0 बनर्जी	:	हिस्ट्री आँफ उड़ीसा, भाग 1, कलकत्ता, 1930.

क्र0 स0	लेखक		कृति
44.	रशब्रुक विलियम्स	:	रैन एम्पायर बिल्डर आॅफ द सिक्सटीन सेन्चुरी, लांगमैन, 1918.
45.	आर0पी0 त्रिपाठी	:	राइज एण्ड फाल आॅफ द मुगल इम्पायर, इलाहाबाद, 1963.
		:	सम ऐस्पेक्ट्स आॅफ द मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन, इलाहाबाद, 1936.
46.	रास बिहारी बोस	:	जनरल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल ।
47.	एस0आर0 शर्मा	:	मुगल इम्पायर इन इण्डिया, आगरा, 1934.
48.	सुख सम्पत्ति राय भण्डारी	:	भारत के देशी राज्य ।
49.	सर एडवर्ड ग्रेट	:	ए हिस्ट्री आॅफ आसाम, कलकत्ता, 1933.
50.	सुधीन्द्र नाथ भट्टाचार्या	:	ए हिस्ट्री आॅफ मुगल नार्थ ईस्ट फ्रान्टियर पालिसी, कलकत्ता, 1929.
51.	एस0 मुश्ताक अहमद	:	हिस्टोरिकल ज्योग्राफी आफ काश्मीर ।
52.	एस0 सफीउल्ला	:	पोलिटिकल एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव हिस्ट्री आॅफ उड़ीसा अण्डर जहाँगीर ।
53.	प्रो0 सुखदेव सिंह चरक	:	हिस्ट्री एण्ड कल्चर आॅफ हिमालयन स्टेट्स ।
54.	तारा चन्द्र	:	सोसाइटी एण्ड स्टेट इन मुगल पीरियड ।

क्र0 स0	लेखक		कृति
55.	तपन राय चौधरी	:	बंगाल अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर ।
56.	यू0एन0 डे	:	द मुगल गवर्नमेण्ट, नयी दिल्ली, 1609.
		:	मेडिवल मालवा ।
57.	वी0एस0 भार्गव	:	मारवाड़ एण्ड द मुगल एम्परर्स, दिल्ली, 1966.
58.	डब्ल्यू0आर0 पागसन	:	हिस्ट्री ऑफ बुन्देलाज, दिल्ली, 1974.
59.	डब्ल्यू0 डब्ल्यू हन्टर एण्डू स्टर्लिंग जान बीम्स एन0के0 साहू	:	ए हिस्ट्री ऑफ उड़ीसा, भाग 1, कलकत्ता, 1956.
60.	विल्टन ओल्डम	:	हिस्टोरिकल एण्ड स्टेटिस्टिकल मेमोयर ऑफ द गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट ।
61.	वाटसन	:	हिस्ट्री ऑफ गुजरात

हिन्दी

क्र0 स0	लेखक		कृति
1.	अवधेश प्रतापसिंह	:	मुगलकालीन ओरछा भारत (1531-1736).
2.	अतहर अली	:	मुगल उमरा वर्ग ।
3.	बी0एम0 दिवाकर	:	राजस्थान का इतिहास ।
4.	विश्वेश्वर नाथ रेउ	:	मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, 2, जोधपुर, 1940.
5.	भगवानदास गुप्त	:	लोकप्रिय शासक वीरसिंह देव प्रथम, टीकमगढ़.
6.	गोरे लाल तिवारी	:	महाराजा छत्रसाल बुन्देला ।
7.	गोपीनाथ शर्मा	:	राजस्थान का इतिहास, भाग 1, आगरा, 1971.
8.	गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा	:	डूँगरपुर राज्य का इतिहास ।
		:	बाँसवाड़ा राज्य का इतिहास ।
		:	जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 1, 2. अजमेर, 1938, 1941.
		:	
		:	उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 1, 2, अजमेर, 1982.
		:	बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 1, 2, अजमेर, 1939-40.
9.	हरीशंकर श्रीवास्तव	:	मुगल शासन प्रणाली ।

क्र0 सं0	लेखक		कृति
10.	जगदीशसिंह गहलोत	:	राजपूताने का इतिहास, भाग 1, 2.
		:	कोटा राज्य का इतिहास ।
		:	मारवाड़ का इतिहास, जोधपुर, 1925.
11.	इरफान हबीब	:	मध्यकालीन भारत, भाग 1-3, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, 1981, 1983, 1984.
12.	पं0 कृष्णदास	:	बुन्देलखण्ड का इतिहास ।
13.	मुंशी देवी प्रसाद	:	शाहजहाँनामा, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, हिन्दी अनुवाद, रघुबीर सिंह, मनोहरसिंह राणावत, 1975.
14.	मनोहरसिंह राणावत	:	शाहजहाँ के हिन्दु मनसबदार ।
		:	इतिहासकार मुहणोत नैणसी और उनके इतिहास ग्रन्थ, जोधपुर संग्रह, 1985.
15.	एम0एल0 शर्मा	:	कोटा राज्य का इतिहास, कोटा, 1980.
16.	निर्मल चन्द्र दराय	:	महाराजा जसवन्तसिंह का जीवन व समय, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ ऐकेडमी, जयपुर, 1973.
17.	रघुबीर सिंह	:	पूर्व आधुनिक राजस्थान, उदयपुर, 1951.
18.	राम प्रसाद वैश्य	:	महाराणा राजसिंह, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी, जयपुर, 1974.

क्र0 सं0	लेखक		कृति
19.	राम करन असोपा	:	मारवाड़ का मूल इतिहास, 1931-1932.
20.	राम प्यारे अग्निहोत्री	:	विन्ध्य प्रदेश का इतिहास ।
21.	श्यामलदास	:	वीर विनोद, 4 भागों में ।
	~~सुख सम्पत्ति राय भण्डारी~~	:	~~भारत के देशी राज्य~~ ।
२२.	सैय्यद नजमुल रजा रिजवी	:	18वीं शदी के जमींदार, नयी दिल्ली, 1978
२३.	डब्ल्यू0 आर0 पागसन	:	हिस्ट्री ऑफ द बुन्देलखण्ड, दिल्ली, 1974.
२४.	डब्ल्यू0 एच0 मोरलैण्ड	:	अकबर की मृत्यु के समय का भारत ।

<u>अप्रकाशित शोध प्रबन्ध</u>

1.	सी0बी0 त्रिपाठी	:	लाइफ एण्ड टाइम ऑफ मिर्जा राजा जयसिंह इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1953.
2.	ओंकारनाथ उपाध्याय	:	हिन्दू नोबिलिटी अण्डर अकबर एण्ड जहाँगीर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1985.
3.	मुहम्मद हलीम सिद्दिकी	:	हिस्ट्री ऑफ नागौर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
4.	एन0 प्रियदर्शनी	:	हिस्ट्री ऑफ उत्तर प्रदेश मुगल्स, 1502 से 1702 ई0, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ।

क्र0 स0	लेखक		कृति
5.	पन्नालाल विश्वकर्मा	:	हिन्दू नोबिलिटी अण्डर शाहजहाँ, इलाहा विश्वविद्यालय, 1988.
6.	रमेश चन्द्र वर्मा	:	प्राब्लम्स आँफ द नार्थ वेस्टर्न फ्रान्टियर ड्यूरिंग द सिक्सटींथ एण्ड सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी इलाहाबाद विश्वविद्यालय ।
7.	आर0के0 परमू	:	हिस्ट्री आँफ काश्मीर फ्राम शाहमीर टू शाहजहाँ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1947.
8.	सैय्यद नजमुल रजा रिजवी	:	ए जमींदार फैमिली आँफ ईस्टर्न उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ।
9.	सुरेन्द्र नाथ सिन्हा	:	हिस्ट्री आँफ द सूबा आँफ इलाहाबाद, 1526-1707, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1964, सूबा आफ इलाहाबाद अण्डर द ग्रेट मुगल्स के रूप में संशोधन के साथ प्रकाशित, नयी दिल्ली, 1974.
10.	विष्णु कुमार मिश्र	:	मुगलकालीन ओरछा राज्य, रीवां विश्वविद्यालय ।

पत्रिकाएँ

क्र0 स0	लेखक		कृति
1.		:	इलाहाबाद युनिवर्सिटी मैगनीज, 1977-78.
2.		:	आनन्द बाजार पत्रिका [बंगाली] 1941, अक्टूबर
3.		:	बंगाल पास्ट एवं प्रेजेन्ट, 1900-1964.
4.		:	हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड 1950 अक्टूबर
5.	सर जदुनाथ सरकार	:	कंडीशनल आफ हिन्दूइज्म अण्डर मुस्लिम रूल
6.		:	काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग 2, अंक 4.
7.		:	जनरल आफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी, बम्बई ।
8.		:	जनरल आफ द इण्डियन हिस्ट्री इलाहाबाद, मद्रास, त्रिवेन्द्रम ।
9.		:	ललित कला अकादमी जनरल, दिल्ली ।
10.		:	मेडिवल इण्डिया, क्वार्टरली, ए0एम0यू0, अलीगढ़, 1950, 1951, 1961, 1963, 1968, 1972.
11.		:	परम्परा, राजस्थानी
12.		:	राजस्थानी पत्रिका

क्र0 स0	लेखक		कृति
13.		:	राजस्थान भारती, बीकानेर ।
14.		:	यू0पी0 हिस्टोरिकल रिव्यू, इलाहाबाद, 1982, 1983, 1984.
15.	ब्रह्मदेव प्रसाद अम्बष्ठ	:	ट्रेडिशन एण्ड जीनियोलाजी आफ द उज्जैनियाज इन बिहार, इण्डियन हिस्ट्री काग्रेस, दिल्ली, 1961.
16.	विश्वेश्वर नाथ रेउ	:	राव अमरसिंह द वेल नोन हीरो आफ राजपूताना, इण्डियन हिस्ट्री काग्रेस, हैदराबाद, 1941.
17.	डी0एस0 चौहान	:	ए स्टडी आफ द लेटर हिस्ट्री आफ द राजगोन्ड किंगडम आफ गढ़मण्डला, 1564-1678.
		:	इण्डियन हिस्ट्री काग्रेस, मैसूर, 1966.
18.	इकबाल हुसैन	:	पैटर्न आफ अफगान सेटलमेन्ट्स इन इण्डिया, इन द सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी, इण्डियन हिस्ट्री काग्रेस, भाग 1, हैदराबाद, 1978.
19.	के0के0 त्रिवेदी	:	नान रूलिंग राजपूत फैमिलीज इन द मुगल नोबिलिटी इन सूबा आगरा ।
		:	इण्डियन हिस्ट्री काग्रेस, हैदराबाद, 1977.

क्र0 स0	लेखक		कृति
20.	मुहम्मद इफ्तिखार आलम	:	ए रिफ्लेक्शन आन द रोल ऑफ अमरसिंह उज्जैना इन द फैद्रिसिडल स्ट्रगल एमन्गस्ट द फोर सन्स ऑफ शाहजहाँ.
		:	इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1985.
21.	एम0एन0 इनायत अली जैदी	:	द पैटर्न ऑफ मैट्रिमोनियल टाइज बिटवीन द कछवाहा क्लैन एण्ड द रुलिंग फैमिली, इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, कलकत्ता, 1974.
22.	एस0एस0 नेगी	:	मुगल गढ़वाल रिलेशन्स, 1500-1707 ई0 ।
		:	इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 47वाँ सत्र, अमृतसर, 1985.
23.	एस0ए0एच0 जैदी, रेहाना जैदी	:	कुमायूँ मुगल सम्बन्ध, भारतीय इतिहास कांग्रेस, 1986.
24.	सैय्यदनजमुल रजा रिजवी	:	ए जमींदार फैमिली ऑफ ईस्टर्न उत्तर प्रदेश ।
		:	ए ब्रीफ स्टडी ऑफ राजास ऑफ आजमगढ़, 1609-1771 ई0 । इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, बम्बई, 19
25.	वाई0के0 देशपाण्डे	:	फ्रेश लाइट आन द हिस्ट्री आफ द राजगोन्ड राजास आफ देवगढ़ ।
		:	इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, कलकत्ता, 1951.

गजेटियर

क्र0 स0	लेखक		कृति
1.	ए0इ0 नेल्सन	:	सेण्ट्रल प्राविन्सेज डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, रायपुर
2.	बी0डी0 अग्रवाल	:	राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, उदयपुर, 1979
3.	डी0एल0 ड्रेक बांक्रमैन	:	झांसी-ए गजेटियर, भाग 19.
		:	डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आँफ द युनाइटेड प्राविनि-सेज आँफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद, 1909
4.	एच0आर0 नेविल	:	पीलीभीत ए गजेटियर, भाग 18, इलाहाबाद, 1909.
		:	बिजनौर गजेटियर, भाग 14, इलाहाबाद, 1908.
5.	हेनरी फ्राउडे	:	द इम्पीरियल गजेटियर आँफ इण्डिया, भाग 10, आक्सफोर्ड, 1908.
6.	एच0 कूप लैण्ड	:	बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, मानभूम, कलकत्ता, 1911.
7.	एच0 डब्ल्यू0 वाल्टन	:	अल्मोड़ा ए गजेटियर, भाग 35,
		:	गजेटियर आँफ द युनाइटेड प्राविन्सेज आँफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद
		:	ब्रिटिश गढ़वाल ए गजेटियर, भाग 36, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आँफ द युनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद ।

क्र0 सं0	लेखक		कृति
8.	एच0आर0 नेविल	:	मुरादाबाद ए गजेटियर, भाग 16, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आफ द युनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद, 1911.
		:	जौनपुर ए गजेटियर, भाग 38, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ द युनाइटेड प्राविन्सेज ऑफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद, 1908.
		:	बहराइच गजेटियर, भाग 14, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ द युनाइटेड प्राविन्सेज ऑफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद, 1903.
		:	आजमगढ़ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, इलाहाबाद, 1935.
9.	जेम्स मेकनब कैम्पबेल	:	गजेटियर ऑफ द बाम्बे प्रेसिडेन्सी, भाग 1, बम्बई, 1896.
		:	गजेटियर आफ द बाम्बे प्रेसिडेन्सी, भाग 9, खण्ड 1, बम्बई, 1901.
10.	के0के0 सहगल	:	राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, चित्तौड़गढ़, 1917.

क्र0 स0	लेखक		कृति
11.	एल0एस0एस0ओ0 मैली	:	बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पालामऊ, कलकत्ता, 1907.
		:	बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बालासोर, कलकत्ता, 1907.
		:	बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, मुंगेर, 1909.
12.	एम0जी0 हैलेट	:	राँची डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पटना, 1917.
		:	हजारी बाग डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ।
		:	बिहार एण्ड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, राँची, बिहार और उड़ीसा, 1917.
13.	सैमुल टी॰ वेस्टन	:	पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, भाग 4, ए गुरगाँव डिस्ट्रिक्ट, 1911.
		:	बदायूँ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, भाग 15, युनाइटेड प्राविन्सेज ऑफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद, 1907.
		:	पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, भाग 15, ए लुधियाना जिला खण्ड 1, 1904.
		:	पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, भाग 10, ए कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट, लाहौर, 1907.
		:	गजेटियर ऑफ द कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट, 1917.

----------::0::----------